राजस्थान सरकार

जिला मानव विकास प्रतिवेदन

2009

जिला बांसवाड़ा(राज.)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	अध्याय – 1	
1.	मानव विकास का परिचय, अवधारणा एवं विभिन्न आयाम	1
2.	मानव विकास का मापन	4
3.	जिले के मानव विकास सूचकांक की राज्य में स्थिति	8
	अध्याय – 2	
4.	जिले का परिचयात्मक विवरण	10
5.	ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि	11
6.	भौगोलिक स्थिति	13
7.	टोपोग्राफी, जलवायु, भौमिकी एवं खनिज	14
8.	प्रशासनिक संरचना	15
9.	प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता – भूमि उपयोग एवं कृषि	19
10.	मानव संसाधन	22
11.	वर्षा	26
12.	पशुधन सम्पदा	27
13.	वन सम्पदा	28
14.	मत्स्य	30
15.	जल सम्पदा	31
16.	स्थानीय प्रशासनिक ढांचा	33
17.	जिले में नागरिक प्रशासन	36
18.	जिले में विकास प्रशासन	39
19.	स्वोट एनालिसिस	44
	अध्याय – 3	
20.	शिक्षा एवं साक्षरता	49
21.	प्रारम्भिक शिक्षा	65
22.	माध्यमिक शिक्षा	99
23.	उच्च शिक्षा	113

24.	व्यावसायिक एवं तकनिकी शिक्षा	118
	अध्याय – 4	
25.	स्वास्थ्य	133
26.	जिले में स्वास्थ्य प्रणाली का संस्थागत ढांचा	136
27.	स्वास्थ्य प्रणाली में स्टॉफ की व्यवस्था	140
28.	जिले के स्वास्थ्य सूचकों का तुलनात्मक विवरण	141
29.	जिले में आयुर्वेद चिकित्सा का संस्थागत ढांचा एवं स्टॉफ की स्थिति	142
30.	राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन अन्तर्गत संचालित कार्यक्रम	145
31.	रेफरल स्वास्थ्य की स्थिति	153
32.	एनडेमिक रोग की स्थिति	155
33.	समेकित बाल विकास सेवायें	162
34.	जिले में पेय जल व्यवस्था	169
35.	सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान	172
	अध्याय – 5	
36.	आजीविका	175
37.	जिले की क्षेत्रिय अर्थव्यवस्था	178
38.	जिले में भूमि उपयोग एवं कृषि की स्थिति	181
39.	कृषि का वर्तमान स्वरूप एवं हाल में हुए फसल बदलाव की स्थिति	183
40.	सिंचाई एवं सतही जल की उपलब्धता	184
41.	जिले में उद्यानिकी फसलें एवं उत्पादन	187
42.	जिले में पशुपालन की स्थिति	193
43.	जिले में मछली पालन की स्थिति	198
44.	जिले में कार्य की भागीदारी	203
45.	जिले में गरीबी, बेरोजगारी, आवास एवं पलायन का विश्लेषण	204
46.	जिले में बैंकिग एवं ग्रामीण ऋण सुविधाएं	209
47.	जिले का औधोगिक परिदृष्य	210
48.	ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में गरीबी उन्मुलन हेतु स्वरोजगार योजनाएं	214
49	अकृषि क्षेत्र में आजीविका हेतु भावी रणनिती	220
50	स्त्रोत/संदर्भ सूची	221

मेरी बात

सकल राष्ट्रीय उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय के आंकड़ों से विकास की एकांगी तस्वीर ही सामने आती है। क्षैत्रीय असमानताओं तथा पिछड़े लोगों की स्थिति को समझने एवं उनमें सुधार के लिये मानवतावादी विचारकों ने मानव विकास (Human Development) एवं समावेशी विकास (Inclusive Growth) की अवधारणायें प्रस्तुत की है। विकास के लाभ सभी क्षेत्र में पहुँचे एवं सभी लोग अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सार्थक जीवन जीये, यह मानव विकास है। मानव विकास के अन्तर्गत समस्त नागरिकों के शिक्षा, स्वास्थ एवं आय स्तर में वृद्धि होगी तथा सभी को जीविकोपार्जन के उपयुक्त अवसर उपलब्ध होंगे।

मानव विकास की अवधारणा को धरातल पर क्रियान्वित करने के लिये वर्तमान परिस्थितियों के आंकलन के लिये बांसवाड़ा का मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किया गया है। इस प्रतिवेदन से जिले के एकीकृत विकास अयोजना एवं क्रियान्वयन में सहायता मिलेगी। प्रतिवेदन तैयार करने के लिये शिक्षा, स्वास्थ एवं आजीविका सम्बन्धी कार्य समूह गठित किये गये। इन्होनें लग्न एवं श्रम से अपने प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। इन समूहों में सम्बन्धित विभागों एवं अन्य विभाग के अधिकारी सम्मिलित थे। इनके योगदान के लिये प्रशासन की ओर से धन्यवाद।

प्रतिवेदन को अन्तिम रूप देने एवं समन्वय का कार्य मुख्य आयोजना अधिकारी श्री दिनेश चन्द्र जैन एवं सलाहकार श्री नेमराज शहलोत ने किया। इनका आभार।

प्रतिवेदन पर आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

जिला कलेक्टर एवं मजिस्ट्रेट,
बांसवाड़ा

अध्याय – 1

मानव विकास का परिचय, अवधारणा एवं विभिन्न आयाम

सार संक्षेप :–

विकास की दिशा में मानव विकास ऐसी अवधारणा है जिसमें ऐसी परिस्थितियां होती है कि सभी नागरीक अपनी प्रतिभा के अनुसार सार्थक एवं सृजनात्मक जीवन जी सके।

आर्थिक विकास के विभिन्न मॉडलों में राष्ट्रीय आय में वृद्धि, रोजगार वृद्धि, गरीबी दूर करने, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उदारीकरण पर बल दिया गया। आर्थिक विकास तो हुआ लेकिन बड़े वर्ग के जीवन स्तर, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुधार नहीं हुआ।

1990 के दशक में आर्थिक वृद्धि की परिकल्पना से आगे बढ़ कर मानव विकास की अवधारणा प्रस्तुत की गई, इसके अन्तर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आजीविका पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।

मानव विकास वह है जिसमें लोग अपनी पसंद का जीवन जी सकें और इसके लिये उनके पास समान अवसर एवं क्षमता हो। आथिक विकास में आय वृद्धि पर बल दिया जाता है जबकि मानव विकास में सभी व्यक्तियों के चहुमखी विकास पर बल दिया जाता है।

मानव विकास को मापने के लिये मानव विकास सूचकांक का उपयोग किया जाता है। यह तीन सूचकांकों स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आय का औसत है। य़ू.एन.डी.पो. द्वारा वर्ष 2005 में नवीनतम मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया, कुल 177 राष्ट्रों में भारत का 127 वां स्थान है।

राजस्थान के विभिन्न जिलों के मानव विकास सूचकाकों में बांसवाड़ा का 31 वां स्थान है। जिला मानव विकास प्रतिवेदन एकीकृत जिला योजना निर्माण के लिये एक महत्वपूर्ण संदर्भ दस्तावेज है। जिला आयोजना प्रक्रिया में समस्त हितधारकों की भागीदारी

से ऐसी योजना बनाई जा सकती है कि जिले के पिछड़े क्षेत्र एवं पिछड़े लोगों का स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आय स्तर में सुधार हो सके।

मानव विकास का परिचय, अवधारणा एवं विभिन्न आयाम

विकास सामाजिक हो या आर्थिक उसका उद्दे"य मानव विकास हैं। सामाजिक विकास में समाज के सर्वांगोण विकास पर बल दिया जाता हैं। समाज एक पूर्ण इकाई हैं और व्यक्ति उसका एक अंग हैं। सामाजिक विकास में व्यक्ति को जो भी लाभ प्राप्त होता है, वह एक प्राणी समूह के रूप में मिलता हैं। यह संभव है कि विकास सभी लोगो तक पहुँचने की अपेक्षा कुछ लोगों तक ही केन्द्रित हो। जब हम एक सामान्य व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए विकास वि"ालेषण करते है तो इस बात का ध्यान रखते है कि विकास से उसको कितना लाभ हुआ, उसे कितने अवसर मिल पाये तथा कहाँ तक यह विकास महिलाओं एवं पुरूषो में समान रूप से वितरित हुआ। यही से मानव विकास की अवधारण प्रारम्भ होती है।

मानव विकास, सामाजिक विकास का एक मूल तत्व हैं। विकास की दि"ाा में यह मानव केन्द्रित अवधारणा हैं। यह लोगों पर केन्द्रित हैं। इसका संबंध उनकी भलाई, आव"यकताओं, प्राथमिकताओं तथा विकल्पों से होता हैं। मानव विकास का उद्दे"य जीवन में एक समान परिस्थितियाँ उत्पन्न करना है, जो लोगों को अपनी प्रतिभा के अनुसार सार्थक एवं सृजनात्मक जीवन जी सकने में सहायक हो।

विकास की ऐतिहासिक पृश्ठ भूमि

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आर्थिक वृद्धि के विभिन्न मॉडलो एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि पर बल दिया गया।
- 1960 के दशक में रोजगार बढ़ाने एवं गरीबी दूर करने को प्राथमिकता दी गई।
- 1970 के दशक में मूलभूत आव"यकताओं की पूर्ति पर बल दिया गया।
- 1980 के दशक के अंतिम वर्षो में उदारीकरण की शुरूआत की गई।

इन सभी उपायो से आर्थिक वृद्धि तो हुई लेकिन लोगों के जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य में कोई ज्यादा फर्क देखने को नहीं मिला। यद्यपि अर्थशास्त्रियों की यह मान्यता

रही है कि आर्थिक विकास से लोगों के जीवन स्तर मे वृद्धि होगी तथा गरीबी दूर होगी पर यह बात पूर्णतः सही सिद्ध नही हुई।

मानव विकास की परिकल्पना

1990 के दशक में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) क तत्वाधान में पाकिस्तान के अर्थशास्त्री श्री महबूब उल हक एवं भारतीय मूल के अर्थशास्त्री श्री अमत्य सेन ने वि"लेषण करते हुए यह माना कि आर्थिक वृद्धि से यह आव"यक नही है कि इससे सभी लोगों का कल्याण भी हो। उन्होनें आर्थिक वृद्धि की परिकल्पना से आगे बढ़कर मानव विकास की अवधारण की परिकल्पना की। इसके अन्तर्गत उन्होनें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आजीविका पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

मानव विकास एक परिभाशा के रूप में :–

विकास का मूल उद्देश्य मनुष्यों के पास उपलब्ध विकल्पों (Choices) को बढ़ाना हैं। यह विकल्प अनन्त हो सकते हैं एवं समय के साथ बदल भी सकते हैं। मानव विकास वह है, जिसमे लोग अपनी पसंद का जीवन जी सके और इसके लिए उनके पास समान अवसर एवं क्षमता हो।

मानव विकास, विकास के सामान्य उद्देश्य का ध्यान में रखते हुए मानव की रूचियों, अवसरों तथा क्षमताओं के विस्तार पर बल देता हैं। यह विकास के सभी स्तरों पर सभी राष्ट्रो के सभी लोगों के लिए चाहे वे धनी हो या निर्धन समान रूप से लागू होता हैं। मानव विकास के चार मुख्य स्तम्भ निम्न हैं :–

- स्वस्थ एवं लम्बी आयु।
- शिक्षा व ज्ञान।
- मूलभत भौतिक संसाधन जो उत्तम जीवन स्तर के लिए आवश्यक हो।
- सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने की स्वतन्त्रता एवं एकजुट होकर कार्य करने की संभावना।

आर्थिक विकास एवं मानव विकास में अन्तर

सकल घरेलू उत्पाद और जनसंख्या के अनुपात से प्राप्त आय के आधार पर राष्ट्रो की जो परस्पर तुलना की जाती है वह विश्व के गरीबों की स्थिति को मापने के लिहाज से उपयुक्त नही हैं। इससे प्रति व्यक्ति आय के आकड मिलते है, जिनके आधार पर राष्ट्रो को क्रम जरूर दिया जा सकता हैं, किन्तु यह आकड़े उन राष्ट्रों की वास्तविक स्थिति की व्याख्या नही करते हैं। इस तरह की तुलनाओं से समाज के कमजोर वर्गो की स्थिति की झलक नही मिलती हैं। इस प्रकार आय को विकास के परिणाम के रूप में नही बल्कि विकास क साधन के रूप में देखा जाता हैं। इसके अतिरिक्त लोगों के दैनिक जीवन और उनके क्रियाकलापों से इसका सम्बन्ध बहुत कम हैं। ऐसे अन्य मापदण्डों की जरूरत है, जिनमें आय के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों को भी शामिल किया जा सकें।

मानव विकास अपने आप में सम्पूर्णता लिए हुए है। यह लोगों के जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सम्मान पूर्वक जीवन यापन हेतु आव"यक संसाधनों की प्राप्ति का सम्मिश्रण हैं।

आर्थिक विकास में केवल आमदनी/आय की वृद्धि पर बल दिया जाता है। जबकि मानव विकास में आर्थिक विकास के साथ–साथ अन्य विकल्पों जैसे– सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनितिक विकास पर भी बल दिया जाता है।

इस प्रकार मानव विकास की प्रक्रिया में आम लोगों और विकास के दो केन्द्र बिन्दु है :–

1. मानव विकास का एकमात्र उद्देश्य मानव के जीवन स्तर में सुधार करना तथा
2. मानवीय उपलब्धियों को सूचकांक के रूप में प्रस्तुत करना।

मानव विकास का मापन : मानव विकास का सूचकांक

नोतिकारों, योजनाकारों और शैक्षिक वर्ग के लिए मानव विकास को विज्ञान की तर्ज पर मापना महत्वपूर्ण हैं। अतः मानव विकास को मापने के लिए मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) का उपयोग किया जाता हैं। यह विकास क विभिन्न आयाम जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आय के सूचकांक का सम्मिश्रण हैं। मानव विकास सूचकांक एक आइने की तरह होता है जो यह दिखाता है कि राष्ट्र, राज्य व जिले की वर्तमान स्थिति कैसी है और इसे कहाँ तक का सफर तय करना ह। यह तीन सूचकांको (स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आय) का सरल औसत हैं।

मानव विकास सूचकांक (HDI) = 1/3(स्वास्थ्य सूचकांक) + 1/3 (शिक्षा सूचकांक) + 1/3 (आय सूचकांक)

स्वास्थ्य सूचकांक की माप जन्म के समय जीवन प्रत्या"ाा दर से, शिक्षा सूचकांक की माप साक्षरता दर व नामाकंन दर से एवं आय को प्रति व्यक्ति आय से मापा जाता हैं।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) का मानव विकास प्रतिवेदन

- मानव विकास प्रतिवेदन विश्व स्तर, राष्ट्रीय स्तर व उप राष्ट्रीय स्तर पर तैयार किये जाते हैं।
- विश्व का प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन वर्ष 1990 में प्रकाशित किया गया। यह एक नियमित वार्षिक प्रतिवेदन हैं।
- प्रत्येक वर्ष एक नये समकालीन विषय का गहराई में विशलेषण किया जाकर प्रतिवेदन जारी किया जाता हैं।
- अभी तक कुल 16 मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किये गये हैं।
- यूनाईटेड नेशन्स डवलपमेंट प्रोग्राम (UNDP) द्वारा वर्ष 2005 का नवीनतम मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया हैं।
- मानव विकास प्रतिवेदन वर्ष 2005 के मानव विकास सूचकांक में कुल 177 राष्ट्रो में भारत का 127 वा स्थान है।

योजना आयोग भारत सरकार द्वारा जारी मानव विकास प्रतिवेदन

- योजना आयोग भारत सरकार द्वारा प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन वर्ष 2001 में तैयार किया गया। जिसमें राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में मानव विकास की तस्वीर पेश की गई।

- देश में मध्यप्रदेश पहला राज्य है, जिसने वर्ष 1995 में पहला राज्य मानव विकास प्रतिवेदन तैयार किया।
- अब तक 17 राज्य अपने–अपने प्रतिवेदन तैयार कर प्रस्तुत कर चुके हैं।
- वर्ष 2001 में 15 राज्यों के किये गये विश्लेषण के अनुसार राजस्थान का 9 वा स्थान हैं।
- कुल 15 राज्यों के मानव विकास सूचकों के किये गये विश्लेषण के आधार पर उच्च मानव विकास वाले राज्य क्रमशः केरल, पंजाब, तमिलनाडू एवं महाराष्ट्र तथा निम्न मानव विकास वाले राज्यों में बिहार, आसाम, उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश है।

राजस्थान सरकार एवं मानव विकास प्रतिवदेन

राजस्थान का प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन वर्ष 2002 में तैयार किया गया। राजस्थान देश में मानव विकास प्रतिवेदन तैयार करने वाला चौथा राज्य है।

- शिक्षा के क्षेत्र मे राज्य में प्रथम स्थान कोटा जिले का है और अंतिम स्थान पर बाडमेर जिला है।
- स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रथम एवं अंतिम स्थान पर क्रमशः गंगानगर व चित्तोड़गढ़ जिले का है।
- आय की दृष्टि से गंगानगर जिला प्रथम तथा अंतिम स्थान पर डूंगरपुर जिला है।
- कुल 32 जिलों के मानव विकास सूचकांकों के विश्लेषण के आधार पर उच्च मानव विकास वाले जिले क्रमशः गंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, जयपुर, अलवर तथा न्यूनत्तम मानव विकास वाले मुख्य जिले क्रमशः डूंगरपुर, बाडमेर, बांसवाडा, जालोर एवं धोलपुर है।

स्पष्ट है कि राज्य में मानव विकास की दृष्टि में अभी बहुत किया जाना शेष है। जीवन की गुणवत्ता में सुधार तथा मानव विकास में प्रगति इन दोनों क्षेत्र में त्वरित एवं परिणामोन्नमुखी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में जिला मानव विकास प्रतिवेदन तैयार कर पिछड़े हुये क्षेत्रों की पहचान कर जिला योजना निर्माण में उक्त प्रतिवेदन एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करेगा।

जिला मानव विकास प्रतिवेदन

योजना आयोग, भारत सरकार एवं यू.एन.डी.पी. के सहयोग से मानव विकास अनुसंधान एवं समन्वय यूनिट, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर के निर्देशन में जिला मानव विकास प्रतिवेदन तैयार करने की प्रक्रिया अपनाई गई है।

जनसहभागिता द्वारा तैयार की गई योजना भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलु है और यह जिला स्तर पर मानव विकास के लिये सार्वजनिक संसाधन का संकलन करने के लिये (Converge) पूर्व अपेक्षित भी है। भारतीय संविधान के अनुच्छे 243ZD विकास योजना प्रक्रिया को मजबूत करने के लिये जिला आयोजना समिति का गठन करता है। जिला आयोजना समिति जिले में पंचायतों और नगरपालिका द्वारा तैयार की गई योजनाओं का विकासोन्नमुख समेकन करती है।

योजना आयोग ने जिला योजना निर्माण के लिये विस्तृत दृष्टिकोण आधार की आवश्यकता पर बल देते हुये दिशा निर्देश जारी किये है। 11वीं पंचवर्षीय योजना 2007–12 में क्षैत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिये आयोजना को सहभागितापूर्ण प्रक्रिया से जमीनी स्तर पर जोडने पर भी बल दिया है। जिला मानव विकास प्रतिवेदन (DHDRs) को पंचवर्षीय योजना निर्माण में एक उपयोगी उपकरण के रूप में सुझाया गया है। जिला मानव विकास प्रतिवेदन वह प्रतिवेदन है जो जिला विकास में असंतुलन का आंकलन और अंतर का विश्लेषण कर सम्भावित समाधान एवं सुझाव देता है। इसलिये 11वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान देश के सभी जिलो की (DHDRs) तैयार करने की सिफारिश की गई है। वर्तमान में योजना आयोग एवं यू.एन.डी.पी. परियोजना ''मानव विकास के लिये राज्य योजनाओं का सुदृढीकरण की गतिविधि के रूप में 56 जिलों की (DHDRs) तैयार कर रहे है।

राजस्थान में जिला मानव विकास रिपोर्ट (DHDRs)

योजना आयोग, भारत सरकार एवं यू.एन.डी.पी. के सहयोग से राज्य में ''मानव विकास के लिये राज्य योजनाओं को सुदृढीकरण (SSPHD)'' परियोजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत लोगों को राज्य/जिला योजनाओं में विकास

के केन्द्र पर लाने का प्रयास किया गया है। इस परियोजना से राज्य/जिला योजनाओं में मानव विकास के मुद्दों की पैरवी करने के लिये और जिला मानव विकास रिपोर्ट द्वारा स्थितिजन्य विश्लेषण प्रदान करने के लिये डूंगरपुर, धोलपुर, झालावाड़ और बाडमेर में (DHDRs) तैयार की गई है। राज्य स्तर की वर्ष 2002 की मानव विकास रिपोर्ट का एक अद्यतन संस्करण 2008 भी तैयार किया गया है।

जिला मानव विकास प्रतिवेदन के उद्देश्य

- पर्याप्त सार्वजनिक संसाधनों के उचित उपयोग और प्रत्येक जिले के पिछड़े क्षेत्रों की पहचान करने में जिला योजना समितियों और संबंधित सरकारी विभागों की सहायता।
- राज्य योजना विभाग की भौतिक और वित्तीय संसाधनों की मात्रा के वास्तविक आकलन और राज्य के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन के निवारण के लिये प्रतिबद्ध होने में सहायता।
- विभागीय दूरदर्शिता के लिये राज्य योजना और जिला योजनाओं में विकल्प के रूप में समकालीन विकास आधारित पद्धति और एकीकृत क्षेत्रीय योजना के प्रगतिशील दृष्टिकोण को अपनाने के लिये प्रेरित करना।

इस प्रकार जिला मानव विकास प्रतिवेदन एकीकृत जिला योजना निर्माण के लिये एक महत्वपूर्ण संदर्भ दस्तावेज हो सकता है। साथ ही जिला आयोजना प्रक्रिया के समस्त हितधारकों की सक्रिय भागीदारी से उपर्युक्त उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

जिले के मानव विकास सूचकांक की राज्य में स्थिति

मानव विकास की दृष्टि से राज्य के विभिन्न जिलो के मानव विकास सूचकों में बांसवाडा का 31वां स्थान है। राज्य में गगानगर जिले का मानव विकास सूचकाक अधिकतम 0.809 है, जिसकी तुलना में बासवाडा जिले का मानव विकास सूचकांक 0.425 है।

राज्य के 32 जिलों में शिक्षा कि दृष्टि से बांसवाडा सबस नीच है। जबकि शेष दो घटकों स्वास्थ्य एवं प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से इसका स्थान क्रमशः 31वां एव 29 वां है।

मानव विकास सूचकांक –2007

जिला	शिक्षा सूचकांक	स्वास्थ्य सूचकांक	आय सूचकांक	मानव विकास सूचकांक	कमांक
बांसवाडा	**0.63**	**0.309**	**0.335**	**0.425**	**31**
चित्तोडगढ	0.705	0.383	0.585	0.558	27
डूंगरपुर	0.64	0.282	0.304	0.409	32
उदयपुर	0.761	0.413	0.611	0.595	21
गंगानगर	0.787	0.816	0.825	0.809	1
राजस्थान	**0.755**	**0.735**	**0.64**	**0.71**	

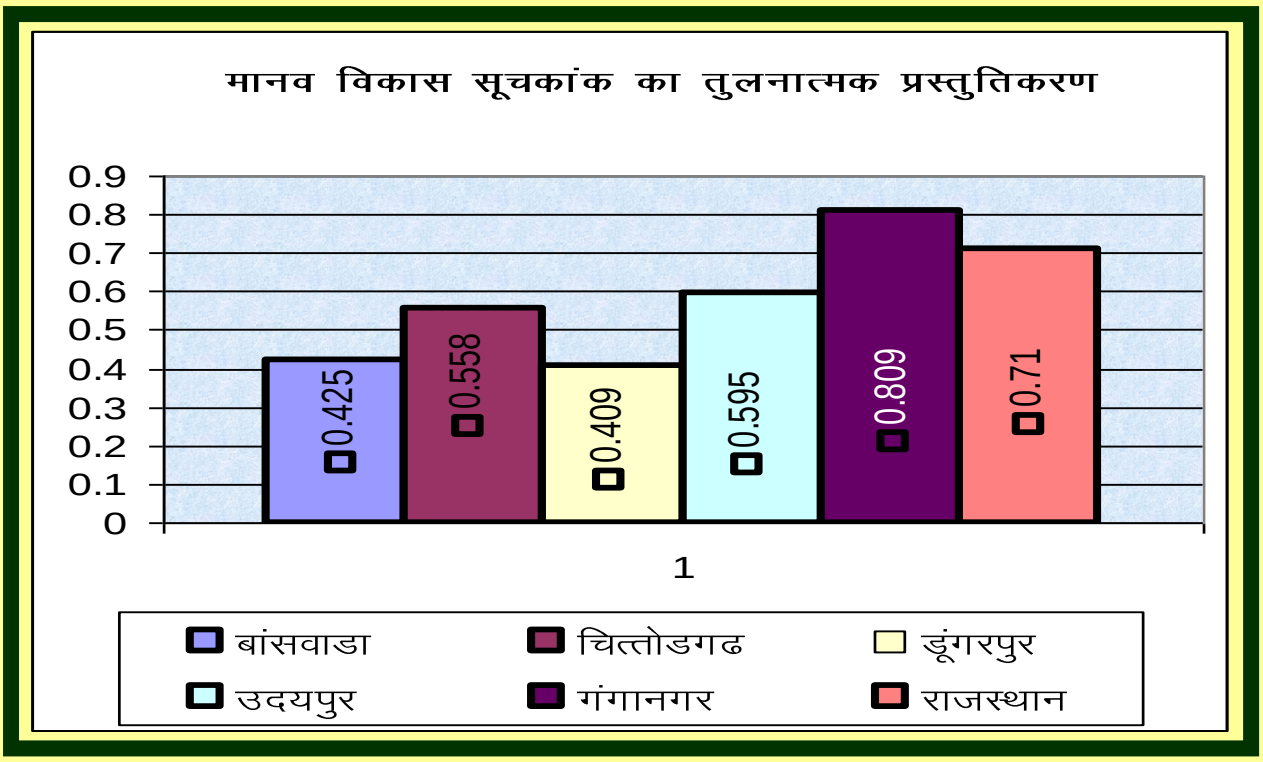

अध्याय – 2

जिले का परिचयात्मक विवरण

सार संक्षेप :–

राज्य के दक्षिण भाग में स्थित जिला बांसवाड़ा के उत्तर में प्रतापगढ़, पूर्व में मध्यप्रदेश का रतलाम जिला, पश्चिम में डूंगरपुर जिले का सागवाड़ा एवं दक्षिण में मध्यप्रदेश का झाबूआ जिला है। जिले की जलवायु अन्य जिलों की तुलना में नम है। जिले की औसत वर्ष 900 मि.मि. है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 453612 हैक्टर है। जिसमें अधिकांश काली एवं लाल मिट्टी है। जिले प्रचुर मात्रा में खनिज सम्पदा उपलब्ध है। जिले का धरातल असमान है और बांसवाडा के पश्चिम में छोटी पर्वत श्रेणियां तथा पूर्वी भाग में पहाड़िया है।

जिले का विभाजन 3 उपखण्ड़ों, 5 तहसीलों एवं 8 विकास खण्ड़ों में है। जिले में 307 ग्राम पंचायत एवं 1494 राजस्व ग्राम है। जनगणना 2001 के अनुसार जिले की जनसंख्या 1420601(पीपलखूंट को छोडकर) है। 2001 की जनगणना अनुसार जिले की कुल जनसंख्या का लगभग 92 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जिसमें से लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित कार्यकलापों में सम्मिलित है। 1991 से 2001 में जिले की जनसंख्या वृद्धि दर 29.94 प्रतिशत रही है। जिले में 2 नगरपालिकायें जिला मुख्यालय बांसवाड़ा एवं कुशलगढ़ में है।

जिले का परिचयात्मक विवरण

❖ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

प्राचीन काल में वागड़ प्रदेश के रूप में विख्यात आदिवासी बहुल बांसवाड़ा राज्य का दक्षिणी सीमान्त जिला है। बांसवाड़ा जिला बगड़ अथवा वागड़ नाम से ज्ञात प्रदेश का भाग है, जिसकी राजधानी वटपदरक (जिले के वर्तमान बड़ौदा) में हुआ करती थी। यह क्षेत्र लगभग 4000 वर्ष पूर्व की अहर नाम विकासशील सभ्यता का साक्षी रहा है।

बागड के प्रारम्भिक इतिहास का अविच्छन्न विवरण अस्पष्ट है। इस पर पश्चिमी क्षत्रपा का शासन था। 181 से 353 ईस्वी काल के चांदी के सिक्को का एक जखीरा जिले के सुरवानिया ग्राम में खुदाई में प्राप्त हुआ था और यह ग्यारह महाक्षत्रपो व दर क्षत्रपो को निर्धार्य है।

महाक्षत्रपो में अन्तिम रूद्रसिंह तृतीय था, जो 388 ईस्वी में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय द्वारा पराजित किया गया, जिसके बाद प्रदेश गुप्तो द्वारा शासित रहा होगा, जिन्हे हूण सम्राट तोरामन द्वारा विक्रम संवत् 556 (449 ईस्वी) के लगभग हटा दिया गया। मिहिरकुल (तोरामन का पुत्र) मालवा के यशोधर्मन द्वारा पराजित किया गया जिससे हूण शासन का अन्त हुआ।

बागड़ वलभी साम्राज्य का भाग रहा हो सकता है। प्रदेश पर 725 से 738 ईस्वी के बीच अरबो द्वारा आक्रमण किया जाना बताया जाता है, लेकिन उन्हे मेडापत (मेवाड़) के गुहिलोतो द्वारा बाहर निकाल दिया गया।

लगभग 10वी शताब्दो ईस्वी के प्रारम्भ में परमारो द्वारा वागड़ को जागीर में प्राप्त किया जाना प्रतीत हेाता है। परमारो ने उत्थुनका अथवा आधुनिक अरथूना को अपनी राजधानी बनाकर देश का शासन किया। बागड़ के परमारा में सर्वाधिक उल्लेखनीय कंकदेव और मंडलिका थे। बागड़ के परमारो में अन्तिम जिसके बारे में जो कुछ ज्ञात है विजयराज था, जो 1109 ईस्वी तक जीवित रहा। परमारो को 1171 अथवा 1175 ईस्वी के लगभग मेवाड़ के सामन्तसिंह द्वारा अन्तिम रूप से निकाल दिया गया।

यह प्रदेश फिर से गुजरात के सोलंकी या चालुक्यों के हाथ मे चला गया, जिनके पास यह 1196 ईस्वी तक बना रहा जिसके बाद सामन्तसिंह के गुहिलोत उत्तराधिकारी फिर से सामने आये।

बागड़ के पूर्वी भाग में बांसवाड़ा और पश्चिमी भाग में डूँगरपुर है। गुहिलोतो द्वारा बागड़ के राज्य की स्थापना के संबंध में विभिन्न मत पाये जाते है तथापि वास्तविक संस्थापक सामन्तसिंह ही था, जिसने 1179 ईस्वी के लगभग बागड़ प्रदेश को अधिगृहित किया। इस समय से लगातार लगभग 1859 तक का प्रदेश का इतिहास विभिन्न राज्यों व जागीरो में आपसी लड़ाई झगड़ो का इतिहास है जबकि ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपनी पकड़ पूरी कर लो थी। 1660 ईस्वी में महारावल कुशलसिंह गद्दी पर बैठे ओर कहा जाता है कि उन्होने भील प्रदेश जीत लिया जिसका नामकरण उन्होने अपने नाम पर कुशलगढ़ किया ओर इसे ठाकुर अखयराज को जागीर स्वरूप दिया। कुछ अन्य विद्धानो के मतानुसार इस प्रदेश को ठाकुर अखयराज द्वारा एक भील सरदार कुशला से जीता था ओर इसका नाम उसके नाम पर कुशलगढ़ रखा।

वर्ष 1866 में बांसवाड़ा के महारावल लक्ष्मणसिंह तथा उसके सामन्त कुशलगढ़ के राव के बीच गम्भीर झगड़ा खड़ा हो गया, जिस पर यह निर्णय किया गया कि बांसवाड़ा के शासक कुशलगढ़ ठिकाने के राजकाज में किसी भी प्रकार की कोई दखलन्दाजी नहीं करेंगे ओर कुशलगढ़ के राव बांसवाड़ा को 1100 रू. का वार्षिक नजराना देंगे और परम्परागत सेवाऐ करते रहेंगे।

मेजर आस्किन के अनुसार बांसवाड़ा की स्थापना राजा जगमाल द्वारा की गई थी। राजा जगमाल ने सन् 1530 ईस्वी में इस प्रदेश के भील राजा बांसीया को मारकर इस क्षेत्र को अपने अधिकार में लिया तथा बांसीया के नाम पर इस क्षेत्र का नाम बांसवाड़ा पड़ा। पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई के दौरान इस क्षेत्र में 11वी सदी क 2393 चांदी के सिक्के प्राप्त हुये है, जिनसे प्राप्त जानकारी क अनुसार बांसवाड़ा की स्थापना राजा महाक्षत्रप वर्मा द्वारा सन् 181 में की गई थी। लगभग चौथी शताब्दी से इस क्षेत्र पर शको का शासन रहा व उसके पश्चात् हूण, गुप्त, परिहार आदि जातियों का भी इस क्षेत्र पर अधिकार रहा।

आजादी से पूर्व बांसवाड़ा रियासत पर राजा पृथ्वीसिंह का आधिपत्य था, जो उदयपुर के महाराजा के अधीन थे। रियासत पर राजा पृथ्वीसिंह का ही पूर्ण अधिकार था परन्तु किन्ही विशेष मामलो में आवश्यक होने पर उदयपुर के महाराजा से मागदर्शन प्राप्त किया जाता था।

वर्ष 1913 में कुछ भीलो ने गोविन्दगिरी और पुन्जा के नेतृत्व में विद्रोह किया जिसे नवम्बर, 1913 में दबा दिया गया। 1945 में बांसवाड़ा में प्रजामण्डल नामक एक संगठन, वहां के शासक के संरक्षण में, एक उत्तरदायी सरकार की स्थापना के उद्देश्य से बनाया गया जिसके द्वारा विभिन्न प्रशासकीय व अन्य सुधारो की मांग की गयी। रियासतो के भारतीय संघ में विलयन के साथ ही बांसवाड़ा रियासत और कुशलगढ़ ठिकाने का वृहत्तर राजस्थान के संयुक्त राज्य में वर्ष 1949 में विलय हो गया और इन जागीरो को मिलाकर बांसवाड़ा नामक एक पृथक जिला बना दिया गया। इस प्रकार जिले में भूतपूर्व बांसवाड़ा रियासत और कुशलगढ़ ठिकाने के प्रदेश सम्मिलित है।

जिले का नाम बांसवाड़ा कस्बे पर रखा गया है। बांसवाड़ा को इसका नाम एक भील सरदार बांसना या वासना के ऊपर पड़ा बताया जाता है जो बांसवाड़ा राज्य के संस्थापक जगमाल द्वारा मार डाला गया बताया जाता है, किन्तु जगमाल के शासन से पूर्ववर्ती एक शिलालेख में बांसवाड़ा नामक ग्राम का उल्लेख है। हो सकता है कि यह नाम ''बांस'' से प्राप्त किया गया हो जो कभी इस स्थान के आसपास बहुतायात से उगते थे।

वर्ष 1959 में राज्य में लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के प्रारम्भ के साथ जिले में आठ पंचायत समितियां बनाई गई थी जो जिले में ग्रामीण क्षेत्रो में विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों की देखरेख कर रही है।

❖ भौगोलिक स्थिति :–

जिले का धरातल उबड़–खाबड़ है ओर बीच–बीच में बांसवाड़ा के पश्चिम में छोटी पर्वत श्रेणियां है। जिले के पूर्वी भाग में डेकन टप की चपटे शिखर की पहाड़ियां है। मैदान में अधिकांशतः ब्लैक कॉटन मिट्टी है। अपवहन प्रणाली माही की है जो मध्यप्रदेश में धार जिले के निकट से निकलती है। इसकी मुख्य सहायक

नदियां अनास, कागदी और नाले है। पहाड़ी ओर अधित्यकीय क्षेत्रो में वन कटाई के कारण भारी परत व खड्डे कटाव हो गये है ओर अपवहन घाटी में गाद भर गया है।

जिला आकृति में चतुष्कोणीय और पश्चिम में खासा खुला हुआ है, किन्तु इसकी आकृति लहरदार है तथापि जिले के मध्यवर्ती व पश्चिमी भाग कृषि योग्य मैदान है। जिले के पूर्वी आधे भाग में अरावली की पर्वत श्रेणियां छितरी हुई है। दक्षिण में उच्चतम् श्रेणी लगभग 610 मीटर है, उत्तर में 440 मीटर और पूर्व में 510 मीटर है। जिले का सामान्य स्तर समुद्रतल से 350 मीटर ऊंचा है।

❖ **टोपोग्राफी (प्रकृति दशा) :–**

जिला राज्य के दक्षिणी भाग में $23^0$11′ और $23^0$56′ अक्षांश $73^0$58′ व $74^0$47′ देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में प्रतापगढ़ जिले की पीपलखूंट तहसील और पूर्व में मध्यप्रदेश का रतलाम जिला, पश्चिम में डूँगरपुर जिले की सागवाड़ा व आसपुर तहसीलो और दक्षिण में मध्यप्रदेश का झाबुआ जिला है। दक्षिण पश्चिम में यह गुजरात राज्य के पंचमहल जिले की सीमा को भी स्पर्श करता है।

❖ **जलवायु :–**

जिला राज्य की दक्षिणी सीमा पर स्थित है, जिले की जलवायु उत्तर व उत्तर पश्चिम के रेगिस्तानी प्रदेशों की तुलना में बहुत कुछ नम है। जिले में वर्ष 2007 में अधिकत्तम तापमान 44.70′ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनत्तम तापमान 11.00′ डिग्री सेल्सियस तथा औसत तापमान आर्द्रता 52 प्रतिशत रही है।

जिले की औसत वर्षा (1998–2007) 903 मि.मि. है। वर्ष 2008 में वास्तविक वर्षा 561.85 मि.मि. हुई है।

❖ **भौमिकी एवं खनिज :–**

जिले में प्रचुर मात्रा में खनिज सम्पदा उपलब्ध है। अप्रधान खनिजा सोप स्टोन, रॉक फास्फेट, लाईमस्टोन, मेग्नीज, डोलोमाईट, ग्रेफाईट, चुनाई का पत्थर व बजरी मुख्य है। साथ ही जिले के त्रिपुरा सुन्दरी (फाटीखान) खेमातलाई एवं औड़ाबस्सी क्षत्र में मार्बल खनन कार्य होता है। जिले में खनन क्षेत्र क विकास की पर्याप्त संभावनाए है। जिले में घाटोल तहसील में सोने के भण्डारो का पता चला है।

बांसवाड़ा और घाटोल के बीच 35 किमी की लम्बाई में पपड़ीदार व बेडोल विविधताओं के ग्रेफाइट की अनियमित पट्टियां फैली हुई है। हतखेड़ा, पांचलवासा, इम्पलीपाडा, तासकाटा, माहीबांध क्षेत्र आदि मे ग्रेफाइट की एक से लेकर दस मीटर की विभिन्न मोटाई की पट्टी की खोज की गयी है। इनमें ग्रेफाइट का अंश 5 से 15 प्रतिशत् के मध्य है। इसमें लगभग 1.3 लाख टन भण्डार का अनुमान किया गया है।

खमेरा और बोगरा के बीच में लगभग 10 वर्ग किमी के क्षेत्र के कैल्क–नाईस आर एम्फीबोलाइट से संयुक्त चुना पत्थर और संगमरमर पाया जाता है। चुना पत्थर का कुछ भाग लगभग 500 लाख टन सीमेन्ट श्रेणी का है। 21.9 से 48.0 प्रतिशत् धात्विक अंश सहित कच्चा मैंगनीज सेवनिया, खुंटा, सागवा, इटाला भातरी, ताम्बेसरा डोमगाडिया आदि स्थानो पर मिलता है। ताम्बेसरा सेवनिया खुंटा क्षेत्रो में इसके अनुमानित भण्डार लगभग 2,50,000 टन है। वर्तमान में इस विभाग के अधीन अप्रधान खनिज 107 खनन पट्टे, प्रधान खनिज के 5 खनन पट्टे एवं 8 क्वारी लाइसेन्स प्रभावी है।

जिला भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट राज्य के अनुसूचित क्षेत्र में आता है इस कारण इस जिले में चिनाई पत्थर जैसे गौण खनिज के नवीन खनन पट्टे/अल्पावधि अनुज्ञा पत्र केवल स्थानीय अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों को ही आवंटित किया जा सकता है।

❖ प्रशासनिक संरचना :–

प्रशासनिक उद्देश्य से जिले का विभाजन तीन उपखण्डो, पांच तहसीलो ओर दो नगरो में किया गया है। बांसवाड़ा राज्य के उदयपुर संभाग में स्थित है। कलेक्टर भू–अभिलेख के अनुसार वर्तमान में जिले में 3 उपखण्ड, 5 तहसील एवं 8 विकास खण्ड है। जिले में 307 ग्राम पंचायते एवं 1494 राजस्व गांव है जिनका विस्तृत विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	उपखण्ड	तहसील	पंचायत समिति	ग्राम पंचायतो की संख्या	राजस्व गांवो की संख्या		
					आबाद	गैर आबाद	योग
1	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	55	241	3	244
		गढ़ी	गढ़ी	55	191	3	194
		बांसवाड़ा	छोटी सरवन	18	99	11	110
2	घाटोल	घाटोल	घाटोल	53	233	3	236
3	कुशलगढ़	कुशलगढ़	कुशलगढ़	29	213	1	214
			सज्जनगढ़	30	185	3	188
		बागीदौरा	बागीदौरा	41	172	0	172
			आनन्दपुरी	26	136	0	136
योग	**3**	**5**	**8**	**307**	**1470**	**24**	**1494**

जिले के कुल 1494 गांवो में 1470 गांव आबाद है तथा 24 गांव गैर आबाद है। जिल में दो शहरी क्षेत्र बांसवाड़ा एवं कुशलगढ़ है।

जिले की पंचायत समिति पीपलखूंट के 102 गॉव (18 ग्रा.पं.) नवसृजित जिला प्रतापगढ़ में सम्मिलित होने से इस जिले की सूचना में नहीं दर्शाया गया है। लेकिन जिला मानव विकास प्रतिवेदन तैयार करने हेतु समस्त सेक्टर की सूचना को इसमें जोडा गया है। जिले में बागीदौरा एवं गढी तहसील मुख्यालय को उपखण्ड़ मुख्यालय बनाये जाने की घोषणा की जा चुकी है।

बांसवाड़ा जिला एक दृष्टि मे(पीपलखूंट को छोड़कर)

क्र.सं.	मद	ईकाई	संदर्भ अवधि	विवरण
1.	क्षेत्रफल व स्थिति	वर्ग किमी.	2001 जनगणना	4536.12
2.	जनसंख्या	संख्या	2001 जनगणना	
	पुरूष	''–''	''–''	719581
	स्त्री	''–''	''–''	701020
	योग	''–''	''–''	1420601
	ग्रामीण	''–''	''–''	1313238
	शहरी	''–''	''–''	107363
	जनसंख्या घनत्व	प्रतिवर्ग किमी.	''–''	298
	साक्षरता दर	प्रतिशत	''–''	44.63
	पुरूष	प्रतिशत	''–''	60.45
	स्त्री	प्रतिशत	''–''	28.43
	ग्रामीण	प्रतिशत	''–''	41.28
	शहरी	प्रतिशत	''–''	84.27
	कुल जन संख्या में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत	प्रतिशत	''–''	7.56
	प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाएं	संख्या	''–''	974
	अनुसूचित जाति जनसंख्या	संख्या	''–''	61733
	अनुसूचित जनजाति जनसंख्या	संख्या	''–''	1013959
	जन संख्या वृद्धि दर (1991–2001)	प्रतिशत	''–''	29.94

पंचायत समितिवार जनसंख्या एवं साक्षरता दर

जनगणना – 2001

क्र.सं.	पंचायत समिति	जनसंख्या			साक्षरता दर %		
		पुरूश	महिला	योग	पुरूश	महिला	योग
1.	घाटोल	115822	114522	230344	58.70	23.10	40.90
2.	छोटी सरवन	35795	34490	70285	41.70	13.70	28.00
3.	बांसवाड़ा	108311	105416	213727	64.60	26.70	45.90
4.	आनन्दपुरी	56613	54593	111206	56.40	24.70	40.90
5.	बागीदौरा	89141	87588	176729	57.50	24.00	40.80
6.	गढ़ी	120212	117309	237521	69.30	35.60	52.60
7.	कु”ालगढ़	69946	69024	138970	48.50	18.00	33.40
8.	सज्जनगढ़	68165	66291	134456	53.10	21.10	37.30

नगरवार जनसंख्या व साक्षरता वर्श 2001

क्र.स.	उपखण्ड	नगर	जनसंख्या			साक्षरता दर %		
			पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
1.	बांसवाड़ा	न.पा. बांस.	45432	41876	87308	91.46	77.11	84.53
2.	कु”ालगढ़	“ कु”ालगढ	5200	4908	10108	93.18	77.22	85.45

पशुपालन

क्र.सं.	मद	ईकाई	संदर्भ अवधि	विवरण
1.	पशुपालन पशचिकित्सालय	संख्या	2008–09	59
	पशचकित्सा उपकेन्द्र	संख्या	2008–09	48
	जिला रोग निदान ईकाई	संख्या	2008–09	1
	भेड निष्क्रमण चैक पोस्ट	संख्या	2008–09	2
	पशधन एवं कुककुट	संख्या	2008	1709609
	कुल पशधन	संख्या	2008	1346688
	गाय/बैल/साण्ड	संख्या	2008	860789
	कुत्ता/ गधा	संख्या	2008	38023+2110
	सुअर	संख्या	2008	317
	ऊंट	संख्या	2008	1185
	भेड़	संख्या	2008	13362
	बकरी	संख्या	2008	430013
	घोडे एवं टट्टु	संख्या	2008	147
	अन्य	संख्या	2008	742
	कुल कुककुट	संख्या	2008	362921
उद्योग				
	कारखाना अधिनियम के अन्तर्गत कारखाने	संख्या	2008–09	94
	पंजिकृत कारखानो में अनुमानित दैनिक श्रमिक	संख्या	2008–09	8887

	उघोग विभाग के अन्तर्गत पंजिकृत कारखाने	संख्या	2008–09	3210
	लघुउघोगो में कार्यरत दैनिक श्रमिक	संख्या	2008–09	9447
	बडे एवं मध्यम उघोग	संख्या	2008–09	7
	बडे एवं मध्यम उघोग कार्यरत कर्मी	संख्या	2008–09	14098
	औधोगिक क्षैत्र	संख्या	2008–09	5
ऊर्जा				
	विद्युतिकुत नगर	संख्या	2008–09	2
	विद्युतिकृत ग्राम	संख्या	2008–09	1040
	कुल ऊर्जा उपभोग	लाख यूनिट	2008–09	156386
	घरेलु उपभोग	लाख यूनिट	2008–09	677.58
	व्यवसायिक एवं अस्थाई उपभोग	लाख यूनिट	2008–09	124.93
	ओधोगिक उपभोग	लाख यूनिट	2008–09	448.82
	कृषि उपभोग	लाख यूनिट	2008–09	192.72
	जल प्रदाय	लाख यूनिट	2008–09	59.18
	ऊर्जा लाईट प्रका"ा	लाख यूनिट	2008–09	13.06
	अन्य	लाख यूनिट	2008–09	47.57
	विद्युत उत्पादन केन्द्र	संख्या	2008–09	7306
यातायात एवं संचार				
	पोस्ट ऑफिस	संख्या	2008–09	281
	तार घर	संख्या	2008–09	3
	दूरभाष	संख्या	2008–09	20439
	ग्रामीण	संख्या	2008–09	10474
	शहरी	संख्या	2008–09	9965
	मोबाईल कनेक्शन बी.एस.एन.एल.	संख्या	2008–09	43049
	पंजीकृत मोटर वाहन	संख्या	2008–09	109770
	सड़को की लम्बाई	संख्या	2008–09	2958
सार्वजनिक वितरण प्रणाली				
	उचित मुल्य की दुकाने	संख्या	2008–09	655
	ग्रामीण	संख्या	2008–09	605
	शहरी	संख्या	2008–09	50

स्त्रोत :– जिला बांसवाड़ा एक दृष्टि में वर्ष 2009

प्राकृतिक संसाधनो की उपलब्धता

❖ **भू–उपयोग एवं कृषि** :–

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 453612 हैक्टर है। भूमि उपयोग का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	भूमि उपयोग का वर्गीकरण	क्षेत्रफल (हैक्टर में)	प्रतिशत क्षेत्रफल
1	जंगलात	91200	20.11
2	कृषि अयोग्य	62947	13.88
3	स्थायी चारागाह एवं अन्य गौचर भूमि	11968	2.64
4	वृक्षो के झूंड तथा बाग	115	0.03
5	कृषि योग्य, पड़त एवं बजंड़ भूमि	64012	14.11
6	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	223370	49.24
7	दुपज क्षेत्रफल	93094	20.52
8	समस्त बोया गया क्षेत्रफल	316464	69.77
9	कुल भोगोलिक क्षेत्रफल	453612	

स्त्रोत :– कलेक्टर भू–अभिलेख, बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

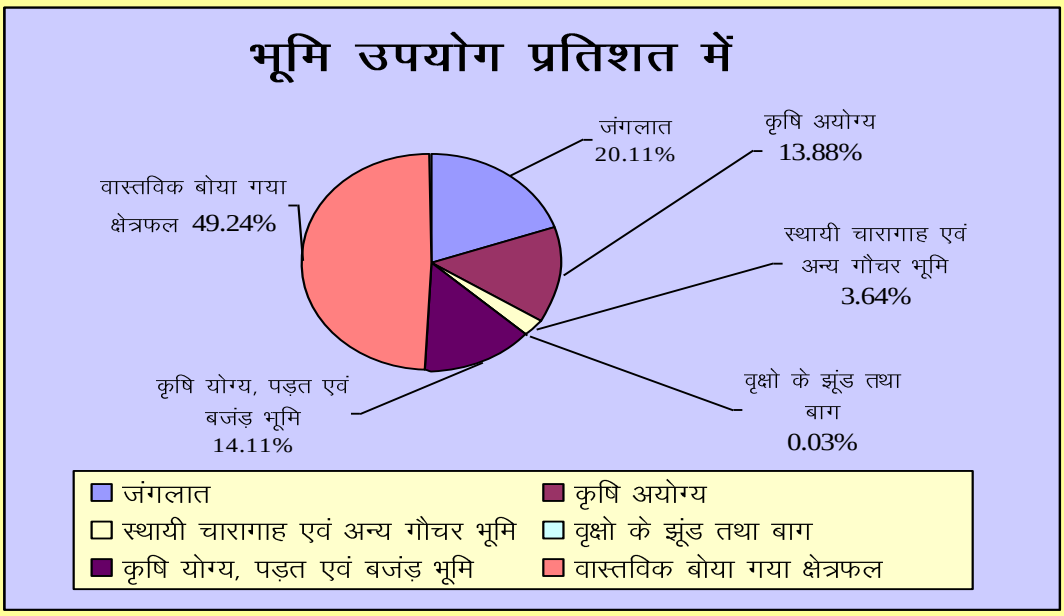

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिले का आर्थिक आधार कृषि व वन क्षेत्र है। जिले के कुल भौगोलिक क्षैत्रफल 453612 हैक्टर में से 59.51 प्रतिशत् कृषि एवं 20.10 प्रतिशत् क्षेत्र वनो के अन्तर्गत है।

❖ मृदा वर्गीकरण :–

जिले मे अधिकांश काली एवं लाल मिट्टी है। उत्पादन की गुणवत्ता के अनुसार व भू–सर्वेक्षण के आधार पर जिले की मिट्टी को 9 मृदा वर्गो में विभाजित किया गया है तथा जहां इनका फैलाव है, उन गांवों के नाम से विभिन्न वर्गो की मिट्टी का नामकरण किया गया है। वर्गीकरण मृदा वर्ग एवं उनकी विशेषता निम्नानुसार है :–

क्र.स	मृदा वर्ग	विशेषताएं	उत्पादन उपयुक्तता
1	ठीकरीया	अधिक गहरी, गहरी लाल महोन गठन, चूना रहित, अच्छा जल निकास	सभी फसलों के लिए उपयुक्त
2	पलोदरा	गहरी से अधिक गहरी, गहरी लाल, महीन गठन, अच्छा जल निकास, अधिक चूने की मात्रा, ढलान पर स्थित	सभी फसलों के लिए उपयुक्त
3	हेजामाल	अधिक गहरी, लाल भूरी, महीन गठन, चूना रहित जल निकास साधारण	मक्का, धान, दालें जौ, चना व सरसों के लिए उपयुक्त
4	सज्जनगढ़	गहरी लाल, भूरी, मध्यम गठन,चना रहित जल निकास साधारण मामूली ढलान पर स्थित	कपास, मक्का, दालें, गेहूँ, चना व सरसों के लिए उपयुक्त
5	डूंगरा	गहरी पीली एवं भूरी, मध्यम गठन चूना रहित, अच्छा जल निकास कम ढलान	लगभग सभी फसलों गेहूँ चना के लिए उपयुक्त
6	भूराकुंआ	मध्यम गहरी, गहरी भूरी एवं काली महोन गठन, चूना रहित, कम जल निकास, मध्यम ढलान	धान, मक्का, गन्ना, गेहूँ, चना के लिए उपयुक्त
7	दानपुर	अधिक गहरी भूरी एवं काली, बहुत महीन चना रहित, कम जल निकास, मामूली ढलान पर स्थित	धान, मक्का, कपास, गेहूँ चना के लिए उपयुक्त
8	आनन्दपुरी	कम गहरी पीली एवं गहरी भूरी, मध्यम गठन जल निकास अच्छा, कंकर पत्थर युक्त मध्यम ढलान	मक्का, कपास खरीफ दालों के लिए उपयुक्त
9	कोटड़ा	मध्यम गहरी, गहरा भूरा रंग, महीन गठन अच्छा जल निकास, चूना रहित, मध्यम ढलान कंकर पत्थर युक्त	मक्का कपास, खरीफ, दालें व चनें के लिए उपयुक्त

❖ **कृषि :–**

2001 की जनगणना अनुसार जिले की कुल जनसंख्या का लगभग 92 प्रतिशत् जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जिसमें से 90 प्रतिशत् जनसंख्या कृषि एवं कृषि से संबंधित कार्यकलापों में लगी हुई है। जिले में जोतो का आकार छोटा होने एवं भूमि के बंटे एवं बिखरे हुए होने के कारण कृषि उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पाती है। माही बांध के निर्माण के बाद सिंचाई सुविधाओं में क्रमशः वृद्धि होने से कृषि उत्पादन को बल मिला है। कृषको में कृषि व्यवसाय के लिए पर्याप्त रूचि पैदा हुई है तथा इसमें निरन्तर प्रगति अंकित किये जाने हेतु स्थानीय विभाग प्रयासरत है। जिले के कृषि व्यवसाय की मुख्य विशेषताएं निम्नानुसार है :–

- क्षेत्र की जलवायु शुष्क/नम है, जहां सर्दी बहुत कम पड़ती है अतः ऐसी फसले जिनके लिए कम तापमान अपेक्षित है।
- जिले की जलवायु वर्ष में तीन मक्का की फसले लेने के लिये उपयुक्त है।
- जिले की चार पंचायत समितियां घाटोल, तलवाड़ा, गढ़ी एवं बागीदौरा जो कि माही कमाण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत है उनमें कृषि उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है।
- सिंचाई सुविधाओं के बढ़ने के साथ उन्नत कृषि तकनीकी के प्रयोग की ओर कृषक उत्साहित है।
- नॉन कमाण्ड क्षेत्र में सिंचित क्षेत्र में वृद्धि हेतु सिंचाई विभाग द्वारा तालाबों का निर्माण किया जाकर सिंचित क्षेत्र में वृद्धि की जा रही है।

जिले में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल

(क्षेत्रफल हैक्टयर में)

क्र. स.	फसल/वर्ष	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009
1	चावल	45290	40589	37606	27082	28631	31942	28889	33226	35829	31526
2	ज्वार	1005	838	996	1123	1127	698	688	566	360	454
3	बाजरा	41	83	107	51	58	50	98	91	124	94
4	छोटे धान	5427	4919	5674	6261	6141	5526	5203	4950	4677	4284
5	गेहूँ रबी	60696	35623	55509	49390	69513	77545	82190	85835	90356	76116
6	मक्का	116578	114863	123668	134222	140568	134222	64710	141078	138647	129454
7	जौ	1400	1085	1080	1380	1316	1748	1221	1298	1246	1026
8	चना	30512	10633	9983	8725	14611	15070	14021	15118	15775	12386
9	अन्य दाले खरीफ	33583	30134	27339	24293	23558	20115	18207	15451	15110	12256

10	तुअर	5828	7544	6974	6082	6254	7000	7812	7079	6571	6199
11	मुंगफली	67	64	88	58	139	179	227	224	219	239
12	अरण्डी	28	60	47	11	14	18	14	1	1	4
13	तिल	308	533	577	729	939	906	763	569	486	455
14	अलसी	27	11	10	24	24	21	25	21	16	35
15	सोयाबीन	10350	10853	9435	8324	8126	13449	15874	17701	22411	23953
16	राई और सरसो	44	54	59	39	66	76	79	88	86	70
17	तारामीरा	73	14	56	71	38	51	53	36	45	33

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि जिले में प्रमुख फसलों के अन्तर्गत सोयाबीन का क्षेत्रफल जो कि वर्ष 2000 में 10350 हेक्टयर था, वर्ष 2009 में बढकर 23953 हैक्टयर हो गया है। चावल के क्षेत्र में 45290 हैक्टयर से घट कर 31526 हैक्टयर रह गया है। गेहूँ की फसल का कुल क्षेत्रफल वर्ष 2000 में 60696 से बढ़कर वर्ष 2009 में 79116 हैक्टयर हो गया है।

❖ मानव संसाधन :–

जनसंख्या :–

2001 की जनगणनानुसार जिले की कुल जनसख्या 1420601 है जिसमें 719581 पुरूष एवं 701020 स्त्रियां है। जिला जनजाति बाहुल्य है जिसमें मुख्यतः भील, डामोर, मीणा, गरासिया जनजाति के लोग निवास करते है। कुल जनसंख्या में 1013959 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति एवं 61733 व्यक्ति अनुसूचित जाति के है जो कि कुल जनसंख्या का क्रमशः 71.37 प्रतिशत् एवं 4.34 प्रतिशत् है। जनगणनानुसार जनसंख्या का घनत्व 298 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी है। जिले की जनसंख्या पिछले दशको में तीव्र गति से बढ़ी है। जिले की जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2001 में 29.94 प्रतिशत् रही है। जनसंख्या वृद्धि का पिछले दशको का विवरण निम्नानुसार है :–

जनगणना वर्ष	जनसंख्या	दशकीय प्रतिशत मे अन्तर	1901 से प्रतिशत में अन्तर
1901	165350	-	0
1911	187468	+ 13.38	+ 13.38
1921	219524	+ 17.10	+ 32.76
1931	260670	+ 18.34	+ 57.65
1941	299913	+ 15.05	+ 81.38
1951	356559	+ 18.89	+ 115.64
1961	475245	+ 33.29	+ 187.42
1971	654586	+ 37.74	+ 295.88
1981	886600	+ 35.44	+ 436.20
1991	1155600	+ 30.34	+ 598.88
2001	1501589	+ 29.94	+ 808.12

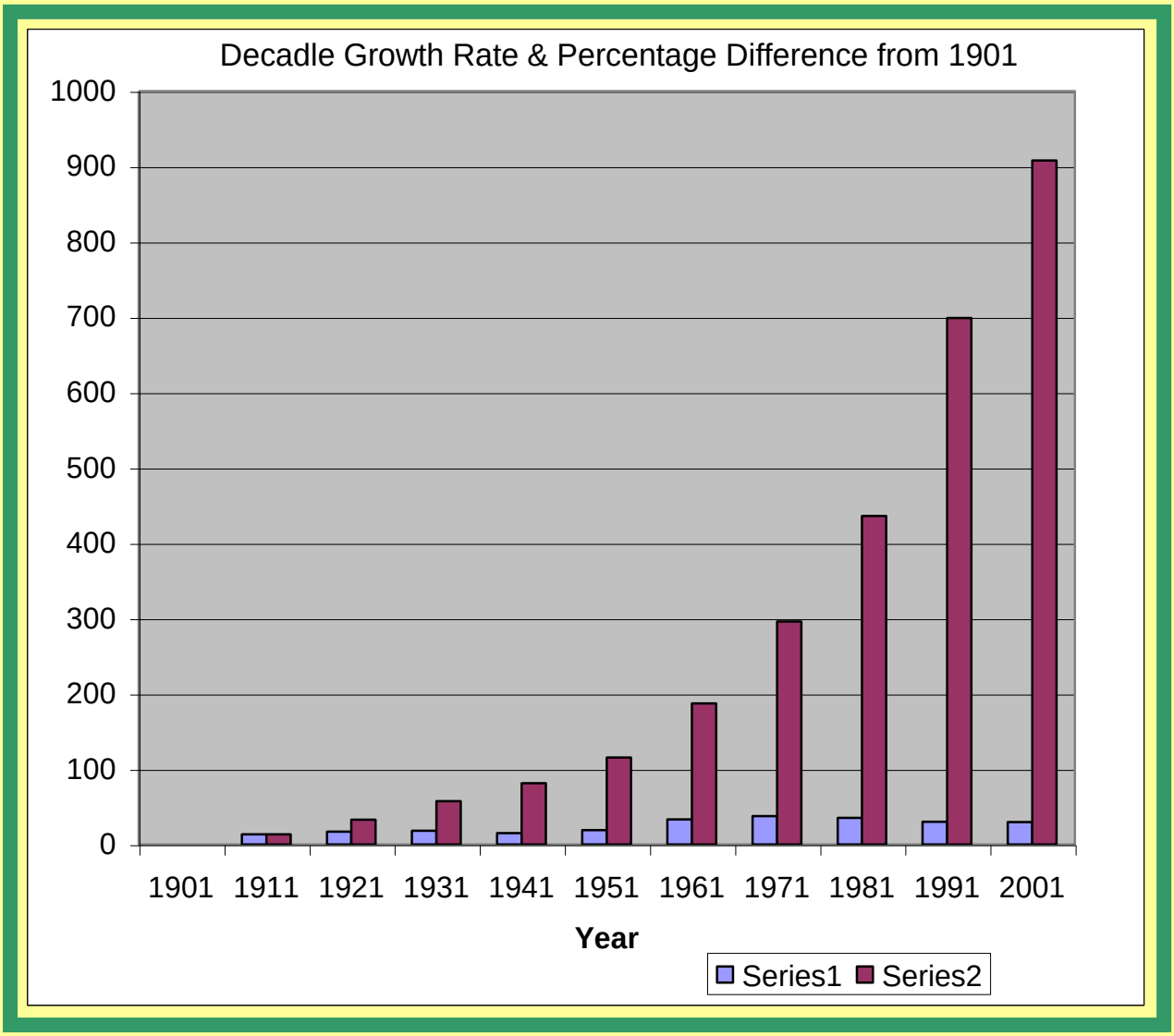

❖ तहसीलवार क्षैत्र, ग्राम, जनसंख्या, साक्षरता प्रतिशत का विवरण :–

क्र. सं	उपखण्ड	तहसील	क्षैत्रफल (वर्ग किमी.)	ग्राम संख्या	जनसंख्या			साक्षरता %		
					योग	पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री
1	घाटोल	घाटोल	775.88	236	230344	115822	114522	37.67	54.30	20.86
2	बांसवाड़ा	गढ़ी	706.72	194	247468	125156	122312	53.79	70.15	37.19
3	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा	1149.08	354	371320	189538	181782	52.36	67.32	36.83
4	कुशलगढ़	बागीदौरा	858.21	308	287935	145754	142181	40.87	57.06	24.27
5	कुशलगढ़	कुशलगढ़	1046.23	402	283534	143311	140223	37.33	52.49	21.75
	योग :–		**4536.12**	**1494**	**1420601**	**719581**	**701020**	**44.63**	**60.45**	**28.43**

नोट :– घाटोल तहसील के समंकों में पीपलखूंट के समंक घटा दिये गये है।

❖ नगरपालिका एवं पंचायत समितिवार, ग्राम, ग्राम पंचायत, एवं जनसंख्या का विवरण :–

क्र. सं	पंचातय समिति/ नगरपालिका	पंचायत समिति अन्तर्गत		जनसंख्या		
		राजस्व ग्रामों संख्या	ग्राम पंचायत संख्या	कुल	अनुसुचित जाति	अनुसुचित जनजाति
1	बांसवाड़ा	244	55	213727	8043	154933
2	गढ़ी	194	55	237521	15879	127998
3	घाटोल	236	53	230344	11077	173515
4	छोटी सरवन	110	18	70285	2486	63225
5	कुशलगढ़	214	29	138970	1369	131281
6	सज्जनगढ़	188	30	134456	4024	120281
7	बागीदौरा	172	41	176729	8983	135252
8	आनन्दपुरी	136	26	111206	2228	96132
	योग ग्रामीण क्षैत्र	**1494**	**307**	**1313238**	**54089**	**1002617**
1	बांसवाड़ा	0	0	87308	5831	8447
2	कुशलगढ़	0	0	10108	661	1453
3	परतापुर	0	0	9947	1152	1442
	योग शहरी क्षैत्र	**0**	**0**	**107363**	**7644**	**11342**
	महा योग	**1494**	**307**	**1420601**	**61733**	**1013959**

❖ **अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या :–**

जिला जनजाति बहुल है, कुल जनसंख्या का 71.37 प्रतिशत हिस्सा जनजाति का एंव अनुसूचित जाति की जनसंख्या कुल का 4.34 प्रतिशत है। जिले की 92.44 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षैत्रों में निवास करती है जबकि अनुसूचित जाति की अधिकांश जनसंख्या शहरी क्षैत्र में निवास करती है। जनजाति की बहुलता के कारण ही सम्पूर्ण जिले को जनजाति उपयोजना क्षैत्र में सम्मिलित किया जाकर त्वरित विकास के प्रयास किये जा रहे है।

पिछले दशकों में अनुस्चित जनजाति की जनसंख्या म निरन्तर वृद्धि अंकित की गई है।

वर्षवार जनजाति जनसंख्या का विवरण

वर्ष	जनसंख्या	
	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1951	9128	215624
1961	21700	297601
1971	24774	477369
1981	41881	643966
1991	57813	849050
2001	61733	1013959

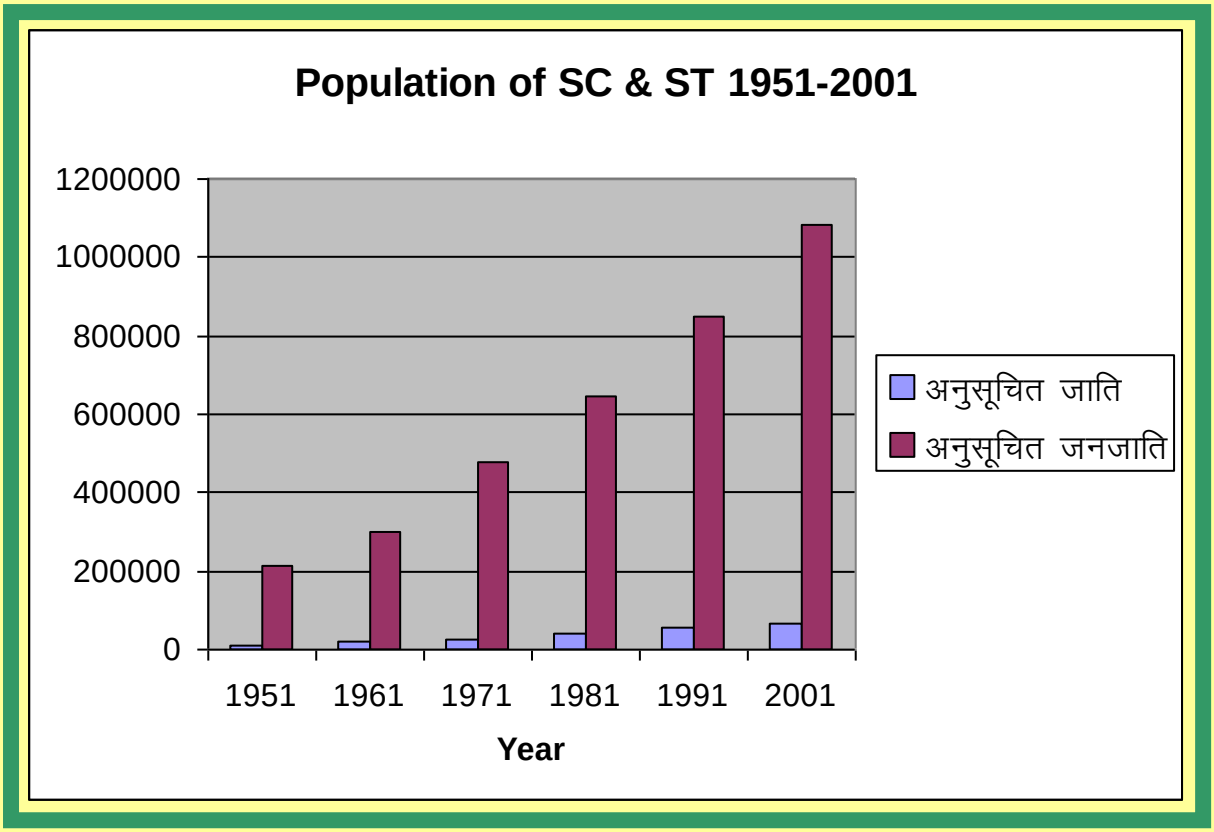

वर्षा की स्थिति :–

राजस्थान की दक्षिणी सीमा पर स्थित इस जिले की जलवायु उत्तर व पश्चिम के रेगिस्तानी प्रदेशो की जलवायु की अपेक्षा बहुत कुछ नम है। जिले में औसत अधिकतम् तापमान 45.00 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम् 10.0 डिग्री सेल्सियस और औसत तापमान 26.00 डिग्री सेल्सियस रहता है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 930 मिलीमीटर है। वर्ष 2008 में वास्तविक वर्षा 561.85 मिलीमीटर हुई है। जिला राज्य के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रो में से एक होने के कारण इसे राजस्थान का चेरापुंजी कहा जाता है। विगत वर्षो की वास्तविक वर्षा का विवरण निम्नानुसार है :

क्र.स.	वर्ष	वर्षा मी.मी.
1	1990	1181
2	1991	818
3	1992	706
4	1993	836
5	1994	1477
6	1995	738
7	1996	1174
8	1997	968
9	1998	549
10	1999	661
11	2000	649
12	2001	491
13	2002	644
14	2003	857
15	2004	802
16	2005	807.10
17	2006	1805.00
18	2007	1278.00
19	2008	561.85

स्त्रोत :– कलेक्टर(भू.अ.), बांसवाड़ा।

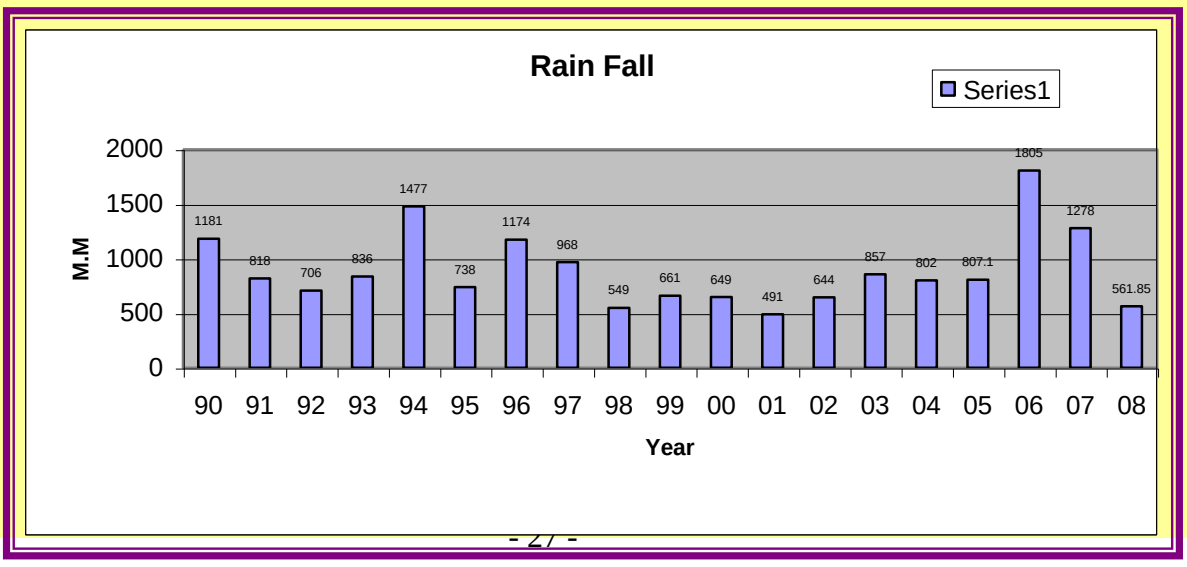

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिले में औसत वार्षिक वर्षा 900 मि.मि. है लेकिन वर्ष 1990, 1994, 1996, 1997, 2006 एवं 2007 को छोड़कर शेष वर्षों में औसत वर्षा काफी कम रही है।

❖ **पशुधन संपदा :–**

जैसा कि विदित है कि जिले की लगभग 90 प्रतिशत् जनसंख्या ग्रामीण क्षैत्र मे निवास करती है तथा इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि के साथ ही पशुपालन का व्यवसाय भी कृषकों द्वारा किया जाता है।

वर्ष 2007 की पशुगणना के आधार पर पशु सम्पदा

नाम	किस्म पशु	संख्या		योग
		नर	मादा	
गाय	विदेशी जर्सी	21	85	106
	हालेस्टींन फेजीयन	9	52	61
	अन्य	30	12	42
	संकर जर्सी	520	2195	2715
	संकर एच.एफ.	95	460	555
	अन्य संकर	1063	1576	2639
	देशी गीर	25934	17180	43114
	काकरेज	7733	4782	12515
	मालवी	9288	6052	15340
	अवर्गीकृत	344252	225523	569775
भैस	मुर्रा	3821	27517	31338
	सुरती	2769	17430	20199
	अन्य	701	4413	5119
	अवर्गीकृत	23245	196498	219743
भड	विदेशी	2	3	5
	सोनाडी	269	813	1082
	अन्य	2201	10094	12294
बकरी		81485	379151	460636
घोडा		106	33	139
गधा		1443	801	2244
ऊंट		618	588	1206
सुअर		189	128	317
स्वान		26381	18284	39665
खरगोश		726	3	729

स्त्रोत :– पशुगणना 2007

पशुपालन एवं मुर्गी पालन आदिवासियों का पारम्परिक व्यवसाय है। प्रत्येक आदिवासी परिवार में पशु पाले जाते है जो उनकी आजीविका के लिए सहायक होते है। जिले का पशुधन अत्यन्त ही दर्बल एव अस्वस्थ्य है जिसकी वजह से दुग्ध एव अन्य उत्पादन भी अत्यन्त ही कम है। जिले में सामान्य मावली नस्ल के छोटे पशु पाये जाते है जो कि पौष्टिक पशुखाद्य के अभाव में दर्बल है। जिले की कृषि जोतों के छोटे एवं बिखरे होने के कारण पशुपालन को पूरक व्यवसाय के रूप में बढाना आवश्यक है, इस प्रयोजन हेतु वर्तमान पशुधन में गुणात्मक सुधार एवं पशुपालन चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार किया जाना वांछनीय है ।

जिले में उपलब्ध चिकित्सा संस्थान का विवरण

क्र.सं.	संस्था	संख्या
1	पशु चिकित्सालय	59
2	जिला रोग निदान ईकाई	1
3	पशु चिकित्सा उपकेन्द्र	48
4	भेड़ निष्क्रमण चैक पोस्ट	2
	योग :–	110

स्त्रोत :– उप निदेशक पशुपालन, बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

❖ **वन सम्पदा** :–

राष्ट्रीय स्तर पर कुल भौगोलिक क्षैत्रफल के 30 प्रतिशत भू भाग पर वन है। इस दृष्टि से जिले की स्थिति ठीक नही हैं लेकिन राज्य स्तर से तुलना करने पर यह ठीक हैं। जिले में यद्यपि 20 प्रतिशत् से भी अधिक क्षेत्र वनों के अन्तर्गत है, परन्तु उसमें से केवल 30 प्रतिशत क्षेत्र में ही घने वन है। शेष परा क्षैत्र नग्न पहाड़ियॉ या परिभ्रंषित वनों के अन्तर्गत है जिसका विकास किया जाना अपेक्षित है। वन आदिवासियों के जीवन निर्वाह का मुख्य आधार है। कृषि कार्य में वर्ष भर रोजगार उपलब्ध नहीं होता है, अतः वनों से लघुवन उपज का संग्रह कर, ये लोग जीविकोपार्जन करते है।

जिले के वनों म मुख्य रूप से बांस, तेन्दु के पत्ते, गोन्द, शहद, आंवला आदि का प्रचुरमात्रा में उत्पादन होता है।

जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की तुलना में पंचायत समितिवार वन क्षेत्रफल का मानचित्र वर्ष 2008–09 का निम्नानुसार है :–

क्र.स.	पंचायत समिति	कुल क्षेत्रफल (हैक्टयर)	वन के अन्तर्गत क्षेत्रफल हैक्टयर)	वन क्षेत्रफल प्रतिशत् में
1	बांसवाड़ा	76571	17439.06	22.77
2	गढ़ी	70672	3039.65	4.30
3	घाटोल	77588	20162.58	25.98
4	पीपलखूँट	90982	31514.43	34.63
5	कुशलगढ़	65139	21311.848	32.71
6	सज्जनगढ़	39484	6891.10	17.45
7	बागीदौरा	52129	16741.95	32.10
8	आनन्दपुरी	33692	6566.15	19.48
	योग	506257	123666.768	24.42

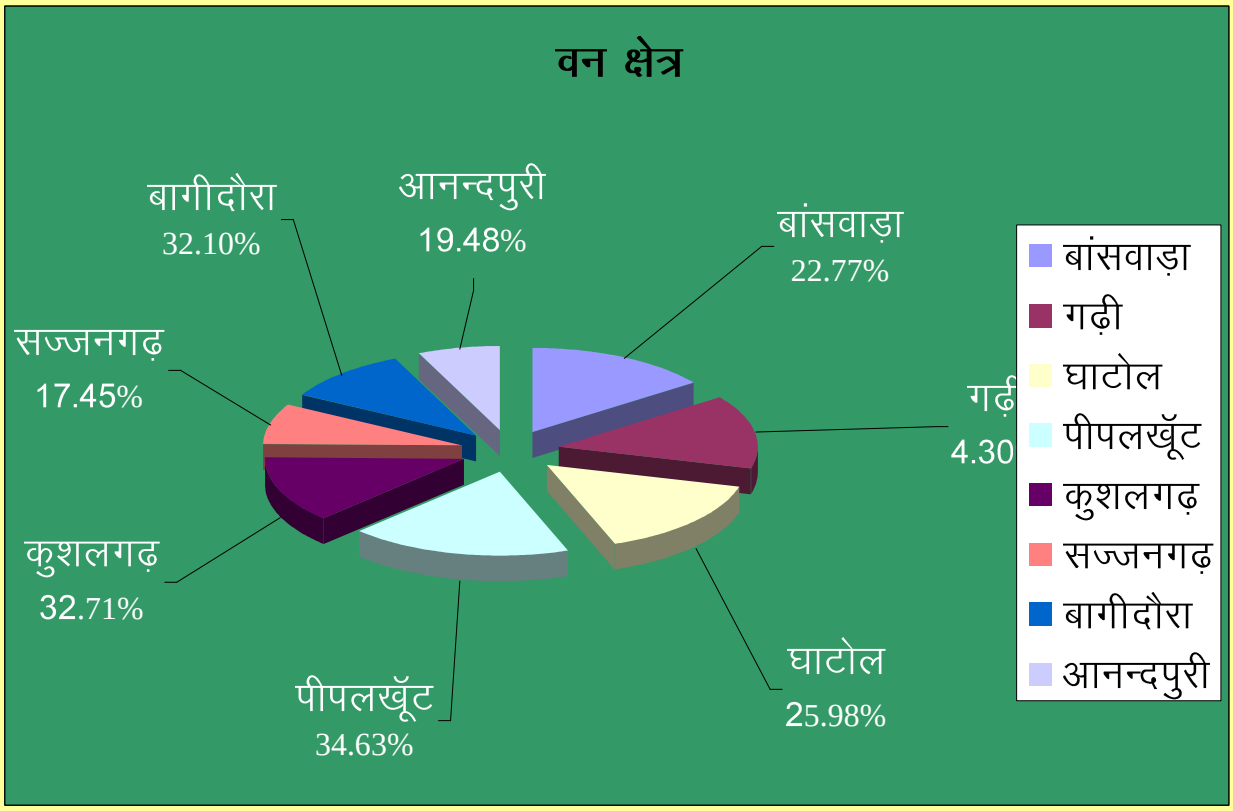

बांसवाड़ा जिला प्रमुख रूप से आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जिनकी जीवनचर्या एवं संस्कृति वनो से गहराई से जुड़ी हुई है। वनो की लगातार हो रही कमी से इस क्षेत्र में वन संस्कृति से जुड़े लोगो की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। जिले में वन क्षैत्र की दृष्टि से पंचायत समिति गढी, सज्जनगढ तथा आनन्दपुरी

की स्थिति अच्छी नही हैं। शेष पंचायत समितियो में वन क्षैत्र जिले के वन क्षैत्र से अधिक है।

❖ **मत्स्य :–**

जिले में माही एवं कडाना (बेक वाटर) जैसे बड़े जलाशयों के अतिरिक्त लगभग 540 से अधिक छोटे बड़े तालाब है, जिनका अनुमानित जल क्षैत्र 20000 हेक्टर के लगभग है। तालाबों में वर्ष के अधिकांश महिनों मे पानी भरा रहता है। जिले में प्रचुर मात्रा में जल राशि उपलब्ध होने से मत्स्य पालन की प्रचुर संभावना है। मत्स्य पालन व्यवसाय आदिवासियो का पारम्परिक व्यवसाय भी है, लेकिन इसम पुरानी पद्धति अपनाई जा रही है। इसको व्यावसायिक रूप देने हेतु निम्न सुविधायें प्रदान करना/कराई जा रही है :–

(1) आदिवासी मछुआरों को मत्स्य आखेट का वैज्ञानिक प्रशिक्षण
(2) सभी जलाशयों में मत्स्य बीज समय पर डालना
(3) नई नावें व जाल उपलब्ध कराना
(4) मछली विपणन की समुचित व्यवस्था करना

पांचवी पंचवर्षीय योजना से जिले में मत्स्य पालन को बढ़ाने लिए विभिन्न कार्यक्रम चालू किये गये। आदिवासियों को ठेकेदारों के शोषण से मुक्त कराने, समुचित रोजगार उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने 1997 में निजी ठेकेदारी प्रथा समाप्त कर उसके स्थान पर आदिवासी मछुआरों की सहकारी समितियां गठित करने तथा तालाब आंवटित करने का निर्णय लिया गया।

1981 में उपयोजना क्षेत्र में अ एवं ब श्रेणी के तालाबों का आंवटन राजस संघ को दिये जाने का निर्णय लिया गया, तदानुसार आंवटन कडाना व मॉही बांध में आदिवासी मछुआरों की सहकारी समिति के माध्यम से मत्स्याखेट जारी रखा गया।

वर्तमान में जिले क दो बड़े जलाशय माही बजाज सागर एवं कडाना बेक वाटर के आस–पास बसे हुए आदिवासी परिवारों को रोजगार प्रदान करने की दृष्टि से राजस संघ उदयपुर को टोकन मनी पर दीर्घ अवधि के लिये आवंटित है। राजस संघ मत्स्य विभाग के सहयोग से जिले के आदिवासी परिवारों को मत्स्य पालन एवं आखेट का समुचित प्रशिक्षण देकर रोजगार उपलब्ध करा रहा है। जिले के जलाशयों में मत्स्य बीज आपूर्ति हेतु दो मत्स्य बीच उत्पादन फार्म भीमपुर एवं सागडौद में स्थित है। जिले की पंचायतों के अधीन जलाशयों मे मत्स्य गतिविधियों के सफल संचालन हेतु मत्स्य प्रशिक्षण, जलाशय आंवटन,

मत्स्य ठेके, अभिकरण की योजनानुरूप वित्तीय सहायता आदि के लिए कार्यालय को जिला परिषद में स्थानान्तरित किया गया है।

❖ **जल सम्पदा :–**

वर्ष 1982–83 तक जिलें में सिंचाई के मुख्य साधन तालाब व कुएँ ही थे जो अत्यन्त सीमित क्षैत्र के लिए ही थ। माही बांध के निर्माण होने के पश्चात् वर्तमान मे नहरें सिंचाई का मुख्य स्त्रोत बन गई है। जिले की आठ पंचायत समितियों में से चार नॉन कमाण्ड क्षैत्र (माही कमाण्ड क्षैत्र से बाहर) पीपलखूँट, आनन्दपुरी, कुशलगढ़ तथा सज्जनगढ़ में अभी भी सिंचाई सुविधाओं(नहरों) का अभाव है तथा आने वाले वर्षो में भी इन क्षैत्रों को लघु सिंचाई साधनों पर निर्भर रहना पडेगा।माही नदी जिले की मुख्य नदी है जो समूचे जिले की प्राकृतिक सीमा बनाती है। वर्षो तक अभिशाप के रूप में जाने जानी वाली यह नदी अब जिले के लिए वरदान साबित होकर इस नदी पर निर्मित बांध से सिंचाई सुविधा प्रदान की गई है।

माही नदी की अनास, हिरण, चाप आदि सहायक नदियॉ है। साथ ही अन्य छोटे–बड़े नदी नाले जो जिले में सिंचाई क्षमता मे वृद्धि के साथ ही पेयजल समस्या के निवारण में भी सहायक है। साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षैत्रफल का विवरण वर्ष 2008–09 निम्नानुसार है :–

साधन	कुल सिंचित क्षैत्रफल	प्रतिशत
नहरों से	56256	65.89
तालाबों से	1732	2.03
कुओं से	12752	14.94
नलकूप से	3307	3.87
अन्य साधनों से	11334	13.27
योग :–	**85381**	

स्त्रोत :– जिला कलक्टर भ्–अभिलेख, बांसवाड़ा

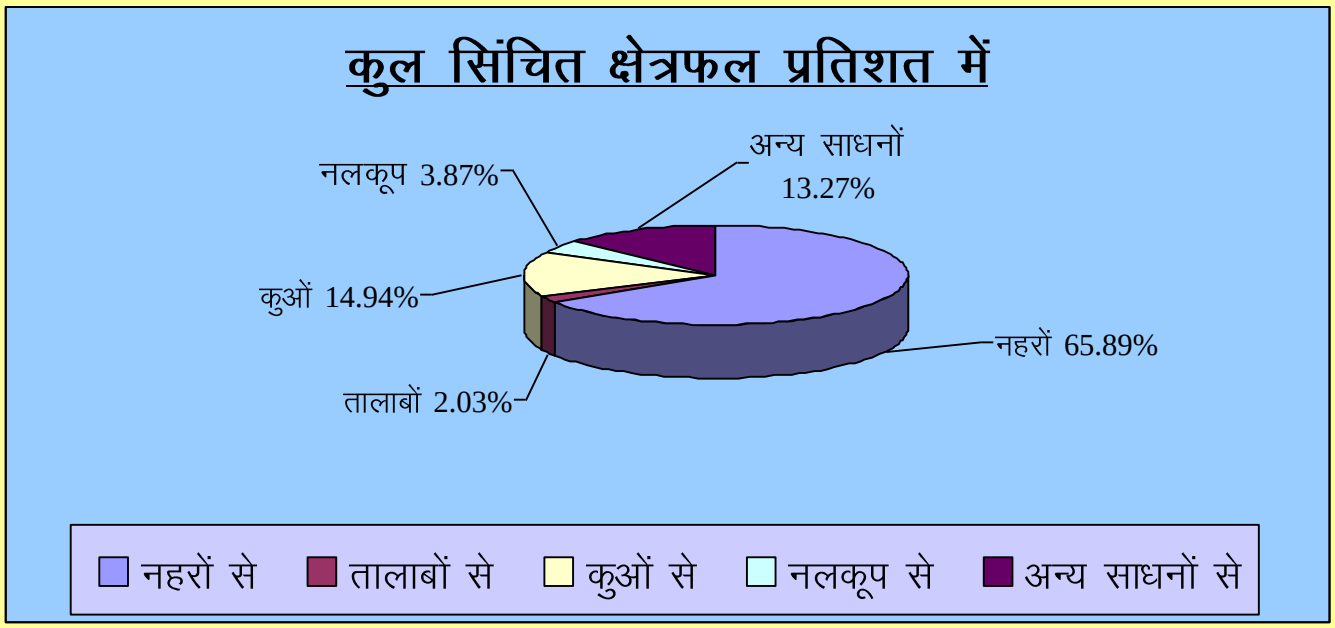

इसी क्रम में वागड़ प्रदेश में बहने वाली गंगा रूपी माही नदी ने एक ऐसी आधुनिक सभ्यता को जन्म दिया जो आदिवासियों के विकास की गाथा कहती है। वर्ष 1971 में योजना आयोग भारत सरकार द्वारा अनुमोदित अन्तर्राज्यीय बहुउद्देशीय एवं बहुआयामो माही नदी पर बना बांध अभियान्त्रिक एवं तकनीकी दृष्टि से उत्कृष्ठ विकास स्तम्भ है। इसने राज्य के जनजाति बाहुल्य अत्यन्त पिछड़े सुदूर दक्षिणी भू–भाग में विकास एवं उत्थान के चिर स्थायी आयाम स्थापित कर दिये है।

माही बांध के भराव क्षेत्र का पानी बांसवाड़ा के लगभग 3 किमी पर बने कागदी पिक–अप–वियर से भराव कर उससे दो मुख्य नहरो यथा दाई मुख्य नहर एवं बाई मुख्य नहर जिसकी लम्बाई क्रमशः 72 किमी व 40 किमी है से वितरण प्रणाली के माध्यम से जिले के काश्तकारो को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

इस प्रकार जिले के कुल सिचित क्षैत्रफल में माही परियोजना की नहरों से सिंचाई का प्रति"ात 57 के आस पास हैं अर्थात यह जिले में मुख्य सिंचाई का साधन साबित हो रहा हैं। इससे कृषको की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

जिले में लघु सिंचाई अन्तर्गत निर्मित तालाब/बांध 80 हैक्टयर एवं इससे अधिक सिंचित क्षेत्र/क्षमता के कुल 141 तालाबों को पंचायती राज संस्थाओं को हस्तान्तरित किया गया है।

स्थानीय प्रशासनिक ढांचा

जिले में जिला मुख्यालय पर जिला परिषद, ब्लॉक स्तर पर 8 पंचायत समितियां एवं ग्राम स्तर पर 307 ग्राम पंचायतें तथा शहरी क्षेत्र में 2 नगरपालिकायें है। जिसका विवरण निम्नानुसार है।

ग्रामीण क्षेत्र

पंचायत समिति/ग्राम पंचायतों का विवरण								
बांसवाड़ा	**गढी**	**घाटोल**	**छोटी सरवन**	**कुशलगढ़**	**सज्जनगढ़**	**बागीदौरा**	**आनन्दपुरो**	**पीपलखूंट**
खेरड़ाबरा	खोड़न	रुजिया	घोड़ी तेजपुर	झीकली	खुंटा चतरा	खोडालीम	बरजडिया	घंटाली
खेडावडलपाडा	खेरन का पाड़ा	रुपजी का खेडा	खजुरी	ठूम्मठ	खुन्दनी हाला	खुंटा मछार	बड़लीया	ठेचला
झरनिया	खेडा	घाटोल	बारी	बावलियापाड़ा	खुटा जीवा	खुटी नारजी	काजलिया	बोरी
झांतला रामोर वड़ली	झड़स	खमेरा	कोटडा	बस्सी	इटाला	खुटा गलिया	कानेला	कालीघाटी
झुपेल	इटाउवा	खेरवा	कटुम्बी	बड़ी सरवा	बावडीपाडा	ढालर	कड़दा	कुपडा
बरवाला राजिया	बखतपुरा	बांसडी खेड़ा	मकनपुरा	बड़वास छोटी	कसारवाड़ी	झांझरवा	मड़कोला मोगजी	केशरपुरा
बोरिया	बोरी	बामन पाड़ा	मुलिया	बडवास बडी	महुडी	इटाउवा	मुन्द्री	केलामेला
बोर खाबर	बेड़वा	बाड़गुन	हरनाथपुरा	कलिंजरा	मस्का कलन	बारीगामा	मेना पादर	पीपलखूंट
बोर खेडा	बजवाना	बोरपी खांटा	सरवन	काकनवानी	मछारासाथ	बोड़ीगामा	चिकली तेजा	परथीपुरा
बोरवट	करनपुर	बोरदा	छायन बडी	कोटडा	मुनिया खूंटा	बागीदौरा	भलेर भोदर	रोहनिया
बड़वी	कोटडा	बस्सी आड़ा	दानपुर	कुशलपाड़ा	मगरदा ड़ामरा साथ	बालावाड़ा	पाटिया गलिया	सोड़लपुर
बदरेल खुर्द	कोटडा बडा	बड़लिया	दनाक्षरी	महुड़ा	हिम्मतगढ़	बडोदिया	पाट नवाधरा	सेमलिया
कटियोर	केशरपुरा	बडाना	वागतालाब	मोहकमपुरा	बिलडी	बुड़वा	रतनपुरा	डूंगलावानी
कडेलिया	मादलदा	कण्ठाव	फेफर	मुन्दड़ी	भुराकुआ	कलिंजरा	सुन्द्राव	छरी
कुण्डला	मोर	कानजी का गढ़ा	जहांपुरा	बिजोरी कलन	पाली कलन	करजी	डोकर	जामली
कुंवाला विथ वांटा	मोटी बस्सी	काली मगरी	नादिया	टिमेड़ा बडा	राठधनराज	मोटी टिम्बी	उदयपुरा बडा	जेतलिया
कुपड़ा	मेतवाला	कुवानिया	नापला	भगतपुरा	रोहनिया लक्ष्मणसिंह	मुन्ना डूंगर	छाजा	नायन
कुशलपुरा	मलाना	मोरड़ी निचली	गागरवा	पोटलिया	शक्करवाडा	पिण्डारमा	वरेठ	टामटिया
केशरपुरा	बिलोदा	मोटा टाण्ड़ा		पाटन	सातसेरा कलन	हाण्डी	चोरड़ी	
महेशपुरा	टिमुरवा	मोटागांव		रामगढ़	सागवा	पीपलोद	चान्दरवाड़ा	
माकोद	भीमपुर	मुंगाणा		सारन	सज्जनगढ़	पाटन	फलवन	

मसोटिया	भीमसौर	मुड़ासेल		सब्बलपुरा	डूंगरा खुर्द	राखो	नाहरपुरा	
ठिकरिया	भगोरा	ठिकरिया चन्द्रावत		उकाला	डूंगरा कलन	राम का मुन्ना	टामटिया	
सियापुर	पाराहेड़ा	बिछावाड़ा		डूंगरीपाडा	ताम्बेसरा	रोहनिया	आमलिया आम्बादरा	
चिड़ियावास ा	पालोदा	मियासा		छोटी सरवा	जालिमपुरा	रोहनवाडी	ओबला	
निचला घंटाला	पनासी छोटी	चिरावाला गढ़ा		वसूनी	टाण्डी कलन	शेरगढ़	आनन्दपुरी	
भापोर	राठड़िया पाड़ा	भोयर		चरकनी	टाण्डा मंगला	सालिया		
भचड़िया	रोहीड़ा	भुवासा		चोखवाड़ा	टाण्डा रत्ना	सुवाला		
पाडी कलन	रैयाना	भूंगड़ा		लोहारिया	अन्देश्वर	सेण्ड़ नानी		
सामरिया	सरेडी बडी	भगोरों का खेड़ा			गोदावाड़ा नारेंग	सल्लोपाट		
सालिया	सरेडी छोटी	पाडला				उम्मेदगढ़ी		
सागड़ोद	साकरिया	पडो गोर्धन				छींच		
सुरपुर	सारनपुर	पडोली राठौड				चोखला		
सुरवानिया	सागवाड़िय ा	पडाल बडी				जाम्बुड़ी		
सुन्दनपुर	सुन्दनी	पडाल छोटी				नौगामा		
सेवना	उम्बाडा	संरोदिया				नागावाड़ा		
उमराई	डडूका	सवनिया				नाल		
उपला घंटाला	चौपासांग	सेनावासा				टाण्ड़ी नानी		
छापरिया	जोलाना	डांगल				गमानिया हमीरा		
देवलिया	नाहली	डूंगरिया				गांगड़ तलाई		
घलकिया	नवाघरा	डूंगर				लंकाई		
देवगढ़	अरथुना	दुदका						
वीरपुर	आंजना	देवदा						
बडगांव	टामटिया राठोड़	देलवाड़ा लोकिया						
चाचाकोटा	आमजा	चरड़ा						
तेजपुर	आसोडा	चन्दुजी का गढ़ा						
तलवाड़ा	आसन	जगपुरा						
नवांगांव	ओड़वाड़ा	नरवाली						
नल्दा	पादेडी	अमरथुन						
आबापुरा	अडोर	अमरसिंह का गढ़ा						
टामटिया	गढ़ी	गोलियावाड़ा						

गणाऊ	गोपीनाथ का गढ़ा	गोरछा						
गामडी	लोहारिया	गनोड़ा						
लीमथान	लसाड़ा							
लोधा	परतापुर							
55	55	53	18	29	30	41	26	18

शहरी क्षेत्र

क्र.सं.	नगरपालिका
1	बांसवाड़ा
2	कुशलगढ़

73वें एवं 74वें संवैधानिक संशोधन के पश्चात् पंचायती राज संस्थाओं एवं स्थानीय निकाय विभागों को हस्तान्तरित विषयों से सम्बन्धित विकेन्द्रीतकृत योजना निर्माण के तहत ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम सभाओं एवं शहरी क्षेत्रों में वार्ड सभा द्वारा योजना निर्माण में महत्वपूर्ण दायित्व निर्वहन का कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की विभिन्न योजनाओ की ग्राम स्तरीय योजनाओ के निर्माण हेतु ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायतों द्वारा वर्ष के दौरान 4 ग्राम सभायें कम से कम आयोजित की जाती है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र की योजनाओं के निर्माण हेतु वार्ड सभायें आयोजित की जाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243ZD विकास योजना प्रक्रिया को मजबूत करने के लिये जिला आयोजना समिति के गठन का प्रावधान किया गया है। जिला आयोजना समिति जिले में ग्राम पंचायतों एवं नगरपालिकाओं द्वारा तैयार की गई योजनाओं का विकासोन्नमुख समेकन कार्य करती है।

जिले में नागरिक प्रशासन

जिले में नागरिक प्रशासन की व्यवस्था हेतु जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जो कि जिला मुख्यालय पर पदस्थापित है जिनके अधीन उपखण्ड़ अधिकारी, तहसीलदार, भू–अभिलेख निरीक्षक एवं पटवारी पदस्थापित है। जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	विवरण	नाम					कार्यालयाध्यक्ष	
1	जिला	बांसवाडा					जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट	1
2	उपखण्ड़	बांसवाड़ा	गढी (नवसृजित)	घाटोल	कुशलगढ़	बागीदौरा (नवसृजित)	उपखण्ड़ अधिकारी	3
3	तहसील	बांसवाड़ा	गढी	घाटोल	कुशलगढ़	बागीदौरा	तहसीलदार	5
4	उपतहसील				सज्जनगढ	आनन्दपुरी	नायब तहसीलदार	2
5	भू–अभिलेख निरीक्षक वृत्त	बांसवाड़ा	गढी	घाटोल	कुशलगढ़	बागीदौरा	भू–अभिलेख निरीक्षक	
		तलवाडा	सरेडी बडी	गनोडा	छोटी सरवा	बडोदिया	भू–अभिलेख निरीक्षक	
		सालिया	मेतवाला	खमेरा	टिमेडा बडा	शेरगढ़	भू–अभिलेख निरीक्षक	
		कटुम्बी	जोलाना	भूगडा	सज्जनगढ	आनन्दपुरी	भू–अभिलेख निरोक्षक	
		आबापुरा	अरथूना	जगपुरा	डूंगराछोटा	चांदरवाडा	भू–अभिलेख निरीक्षक	
		दानपुर			ताम्बेसरा	गांगडतलाई	भू–अभिलेख निरीक्षक	28
6	पटवार मण्डल	बांसवाड़ा	गढी	घाटोल	कुशलगढ़	बागीदौरा	पटवारी	
		आबापुरा	आंजना	वाडगुन	बावडी निनामा	कलिंजरा	पटवारी	
		बोरखाबर	अरथूना	भूंगडा	बडी सरवा	नौगामा	पटवारी	
		बोरिया	वखतपुरा	खैरवा	वडला की रेल	सुवाला	पटवारी	
		खान्दू	बस्सी मोटी	कुवानिया	बस्सी	बालावाडा	पटवारी	

		खेडा	ईटाऊवा	बस्सी आडा	छोटी सरवा	बारीगामा	पटवारी	
		महेशपुरा	केसरपुरा	भुवासा	कोटडा	बडोदिया	पटवारी	
		नल्दा	कोटडा	बिछावाडा	कुशलापाडा	बोडीगामा	पटवारी	
		वीरपुर	ओडवाडा	चन्दूजी का गढा	महुडा	छींछ	पटवारी	
		भापोर	पादेडी	चिरावाला गढा	मोहकमपुरा	चौखला	पटवारी	
		कांकनसेजा	भगोरा	गनोडा	पाटन	करजी	पटवारी	
		खेरडाबरा	बिलोदा	मोरडी निचली	बडवास बडी	नागावाडा	पटवारी	
		कुण्डला	बोरी	बडाना	झिकली	पिण्डारमा	पटवारी	
		लोधा	चौपासाग	देवदा	कलिंजरा	ढालर	पटवारी	
		निचला घन्टाला	ड्डूका	कानजी का गढा	लोहारिया बडा	गमनिया हमीरा	पटवारी	
		ठीकरिया	झडस	पडोली राठोड	रामगढ	गांगडतलाई	पटवारी	
		केसरपुरा	खेरन का पारडा	पडोली गोर्धन	सब्बलपुरा	हाण्डी	पटवारी	
		बदरेल खुर्द	परतापुर	सेनावासा	टिमेडा बडा	झांझरवा कला	पटवारी	
		बोरवट	अडोर	भोयर	ठुम्मठ	खोडालिम	पटवारी	
		गामडी	आमजा	बोरदा	उंकाला	खूंटा गलिया	पटवारी	
		झूपेल	गोपीनाथ का गढा	देलवाडा नोकिया	डूंगरा छोटा	लंकाई	पटवारी	
		नवागॉव	जोलाना	जगपुरा	डूंगरा बडा	मोटी टिम्बी	पटवारी	
		पाडीकला	मलाना	मोटागॉव	जालिमपुरा	राम का मुन्ना	पटवारी	
		सागडोद	पाराहेडा	नरवाली	कसारवाडी	सालिया	पटवारी	
		सालिया	रैयाना	रूंजिया	मगरदा डामरासाथ	सल्लोपाट	पटवारी	
		अरनीया	टामटिया राठोड	भगोरा का खेडा	मस्का बडा	शेरगढ़	पटवारी	
		घलकिया	आसोडा	चौकडी	पाली कला	टाण्डी नानी	पटवारी	
		कोहाला	बरोडिया	डांगल	फुलपुरी	आमलिया	पटवारी	

						आम्बादरा		
		कूपडा	खोडन	डूंगरिया	ताम्बेसरा	आनन्दपुरी	पटवारी	
		कुशलपुरा	लसाडा	कण्ठाव	टाण्डी कला	बडलिया	पटवारी	
		सुरपुर	लोहारिया	खमेरा	बिलडी	चांदरवाडा	पटवारी	
		तलवाडा	मेतवाला	रूपजी का खेडा	गोदावाडा नारेंग	छाजा	पटवारी	
		तेजपुर	मोर	सवनिया	ईटाला	डोकर	पटवारी	
		सुरवानिया	पालोदा	बांसलीखेडा	झलकिया	कानेला	पटवारी	
		वागतलाब	उम्बाडा	डूंगर	खुन्दनी हाला	मडकोला मोगजी	पटवारी	
		छोटी सरवन	आसन	मियासा	महुडी	मुन्द्री	पटवारी	
		दानपुर	भीमपुर	मुडासेल	राठधनराज	फलवा	पटवारी	
		घोडी तेजपुर	खेडा		रोहनिया लक्ष्मणसिंह	टामटिया	पटवारी	
		जहॉपुरा	रोहिडा		सागवा	वरेठ	पटवारी	
		खजूरी	सागवाडिया		सज्जनगढ़	बरजडिया	पटवारी	
		मकनपुरा	सरेडी बडी		टाण्डा मंगला	चोरडी	पटवारी	
		बारी	सरेडी छोटी		चौखवाडा	नाहरपुरा	पटवारी	
		कटुम्बी	वजवाना		वखतपुरा	संग्रामपुरा	पटवारी	
		कोटडा			चरकनी	उदयपुरा बडा	पटवारी	
		नापला				पाटिया गलिया	पटवारी	
		फेफर					पटवारी	
		46	**43**	**37**	**44**	**45**		**215**

जिले में विकास प्रशासन

केन्द्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के निर्माण, क्रियान्वयन एवं मॉनीटरिंग हेतु ग्रामीण क्षेत्र में पंचायती राज संस्थाओं (PRI's)एवं शहरी क्षेत्र में स्थानीय निकायों(ULB's) के माध्यम से विकेन्द्रीकृत योजनाओं की परिकल्पना को साकार किया जा रहा है। इस हेतु जिले में विकास प्रशासन से सम्बन्धित ढांचा निम्नानुसार है।

विवरण	**नाम**								**कार्यालयअध्यक्ष**
जिला परिषद	बांसवाडा								मुख्य कार्यकारी अधिकारी
विकास खण्ड	बांसवाडा	गढी	घाटोल	छोटी सरवन	कुशलगढ	सज्जनगढ़	बागीदौरा	आनन्दपुरी	विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत	55	55	53	18	29	30	41	26	ग्राम सेवक पदेन सचिव
नगरपालिका	बांसवाडा				कुशलगढ				अधिशासी अधिकारी

विकास कार्यों के लिये साझेदारियां :–

विकेन्द्रीकृत योजना निर्माण के तहत योजना निर्माण का कार्य नीचे से ऊपर की ओर होता है। जिसमें जनसहभागिता की सुनिश्चितता हेतु ग्राम स्तर पर वार्ड सभा/वार्ड समितियां तथा ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम सभाओं के माध्यम से योजना निर्माण का कार्य किया जाता है। राजस्थान पंचायती राज अधिनियम 1994 की धारा 3 के तहत वार्ड सभा एवं ग्राम सभाओं के आयोजन तथा कार्यों का विवरण निम्नानुसार है :–

वार्ड सभा

(राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 3)

वार्ड सभा और उसकी बैठके

पंचायत के, धारा 12 की उप–धारा (2) के उपबंधो के अनुसार यथा अवधारित, प्रत्येक वार्ड में एक वार्ड सभा होगी, जिसमें किसी पंचायत सर्किल के वार्ड के सभी वयस्क व्यक्ति होगे।

1. वार्ड सभा की प्रति वर्ष कम से कम दो बैठके होगी अर्थात वित्तीय वर्ष की प्रत्येक छमाही में एक।

गणपूर्ति :–

वार्ड सभा की किसी बैठक के लिए गणपूर्ति सदस्यों की कुल संख्या के दशांश से होगी, जिनमें से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछडे वर्ग और महिला सदस्य उनकी जनसंख्या के अनुपात में होगे।

वार्ड सभा के कृत्य :–

- विकास योजनाएं बनाने के लिये अपेक्षित ब्यौरों के संग्रह और सकंलन में पंचायत की सहायता करना।
- वार्ड सभा के क्षेत्र में क्रियान्वित की जाने वाली विकास स्कीमों और कार्यक्रमों के प्रस्ताव तैयार करना और उनकी पूर्विकता तय करना।
- वार्ड सभा के क्षेत्र से संबंधित विकास स्कीमों के क्रियान्वयन के लिये हिताधिकारियों की पूर्विकता क्रम में पहचान करना।
- विकास स्कीमों के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायता करना।
- लोक उपयोगिताओं, सुख–सुविधाओं और ऐसी सेवाओं जैसे मार्गो में प्रकाश, पानी के सामुदायिक नल, सार्वजनिक कुएं, सार्वजनिक सफाई इकाइयां, सिंचाई सुविधाए आदि के लिये स्थान का सुझाव देना।
- लोक हित के विषयों जैसे स्वच्छता पर्यावरण का परिरक्षण, प्रदूषण का निवारण, सामाजिक बुराइयों से बचाव आदि के बारे में स्कीमें बनाना और जागरूकता लाना।
- लोगो के विभिन्न समूहों मे सौहार्द और एकता को बढाना।
- सरकार से विभिन्न प्रकार की कल्याणकारी सहायता जैसे पेंशन और सहायिकी प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की पात्रता को सत्यापित करना।

- वार्ड सभा के क्षेत्र में किये जाने के लिये प्रस्तावित संकर्मो के ब्यौरेवार प्रक्कलनों के बारे में सूचना प्राप्त करना, वार्ड सभा के क्षेत्र में क्रियान्वित किये गये संकर्मो की सामाजिक संपरीक्षा करना और ऐसे संकर्मो के लिये उपयोजन और पूर्णता प्रमाण पत्र प्रदान करना।
- संबंधित अधिकारियों से उस वार्ड सभा क्षेत्र में ऐसी सेवाओं के बारे में जो वे उपलब्ध करायेगें और ऐसे कार्यो के बारे मं जिन्हें करने का उनका प्रस्ताव है, सूचना प्राप्त करना।
- उस क्षेत्र में माता–पिता और अध्यापक संगमो के क्रियाकलापो में सहायता करना।
- साक्षरता, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल विकास और पोषण को प्रोत्साहित करना।
- सभी सामाजिक सेक्टरों की संस्थाओं और कृत्यकारियों पर नियंत्रण रखना, और
- ऐसे अन्य कार्य जो समय समय पर विहित किये जावें।

ग्राम सभा

(राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 3)

ग्राम सभा और उसकी बैठके

- प्रत्येक पंचायत सर्किल के लिए एक ग्राम सभा होगी जिसमें पंचायत क्षेत्र के भीतर समाविष्ट गांव या गांवो के समूह से संबधित निर्वाचक नामावालियों में रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति होगे।

गणपूर्ति :–

ग्राम सभा की किसी बैठक के लिए गणपूर्ति सदस्यों की कुल संख्या के दशांश से होगी, जिसमें से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछडा वर्ग के सदस्यों और महिला सदस्यों की उपस्थिति उनकी जनसंख्या के अनुपात में होगी।

ग्राम सभा के कृत्य :–

ग्राम सभा, ऐसी शर्तो के अध्यधीन रहते हुये और किसी ऐसी सीमा तक और ऐसी रीति से, जो राज्य सरकार द्वारा समय समय पर विहित की जाये,निम्नलिखित कार्य करेगीः

- सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं का, वार्ड सभा द्वारा अनुमोदित योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं में से पूर्विकता क्रम में, ऐसी योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं को पंचायत द्वारा क्रियान्वयन के लिए जाने के पूर्व, अनुमोदन करना।
- गरीबी उन्मूलन और अन्य कार्यक्रमों के अधीन हिताधिकारियों के रूप में व्यक्तियों की, उनकी अधिकारिता के अधीन आने वाली विभिन्न वार्ड सभाओं द्वारा पहचाने गये व्यक्तियों में से, पूर्विकता क्रम में पहचान या चयन।
- संबंधित वार्ड सभा से यह प्रमाण पत्र अभिप्राप्त करना कि पंचायत ने खण्ड (क) में निर्दिष्ट उन योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं के लिए उपलब्ध करायी गयी निधियों का सही ढंग से उपयोग कर लिया है, जिनका उस वार्ड सभा के क्षेत्र में व्यय किया गया है।
- कमजोर वर्गों को आंवटित भूखण्डो के संबंध में सामाजिक संपरीक्षा करना।
- आबादी भूमियों के लिए विकास की योजनाएं बनाना और अनुमोदित करना।

- सामुदायिक कल्याण कार्यक्रमों के लिए स्वैच्छिक श्रम और वस्तु रूप में या नकद अथवा दोनों ही प्रकार के अभिदाय जुटाना।
- साक्षरता, शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को प्रोत्साहित करना।
- ऐसे क्षेत्र में समाज के सभी समुदायों के बीच एकता और सौहार्द्र बढाना।
- किसी भी विशिष्ट क्रिया कलाप, स्कीम, आय और व्यय के बारे में पंचायत के सदस्यों और सरपंच से स्पष्टीकरण मांगना।
- वार्ड सभा द्वारा अभिशंसित संकर्मो में से पूर्विकता क्रम में विकास संकर्मों की पहचान और अनुमोदन।
- लघु जल निकायों की योजना और प्रबंध।
- गौण वन उपजों का प्रबंध।
- सभी सामाजिक सेक्टरों की संस्थाओं और कृत्यकारियों पर नियत्रंण।
- जनजाति उप–योजनाओं को सम्मिलित करते हुए स्थानीय योजनाओं पर और ऐसी योजनाओं के स्रोतों पर नियत्रंण।
- ऐसे पंचायत सर्किल के क्षेत्र की प्रत्येक वार्ड सभा द्वारा की गयी अभिषंसओं के बारे में विचार और अनुमोदन, और
- ऐसे अन्य कृत्य जो विहित किये जायें।

स्वोट (Swot Analysis)

जिले की क्षमता/सामर्थ्य (**Strength**)

- मानव संसाधन की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता।
- उपजाऊ भूमि की उपलब्धता।
- पर्याप्त मात्रा में सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता।
- जिले में 3 विद्युत उत्पादन केन्द्र उपलब्ध।
- कृषि दृष्टिकोण से तीन फसलों के लिये मौसम की अनुकूलता।
- जिले में विभिन्न खनिज यथा मार्बल, मैगनिज, ग्रेफाईट, सॉप स्टोन, लाईम स्टोन, चूना पत्थर एवं बजरी आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्धता।
- जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 20 प्रतिशत में वन क्षेत्र उपलब्ध एवं वन उपज में मुख्य रूप से सागवान, बांस, तेन्दु पत्ता, गोंद, शहद, आंवला एवं महुवा आदि।
- जिले की औसत वर्षा 930 मिलीमीटर ।
- जिला दो राज्यों गुजरात एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित होने से वाणिज्य गतिविधियों के विकास की सम्भावना।
- जिले में 2 बडे जलाशय माही बांध एवं कडाणा बैक वाटर एवं बडे तालाबों की उपलब्धता होने से मत्स्य उत्पादन गतिविधियां की प्रचुर सम्भावना।
- जिले में पर्यटन के लिये दर्शनीय स्थल यथा मदारेश्वर, त्रिपुरा सुन्दरी, कागदी–पिक–अप, जलप्रपात(कडेलिया, जुआफाल), अरथूना आदि।
- जिले में हवाई पट्टी की उपलब्धता।
- जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 113 निम्बाहेडा से दाहोद होने से जिला जयपुर, दिल्ली एवं मुम्बई आदि शहरों से आवागमन के साधनों से जुडा हुआ है।
- बडी औद्योगिक ईकाईयां स्थापित जैसे बांसवाड़ा सिन्टेक्स, एल.एन.जे. समूह मयूर, लोधा एवं मोरडी, माही सिमेन्ट(कुशलपुरा) बडी औद्योगिक ईकाईयां की उपलब्धता है।
- जिले में मूर्ति कला निर्माण के निपुण कारीगरों की उपलब्धता।

स्वोट (Swot Analysis)

जिले की कमियां (Weakness)

- जिले में साक्षरता दर का कम होना(44.63प्रतिशत)। जिले में महिला साक्षरता दर (28.43 प्रतिशत) जबकि पुरूष साक्षरता दर (60.45 प्रतिशत) अर्थात महिला साक्षरता दर की अत्यन्त खराब स्थिति।
- जिले में कृषि की जोत आकार का छोटा होना(औसत 3 बीघा से कम)
- जिले में बिखरी हुई बस्तियो में निवास करने से विकास कार्य में कठिनाईयां।
- जिले की प्रति व्यक्ति औसत आय कम होना।
- जिले में कृषि क्षैत्र में उन्नत तकनीकी एवं प्रमाणित बीजो का कम उपयोग तथा तकनीकी ज्ञान की कमी। कृषि की पुरातन पद्धति को अपनाना तथा नवीन एवं वाणिज्यिक फसलों की तरफ कम रूझान होने से अर्थिक स्थिति अभी भी काफी कमजोर है।
- उपलब्ध कृषि योग्य भूमि का निरन्तर बंटवारा/विभाजन होने से काश्तकार के पास उपलब्ध औसत जोत की भूमि में कमी होना अर्थात् अनार्थिक जोत।
- मिट्टी के उपजाऊपन में कमी होना।
- जिले में वन क्षैत्र यद्यपि लगभग 20 प्रतिशत् है, लेकिन सघन वन क्षैत्र अत्यन्त ही न्यून है जिससे निरन्तर मिट्टी का कटाव होने से भूमि का अपरदन/क्षरण हो रहा है जिससे कृषि की उत्पादकता में कमी होना।
- जिले में यद्यपि माही परियोजना निर्मित होने से पंचायत समिति गढ़ी, घाटोल, बागीदौरा, बांसवाड़ा एवं आनन्दपुरो क्षैत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध है। लेकिन शेष 4 पंचायत समितियां कुशलगढ़, सज्जनगढ़, पीपलखूँट एवं आंशिक रूप से आनन्दपुरी अभी भी कमाण्ड क्षैत्र से बाहर है। जिसके कारण कृषि उत्पादन अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुच सका है।
- पशुपालन अन्तर्गत पशुओं की कमजोर नस्ल हाने से दुग्ध उत्पादन एवं पशुधन से उत्पन्न होने वाले उत्पादन का कम होना।
- जिले में उद्यमिता/साहसिक उद्यमियों का अभाव।
- जिले में तकनीकी शिक्षण संस्थाओं का अभाव।
- रेल सुविधा का अभाव होंने से आर्थिक एवं औद्योगिक विकास नहीं हो पाया है।
- जिले में वर्षा की पर्याप्तता के बावजूद भी सिंचित क्षैत्र कम होना, क्योंकि वर्षा के पानी को रोककर सिंचाई के साधनो का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है।
- जिले में श्रम की बहुलता लेकिन कुशल एवं अर्द्धकुशल श्रमिकों को कमी।
- जिले में दूरस्त ग्रामों के निवासियों के लिये स्वास्थ सुविधाओ का अभाव
- जिले में स्वास्थ्य कर्मीयों की कमी। अस्पतालों में चिकित्सकों व पेरा मेडिकल स्टाफ की कमी।
- कृषकों के वैकल्पिक अथवा आय बढ़ाने के अन्य अवसरों की कमी।

स्वोट (Swot Analysis)

जिले के पिछड़ेपन को दूर करने के अवसर/उपाय(Opportunity)

- जिले में साक्षरता दर को बढ़ाने के लिये सर्व शिक्षा अभियान द्वारा अध्यापकों को समय–समय पर प्रशिक्षण आयोजित कर शिक्षकों की क्षमतावृद्धन कर साक्षरता दर एवं शिक्षा को बढ़ाये जाने हेतु प्रयास किये जा रहे है।

- जिला साक्षरता एवं सतत् शिक्षा समिति द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में विविध कार्य किये जा रहे है।

- जिले में महिला साक्षरता दर बढाने हेतु कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय छात्रावास एवं विद्यालयों का निर्माण कर एवं सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से ब्रिज कोर्सेज आयोजित कर बालिका शिक्षा में वृद्धि हेतु प्रयास किये जा रहे है।

- जिले में अध्यापकों के रिक्त पद भरने के प्रति राज्य सरकार सजग है।

- जिले में वर्तमान में वन अधिकार अधिनियम के तहत आदिवासियों को जमीन आवंटित कर आदिवासी कृषको को लाभान्वित किया जा रहा है, ताकि आदिवासी कृषकों की कृषि भूमि में वृद्धि हो सकें।

- जिले में कृषि उत्पादन में वद्धि हेतु केन्द्रीय एवं राज्य योजनाओं के संचालन के साथ–साथ राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं के अन्तर्गत उन्नत तकनीकी एवं प्रमाणित बीज उपयोग में वृद्धि हेतु कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है।

- जिले में जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हेतु परिवार कल्याण की विभिन्न योजनाओं के तहत परिवार नियंत्रण हेतु कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है।

- जिले में कमजोर नस्ल के पशुओं में नस्ल सुधार हेतु उन्नत नस्ल के साण्ड बी.आर. जी.एफ. योजनान्तर्गत उपलब्ध कराकर नस्ल सुधार किया जा रहा है।

- राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2009–10 में बजट भाषण के दौरान जिल में 2 अभियांत्रिकी महाविद्यालय की घोषणा हुई है, जिससे आने वर्षों में तकनीकी शिक्षा के अवसरों में वृद्धि होगी।

- भारत सरकार द्वारा वर्ष 2009–10 के बजट भाषण में रतलाम–बांसवाड़ा–डूंगरपुर के रेल मार्ग की घोषणा हो चुकी है। जिससे यह जिला आने वाले वर्षों में रेल सुविधा से जुड जावेगा।

- स्वर्ण जयन्ति स्वरोजगार योजना, पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि कार्यक्रम, उद्योग विभाग, आई.टी.आई एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से स्किल अपग्रेडशन हेतु

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर जिले में कुशल एवं अर्द्धकुशल श्रमिकों की वृद्धि हा पायेगी।

- जिले में लिंग्नाईट एवं कोयला आधारित ताप बिजलीघर स्थापना हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध है। इसमें राज्य सरकार एवं स्थानीय लोगों की सहायता आवश्यक है।

- राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की उपलब्धता से पलायन में कमी हो रही ह एवं पारिवारीक आय बढ़ेगी।

- महिला एवं छात्र महाविद्यालय में रोजगारोन्नमुखी पाठयक्रम संचालित किये जाने से युवक/युवतियां लाभान्वित होगें।

- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत स्वास्थ्य केन्द्रों एवं उप स्वास्थ्य केन्दों के विकास से स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार होगा।

- अजमेर डिस्कॉम के फिडर रिनोवेशन कार्यक्रम से निर्वाध गुणवत्ता की बिजली उपलब्ध होने से उद्योग व कृषि क्षेत्र का उत्पादन बढ़ेगा।

- पेयजल योजनाओं से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा।

स्वोट (Swot Analysis)

जिले में विकास के साथ समस्याऐं (Threats)

- जिले में माही परियोजना के द्वारा सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है परन्तु बाराबन्दी एवं पानी का कुशलतम उपयोग नही होने से वाटर लॉगिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है एवं धीरे–धीरे यह विकराल रूप लेती जा रही है। इसके लिये विशेष प्रयास की आवश्यकता है। अन्तिम छोर पर पानी नहीं पहुॅच पाता है जिसका निदान अपेक्षित है। कृषि विभाग द्वारा पानी का कुशलतम उपयोग किये जाने हेतु किसानों को फव्वारा एवं बूद–बूद सिंचाई के प्रति जागरूक करना होगा। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा ऊसर भूमि के उपयोग हेतु नई किस्म की फसलों का अनुसंधान जारी रखना होगा। ऊसर भूमि का ट्रोटमन्ट कराकर कृषि योग्य बनाया जाये। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना के तहत वाटर लॉगिंग क्षेत्र में पानी निकासी हेतु ड्रेनेज सिस्टम्स डेवलप किया जाना आवश्यक है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजनान्तर्गत स्थाई रूप से अकाल प्रतिरोधी कार्यों यथा जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण पर बल देना होगा।
- जिला बांसवाड़ा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने से आदिवासी समाज में कई कुरीतियां अभी भी है जैसे मोताणा, नौतरा, मृत्यु भोज, देशी शराब का सेवन एवं पलायन की समस्य। स्वयं सेवी संगठन एवं सामाजिक संगठनों के सहयोग से कुरीतियों को दूर करने की आवश्यकता है।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का व्यवसायीकरण बढ़ रहा है।

अध्याय – 3

शिक्षा एवं साक्षरता

सार संक्षेप :–

जिले की कुल साक्षरता दर 44.63 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 60.45 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 28.43 प्रतिशत है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के कुल साक्षरता दर 35.74 प्रतिशत है।

जिले में 1995 से सम्पूर्ण साक्षरता अभियान एवं उत्तर साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत 3,59,071 लोगों को साक्षर किया गया।

जिले में वर्ष 2000 के अन्त में प्रारम्भ किये गये सत्त शिक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत आठों विकास खण्ड़ा में 770 सत्त शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई।

जिले में पी.आर.आई. फेज 1 एवं 2, विशेष महिला शिक्षण शिविर एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर संचालित किये गये है। व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविरों से लाभान्वित 3150 महिलाओं में अधिकांश महिलायें व्यवसाय से जुडकर अतिरिक्त आय अर्जन कर रही है।

जिल में 2421 राजकीय प्राथमिक विद्यालय एवं 747 उच्च प्राथमिक विद्यालय है। 206 राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में उच्च प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाई जा रही है। निजी क्षेत्र के 400 विद्यालयों में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाई जा रही है।

अधिकांश विद्यालयों में शौचालय सुविधा उपलब्ध है। 2640 विद्यालयों में किशनशेड़ एवं 2540 विद्यालयों में पेयजल हेतु हेण्डपम्प सुविधा है। राजकीय विद्यालयों में 11090 अध्यापक है। जिनमें से 37 प्रतिशत महिलायें है।

वर्ष 2008–09 में प्राथमिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संख्या 374063 थी जिसमें से अनुसूचित जनजाति के 3,06,832 छात्र–छात्रायें थी। अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में बालिकाओं का प्रतिशत 45.74 है।

प्राथमिक शिक्षा में वर्ष 2004–05 में नामांकन 3,30,149 था। जो वर्ष 2008–09 में 3,74,063 हो गया अर्थात नामांकन में 13.30 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

जिले में वर्ष 2005–05 में शिक्षा से वंचित बच्चों की संख्या 11,436 थी। जो वर्ष 2008–09 में घट कर 3,161 रह गई। इन बच्चों के लिये सर्व शिक्षा अभियान अन्तर्गत ब्रिज कोर्स, शिक्षा मित्र केन्द्र एवं होम बेस्ड़ एजुकेशन की व्यवस्था की जा रही है।

जिले में राजकीय विद्यालयों में छात्र–शिक्षक अनुपात 2004–05 में 36.02 था जो 2008–09 में 28.16 था। जिले में कक्षा 1 से 8 के समेकीत नामाकन में जेन्डर गेप निरन्तर कम हुआ है अर्थात बालिकायें अधिकाधिक संख्या शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है।

जिले में कुल 279 राजकीय एवं निजी राजकीय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमशः 182 माध्यमिक एवं 97 उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित किये जा रहे है। इन विद्यालयों में कुल नामांकन वर्ष 2008–09 में 87,996 है। जिसमें से 60.36 प्रतिशत लडके एवं 39.64 प्रतिशत लड़कियां है। माध्यमिक शिक्षा में 2004–05 की तुलना में 43.43 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

जिले में समाज कल्याण विभाग के द्वारा 24 छात्रावासों एवं जनजाति क्षेत्रीय विकास के माध्यम से 39 छात्रावासों का संचालन किया जा रहा है।

माध्यमिक विद्यालयों में स्वीकृत 2288 पदों के विरूद्ध 1697 अध्यापक कार्यरत है। कक्षा 10 एवं 12 का परीक्षा परिणाम में निरन्तर सुधार हुआ है।

जिले में राजकीय क्षेत्र में दो सहशिक्षा महाविद्यालय एवं 1 कन्या महाविद्यालय है। निजी क्षेत्र में जिले में 10 महाविद्यालय है।

जिला मुख्यालय पर स्थित श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय में 4700 विद्यार्थी अध्ययनरत है। जिसमें 75 प्रतिशत छात्र जनजाति वर्ग के है।

जिले में 2 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान है जिनमें विभिन्न व्यवसायों में 360 प्रशिक्षाणर्थियों के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

जिला मुख्यालय पर 1 राजकीय पोलोटेक्नीक महाविद्यालय है जिसमें 140 विद्यार्थियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। जिले में 1 अभियांत्रिकी महाविद्यालय आगामी सत्र से प्रारम्भ होगा।

जिले में गढ़ी के पास चौपासाग में स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में 50 छात्रों के लिये बीएसटीसी पाठ्क्रम संचालित किया जा रहा है।

शिक्षा एवं साक्षरता

जनगणना 2001 के अनुसार जिले की कुल साक्षरता दर 44.63 प्रतिशत है जिसमें से पुरूष साक्षरता दर 60.45 एवं महिला साक्षरता दर 28.43 प्रतिशत है। राज्य की कुल साक्षरता दर 60.40 प्रतिशत है जिसमे पुरूष साक्षता दर 75.70 एवं महिला साक्षरता दर 43.85 प्रतिशत है। इस प्रकार जिला पुरूष एवं महिला साक्षरता दर मे राज्य की तुलना म काफी नीचे है। 1991 की जनगणनानुसार जिले की साक्षरता दर 26 प्रतिशत थी। अतः जिले मे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान वर्ष 1995 मे प्रारम्भ हुआ।

जिले में साक्षरता दर की स्थिति जनगणना 2001 के अनुसार

तुलनात्मक साक्षरता प्रतिशत में

विवरण	योग	पुरूष	महिला
बांसवाड़ा	44.63	60.45	28.43
राजस्थान	60.40	75.70	43.85
भारत	64.80	75.30	53.70

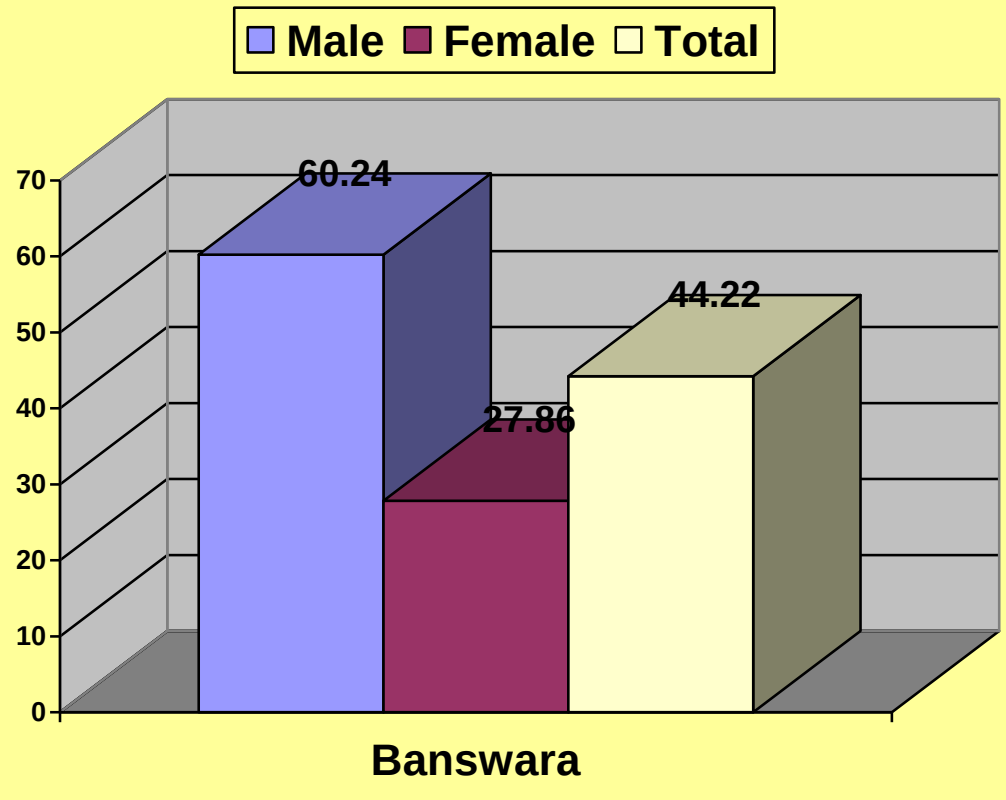

बांसवाड़ा जिले में अनुस्चित जाति एवं जनजाति वर्ग की साक्षरता स्थिति वर्ष 2001

अनुसूचित जाति

	कुलजनसंख्या			साक्षर			साक्षरता प्रतिशत		
	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला
कुल	51152	25765	25387	23345	16352	6993	45.63	63.46	27.54
ग्रामीण	44852	22559	22293	19486	13929	5563	43.44	61.71	24.95
शहरी	6300	3206	3094	3859	2429	1430	61.25	75.76	46.22

अनुसूचित जनजाति

	कुलजनसंख्या			साक्षर			साक्षरता प्रतिशत		
	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला
कुल	837854	422393	415461	299467	221019	78448	35.74	52.33	18.88
ग्रामीण	828528	417549	410979	293903	217430	76473	35.47	52.07	18.61
शहरी	9326	4844	4482	5564	3589	1975	59.66	74.09	44.07

जिले में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की साक्षरता दर वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर विश्लेषण करने पर परिलक्षित होता है, कि अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की कुल साक्षरता दर जिले की कुल साक्षरता दर 44.63 प्रतिशत की तुलना में 45.63 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों की कुल साक्षरता दर 35.74 प्रतिशत है अर्थात अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर जिले की कुल साक्षरता दर से काफी कम है।

कुल साक्षरता दर में पुरूष एवं महिला की साक्षरता दर का विश्लेषण करने पर अनुसूचित जाति वर्ग में पुरूषों मे साक्षरता दर 63.46 प्रतिशत है वहीं महिलाओं की साक्षरता दर 27.54 प्रतिशत है जो कि जिले की महिला साक्षरता दर के लगभग है।

अनुसूचित जनजाति वर्ग की साक्षरता दर का विश्लेषण करने पर पुरूष वर्ग में 52.33 प्रतिशत तथा महिला वर्ग में 18.88 प्रतिशत है जो कि जिले की पुरूष एवं महिला साक्षरता दर की तुलना में काफी कम है।

जिले में दशकीय साक्षरता दर में वृद्धि (प्रतिशत में)

वर्ष	महिला	पुरूष	योग
1991	13.42	38.16	26.00
2001	28.43	60.45	44.63
वृद्धि	15.01	22.29	18.63

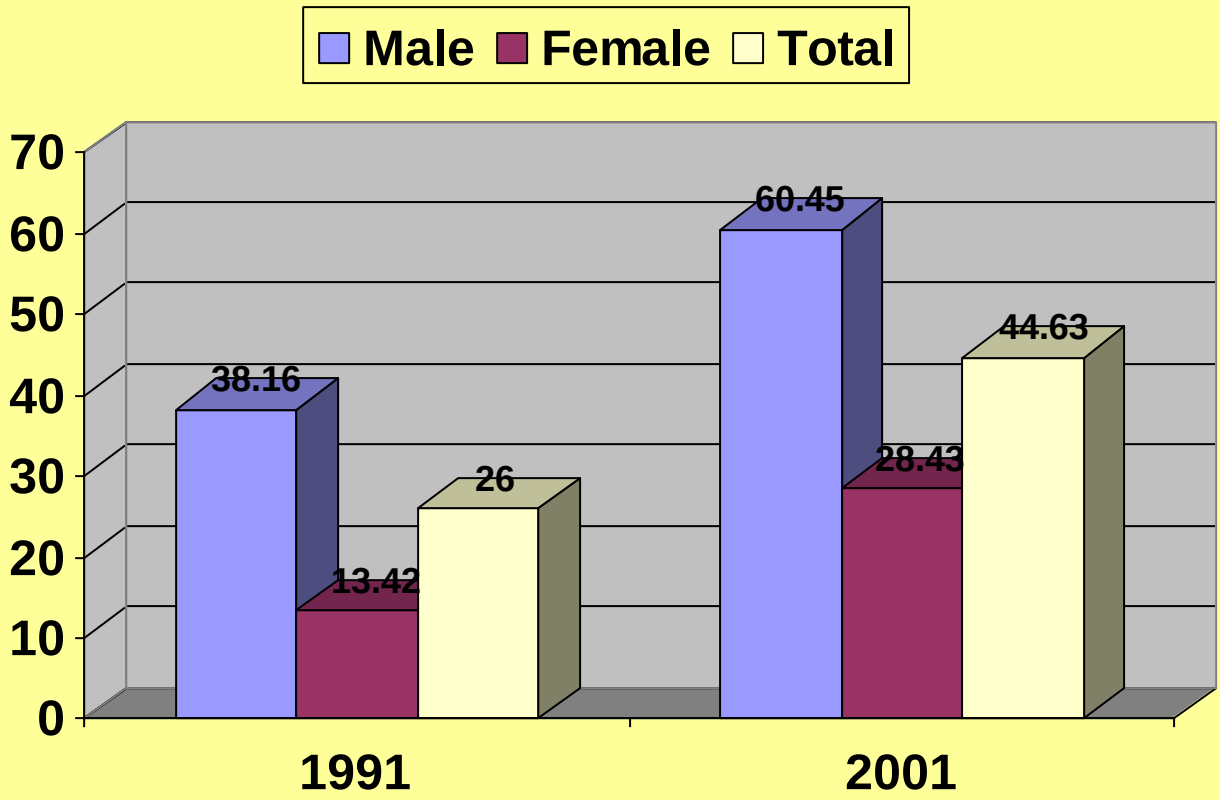

संपूर्ण साक्षरता अभियान (TLC)

1991 की जनगणना के अनुसार इस जिले का साक्षरता प्रतिशत 26 प्रतिशत था। जिले में संपूर्ण साक्षरता अभियान का शुभारम्भ दिनांक 14 नवम्बर, 1995 को तत्कालोन मुख्य सचिव श्री मीठालाल मेहता राजस्थान सरकार द्वारा ग्राम पंचायत आसोडा पंचायत समिति गढ़ी मे दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस दौरान मुख्य सचिव, तत्कालोन जिला कलेक्टर डा. बी. शेखर, समस्त शिक्षा विद्, समस्त जन प्रतिनिधि एवं जिला स्तरीय अधिकारियों, विद्यार्थियों तथा क्षैत्र की जनता जनार्दन द्वारा सम्पूर्ण गांव मे पद यात्रा कर साक्षरता का संदेश पहुंचा कर साक्षरता का आगाज़ किया गया।

जिले की समस्त 8 पंचायत समितियों व बांसवाड़ा शहर में 9–35 आयुवर्ग में निरक्षर व्यक्तियों का सर्वेक्षण करवाया गया। सर्वेक्षण के अनुसार बांसवाड़ा जिले में 3,60,000 निरक्षर व्यक्ति थे। इनमे 200000 पुरूष व 150000 महिलाएँ थी। इतने लोगों को साक्षर करना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

इसके लिए वातावरण निर्माण, पठन–पाठन सामग्री एवं अन्य साहित्य निर्माण, स्वयंसेवक प्रशिक्षण, पठन–पाठन परिवीक्षण एवं प्रबोधन व अन्य क्रिया कलाप, आन्तरिक मूल्यांकन, समवर्ती मूल्यांकन, बाह्य मूल्यांकन आदि गतिविधियॉ आयोजित की गई। **संपूर्ण**

साक्षरता अभियान का बाह्य मूल्यांकन 10 फरवरी, 1998 से मार्च, 1998 में मेनेजमेन्ट डेवलपमेन्ट एजेन्सी, गुडगांव (हरियाणा) द्वारा किया गया जिसका परिणाम 36प्रतिशत रहा।

उत्तर साक्षरता अभियान (PLC)

उत्तर साक्षरता अभियान के लिए जून, 1997 में पुनः सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण 15–35 आयु वर्ग में किया गया। सर्वेक्षण के अनुसार 15–35 आयुवर्ग में निम्नानुसार नवसाक्षरों, अर्द्धसाक्षरों एवं शेष रहे निरक्षरों की पहचान की गई।

नवसाक्षर			अर्द्धसाक्षर			निरक्षर		
परूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
91829	137642	229471	62055	93060	155115	29774	44582	74356

उत्तर साक्षरता अभियान में वातावरण निर्माण, साहित्य निर्माण प्रशिक्षण, मोपिंगअप क्रियाकलाप, नवप्रभात पाठन, जनचेतना केन्द्र पर खेलकूद, अनुरंजनात्मक कायक्रम पुस्तकालय–वाचनालय, सम्मेलन, चर्चामण्डल महिला सम्मेलन आदि गतिविधियॉ संचालित की गई। जिले में 1547 जनचेतना केन्द्र चलाए गए।

उत्तर साक्षरता अभियान का मूल्यांकन जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा अक्टूबर, 1998 में किया गया। **जिसमें कार्यक्रम की गुणवत्ता का प्रतिशत 67.5 प्रतिशत रहा तथा पठन–पाठन का प्रतिशत 74.6 प्रतिशत रहा।**

साक्षरता अभियान के अर्न्तगत बांसवाड़ा जिले की उपलब्धि

साक्षरता	पुरूष	महिला	योग	एस सी	एस टी
प्रांरभिक सर्वे के अनुसार	109134	175582	284716	14235	25624
अर्द्धसाक्षर	91829	137642	229471	11433	20652
शेष रहे निरक्षर	29774	44582	74356	3718	66920
उत्तर साक्षरता में साक्षर	34512	52251	86763	3417	60334
शेष रहे निरक्षर	41068	83932	125000	4677	111048

विगत चार वर्षो की उपलब्धि

वर्ष	पुरूष	महिला	योग	एस सी	एस टी
2004–05	1847	16625	18472	923	16624
2005–06	1042	9375	10417	520	9375

2006–07	2082	11800	13882	694	12494
2007–08	935	5300	6235	311	5611
2008–09	759	5000	5759	288	5183
योग	6665	48100	54765	2736	49287

शेष रहे निरक्षरों की संख्या

साक्षरता	पुरूष	महिला	योग	एस सी	एस टी
सतत शिक्षा प्रांरभ में निरक्षर	41068	83932	125000	4677	111048
चार वर्ष में बने नवसाक्षर	6665	48100	54765	2736	49287
प्रारंभ से अब तक बने नवसाक्षर	145829	213242	359071	17953	323164
जिले में शेष रहे निरक्षर	10556	20420	30976	1239	27878

सतत शिक्षा कार्यक्रम (CEP)

बांसवाड़ा जिले में सतत शिक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ 26.12.2000 को हुआ। इस अवसर पर राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री महोदयों तथा जिले के जनप्रतिनिधियों, प्रतिष्ठित नागरिकों, राज्य एवं जिले के उच्चाधिकारियों एवं जिला साक्षरता समितियों के सदस्यों की उपस्थिति में शुभारम्भ हुआ।

सतत शिक्षा कार्यक्रम में लक्ष्य समूह

नवसाक्षर

पुरुष	महिला	योग
145829	213242	359071

शेष रहे निरक्षर

पुरुष	महिला	योग
10556	20420	30976

सतत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना

जिला स्तर से केन्द्रों के शुभारंभ के बाद प्रथम चरण में प्रत्येक ब्लॉक के ग्रामों में सतत शिक्षा केन्द्रों का शुभारंभ किया गया। उसके बाद विभिन्न चरणों में अन्य सतत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई। जिले में 325 ग्राम पंचायतों को आधार मानकर प्रत्येक पंचायत में 2 या 3 केन्द्र प्रारंभ किए गए। कुछ पंचायतों का क्षेत्र विस्तृत एवं गॉवों की संख्या एवं जनसंख्या के आधार पर एक पंचायत में तीन केन्द्र भी प्रारंभ किए गए। जिस गॉव में राजकीय/सामुदायिक भवन/आंगनबाडी केन्द्र उपलब्ध थे, वहॉ केन्द्र प्रारंभ किया गया। जिस गॉव में भवन की समस्या थी वहॉ समुदाय द्वारा उपलब्ध कराए गए निजी भवन में केन्द्र की स्थापना की गई। इस बात का ध्यान रखा गया कि वहॉ महिला एवं पुरूषों को केन्द्र पर पहुॅचने में कठिनाई नहीं हो।

ब्लॉकवार सतत शिक्षा केन्द्र

क्र.सं.	ब्लॉक	नोडल सतत शिक्षा केन्द्र	सामान्य सतत शिक्षा केन्द्र	कुल सतत शिक्षा केन्द्र
1	तलवाड़ा	15	89	104
2	गढ़ी	20	120	140
3	बागीदौरा	13	78	91
4	आनन्दपुरी	07	55	62
5	कुशलगढ़	10	84	94
6	सज्जनगढ़	8	80	88
7	घाटोल	15	90	105
8	पीपलखूंट	6	65	71
9	नगर बांसवाड़ा	01	9	10
10	नगर कुशलगढ़	01	4	05
योग		**96**	**674**	**770**

लक्ष्य आधारित कार्यक्रम

पी.आर.आई. कार्यक्रम

पी.आर.आई फेस–ा में जिले में 40,368 पुरूष एवं 82,932 महिलाएं कुल 1,23,300 निरक्षरों को साक्षर करने का कार्यक्रम संचालित किया गया। राज्य संदर्भ केन्द्र, जयपुर द्वारा बाह्य मूल्यांकन दिनांक 16 से 22 जुलाई, 2005 को किया गया, जिसका परिणाम 67 प्रतिशत रहा।

पी.आर.आई फेस–II कार्यक्रम वर्ष 2006 में बांसवाडा ज़िले के लिये स्वीकृत किया गया। इसके तहत ज़िले में योजना बनाकर प्रशिक्षणों का आयोजन कर एवं शिक्षण सामग्री क्रय करने के पश्चात बांसवाडा ज़िले में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं द्वारा 22,147 पुरूष एवं 53,138 महिला कुल 75,285 निरक्षर महिला पुरूषों को पी.आर.आई. कार्यक्रम के अन्तर्गत साक्षर किया जाना था। इसका क्रियान्वयन दिनांक 15.8.06 को स्वतन्त्रता दिवस पर किया गया।

विशेष महिला शिक्षण शिविर

ज़िले में संचालित विशेष महिला शिक्षण शिविर की प्रगति

क्र. सं.	वर्ष	आवंटित शिविरों की संख्या	आयोजित शिविरों की संख्या	लाभान्वितों की संख्या
1	2004–05	665	665	16625
2	2005–06	375	375	9375
3	2006–07	472	472	11800
4	2007–08	212	212	5300
5	2008–09	200	200	5000
योग		1924	1924	48100

यह शिविर आदिवासी महिलाओं के लिये बहुत लाभकारी साबित हुए है। शिविरों द्वारा महिलाओं को विभिन्न विभागों की जानकारियां दी जाती है। अच्छे जीवनयापन के संदेश दिये जाते हैं एवं उन्होंने पुस्तकें पढ़ना व साधारण जोड़–बाकी करना सीख लिया है, इसकी पुष्टि की जाती है। इन शिविरों में विभिन्न विभागों के वार्ताकार आते हैं एवं संभागी महिलाओं को अपने विभागों की विभिन्न लाभकारी योजनाओं की जानकारियां देते हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविर

निदेशालय, साक्षरता एवं सतत शिक्षा, राजस्थान–जयपुर के निर्देशानुसार जिले में अब तक निम्नानुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया है :–

क्र.सं.	वर्ष	आवंटित शिविरों की संख्या	आयोजित शिविरों की संख्या	लाभान्वितों की संख्या
1	2005–06	16	16	800
2	2006–07	17	17	850
3	2007–08	16	16	800
4	2008–09	14	14	700
योग		63	63	3150

शिविरों में उत्पादित वस्तुओं को ज़िला स्तर पर मेला लगाकर विपणन किया गया है और राज्य स्तर पर भी विपणन कार्य किया गया है। इन प्रशिक्षण शिविरों के बाद में कई महिलाएं व्यवसाय से जुड चुकी हैं एवं आय–अर्जन का कार्य कर रही हैं।

जिला साक्षरता समिति की तरफ से भी प्रत्येक पंचायत समिति में दो–दो सिलाई मशीनें खरीदकर दी गयी है, जिससे इन व्यवसायों में प्रशिक्षित गरीब महिलाएं लाभ ले रही हैं और जीविकोपार्जन कर रही हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविरों के अन्तर्गत सिलाई उद्योग, बांस टोकरी निर्माण उद्योग, दाल उद्योग, मसाला उद्योग, पापड़ उद्योग, ईट भट्टा निर्माण उद्योग, जैविक खाद निर्माण उद्योग इत्यादि प्रकार के व्यवसायों का ज़िले भर में आयोजन किया गया।

नवसाक्षर महिलाएं व्यावसायिक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए

विभिन्न संस्थाओं का जुड़ाव

बायफ, ज़िला उद्योग केन्द्र, आई.टी.आई., कृषि विभाग आदि के रिसोर्स पर्सन इन प्रशिक्षण शिविरों में बुलाये जाते हैं। बाजार में भी जो अच्छा कार्य करने वाले हैं उनको भी बुलाकर महिलाओं को लाभ पहुंचाया गया है।

लक्ष्य / लाभान्वित

अभी तक 3150 महिलाओं को इन शिविरों से लाभान्वित किया गया।

शिविरों की उपयोगिता

ये शिविर महिलाओं को अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिये एवं आय अर्जन के लिये बहुत लाभकारी हैं। इन शिविरों के आयोजन से महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार हुआ है एवं जीवन स्तर बेहतर करने की भावना पैदा हुई है। उन्होने ये समझा है कि साक्षरता से जुड़कर एवं व्यावसायिक शिविरों से जुड़कर हमारे जीवन में बहुत सुधार हुआ है।

समतुल्य शिक्षा कार्यक्रम

लक्ष्य/परीक्षा का प्रकार कक्षा–3, 5 एवं 8

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा (उत्तर प्रदेश) के निर्देशानुसार ज़िला साक्षरता समिति, बांसवाड़ा द्वारा वर्ष में दो बार माह मई एवं दिसम्बर में कक्षा–3 एवं कक्षा–5 की परीक्षाएं आयोजित की जाती है। ज़िले में आयोजित समतुल्य शिक्षा परीक्षा का वर्षवार विवरण निम्नानुसार है –

वर्ष 2003 से 2007 तक									
कक्षा–3 स्तर 'ए'									
वर्ष/माह	नामांकित			कुल प्रविष्ठ			कुल उत्तीर्ण		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
दिसम्बर, 2003	2140	1224	3364	2223	1009	3232	1814	745	2559
दिसम्बर,, 2004	635	643	1278	521	568	1089	517	567	1084
मई, 2005	145	428	573	131	376	507	118	353	471
दिसम्बर, 2005	225	85	310	211	77	288	204	76	280
मई, 2006	36	212	248	25	131	156	24	130	154
दिसम्बर, 2006	83	193	276	162	68	230	148	68	216
मई, 2007	45	180	225	34	151	185	32	142	174
दिसम्बर, 2007	73	681	754	53	521	574	48	492	540
योग	3382	3646	7028	3360	2901	6261	2905	2573	5478
कक्षा–5 स्तर 'बी'									
दिसम्बर, 2004	756	421	1177	640	367	1007	636	363	999
मई, 2005	194	253	447	172	227	399	163	218	381
दिसम्बर, 2005	139	71	210	130	59	189	129	58	187
मई, 2006	55	138	193	40	114	154	39	113	152
दिसम्बर 2006	72	139	211	123	60	183	120	58	178
मई, 2007	33	58	91	25	51	76	24	50	74
दिसम्बर, 2007	88	227	315	67	167	234	64	167	231
योग	1337	1307	2644	1197	1045	2242	1175	1027	2202
महायोग	4719	4953	9672	4557	3946	8503	4080	3600	7680

N.I.O.S. नोएडा (उत्तर प्रदेश)/अन्य बोर्ड के पाठ्यक्रम से संबद्धता –

समतुल्य शिक्षा परीक्षा कार्यक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से संबंद्ध है।

लाभान्वितों की संख्या

समतुल्य शिक्षा परीक्षा से अब तक कुल 7680 महिला–पुरूष लाभान्वित हो चुके हैं।

उच्च अध्ययन हेतु किये जा रहे प्रयास

उच्च अध्ययन हेतु जो प्रतिभाशाली नवसाक्षर है और जिनमें रूचि है उनको राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा (उत्तर प्रदेश) के निर्देशानुसार कक्षा 8 स्तर 'सी' की परीक्षा दिलायी गई। कुल 20 नवसाक्षरों ने कक्षा आठवीं की बोर्ड परीक्षा में भाग लिया था।

जीवन स्तर में सुधार एवं भविष्योन्मुखी कार्यक्रम

ज़िले में स्वयं सहायता समूह का कार्य ज़िला साक्षरता समिति द्वारा चलाया गया।

ज़िले में गठित स्वयं सहायता समूह की स्थिति

गठित स्वयं सहायता समूहों की संख्या	लाभान्वित महिलाओं की संख्या	स्वयं सहायता समूहों द्वारा एकत्रित राशि	बैंकों से प्राप्त ऋण का विवरण	रोजगार से जुडी महिलाओं की संख्या
164	1973	24,29,547	30,98,505	539

इन स्वयं सहायता समूहों को और अधिक सक्रिय कर और नये समूहों का गठन कर महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार के लिये विशेष प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इन स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता जा रहा है। वे अब ये समझने लगी हैं कि संगठन में कितनी शक्ति होती है। वे किसी भी अच्छे उद्देश्य को लेकर अधिकारियों के समक्ष अपनी आवाज़ उठाने लगी हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा है। उनके जीवन में निश्चित रूप से गुणात्मक सधार होने लगा है क्योंकि उनके समूहों में एवं महिला शिविरों में अनेक विशेषज्ञों द्वारा कृषि, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, उपभोक्ता जागरण आदि पर उपयोगी वार्ताएं सुनने का अवसर मिल रहा है। वे अब उन्नत कृषि, छोटे परिवार का लाभ, बालिका शिक्षा का महत्व, स्वच्छता, टीकाकरण, बच्चों के लिये प्रारम्भिक शिक्षा का महत्व आदि विषयों की जानकारी रख रही हैं। इस विविध ज्ञान से उनके पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में स्वस्थ बदलाव एवं गुणात्मक सुधार आता जा रहा है।

प्रारम्भिक शिक्षा

(सर्व शिक्षा अभियान)

शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश की विकास एवं प्रगति की आधार शिला होती है। हमें ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करना है जिनके चेहरो पर आभा, बुद्धि में पांडित्य, शरीर में बल, मन में प्रचण्ड इच्छाशक्ति, जीवन स्वावलम्बन, हदय में शिवा, प्रताप, ध्रुव, प्रहलाद, गांधी की जीवन गाथाएँ अंकित हा और जिन्हें देखकर महापुरूषों की स्मृतियॉ झंकृत हो उठे।

हमें बदलती दुनिया के साथ चलते हुऐ प्राथमिक स्तर से पठन–पाठन की प्रक्रिया को हाईटैक बनाना होगा। इससे शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा विद्यार्थियों को सीखने में भी आसानी होगी। इससे निश्चित तौर पर शिक्षण प्रक्रिया में सुधार आऐगा और यह अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की बनेगी।''

बांसवाड़ा जिलें में शैक्षिक विकास

राजस्थान के दक्षिणांचल में स्थित बाँसवाड़ा जिले में नियमित एवं व्यवस्थित शिक्षा का प्रसार पूर्व बांसवाड़ा रियासत में महारावल पृथ्वी सिंह के शासन काल में 1916–17 के आस–पास प्रारम्भ हुआ । बांसवाड़ा शहर के गणेश चौक में रियासत की ओर से प्राथमिक शाला प्रारम्भ की गई । कुछ समय बाद कुम्हारवाड़ा – सूरजपोल के पास बने नए भवन में जहां आज नगर स्कूल है प्राथमिक शाला को स्थानान्तरित कर दिया गया ।

इसके पूर्व नगर में निजी स्तर पर अध्यापन कार्य होता था एवं नागरिकगण अपने धंधे के अनुसार अपने बालकों को अध्ययन हेतु निजी शिक्षकों के वहां भेजा करते थें। राज्य को भी इतनी ही शिक्षा की आवश्यकता थी कि जिससे यहां के नागरिक पटवारी, नाकेदार का कार्य कर सकें । शासन के उच्च पदों के लिए अधिकारी वर्ग तो बाहर से ही बुलाए जाते थे। प्राथमिक शिक्षा में हिन्दी का अक्षर ज्ञान, गणित में जोड़–बाकी एवं गुणा–भाग सीखने तक सीमित था ।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ ही ब्रिटिश शासन के पोलिटिकल एजेन्ट के दबाव में रियासत में अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था की गई एवं लगभग सन 1919 के

आस–पास कुशलबाग मैदान में किंग जार्ज फिफ्थ स्कूल के नाम से एक मिडल स्कूल खोली गई जिसमें तीसरी से आठवीं तक की पढ़ाई की व्यवस्था की गई । अंग्रेजी तीसरी कक्षा से प्रारम्भ हो जाती थी ।

सन् 1940 में डॉ. मोहन सिंह मेहता ने रियासत का शासन सम्भालने के बाद शिक्षा में सुधार किया । उन्होनें मेट्रीक तक की पढ़ाई के लिए व्यवस्था की । सन् 1941 में मेट्रीक का पहला बेच शासन के खर्चे से परीक्षा देने हेतु उदयपुर भेजा । डॉ. मेहता के जमाने में ही स्कूल के लिए नए भवन का निर्माण किया गया जिसमें आज जिला कलक्टर कार्यालय एवं जिला न्यायालय स्थित है ।

डॉ. मेहता ने लड़कियों की शिक्षा पर भी ध्यान दिया । उन्होने लड़कियों के लिए अलग से प्राथमिक शालाएँ खोली । लड़कियों की एक शाला चौबीसा ब्राह्मणों के मौहल्ले में, एक नागरवाड़ा में एवं एक नैमा समाज के मौहल्ले में खोली गई ।

सन् 1929 में गांधी जी के राष्ट्रीय असहयोग आन्दोलन का रियासत पर भी प्रभाव पड़ा। बाबा लक्ष्मणदास ने आदिवासियों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए भीलों के बच्चों को पढ़ाने के लिए एक पाठशाला आदिवासी क्षेत्र गांव मडकोला में खोली। बाद में जिला सेवा संघ परतापुर ने आदिवासियों की शिक्षा का काम अपने हाथ में लिया एवं परतापुर के अलावा चार अन्य गांवों में भी पाठशालाएं खोली जिनका खर्च सार्वजनिक सहयोग से चलाया जाता था ।

नगर क्षेत्र में चिमनलाल मालोत ने हरिजनों को पढ़ाने के लिए हरिजन मौहल्ले में पाठशाला खोली और राजा के विरोध एवं असहयोग के बावजूद वे उसे चलाते रहे । मालोत के पश्चात् धुलजी भाई भावसार, ने शिक्षा प्रसार का कार्य किया ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विद्यालय खोलने के साथ – साथ विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से शैक्षिक उन्नयन के प्रयास होते रहे हैं । इन परियोजनाओं में विज्ञान आओ करके सीखे, प्राथमिक शिक्षा शिक्षाक्रम नवनीकरण, सामुदायिक शिक्षा एवं सामुदायिक सहयोग की विकासात्मक प्रवृत्तियां, ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड, अनौपचारिक शिक्षा परियोजना, गुरूमित्र योजना, सरस्वती बहन योजना के माध्यम से शिक्षा में परिवर्तन होता रहा है । दूर दराज में जहां शिक्षक नहीं पहुंच पाते वहां 1989 से शिक्षाकर्मी परियोजना द्वारा शिक्षा की व्यवस्था सुलभ कराई गई।

1995 में साक्षरता अभियान के तहत इस जिले में शिक्षा की अलख एवं भूख जगी है। उस समय के जिला कलक्टर डॉ. बी. शेखर के नेतृत्व में इस अभियान के कारण सम्पूर्ण बांसवाड़ा शिक्षा मय हो गया था । डॉ शेखर ने पद यात्राओं के माध्यम से लोगों में शैक्षिक चेतना जागृत करने का भरपूर प्रयास किया।

1992 में पंचायत समिति गढ़ी में लोक जुम्बिश परियोजना प्रारम्भ की गई इसके कारण इस पंचायत समिति में शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव आया है । इस परियोजना का कार्य काल 30 जून 2004 को पूर्ण हो चुका है।

सत्र 2002–03 से जिले में लोक जुम्बिश परियोजना के साथ–साथ सर्व शिक्षा अभियान ने भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। सर्व शिक्षा शिक्षा अभियान की गतिविधियों को गति देने का कार्य लोक जुम्बिश परियोजना की मानव शक्ति द्वारा ही किया जाता था। लेकिन मार्च 2004 में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्रतिनियुक्तियॉ होने के बाद इस कार्य को और गति मिली है। जून 2004 में लोक जुम्बिश परियोजना की अवधि समाप्त होने के बाद जिले में सर्व शिक्षा अभियान की गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया जा रहा है।

सन् 1999 में राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ति पाठशालाऐं खोलने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। इससे अधिकतर बच्चों की पहुंच विद्यालय तक हो सकी है। बाद में यह पाठशालायें राजकीय प्राथमिक विद्यालयों मे परिवर्तित कर दी गई ।

राज्य सरकार द्वारा शिक्षा दर्पण सर्वे 2000 का महत्वपूर्ण कार्य कराया गया । जिसके द्वारा शिक्षा का सम्पूर्ण परिदृश्य स्पष्ट हुआ एवं यह जिला शत–प्रतिशत नामांकन की ओर अग्रसर हुआ है ।

✓ 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को शैक्षिक सुविधा उपलब्ध कराना :–

जिलें में सर्व शिक्षा अभियान प्रारम्भ होने के बाद राज्य सरकार के प्रयासों द्वारा गांव–गांव, ढ़ाणी–ढ़ाणी न केवल नवीन विद्यालय खोले गये अपितु पूर्व में संचालित प्राथमिक विद्यालय, रागापा, उच्च प्राथमिक विद्यालयो को भी क्रमोन्न करते हुऐ बच्चों की पहूँच में शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है। सर्व शिक्षा अभियान प्रारम्भ होने के बाद से इस सत्र तक 309 नवीन प्राथमिक विद्यालय खोले गये। साथ ही 1210 रागापा को प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। इसके अतिरिक्त 419 प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नयन किया गया है। वर्तमान में राज्य सरकार एवं निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों का विवरण निम्नानुसार है।

जिलें में कक्षा 1–8 संचालित राजकीय एवं निजी विद्यालयों का संख्यात्मक विवरण

नाम विकास खण्ड	राजकीय विद्यालय												निजी विद्यालय			राजकीय+निजी विद्यालय योग
	प्राथमिक विद्यालय				उच्च प्राथमिक विद्यालय				कक्षा 1–8/6–8 संचालित मावि विद्यालयों की संख्या	कक्षा 1–8/6–8 संचालित उमावि विद्यालयों की संख्या	कुल	महायोग				
	प्रावि	शिक्षाकर्मी	मदरसा	कुल	उप्रावि	संस्कृत	के.जी.बी.वि.	कुल					प्रावि	उप्रावि	कुल	
घाटोल	386	29	2	417	109	6	0	115	15	25	40	572	46	27	73	645
पीपलखूंट*	290	42	0	332	88	4	1	93	9	1	10	435	16	11	27	462
तलवाडा	370	23	10	403	127	5	1	133	15	21	36	572	29	62	91	663
गढी	225	24	1	250	156	5	0	161	24	36	60	471	37	35	72	543
आनन्दपुरी	167	31	0	198	36	3	0	39	6	6	12	249	22	11	33	282
बागीदौरा	221	30	1	252	77	3	0	80	7	13	20	352	15	27	42	394
सज्जनगढ	221	12	0	233	54	3	1	58	5	6	11	302	15	16	31	333
कुशलगढ	320	15	1	336	67	0	1	68	8	9	17	421	16	15	31	452
कुल	**2200**	**206**	**15**	**2421**	**714**	**29**	**4**	**747**	**89**	**117**	**206**	**3374**	**196**	**204**	**400**	**3774***

स्त्रोत : डाईस 2008–09

- ❖ इसके अतिरिक्त जिलें में 1 केन्द्रीय, 1 नवोदय, 2 विशेष आवासीय, 2 बाल श्रमिक एवं 50 मॉ–बाडी विद्यालय भी संचालित है।

- ❖ पीपलखूंट ब्लॉक के 18 ग्रा.प. एवं पंचायत समिति छोटी सरवन की 18 ग्राम पंचायतो कुल 36 ग्राम पंचायतों का डाटा लिया गया है।

- ❖ जिलें में 2421 प्राथमिक विद्यालय स्तर के एवं 747 उप्रावि स्तर के राजकीय विद्यालय संचालित है। इसके अतिरिक्त 89 माध्यमिक विद्यालय एवं 117 उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित है जहॉ कक्षा 1–8/6–8 संचालित हो रही है। जिलें में 196 प्राथमिक स्तर के एवं 204 उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय संचालित है।

- ❖ सर्व शिक्षा अभियान द्वारा विकास खण्ड सज्जनगढ, कुशलगढ, तलवाडा एवं पीपलखूंट में मॉडल प्रथम के कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय संचालित है। वर्तमान में 33 विद्यालय भवन विहीन है। इसके अतिरिक्त 196 राजस्व गांव में प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयो में क्रमोन्नत करने की आवश्यकता है।

राजकीय विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं की स्थिति

दिनांक : 30 सितम्बर 2008 तक की स्थिति

क्र. सं.	ब्लॉक का नाम	विद्यालय संख्या*	भवन विहिन विद्यालय संख्या	सुविधाएँ									
				शौचालय				किचनशेड		रेम्प		हेण्डपम्प	
				कॉमन		बालिका							
				उपलब्ध	उपलब्ध नही	उपलब्ध	उपलब्ध नही	उपलब्ध	उपलब्ध नही	उपलब्ध	उपलब्ध नही	उपलब्ध	उपलब्ध नही
1	आनन्दपुरी	249	2	120	129	156	90	224	25	120	129	206	43
2	बागीदौरा	351	5	195	156	209	142	275	76	191	160	310	41
3	गढी	470	6	316	154	342	128	419	51	283	187	421	49
4	घाटोल	571	7	328	243	203	268	413	158	200	371	509	62
5	कुशलगढ	419	8	238	181	298	121	343	76	168	251	320	99
6	पीपलखूंट	439	2	201	238	177	262	302	137	204	235	294	145
7	सज्जनगढ	301	4	184	117	195	106	274	27	147	154	240	61
8	तलवाडा	559	26	293	266	263	296	390	169	233	326	240	125
9	कुल	**3359***	**60***	1875	1484	1843	1413	2640	719	1546	1813	2540	625

स्त्रोत : डाईस डाटा जिला बांसवाडा

*विद्यालय की संख्या में राजकीय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, मावि/उमावि जिनमे कक्षा 1–5/6–8/1–8 संचालित को लिया गया है।

*मदरसा को विद्यालय की संख्या में जोडा नही गया हैं।

*भवन विहिन विद्यालय अर्थात वे विद्यालय जिनके पास स्वयं का विद्यालय भवन नही है, जो किसी अन्य भवन में संचालित हो रहे है।

*भूमि की उपलब्धता नही हो सकने के कारण विद्यालय भवन का निर्माण नही किया जा सका है।

राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों की स्थिति

क्र.सं.	ब्लॉक का नाम	पुरूष	महिला	कुल	महिला शिक्षक प्रतिशत
1	आनन्दपुरी	568	99	667	17%
2	सज्जनगढ	716	139	855	19%
3	पीपलखूंट	906	240	1146	26%
4	कुशलगढ	941	242	1183	26%
5	बागीदौरा	982	323	1305	33%
6	घाटोल	1453	480	1933	33%
7	गढी	1491	497	1988	33%
8	तलवाडा	1044	969	2013	93%
9	कुल	8101	2989	11090	37%

स्त्रोत : डाईस डाटा 2008–09

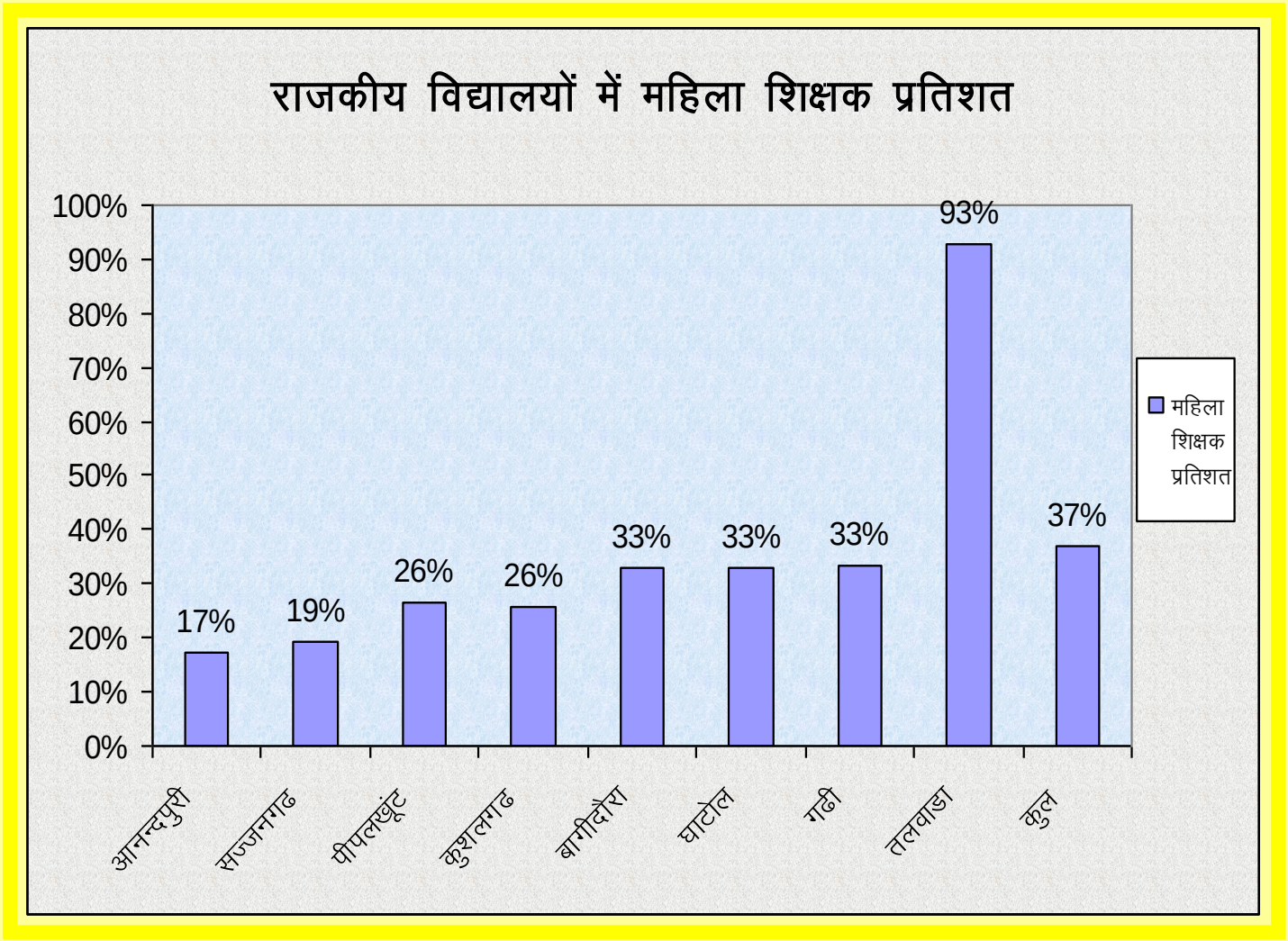

नामांकन

सत्र 2004–05 में शिक्षा से वंचित बच्चों की संख्या 11436 थी, जो सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से संचालित जनभागीदारी युक्त अभियानों द्वारा कम करते हुऐ सत्र 2009–10 में शिक्षा से वंचित बच्चों की संख्या 3161 रह गयी है। डाइस डाटा के अनुसार सत्र 2004–05 में कक्षा 1–8 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संख्या 330149 थी जो सत्र 2008–09 में 374063 हो गयी है, जो नामांकन में वृद्धि को दर्शाता है।

कक्षावार एवं जातिवार नामांकन

(समस्त राजकीय विद्यालय एवं विभिन्न प्रकार के निजी विद्यालयों सहित)

वक्षा	सामान्य वर्ग		अनु. जाति		अनु. जनजाति		OBC		सर्व योग			मुस्लिम	
	B	G	B	G	B	G	B	G	B	G	T	B	G
I	1658	1271	1856	1573	34259	30201	2461	2276	40234	35321	75555	374	288
II	1456	1176	1398	1352	27537	24825	2221	1913	32612	29266	61878	352	309
III	1450	1117	1311	1171	23339	20949	1971	1733	28071	24970	53041	323	293
IV	1331	1147	1127	1068	20218	18377	1854	1761	24530	22353	46883	274	291
V	1305	1058	1086	923	19549	16567	1822	1636	23762	20184	43946	281	294
योग I-V	7200	5769	6778	6087	124902	110919	10329	9319	149209	132094	281303	1604	1475
VI	1268	1065	1027	845	15424	10862	1755	1612	19474	14384	33858	231	268
VII	1254	1103	879	588	13357	9278	1872	1551	17362	12520	29882	241	256
VIII	1218	1032	849	624	13059	9031	1811	1396	16937	12083	29020	198	181
योग VI-VII	3740	3200	2755	2057	41840	29171	5438	4559	53773	38987	92760	670	705
महायोग I-VIII	10940	8969	9533	8144	166742	140090	15767	13878	202982	171081	374063	2274	2180

स्त्रोत : डाईस 2008–09 जिला बांसवाडा

जिलें में संचालित 3830 विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक कुल 374063 विद्यार्थी अध्ययनरत है। जिसमें बालक 54.26 प्रतिशत एवं बालिका 45.74 प्रतिशत है। नामांकन में 82.01 प्रतिशत छात्र–छात्राऍ अनुसूचित जनजाति के हैं।

नामांकन कक्षावार एवं जातिवार
समस्त राजकीय विद्यालय

कक्षा	सामान्य वर्ग		अनु. जाति		अनु. जनजाति		OBC		सर्व योग			मुस्लिम	
	B	G	B	G	B	G	B	G	B	G	T	B	G
I	490	492	1456	1355	29960	27832	1195	1329	33101	31008	64109	197	166
II	440	447	1122	1198	24158	22824	1086	1212	26806	25681	52487	192	188
III	395	429	1079	1025	20721	19523	925	1152	23120	22129	45249	168	154
IV	402	456	902	967	18072	17153	956	1197	20332	19773	40105	148	192
V	376	432	927	842	17670	15546	960	1169	19933	17989	37922	143	180
योग I-V	2103	2256	5486	5387	110581	102878	5122	6059	123292	116580	239872	848	880
VI	477	485	894	762	13871	10046	1062	1246	16304	12539	28843	135	158
VII	518	576	745	528	11922	8547	1306	1305	14491	10956	25447	125	151
VIII	578	591	720	552	11743	8319	1304	1149	14345	10611	24956	92	116
योग VI-VII	1573	1652	2359	1842	37536	26912	3672	3700	45140	34106	79246	352	425
महायोग I-VIII	3676	3908	7845	7229	148117	129790	8794	9759	168432	150686	319118	1200	1305

स्त्रोत : डाईस 2008–09 जिला बांसवाडा

जिलें के बड़े गांवो, कस्बों एवं दों नगरपालिका क्षेत्रों के निजी विद्यालयों में 54945 विद्यार्थी अध्ययनरत है जो कुल नामांकन का 14.69 प्रतिशत है। निजी विद्यालयों का भी जिलें में प्रारम्भिक शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान है।

कक्षा 1–8 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों में सत्र 2004–05 से 2008–09 तक नामांकित बच्चों का जातिवार विवरण

सत्र	सामान्य			अनुसूचित जाति			अनुसूचित जनजाति			ओबीसी			कुल			मुस्लिम		
	बलक	बालिका	कुल	बालक	बलिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल
2004-05	9637	8243	17880	11049	8731	19780	146756	116208	262964	15812	13713	29525	183254	146895	330149	0	0	0
2005-06	12378	10320	22698	11539	9684	21223	162355	134019	296374	17181	14831	32012	203453	168854	372307	0		
2006-07	11254	9386	20640	10851	9461	20312	166843	140336	307179	16834	14071	30905	205782	173254	379036	1291	992	2283
2007-08	11329	9162	20491	9679	8318	17997	162816	137744	300560	16199	14145	30344	200023	169369	369392	2285	2037	4322
2008-09	10940	8969	19909	9533	8144	17677	166742	140090	306832	15767	13878	29645	202982	171081	374063	2274	2180	4454

स्त्रोत : डाईस डाटा जिला बांसवाडा

सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ के समय सत्र 2004–05 में प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विद्यालयों का कुल नामांकन 330149 था जिसमें से 17880 बच्चें सामान्य वर्ग के 19780 बच्चें अनुसूचित जाति के, 262964 बच्चें अनुसूचित जनजाति के एवं 29525 बच्चें अन्य पिछडा वर्ग व मुस्लिम वर्ग के थे। सत्र 2008–08 के नामांकन के अनुसार कुल नामांकित 374063 बच्चों में से 19909 बच्चें सामान्य वर्ग के 17677 बच्चें अनुसूचित जाति के, 306832 बच्चें अनुसूचित जनजाति के, 29645 बच्चें अन्य पिछडा वर्ग व 4454 बच्चें मुस्लिम वर्ग के है। सत्र 2005–06 में नामांकन में 42158 की वृद्धि हुई सत्र 2006–07 में नामांकन में 6729 की वृद्धि हुई सत्र 2007–08 में नामांकन में 9644 बच्चों की कमी हुई एवं सत्र 2008–09 में नामांकन में 4671 की वृद्धि हुई।

नामांकन में कमी का मुख्य कारण राज्य सरकार द्वारा जनभागीदारी से संचालित मुख्यमंत्री शिक्षासम्बल महाभियान में सत्र 2005–06 एवं 2006–07 में 4 व 5 वर्ष की उम्र की बच्चों के विद्यालयो से जुड जाना रहा है। इसके साथ–साथ भौतिक सत्यापन द्वारा दोहरे नामांकन को भी सही करवाया गया है। समेकित रूप से जिलें में सर्व शिक्षा अभियान संचालित होने से नामांकन में अभिवृद्धि हुई है।

(कक्षा 1–8) जातिवार नामांकन का तुलनात्मक विश्लेषण

सत्र 2004–05

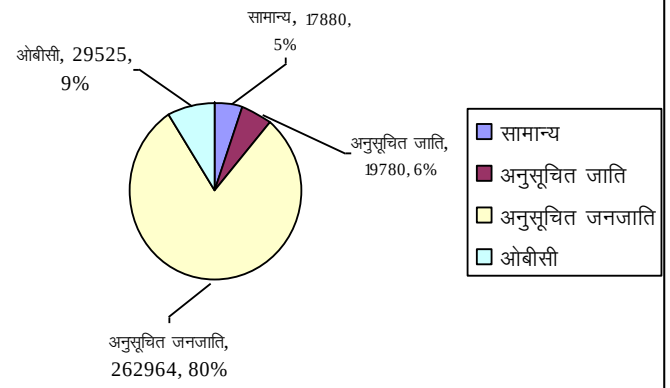

सत्र 2005–06

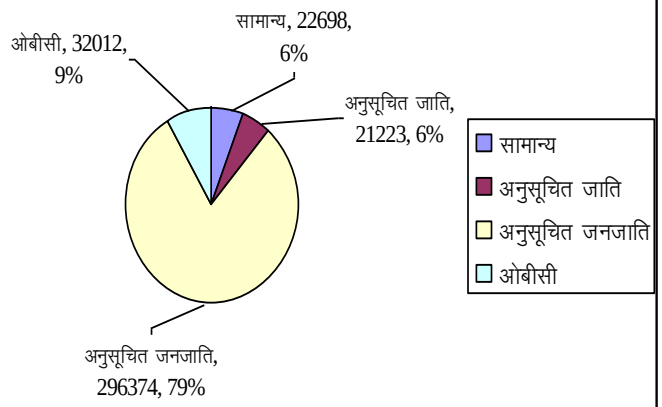

सत्र 2006–07

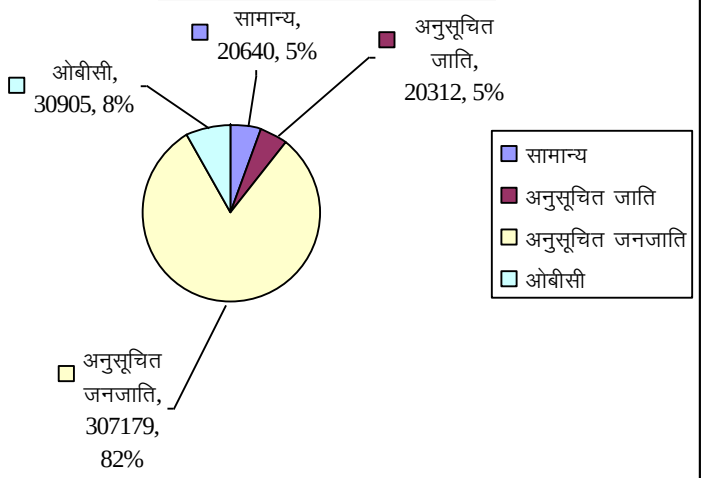

सत्र 2007–08

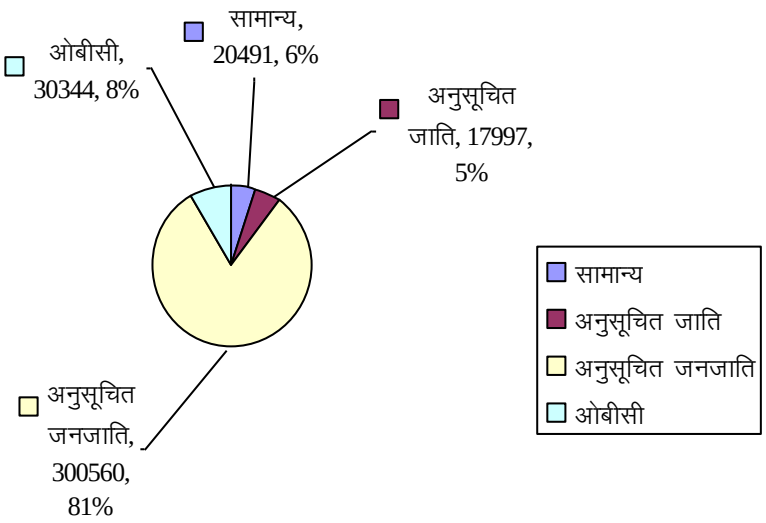

सत्र 2008–09

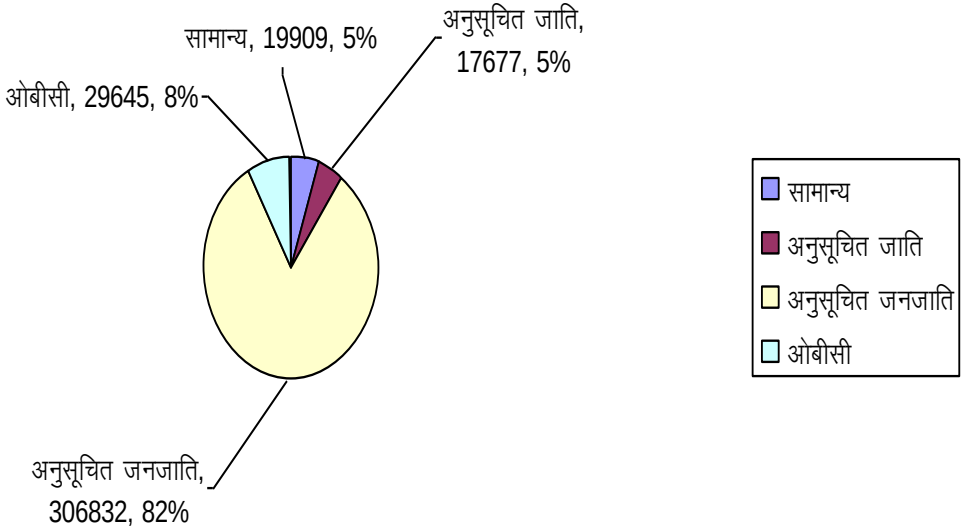

कक्षा 1–8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के सत्र 2004–05 से 2008–09 नामांकन का तुलनात्मक विवरण

सत्र	राजकीय			निजी			राजकीय+निजी			राजकीय			निजी			राजकीय+निजी		
	कक्षा 1–5			कक्षा 1–5			कक्षा 1–5			कक्षा 6–8			कक्षा 6–8			कक्षा 6–8		
	बालक	बालिका	कुल	बालक	बलिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल
2004-05	125358	112401	237759	15957	9786	25743	141315	122187	263502	38080	22654	60734	3859	2054	5913	41939	24708	66647
2005-06	133502	125920	259422	21322	12695	34017	154824	138615	293439	43259	27128	70387	5370	3111	8481	48629	30239	78868
2006-07	131115	123922	255037	21358	14055	35413	152473	137977	290450	47017	31795	78812	6292	3482	9774	53309	35277	88586
2007-08	123366	118358	241724	23372	13750	37122	146738	132108	278846	45427	33156	78583	7858	4105	11963	53285	37261	90546
2008-09	123292	116580	239872	25917	15514	41431	149209	132094	281303	45140	34106	79246	8633	4881	13514	53773	38987	92760

स्त्रोत : डाईस डाटा जिला बांसवाडा

कक्षा 1–8 के नामांकन में निजी विद्यालयों का सत्रवार नामांकन बढा है। गत पांच वर्षो में प्राथमिक स्तर पर 13058 एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर 6789 नामांकन में अभिवृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के कारण अभिभावकों में शिक्षा के प्रति चेतना जागृत हुई है एवं उन्हाने अपने बच्चों के भविष्य को सवारने हेतु निजी विद्यालयों का प्राथमिकता दी है। यहॉ यह विचारणीय बिन्दु है कि राजकीय विद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक सुविधाएँ होने एवं उच्च योग्यताधारी प्रशिक्षित शिक्षक होने पर भी अभिभावकों का रूझान निजी विद्यालयों की ओर क्यों बढ़ा है ?

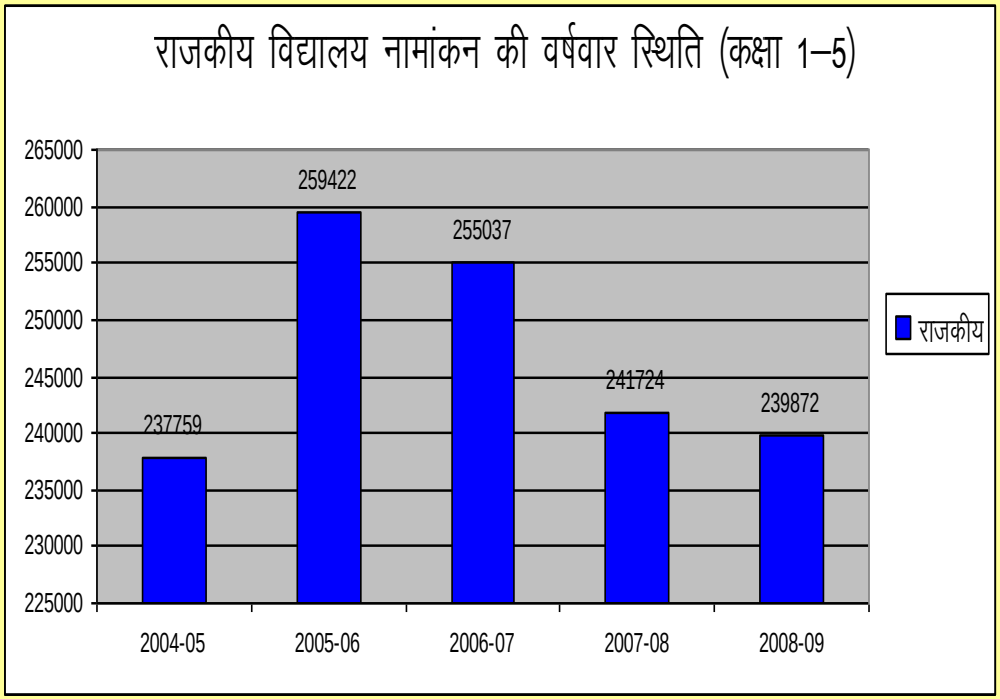

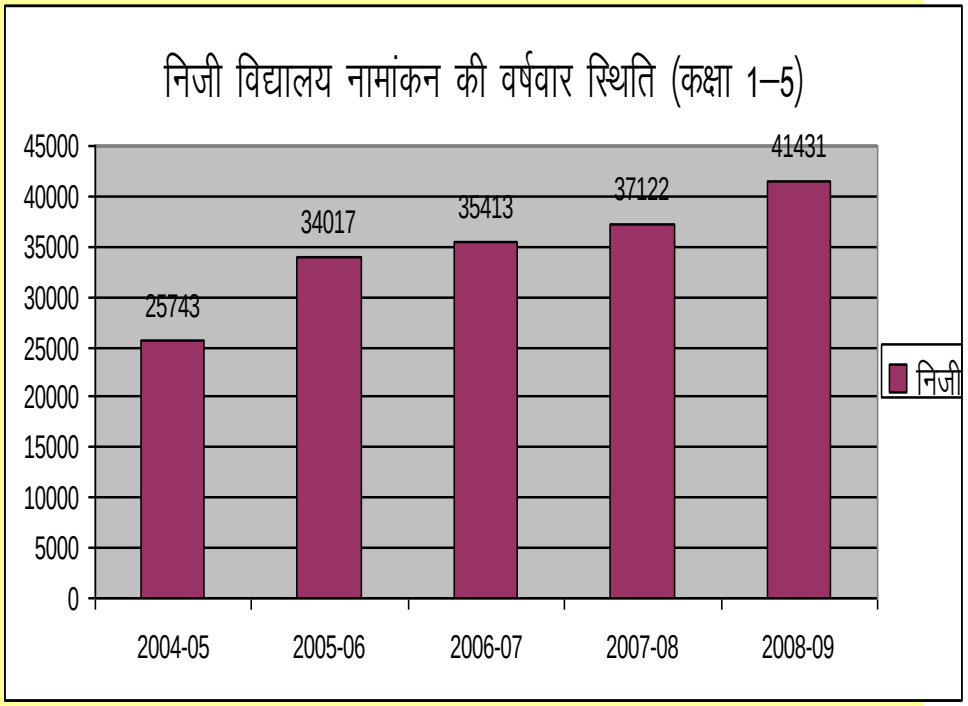

नामांकन में कमी के कारण :–

– शिक्षकों की कमी
– शिक्षकों का अन्य कार्यो में लगना
– शिक्षकों में भय का अभाव
– विद्यालय की उपलब्धियों का शिक्षक के केरियर से नही जुड पाना
– लचर शैक्षिक प्रशासन
– कक्षा–कक्ष में प्रभावी शिक्षण विधा व नवाचारों का उपयोग नही करना
– अभिभावको का सक्रिय नही होना

नामांकन में वृद्धि के कारण

– पर्याप्त मात्रा में शिक्षक
– विद्यालय में शिक्षण के अतिरिक्त कोई कार्य नही।
– शिक्षकों में भय
– किए गए कार्य का केरियर से जुडाव
– सक्रिय शैक्षिक प्रशासन
– कक्षा–कक्ष में प्रभावी शिक्षण विधा व नवाचारों का उपयोग करना
– अभिभावको का सक्रिय होना

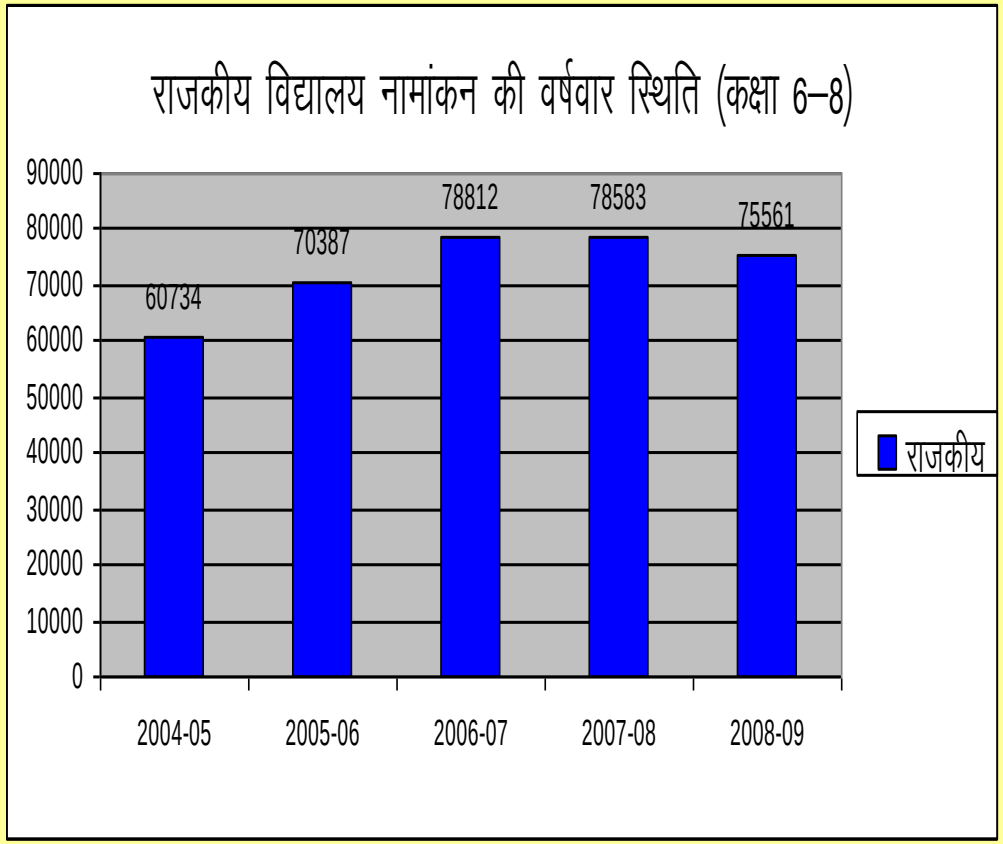
राजकीय विद्यालय नामांकन की वर्षवार स्थिति (कक्षा 6–8)
90000
80000
70000
60000
50000
40000
30000
20000
10000
0
60734
70387
78812
78583
75561
2004-05
2005-06
2006-07
2007-08
2008-09
राजकीय

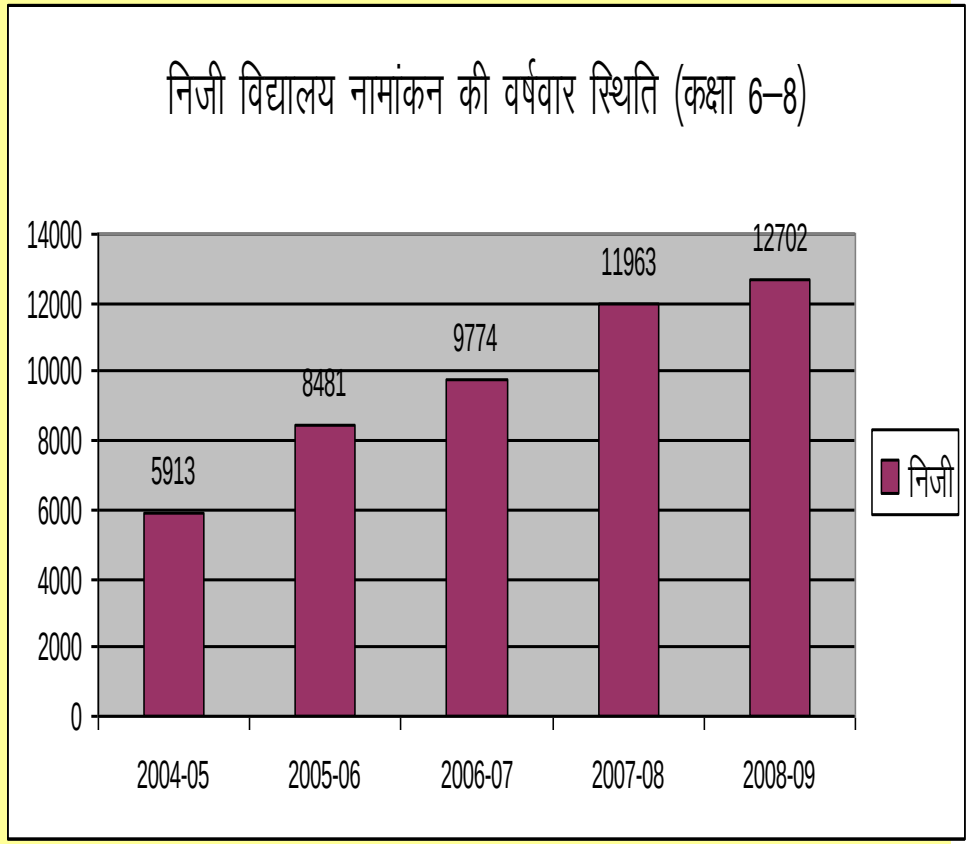
निजी विद्यालय नामांकन की वर्षवार स्थिति (कक्षा 6–8)
14000
12000
10000
8000
6000
4000
2000
0
5913
8481
9774
11963
12702
2004-05
2005-06
2006-07
2007-08
2008-09
निजी

सकल एवं शुद्ध नामांकन

कक्षा 1–8 तक नामांकन का संकल एवं शुद्ध नामांकन अनुपात

क्र.सं.	नाम विकास खण्ड	जनसंख्या (आयुवर्ग 6–11)			नामांकन											
					सर्व नामांकन (कक्षा 1–8)			शुद्ध नामांकन (आयुवर्ग 6–14)			सकल नामांकन अनुपात			शुद्ध नामांकन अनुपात		
		बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
1	आनन्दपुरी	14788	12904	27692	15416	13363	28779	14708	12836	27544	104.25%	103.56%	103.93%	99.46%	99.47%	99.47%
2	बागीदौरा	24095	20319	44414	25315	21208	46523	23894	20118	44012	105.06%	104.38%	104.75%	99.17%	99.01%	99.09%
3	गढी	28179	25713	53892	30277	27211	57488	28172	25698	53870	107.45%	105.83%	106.67%	99.98%	99.94%	99.96%
4	घाटोल	31270	25799	57069	32217	26643	58860	31235	25742	56977	103.03%	103.27%	103.14%	99.89%	99.78%	99.84%
5	कुशलगढ	18871	16307	35178	20807	17523	38330	18385	15655	34040	110.26%	107.46%	108.96%	97.42%	96.00%	96.77%
6	छोटी सरवन	8921	7187	16108	9967	7869	17836	8748	6967	15715	111.73%	109.49%	110.73%	98.06%	96.94%	97.56%
7	सज्जनगढ	17840	14940	32780	19631	16200	35831	17570	14645	32215	110.04%	108.43%	109.31%	98.49%	98.03%	98.28%
8	तलवाडा	26726	22456	49182	28588	23985	52573	26637	22362	48999	106.97%	106.81%	106.89%	93.18%	93.23%	93.20%
9	कुशलगढ (शहरी)	1109	938	2047	1193	1093	2286	1109	938	2047	107.57%	116.52%	111.68%	92.96%	85.82%	89.55%
10	तलवाडा (शहरी)	6652	5387	12039	7415	6117	13532	6652	5387	12039	111.47%	113.55%	112.40%	89.71%	88.07%	88.97%
	कुल	178451	151950	330401	190826	161212	352038	177712	150728	328440	106.93%	106.10%	106.55%	99.59%	99.20%	99.41%

स्त्रोत : डाईस 2008–09 जिला बांसवाडा

शिक्षा से वंचित बालक एवं बालिकाओं की स्थिति

जिले में जहॉ सत्र 2004–05 में एक विश्वसनीय हाउस होल्ड सर्व चाईल्ड ट्रेकिंग सिस्टम के आधार पर 11436 बच्चों को शिक्षा से वंचित के रूप मे चिन्हित किया गया था। आज यह संख्या कम होकर 3161 रह गई है। इसमे भी नेवर ऐनरोल्ड बच्चों की संख्या पर नजर डाले तो यह संख्या 6085 से घटकर 380 तक सिमट कर रह गई है।

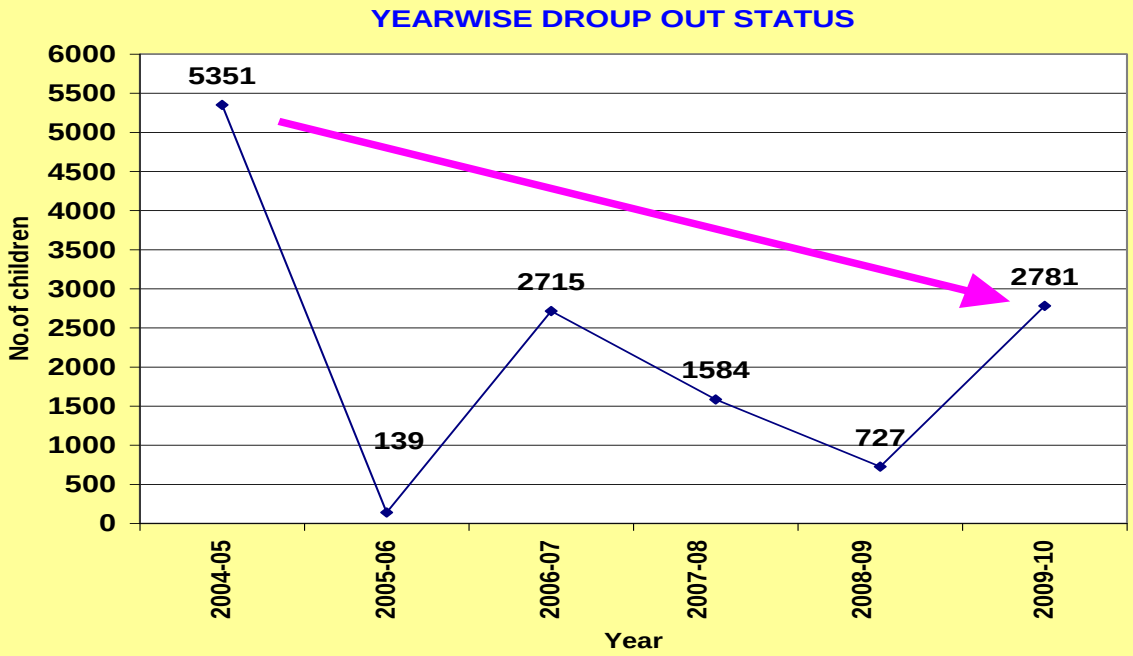

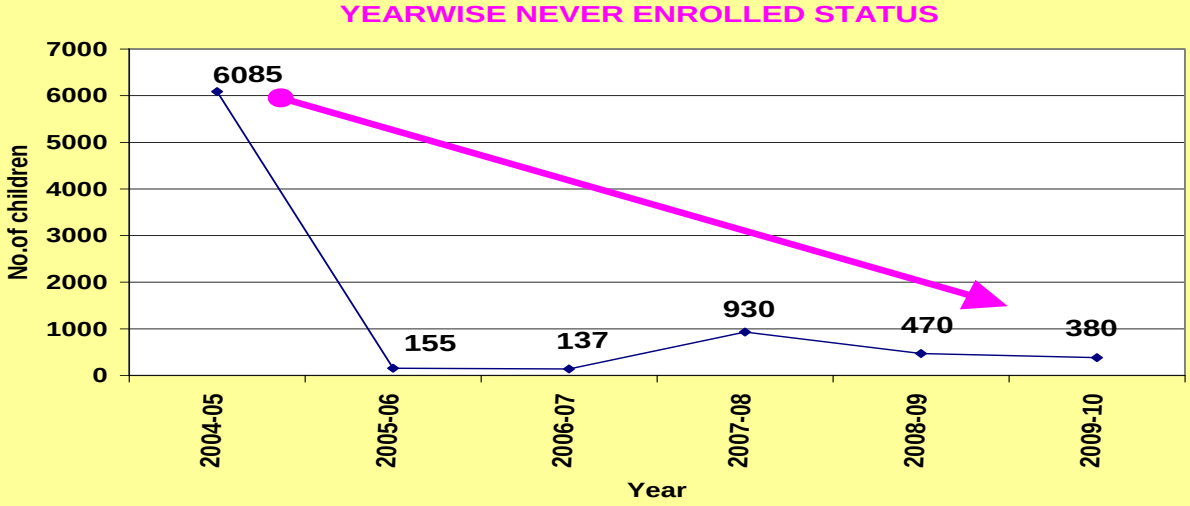

सत्रवार शिक्षा से वंचित बच्चों एवं उनके लिए संचालित किए गए ब्रिज कोर्स, शिक्षा मित्र केन्द्र का विवरण

क्र. स.	सत्र	ड्राप आउट			अनामांकित			योग			ब्रिज कोर्स संख्या	नामांकन			शिविर समाप्ति के पश्चात मुख्य धारा में नामाकंन			शिक्षा मित्र केन्द्र संख्या	नामांकन			केन्द्र समाप्ति के पश्चात मुख्य धारा में नामाकंन		
		बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग		बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग		बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
1	2003-04	245	407	652	117	105	222	362	512	874	11	97	337	434	63	285	348	0	0	0	0	0	0	0
2	2004-05	1934	3417	5351	1038	5047	6085	2972	8464	11436	30	139	1346	1485	81	1045	1126	382	2889	4745	7634	1985	3732	5717
3	2005-06	5	134	139	35	120	155	40	254	294	6	52	151	203	45	120	165	4	65	51	116	58	50	108
4	2006-07 (3 Month)	1397	1318	2715	64	73	137	1461	1391	2852	50	1073	1480	2553	758	1089	1847	0	0	0	0	0	0	0
	6 Month										36	645	1215	1860	542	1065	1607							
5	2007-08 (3 Month)	622	962	1584	307	623	930	929	1585	2514	22	557	563	1120	486	559	1045	0	0	0	0	0	0	0
	6 Month										15	101	661	762	100	632	732							
6	2008-09 (NRBC)	170	557	727	67	403	470	274	960	1234	4	26	86	112	0	0	0	11	92	105	197	0	0	0
	RBC										16	104	622	726	0	0	0							
	RBC अरबन स्लम										1	32	0	32	0	0	0							
	Stay Home अरबन स्लम										3	42	90	132	0	0	0							
7	2009-10 (NRBC)	1267	1514	2781	193	187	380	1460	1701	3161														
	RBC																							
	RBC अरबन स्लम																							
	Stay Home अरबन स्लम																							

सत्र 2008–09 की डाईस सूचना , ब्लॉक डेटा एवं मदरसा सेम्पल सर्वे के आधार पर जिले में 380 बच्चे कभी भी नामांकित न होने वाले तथा 2781 बच्चे ड्राप आउट के रूप में चिन्हित किए गए है। इस प्रकार जिले में चिन्हित शिक्षा से वंचित 3161 बच्चों में 1460 बालक एवं 1701 बालिकाएँ है।

शिक्षा से वंचित बच्चों में 380 नेवर ऐनरोल्ड एवं 2781 ड्राप आउट बच्चे है।

INFORMATION OF SCHOOL CHILDREN (6-14 years age group)

Name of District : BANSWARA

S.No.	Name of Block/ Municipal Area	Status & Age wise Break-up of Out of School Children																										
		Never Enrolled												Drop Out												Grand Total of 6-14 age Group		
		6-8 years			8-11 years			11-14 years			Total			6-8 years			8-11 years			11-14 years			Total					
		B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T
1	*2*	*3*	*4*	*5*	*6*	*7*	*8*	*9*	*10*	*11*	*12*	*13*	*14*	*15*	*16*	*17*	*18*	*19*	*20*	*21*	*22*	*23*	*24*	*25*	*26*	*27*	*28*	*29*
1	ANANDPURI	0	0	0	20	15	35	4	5	9	24	20	44	0	0	0	27	37	64	57	44	101	84	81	165	108	101	209
2	BAGIDORA	1	1	2	12	16	28	11	7	18	24	24	48	15	26	41	96	76	172	49	32	81	160	134	294	184	158	342
3	GARHI	2	0	2	5	1	6	11	6	17	18	7	25	0	7	7	0	0	0	11	5	16	11	12	23	29	19	48
4	GHATOL	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	24	43	67	21	15	36	11	136	147	56	194	250	56	194	250
5	KUSHLGARH	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	44	22	66	317	489	806	123	139	262	484	650	1134	484	650	1134
6	CHOTI SARVAN	0	9	9	0	0	0	0	16	16	0	25	25	25	16	41	0	0	0	79	68	147	104	84	188	104	109	213
7	SAJJANGARH	0	0	0	0	0	0	4	8	12	4	8	12	169	195	364	0	0	0	122	94	216	291	289	580	295	297	592
8	TALWARA	3	2	5	5	5	10	13	10	23	21	17	38	17	23	40	14	8	22	36	22	58	67	53	120	88	70	158
9	KUSHLGARH(U)	0	0	0	0	0	0	1	1	2	1	1	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	2
10	BANSWARA(U)	5	12	17	25	17	42	71	56	127	101	85	186	0	0	0	0	0	0	10	17	27	10	17	27	111	102	213
	TOTAL	11	24	35	67	54	121	115	109	224	193	187	380	294	332	626	475	625	1100	498	557	1055	1267	1514	2781	1460	1701	3161

Source: DISE,Block Plan & Sample survey Year: 2008-09.

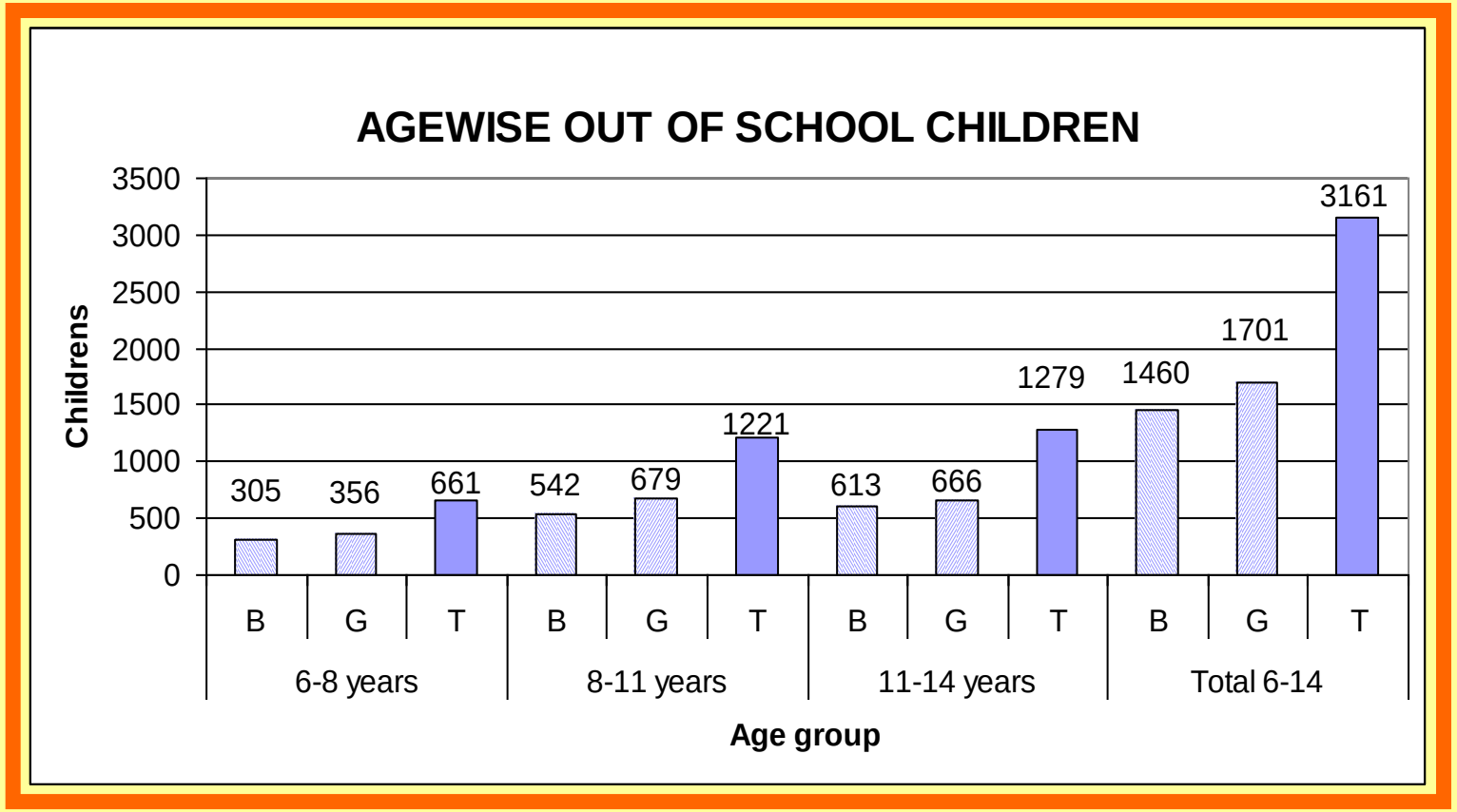
AGEWISE OUT OF SCHOOL CHILDREN
Childrens
3500
3000
2500
2000
1500
1000
500
0
305
356
661
542
679
1221
613
666
1279
1460
1701
3161
B
G
T
6-8 years
8-11 years
11-14 years
Total 6-14
Age group

Cast wise out of Children (6-14 Age)

Sr. No.	Block	Out of School Children	Cast wise																	
			SC			ST			OBC			MIN			GEN			TOTAL		
			B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T
1	आनन्दपुरी	Never Enrolled	0	0	0	24	20	44	0	0	0	0	0	0	0	0	0	24	20	44
		Drop out	1	4	5	83	77	160	0	0	0	0	0	0	0	0	0	84	81	165
2	बागीदौरा	Never Enrolled	1	1	2	13	14	27	5	3	8	1	0	1	4	6	10	24	24	48
		Drop out	2	5	7	155	122	277	0	0	0	3	7	10	0	0	0	160	134	294
3	गढ़ी	Never Enrolled	1	0	1	6	2	8	0	0	0	3	2	5	8	3	11	18	7	25
		Drop out	0	0	0	6	11	17	1	0	1	4	1	5	0	0	0	11	12	23
4	घाटोल	Never Enrolled	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
		Drop out	0	1	1	35	178	213	0	0	0	3	0	3	18	15	33	56	194	250
5	कुशलगढ़	Never Enrolled	0	0	0	1	1	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	2
		Drop out	0	0	0	484	650	1134	0	0	0	0	0	0	0	0	0	484	650	1134
6	छोटी सरवन	Never Enrolled	0	0	0	0	25	25	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	25	25
		Drop out	0	0	0	104	84	188	0	0	0	0	0	0	0	0	0	104	84	188
7	सज्जनगढ़	Never Enrolled	0	0	0	4	8	12	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4	8	12
		Drop out	22	23	45	269	266	535	0	0	0	0	0	0	0	0	0	291	289	580
8	बॉसवाडा ग्रामीण	Never Enrolled	2	1	3	8	6	14	6	7	13	0	0	0	5	3	8	21	17	38
		Drop out	4	1	5	56	49	105	7	3	10	0	0	0	0	0	0	67	53	120
9	बॉसवाडा शहर	Never Enrolled	6	3	9	0	0	0	11	14	25	82	85	167	2	3	5	101	85	186
		Drop out	0	0	0	0	0	0	0	0	0	10	17	27	0	0	0	10	17	27
Total		**Never Enrolled**	**10**	**5**	**15**	**56**	**76**	**132**	**22**	**24**	**46**	**86**	**87**	**173**	**19**	**15**	**34**	**193**	**187**	**380**
Total		**Drop out**	**29**	**34**	**63**	**1192**	**1437**	**2629**	**8**	**3**	**11**	**20**	**25**	**45**	**18**	**15**	**33**	**1267**	**1514**	**2781**
G. Total			**39**	**39**	**78**	**1248**	**1513**	**2761**	**30**	**27**	**57**	**106**	**112**	**218**	**37**	**30**	**67**	**1460**	**1701**	**3161**

Source: DISE,Block Plan & Sample survey Year: 2008-09.

बांसवाडा जिला जनजाति बाहुल्य है। जनजाति के लोग दूर–दराज के क्षेत्र मे छितरी बस्तियों मे रहते है, शिक्षा से वंचित बच्चों की जातिवार संख्या पर दृष्टि डालते है तो जनजाति वर्ग के बच्चे ही अधिकतम संख्या मे शिक्षा से वंचित है। शिक्षा से वंचित 3039 बच्चों में 78 अनुसूचित जाति, 2639 अनुसूचित जनजाति, 57 अन्य पिछडा वर्ग, 218 मुस्लिम समुदाय के एवं 67 सामान्य वर्ग के है। शिक्षा से वंचित बच्चों में 86.83 प्रतिशत अ. ज.जा वर्ग के है। अतः इन बच्चों के लिए योजना बनाते समय उनकी आवश्यकता एवं स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया है।

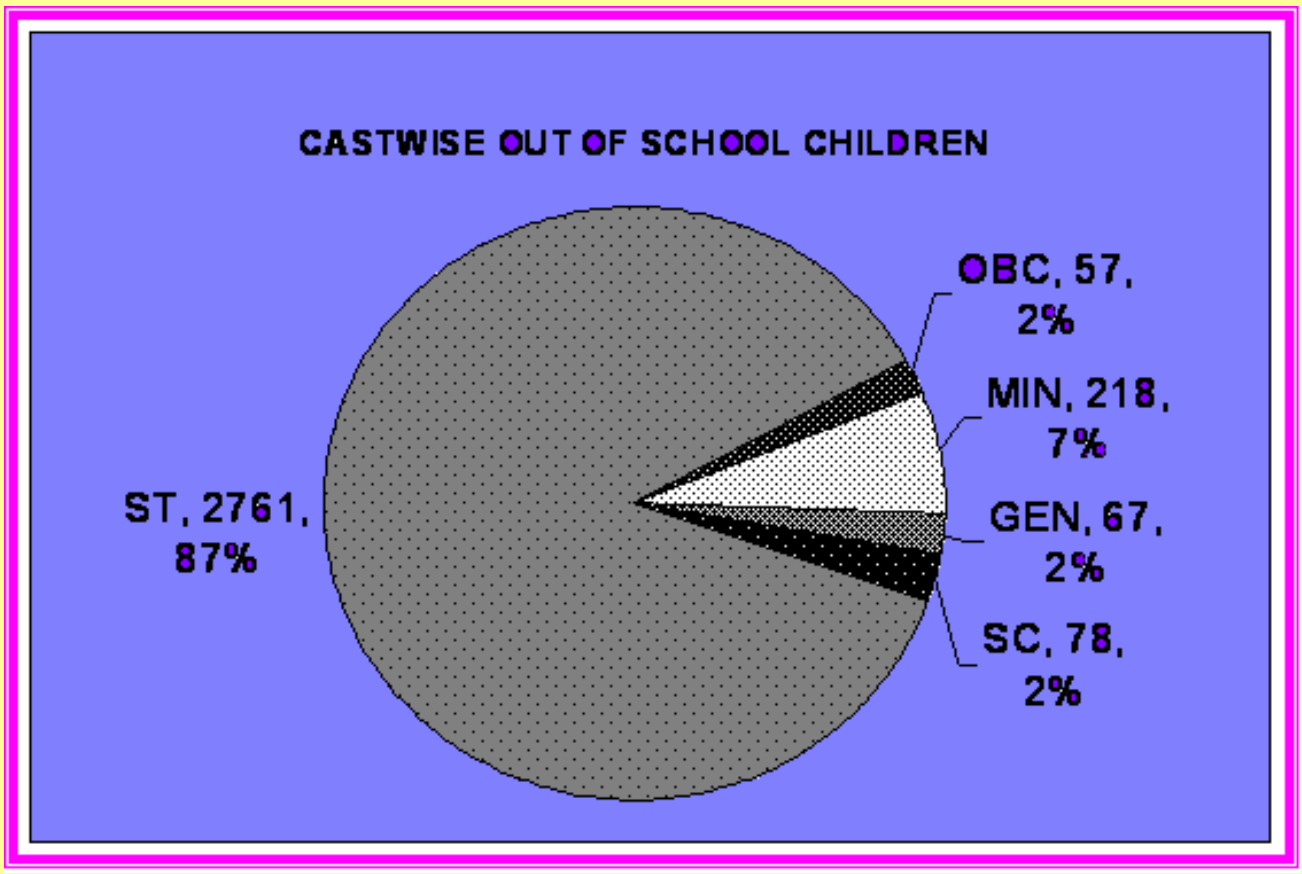

जिले में शिक्षा से वंचित 3161 बच्चों के शिक्षा में नहीं जुड पाने या ड्राप–आउट होने के कारणों का विश्लेषण करने पर यह देखा गया कि 154 बच्चें पढने के प्रति रूचि न होने, 89 बच्चें सुविधाओं व धन की कमी होने से, 2252 बच्चे ग्रहकार्य में लगने से, 398 बच्चें मां–बाप के साथ प्रवास (Migration) पर जाने से, 87 बच्चे निर्देशन की कमी (असफलता) से तथा 7 बच्चे अन्य कारणों (विशेष आवश्यकता वाले) से शिक्षा से वंचित रह रहे हैं ।

ड्रॉप आउट बालक /बालिकाओं की सूची कारण सहित

Sr. No.	Block	Name of Out of School Child as per servey			Number of Out of school children with reason																											
					Lack of Intrest			Lack of Guidence			House hold work			Working Children			Migration			Lack of Money			Failuaer			Lake of Access			Other			Non flexbility in school system		
		B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T
1	आनन्दपुरी	108	101	209	0	0	0	0	0	0	89	46	135	0	0	0	43	31	74	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
2	बागीदौरा	184	158	342	25	23	48	0	0	0	61	60	121	0	0	0	74	51	125	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
3	गढ़ी	29	19	48	0	0	0	0	0	0	7	12	19	0	0	0	8	3	11	2	2	4	0	0	0	0	0	0	12	2	14	0	0	0
4	घाटोल	56	194	250	0	0	0	0	0	0	56	194	250	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
5	कुशलगढ़	485	651	1136	0	0	0	0	0	0	442	609	1051	0	0	0	43	42	85	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
6	छोटी सरवन	104	109	213	0	0	0	0	0	0	104	104	208	0	0	0	0	5	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
7	सज्जनगढ़	295	297	592	34	34	68	41	46	87	142	155	297	0	0	0	50	38	88	5	8	13	0	0	0	14	9	23	9	7	16	0	0	0
7	बाँसवाडा गामीण	88	70	158	4	3	7	0	0	0	60	48	108	0	0	0	2	8	10	0	0	0	0	0	0	0	0	0	22	11	33	0	0	0
8	बाँसवाडा शहर	111	102	213	16	15	31	0	0	0	6	57	63	45	1	46	0	0	0	33	16	49	0	0	0	0	0	0	11	13	24	0	0	0
Total		**1460**	**1701**	**3161**	**79**	**75**	**154**	**41**	**46**	**87**	**967**	**1285**	**2252**	**45**	**1**	**46**	**220**	**178**	**398**	**40**	**26**	**66**	**0**	**0**	**0**	**14**	**9**	**23**	**54**	**33**	**87**	**0**	**0**	**0**

Source: DISE,Block Plan & Sample survey Year: 2008-09.

शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा से जोडने हेतु सर्व प्रथम इन बच्चों के अभिभावकों से सम्पर्क करके (संबंधित विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति एवं संकुल संदर्भ केन्द्र सहयोगी) एवं समुदाय के सहयोग से सर्व प्रथम उन्हें मुख्य धारा से जोडने का प्रयास किया जावेगा । मुख्यधारा से जुडने के पश्चात् उनकी विषयगत कमजोरियों को दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण की अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की जावेंगी । सत्र 2009–10 में शिक्षा से वंचित 3161 बच्चें मे से 764 बच्चों को (जिन्हें विद्यालय छोडे अधिक समय नहीं हुआ हैं,) शिक्षा की मुख्य धारा से जोडने का प्रयास किया जावेंगा ।

जिन बच्चों को मुख्यधारा से नहीं जोडा जा सकेंगा उनके लिए बच्चों की आवश्यकतानुसार गतिविधियाँ संचालित की जावेंगी । ब्रिज कोर्स संचालन से पूर्व समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित की जावेंगी । संदर्भ्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण कर उन्हें ब्रिज कोर्स संचालन हेतु प्रशिक्षित किया जावेगा। सत्र 2009–10 में शिक्षा से वंचित 3161 बच्चों में से 1260 बच्चों को गैर आवासीय ब्रिज कोर्स एवं 535 बच्चों को आवासीय ब्रिज कोर्स से, 306 बच्चों को शिक्षा मित्र केन्द्र से एवं 114 बच्चों विशेष आवश्यकता वाले होने से होम बेस्ड ऐजुकेशन व ब्रिज कोर्स से जोडने की योजना बनाई गई हैं ।

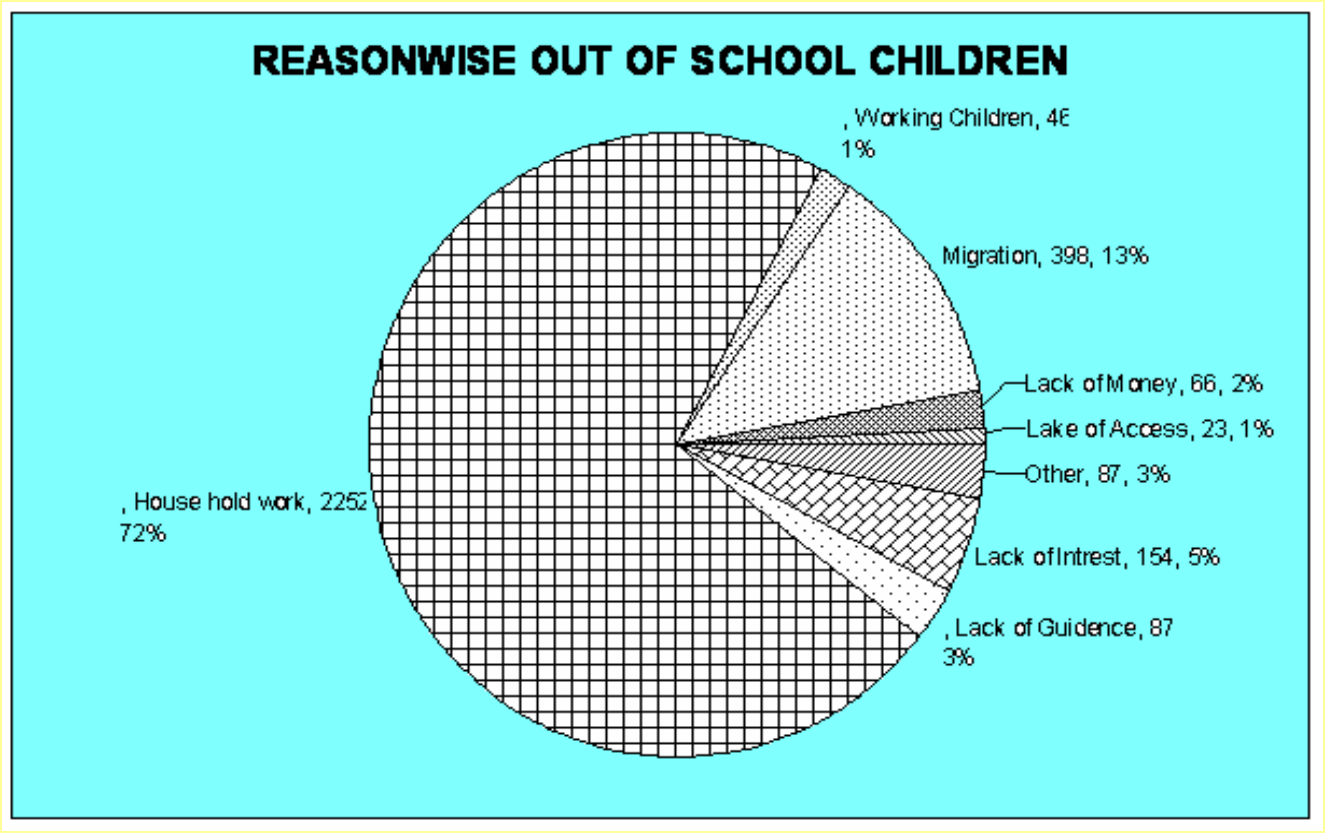

शिक्षक : छात्र अनुपात

सत्र	राजकीय			निजी			कुल		
	नामांकन	अध्यापक	PTR	नमांकन	अध्यापक	PTR	नामांकन	अध्यापक	PTR
2004-05	298493	8288	36.02	31656	548	57.77	330149	8836	37.36
2005-06	329809	9575	34.44	42498	1522	27.92	372307	11097	33.55
2006-07	333849	9987	33.43	45187	1897	23.82	379036	11884	31.89
2007-08	320307	10361	30.91	49085	2863	17.14	369392	13224	27.93
2008-09	319118	11332	28.16	54945	2740	20.05	374063	13813	27.08

निजी विद्यालयों में शिक्षक : छात्र अनपात की सत्रवार स्थिति

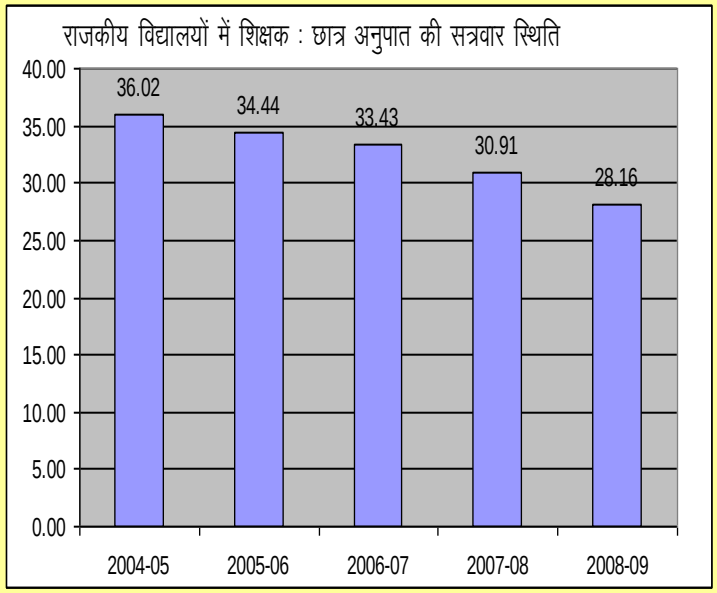

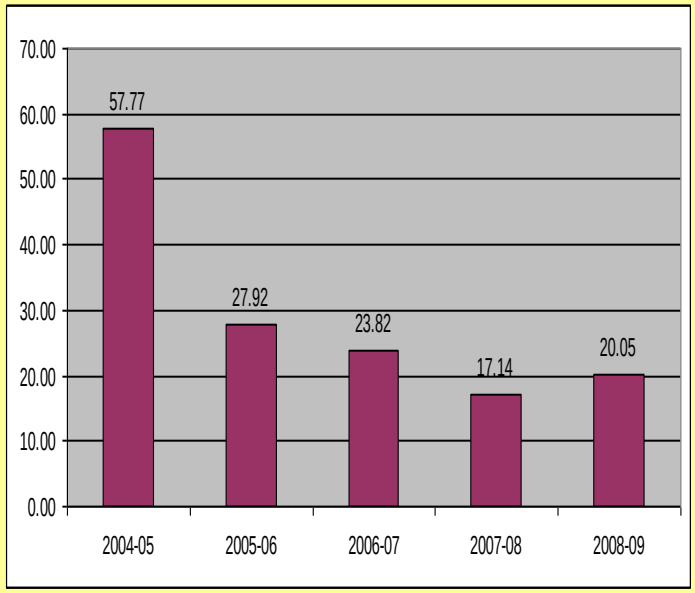

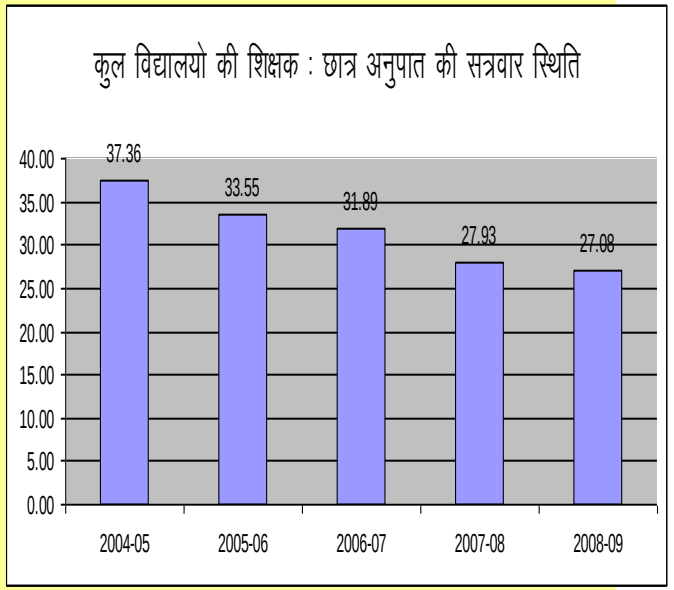

✓ नामांकित बच्चों का सार्वभौम ठहराव सुनिश्चित करना :–

कक्षा 1 में प्रवेशित बालक आठ वर्ष तक विद्यालय में रहकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हुऐ कक्षा 8 उत्तिर्ण हो, इस हेतु सतत् प्रयास किये जा रहे है। ठहराव की स्थिति निम्नांकित तालिका द्वारा स्पष्ट की जा रही है :–

कक्षा 1–8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के सत्र 2004–05 से 2008–09 कक्षावार नामांकन एवं ठहराव का तुलनात्मक विवरण

सत्र	कक्षा–1			कक्षा–2			कक्षा–3			कक्षा–4			कक्षा–5		
	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल
2004-05	35938	31910	67848	29080	27399	56479	29444	27324	56768	26072	21432	47504	20781	14122	34903
2005-06	41214	37821	79035	30422	27818	58240	28212	26076	54288	28263	25480	53743	26713	21420	48133
2006-07	40480	35975	76455	31830	30159	61989	27505	24890	52395	25478	23406	48884	27180	23547	50727
2007-08	38520	34615	73135	31482	28448	59930	27792	25812	53604	24390	21562	45952	24554	21671	46225
2008-09	40234	35321	75555	32612	29266	61878	28071	24970	53041	24530	22353	46883	23762	20184	43946

सत्र 2004–05 में कक्षा 1 में प्रविष्ठ बच्चों का सत्रवार ठहराव की स्थिति

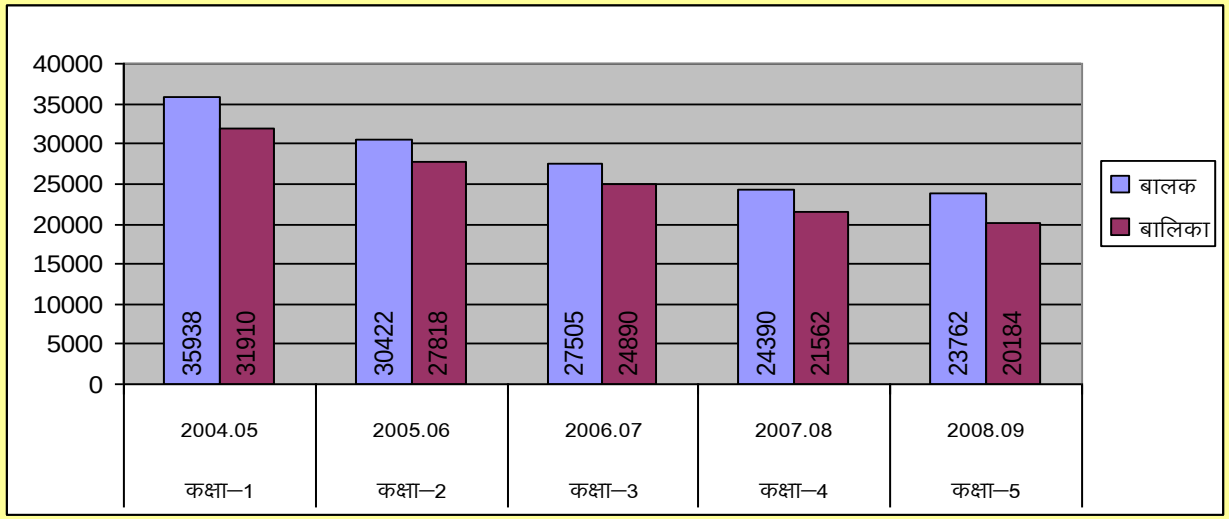

सत्र	कक्षा–6			कक्षा–7			कक्षा–8			कक्षा 1–8		
	बालक	बालिका	कुल	बालक	बालिका	कुल	बालक	बलिका	कुल	बालक	बालिका	कुल
2004-05	17834	10408	28242	12586	7806	20392	11519	6494	18013	183254	146895	330149
2005-06	19556	12188	31744	16451	9930	26381	12622	8121	20743	203453	168854	372307
2006-07	21306	14720	36026	16837	11026	27863	15166	9531	24697	205782	173254	379036
2007-08	20217	14742	34959	17703	12366	30069	15365	10153	25518	200023	169369	369392
2008-09	19474	14384	33858	17362	12520	29882	16937	12083	29020	202982	171081	374063

सत्र 2004–05 में कक्षा 1 में प्रवेशित 67848 बच्चों में से 43946 बच्चे ही सत्र 2008–09 में कक्षा 5 में पहुॅचें है। शेष 23902 बच्चें विभिन्न अवरोधो के कारण या तो ड्राप आउट हुऐ अथवा कक्षोन्नति में पिछड गये है। बच्चों का शत प्रतिशत ठहराव बनाने हेतु ओर अधिक प्रयास किये जाने है। ठहराव में बालिकाओं की अपेक्षा बालकों की स्थिति ठीक है।

✓ प्रारम्भिक स्तर पर लिंग भेद एवं सामाजिक विभेद को दूर करना :–

डाइस डाटा अनुसार सत्र 2004–05 से 2008–09 तक कक्षावार बालक–बालिका नामांकन की स्थिति निम्नानुसार है :–

सत्र	कक्षा–1			जेण्डर गेप	कक्षा–2			जेण्डर गेप	कक्षा–3			जेण्डर गेप	कक्षा–4			जेण्डर गेप
	बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल	
2004-05	35938	31910	67848	5.94	29080	27399	56479	2.98	29444	27324	56768	3.73	26072	21432	47504	9.77
2005-06	41214	37821	79035	4.29	30422	27818	58240	4.47	28212	26076	54288	3.93	28263	25480	53743	5.18
2006-07	40480	35975	76455	5.89	31830	30159	61989	2.70	27505	24890	52395	4.99	25478	23406	48884	4.24
2007-08	38520	34615	73135	5.34	31482	28448	59930	5.06	27792	25812	53604	3.69	24390	21562	45952	6.15
2008-09	40234	35321	75555	6.50	32612	29266	61878	5.41	28071	24970	53041	5.85	24530	22353	46883	4.64

सत्र	कक्षा–5			जेण्डर गेप	कक्षा–6			जेण्डर गेप	कक्षा–7			जेण्डर गेप	कक्षा–8			जेण्डर गेप
	बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल		बालक	बालिका	कुल	
2004-05	20781	14122	34903	19.08	17834	10408	28242	26.29	12586	7806	20392	23.44	11519	6494	18013	27.90
2005-06	26713	21420	48133	11.00	19556	12188	31744	23.21	16451	9930	26381	24.72	12622	8121	20743	21.70
2006-07	27180	23547	50727	7.16	21306	14720	36026	18.28	16837	11026	27863	20.86	15166	9531	24697	22.82
2007-08	24554	21671	46225	6.24	20217	14742	34959	15.66	17703	12366	30069	17.75	15365	10153	25518	20.42
2008-09	23762	20184	43946	8.14	19474	14384	33858	15.03	17362	12520	29882	16.20	16937	12083	29020	16.73

उक्त सारणी से सपष्ट है कि सत्रवार कक्षा 1 से 3 में जेण्डर गेप बढा है जबकि कक्षा 4 से 8 में यह कम हुआ है। समेकित नामांकन की स्थिति के अनुसार सत्रवार जेण्डर गेप कम हुआ हैं इसे ओर कम किया जाना आवश्यक है।

सत्र	कक्षा 1–8			जेण्डर गेप
	बालक	बालिका	कुल	
2004-05	183254	146895	330149	11.01
2005-06	203453	168854	372307	9.29
2006-07	205782	173254	379036	8.58
2007-08	200023	169369	369392	8.30
2008-09	202982	171081	374063	8.26

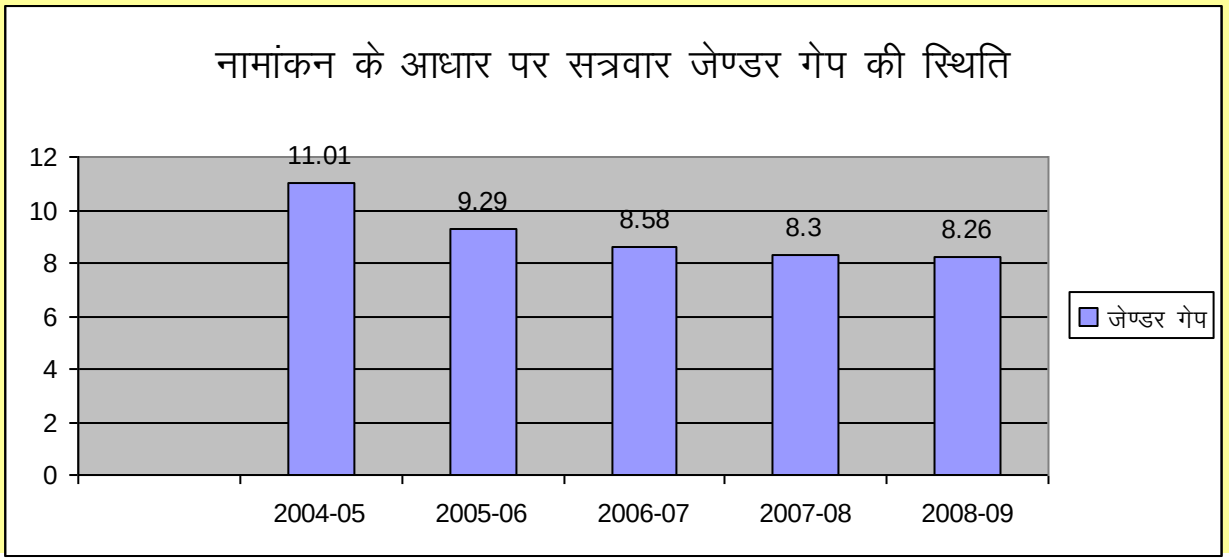

सत्रवार जेण्डर गेप का विश्लेषण (कक्षा 1–5)

क्र. सं.	ब्लॉक का नाम	2004-05			2005-06			2006-07			2007-08			2008-09		
		बलक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप
1	आनन्दपुरी	10073	8954	5.88	11752	10958	3.50	12041	11290	3.22	10963	10093	4.13	10995	9871	5.39
2	बागीदौरा	18421	15906	7.33	18701	16772	5.44	18600	16713	5.34	17870	15957	5.66	18377	16208	6.27
3	गढी	20602	18283	5.96	21674	20226	3.46	21278	19739	3.75	19764	18727	2.69	20102	18996	2.83
4	घाटोल	23058	19287	8.91	24936	21231	8.03	24344	21155	7.01	23705	20371	7.56	24352	20985	7.43
5	कुशलगढ	15733	13530	7.53	16825	15549	3.94	16947	15878	3.26	16429	15506	2.89	17186	15508	5.13
6	पीपलखूंट	13779	11542	8.83	17658	15234	7.37	17494	15308	6.66	17220	14912	7.18	17635	14659	9.22
7	सज्जनगढ	14404	11979	9.19	15138	13283	6.53	14782	12863	6.94	14632	12804	6.66	15077	13181	6.71
8	तलवाडा	25245	22706	5.29	28140	25362	5.19	26987	25031	3.76	26155	23738	4.84	25485	22686	5.81
कुल		141315	122187	7.26	154824	138615	5.52	152473	137977	4.99	146738	132108	5.25	149209	132094	6.08

स्त्रोंत :: डाइस डाटा जिला बांसवाडा

सत्रवार जेण्डर गेप का विश्लेषण (कक्षा 1–8)															
क्र.सं.	ब्लॉक का नाम	2004-05			2005-06			2006-07			2007-08			2008-09		
		बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप	बालक	बालिका	जेण्डर गेप
1	आनन्दपुरी	13310	11116	8.98	15534	13769	6.02	16578	14792	5.69	15247	13507	6.05	15416	13363	7.13
2	बागीदौरा	23978	18867	11.93	24947	20452	9.90	25205	21142	8.77	24676	20868	8.36	25315	21208	8.83
3	गढी	28857	24095	8.99	30723	26917	6.60	31008	27360	6.25	29632	26728	5.15	30277	27211	5.33
4	घाटोल	29554	22670	13.18	32156	25252	12.03	31913	25552	11.07	31634	25622	10.50	32217	26643	9.47
5	कुशलगढ	19631	15660	11.25	21452	17796	9.32	21962	18524	8.49	21351	18348	7.56	22000	18616	8.33
6	पीपलखूंट	16462	13089	11.41	21487	17628	9.87	21531	17995	8.95	21518	17739	9.63	22123	17738	11.00
7	सज्जनगढ	17819	13843	12.56	19026	15458	10.35	19149	15525	10.45	19140	15674	9.96	19631	16200	9.58
8	तलवाडा	33643	27555	9.95	38128	31582	9.39	38436	32364	8.58	36825	30883	8.78	36003	30102	8.93
9	कुल	183254	146895	11.01	203453	168854	9.29	205782	173254	8.58	200023	169369	8.46	202982	171081	8.53

स्त्रोंत :: डाइस डाटा जिला बांसवाडा

सत्र 2004–05 से 2008–09 में कम हुऐ जेण्डर गेप सुधारात्मक स्थिति

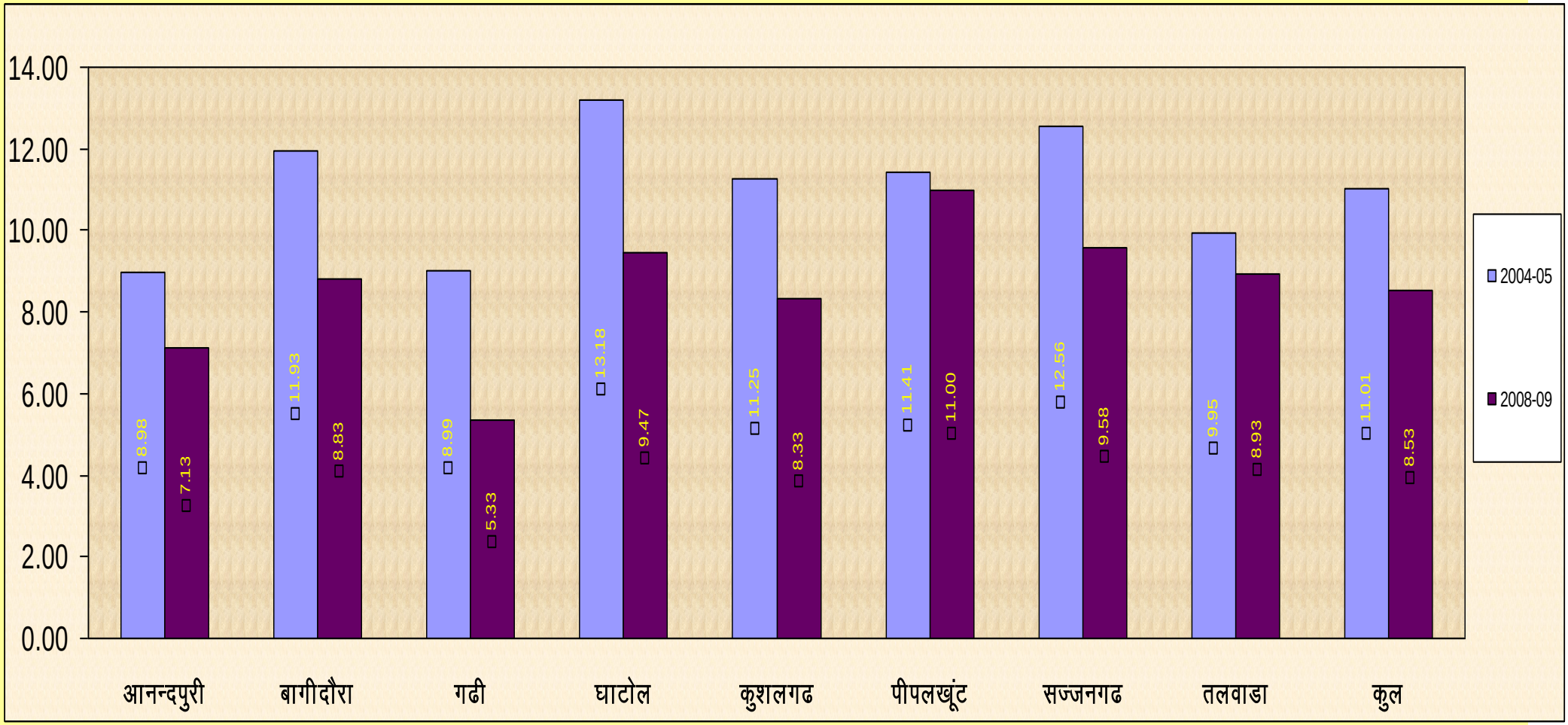

2010 तक 8 वर्षीय गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करना :–

गुणात्मक शिक्षा सर्व शिक्षा अभियान का प्रमुख कार्य है। गुणात्मक शिक्षा हेतु सर्व शिक्षा अभियान द्वारा सतत् प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अभिमुखीकरण कार्यशाला आयोजित कर शिक्षकों को नवाचारों एवं प्रभावी शिक्षण विधा की जानकारी देकर इस हेतु तैयार किया जाता है। अभियान का यह प्रयास है कि बच्चा जिस कक्षा में अध्ययनरत है उस स्तर का ज्ञान वह अर्जित करें। सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से गत दो सत्रों में कक्षा 4 व 7 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों का गुणवत्ता निष्पत्ति परीक्षण किया गया। परीक्षण का तुलनात्मक विवरण निम्नाकित है।

sno.	Block Name	GRADE														
		A			B			C			D			E		
		07-08	08-09	Diff.	07-08	08-09	Diff.	07-08	08-09	Diff.	07-08	08-09	Diff.	07-08	08-09	Diff.
1	ANANDPURI	0	0	0	2	11	9	23	92	69	77	107	30	143	26	-117
2	BAGIDORA	6	6	0	43	25	-18	109	128	19	95	168	73	22	10	-12
3	GARHI	8	15	7	40	120	80	153	174	21	153	74	-79	67	24	-43
4	GHATOL	159	169	10	166	258	92	204	139	-65	27	1	-26	2	0	-2
5	KUSHALGARH	24	0	-24	199	25	-174	121	289	168	43	116	73	40	5	-35
6	PEEPALKHOOT	1	1	0	53	6	-47	108	89	-19	168	101	-67	80	0	-80
7	SAJJANDARH	3	0	-3	58	18	-40	118	152	34	75	119	44	39	8	-31
8	TALWARA	2	5	3	26	48	22	163	180	17	151	227	76	86	53	-33
9	DISTRICTS	203	196	-7	587	511	-76	999	1243	244	789	913	124	479	126	-353

स्तोत्र : निष्पत्ति परिक्षा परिणाम (राप्राशिप, जयपुर)

सत्र 2007–08 में E गेड के विद्यालयों की संख्या 479 थी जो सत्र 2008–09 में घटकर 126 रह गयी है। C व D ग्रेड के विद्यालयों में वृद्धि तथा A व B के ग्रेड के विद्यालयों में कमी हुई है। विकास खण्ड घाटोल एवं छोटी सरवन में E ग्रेड का कोई भी विद्यालय नही है। विकास खण्ड घाटोल में एक मात्र विद्यालय D ग्रेड का है। गुणात्मक शिक्षा की दृष्टि से विकास खण्ड घाटोल की स्थिति संतोषजनक है। विभाग एवं सर्व शिक्षा अभियान प्रयासरत है कि शिक्षण अधिगम को सहज, सरल एवं प्रभावी बनाकर सभी विद्यालयों को A व B श्रेणी के विद्यालयों में लाया जा सके।

स्वॉट (SWOT) एनालिसिस :–

- **Strength (हमारी ताकत/शक्ति) :–**
  - ✓ विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समितियॉ
  - ✓ शिक्षा विभाग में कार्यरत समर्पित शिक्षक
  - ✓ सर्व शिक्षा अभियान में मिशनरी भावना से कार्यरत कार्मिक
  - ✓ जिला प्रशासन का सहयोग
  - ✓ विद्यालयों का आकर्षक वातावरण
  - ✓ बालिका शिक्षा को बढावा देने हेतु मॉडल कलस्टर विद्यालय
  - ✓ कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय
  - ✓ सुगम एवं सरल शिक्षा देने हेतु कल्प विद्यालय
  - ✓ मीना केबिनेट व मंच
  - ✓ विकलांग बच्चों हेतु उपकरण, विशेष पाठ्य सामग्री आदि।
  - ✓ मिड–डे–मिल
- **Weakness (हमारी कमजोरियॉ) :–**
  - ✓ विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति में गैर शिक्षक सदस्यों का सक्रिय न हो पाना।
  - ✓ शिक्षकों का छात्र संख्या के अनुपात में समानीकरण न हो पाना।
  - ✓ कार्मिकों की जवाब देही तय न होना।
  - ✓ 60 विद्यालयों का भवन विहीन होना।
  - ✓ प्रशिक्षण एवं नवाचारों के माध्यम से सीखी विधाओं एवं क्रियाओं का उपयोग कक्षा–कक्ष में न हो पाना।
  - ✓ शिक्षकों का शिक्षणोत्तर कार्यो (सर्व शिक्षा निर्माण कार्य, चुनाव, विभिन्न गणनाऍ, स्वास्थ्य कार्यक्रमों आदि) में लगाना।
  - ✓ मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी न होना।
  - ✓ अध्यापकों का विद्यालय गॉव में निवास नहीं करना।

- **Opportunity (हमारे अवसर) :–**

  - ✓ आरपीएससी द्वारा शिक्षक भर्ती करना।
  - ✓ शिक्षक प्रशिक्षण देना।
  - ✓ टीएलएम, टीएलई, एसएफजी, आदि अनुदानों को विद्यालयों में देकर शिक्षा को गुणवत्तायुक्त बनाये रखना।
  - ✓ आवासीय एवं गैर–आवासीय ब्रिज कोर्सो द्वारा ऑउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन को शिक्षा की मुख्यधारा से जोडना।

- **Threats (हमारा भय) :–**

  - ✓ सर्व शिक्षा अभियान संचालित होने से कोई भय नही है। राजकीय विद्यालयों में यदि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ तो अभिभावकों का रूझान इन विद्यालयों के प्रति कम होता जायेगा।

स्थितिजन्य विश्लेषण

कहॉ पर हैं ? :–

- प्रारम्भिक शिक्षा हेतु जिले में 3774 राजकीय प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध है।
- उपर्युक्त के अलावा 1 केन्द्रीय, 1 नवोदय, 2 बालश्रमिक एवं 50 मॉ–बाडी विद्यालय भी संचालित किये जा रहे है।
- विद्यालयों मे शौचालय, किचनशेड, रेम्प एवं पेयजल हेतु हेण्ड पम्प की उपलब्धता।
- 11090 शिक्षकों की उपलब्धता जिसमे पुरूष 8109 व महिला 2989 है।
- कक्षा 1 से 8 तक कुल नामांकन 374063 है।
- जिले की साक्षरता दर 44.22 प्रतिशत है।

लक्ष्य (कहॉ पर जाना हैं ?) :–

- 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकन सुनिश्चित करना।
- 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को शैक्षिक सुविधा उपलब्ध कराना।
- 2010 तक 8 कक्षा तक गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करना।
- प्रारम्भिक स्तर पर लिंग भेद को दूर करना।
- शतप्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने हेतु सार्थक प्रयास करना।

- सभी के लिये निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना।

प्रयास (कैसे जाना है ?) :–

- 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकन सुनिश्चित करने हेतु राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर शिक्षा के क्षेत्र में संचालित योजनाओं को जनप्रतिनिधियों के माध्यम से गांव–गांव, ढाणी–ढाणी बताकर एवं शिक्षा की उपयोगिता के बार जानकारी देकर।

- 6–14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को शैक्षिक सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सर्व शिक्षा अभियान द्वारा विभिन्न गतिविधियॉ संचालित कर विशेष प्रयास किये जा रहे।

- शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु सर्व शिक्षा अभियान द्वारा विद्यलयों में TLE, TLM, SFG आदि अनुदान राशि दी जा रही है। उपचारात्मक कक्षाओं को संचालित कर शिक्षा की गुणवत्ता को बढाने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षकों का नई विधाओं की जानकारी देने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है। इस सत्र सर्व शिक्षा अभियान के लहर कार्यक्रम के तहत कक्षा 1 व 2 के बच्चों को सरल तरीके शिक्षण कार्य कराया जा रहा है। इस कार्य के लिए सहायक सामग्री विद्यालयों को उपलब्ध करा दी गई है।

- प्रारम्भिक स्तर पर लिंग भेद एवं सामाजिक विभेद को दूर करने हेतु सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से बालिका शिक्षा एवं एनपीईजीईएल कार्यक्रम संचालित किये जा रहे जिससे बालिका शिक्षा को बढावा मिला है। साथ ही बालिकाओं को अच्छी सुविधाएॅ भी मिल रही है।

– – – – 0 0 – – – –

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बीच सेतु का काम करती है। शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी समाज के दर्पण हैं। शिक्षक समाज की रीढ की हड्डी है। शिक्षा मनुष्य को सामाजिक चेतना व राष्ट्रीय सरोकार से जोडती है। प्रबुद्ध नागरिक बनाने के लिये बच्चों मे स्वावलम्बन, संयम, स्वाध्याय, सदाचार, उद्यमशीलता, सृजनात्मकता और नैतिक गुणों का विकास करना होगा।

जिले मे सर्वप्रथम माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा हेतु राजकीय बहुउद्देशीय विद्यालय की स्थापना जिला मुख्यालय पर रातीतलाई बांसवाड़ा मे की गई। जिले मे वर्तमान मे कुल 279 राजकीय एवं निजी माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रम"ाः 182 माध्यमिक विद्यालय एवं 97 उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। जिसमे से 150 माध्यमिक विद्यालय तथा 82 उच्च माध्यमिक विद्यालय राजकीय है, जबकि निजी क्षेत्र मे 32 माध्यमिक विद्यालय तथा 15 उच्च माध्यमिक विद्यालय है।

जिले मे कुल संचालित विद्यालयों का पंचायत समितिवार एवं नगरपालिकावार विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	पंचायत समिति / नगरपालिका	समस्त विद्यालय				राजकीय विद्यालय			
		मा.वि.		उ.मा.वि.		मा.वि.		उ.मा.वि.	
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
1	पं.स. बांसवाड़ा	25	1	9	2	24	1	9	2
2	पं.स. गढ़ी	44	5	19	6	42	5	17	6
3	पं.स. घाटोल	30	1	11	1	27	1	10	1
4	पं.स. पीपलखूंट जिला प्रतापगढ़	2	0	2	0	2	0	2	0
5	पं.स. छोटी सरवन	5	0	2	0	4	0	2	0
6	पं.सं. बागीदौरा	17	1	9	1	13	1	9	1
7	पं.सं.सज्जनगढ़	12	0	6	1	7	0	5	1
8	पं.सं. कुशलगढ़	11	0	5	0	10	0	4	0
9	पं.सं. आनन्दपुरी	11	0	5	1	10	0	4	1
	योग ग्रामीण	157	8	68	12	139	8	62	12
1	न. पा. बांसवाड़ा	12	2	12	2	1	1	4	2
2	न. पा. कुशलगढ़	3	0	2	1	1	0	1	1
	योग शहरी	15	2	14	3	2	1	5	3
	कुल योग	**172**	**10**	**82**	**15**	**141**	**9**	**67**	**15**

स्त्रोत :– जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक) बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

जिले मे माध्यमिक शिक्षा विभाग, के अधीन संचालित विद्यालयो में कुल नामांकन 87966 है जिसमें से 53097 बालक एवं 34869 बालिकायें हैं। कुल नामांकन 87966 में से

75874 का नामांकन राजकीय विद्यालयो मे है तथा शेष 12092 का नामांकन निजी विद्यालयों मे हैं अर्थात लगभग 14 प्रतिशत नामांकन निजी क्षेत्र के विद्यालयों मे है।

जिले मे नामांकन का पंचायत समितिवार एवं नगरपालिकावार विवरण निम्नानुसार है :–

पंचायत/नगरपालिका	कक्षा 6 से 8			कक्षा 9 से 12			महायोग		
	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
पं.स. बांसवाड़ा	2597	1504	4101	4054	2567	6621	6651	4071	10722
पं.स. गढ़ी	3031	2327	5358	7535	5370	12905	10566	7697	18263
पं.स. घाटोल	3294	1749	5043	4353	2718	7071	7647	4467	12114
पं.स. पीपलखूंट जिला प्रतापगढ़	300	170	470	856	560	1416	1156	730	1886
पं.स. छोटी सरवन	450	263	713	1300	842	2142	1750	1105	2855
पं.सं. बागीदौरा	1917	1264	3181	5205	3221	8426	7122	4485	11607
पं.सं.सज्जनगढ़	1488	799	2287	2537	1512	4049	4025	2311	6336
पं.सं. कुशलगढ़	1515	835	2350	1915	918	2833	3430	1753	5183
पं.सं. आनन्दपुरी	1322	1001	2323	2707	2303	5010	4029	3304	7333
योग ग्रामीण	15914	9912	25826	30462	20011	50473	46376	29923	76299
न. पा. बांसवाड़ा	1829	1498	3327	3684	2660	6344	5513	4158	9671
न. पा. कुशलगढ़	385	249	634	823	539	1362	1208	788	1996
योग शहरी	2214	1747	3961	4507	3199	7706	6721	4946	11667
कुल योग	**18188**	**11659**	**29787**	**34969**	**23210**	**58179**	**53097**	**34869**	**87966**

स्त्रोत :– जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक) बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

कुल नामांकन 87996 में से 60.36 प्रतिशत नामांकन लडकों का है जबकि बालिकाओं का नामांकन का प्रतिशत 39.64 है अर्थात माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्र छात्राओं के अनुपात का अन्तर 20.72 प्रतिशत है।

उपर्युक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि बांसवाड़ा, गढ़ी, घाटोल एवं बागीदौरा पंचायत समिति क्षैत्र में माध्यमिक शिक्षा अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों का प्रतिशत अधिक है जबकि पीपलखूंट, सज्जनगढ़, आनन्दपुरी एवं कुशलगढ पंचायत समिति क्षैत्र मे माध्यमिक शिक्षा अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियो का प्रतिशत कम है, जिसका मुख्य कारण क्षेत्र मे बिखरी हुई बस्ती तथा यहा के श्रमिकों का पलायन है।

जिले मे शिक्षा का प्रसार–प्रचार होने से माध्यमिक स्तर पर नामांकन/अध्ययन करने वाले बालक एवं बालिकाओ मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2004–05 मे माध्यमिक शिक्षा अन्तर्गत कक्षा 6 से 12 तक मे कुल नामाकंन 61327 था जिसमे 40722 छात्र एवं 20605 छात्राएं थी जो कि वर्ष 2008–09 मे बढकर कुल नामांकन 87966 हुआ जिसमे

53097 बालक 34869 बालिकाएं हैं। इस प्रकार गत पांच वष के दौरान अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों मे 43.43 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई हैं।

जिले में गत पांच वर्षों में बालक एवं बालिकाओं का नामांकन

वर्ष	कुल नामांकन			नामांकन में वृद्धि प्रतिशत मे (2004–05 से)		
	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
2004–05	40722	20605	61327	–	–	–
2005–06	41137	22521	63698	1.01	9.28	3.86
2006–07	44880	26266	71146	10.21	27.47	16.01
2007–08	46617	28469	75086	14.47	38.16	22.43
2008–09	53097	34869	87966	30.38	69.22	43.43

स्त्रोत :– जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक) बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

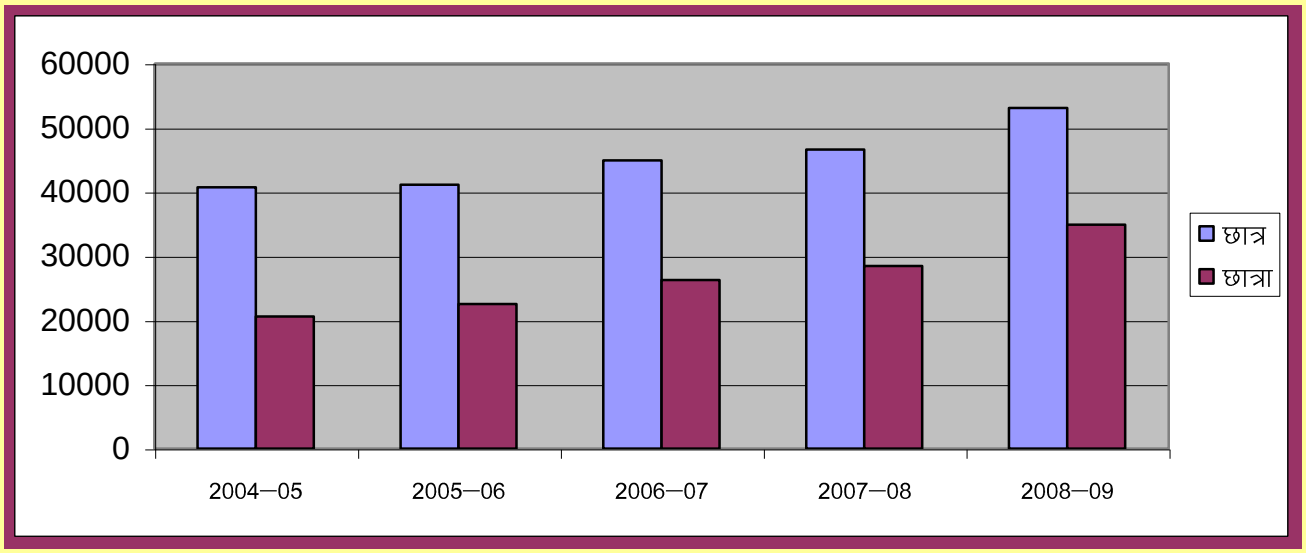

इस प्रकार गत पांच वर्ष के दौरान कुल नामांकन मे छात्रो का नामांकन 30.38 प्रतिशत तथा छात्राओं के नामांकन मे 69.22 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिले में माध्यमिक शिक्षा को बढावा देने के लिये विशेषकर अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं को माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से जोडने के लिये 9 वीं कक्षा उर्तीण होने पर तथा 10वी में अध्ययनरत होने की स्थिति मे निः शुल्क साईकल वितरण के क्रम मे जिले मे वर्ष 2006–07 से 2008–09 तक कुल 9847 अनुसूचित जनजाति बालिकाओ को लाभान्वित किया गया है तथा 300 रूपया अन्य जाति की छात्राओं से प्राप्त कर 326 छात्राओं को साईकल से लाभान्वित किया जा चुका है। इसी प्रकार बारहवीं कक्षा मे 65 प्रतिशत से अधिक अंक

प्राप्त होने पर निः शुल्क स्कूटी से लाभान्वित किये जाने के क्रम में जिले मे वर्ष 2005–06 से 2008–09 तक 93 बालिकाओं को स्कूटी वितरीत की गई।

ट्रान्सपोर्ट वाऊचर स्कीम

जो छात्राएं विद्यालय से 5 किलोमीटर या उससे अधिक की दुरी पर निवास कर रही है, उन्हें विद्यालय तक आने जाने की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु राज्य सरकार द्वारा ट्रान्सपोर्ट वाऊचर स्कीम संचालित की जा रही है, जिसके तहत प्रति शिक्षण दिवस 5 रूपये की दर से जिले मे अब तक कुल राशि रूपये 30.38 लाख रूपये व्यय कर जिले की 6737 बालिकाओं को लाभान्वित किया गया है। इस योजना के पूर्व जहाँ राज्य परिवहन की बसें संचालित हो रही थी, उन क्षेत्रो की 2120 छात्राओं को निः शुल्क बस यात्रा पास जारी कर लाभान्वित किया था।

आपकी बेटी योजना

इस योजना के अन्तर्गत 1885 बालिकाओं को गत सत्र तक 20,66,900 रूपये की राशि वितरित कर शिक्षा से जोडे रखने का प्रयास किया गया, साथ ही शारोरिक अक्षमता योजना के अन्तर्गत 206 विद्यार्थियों को 2,37,000 रूपये की राशि प्रदान की गई। उपर्युक्त योजनाओ के कारण भो नामांकन बढ़ा है।

छात्रावास

जिले में समाज कल्याण विभाग, द्वारा कुल 24 छात्रावासो का संचालन किया जा रहा है। जिले में 19 छात्रावास अनुसूचित जन जाति एवं 5 छात्रावास अनुसूचित जाति के बालक बालिकाओं हेतु संचालित किये जा रहे है। कुल 24 छात्रावासों में से 6 छात्रावास बालिकाओं हेतु तथा शेष 18 छात्रावास बालको के लिये संचालित किये जा रहे है।

विगत वर्षो मे इन छात्रावासों में प्रवेश हुए बालक बालिकाओं के परीक्षा परिणाम का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	सत्र	प्रविष्ठ	परीक्षा में सम्मिलित	उर्तीण	प्रतिषत
1.	2005–06	1320	1320	884	67.10
2.	2006–07	1320	1263	847	67.00
3.	2007–08	1320	1277	868	68.00
4.	2008–09	1320	1278	880	69.00

स्त्रोत :– सहायक निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारीता विभाग बांसवाड़ा।

जिले में शिक्षा में वृद्धि/विकास हेतु जनजाति क्षैत्रिय विकास विभाग के माध्यम से 39 छात्रावासों का संचालन किया जा रहा है। जिसमे 9 छात्रावास बालिकाओं के लिये संचालित हैं। इन छात्रावासों में जनजाति वर्ग के बालक एवं बालिकाओं को भोजन, आवास, कपड़ें, पुस्तकें एवं पठन पाठन सामग्री आदि सुविधाएं निः शुल्क उपलब्ध करवाई जा रही हैं। विगत वर्षो में जिले में जनजाति छात्रावासों में प्रविष्ठ तथा उर्तीण की स्थिति निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	सत्र	प्रविष्ठ	उर्तीण	प्रतिषत
1.	2003–04	2293	1842	80.33
2.	2004–05	2426	1825	75.23
3.	2005–06	2236	1768	79.07
4.	2006–07	2545	1933	75.95
5.	2007–08	2478	1875	75.67
6.	2008–09	2045	1788	87.43

स्त्रोत :– परियोजना अधिकारी, जन जाति क्षेत्रिय विकास विभाग बांसवाड़ा।

इस प्रकार राज्य सरकार द्वारा संचालित उपर्युक्त योजनाओ एवं विभिन्न प्रकार की छात्रवृतियां दिये जाने से माध्यमिक स्तर की शिक्षा मे नामांकन वृद्धि के साथ–साथ गुणात्मक दष्टि से आशातीत सुधार हुआ है।

पंचायत मुख्यालय पर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय की उपलब्धता :–

जिले मे कुल 325 ग्राम पंचायते है जिनमे से 189 ग्राम पंचायतों मे माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयो की उपलब्धता है, जबकि 136 ग्राम पंचायत क्षेत्रो मे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयो की उपलब्धता नही है ।

स्टॉफ की स्थिति

जिले में कुल शैक्षणिक स्टॉफ का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	पद नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत पद	रिक्त पद
1.	प्रधानाचार्य	82	60	22
2.	प्रधानाध्यापक	122	41	81
3.	प्राध्यापक	560	317	243
4.	प्राध्यापक शा.शि	03	2	1
5.	वरिष्ठ अध्यापक	931	796	135
6.	व. शा.शि.	46	35	11
8.	व. प्रयोगशाला सहायक	15	10	5
9.	तृतीय वेतन श्रृंखला अध्यापक	431	343	88
10.	तृतीय श्रेणी शा.शि.	77	72	5
12.	तृतीय श्रेणी प्र. स.	21	21	0
	योग	2288	1697	591

स्त्रोत :– जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक) बांसवाड़ा

जिले मे राजकीय विद्यालयों मे कक्षा 6 से 12 मे कुल नामांकन 75874 है। इसके विरूद्ध कुल कार्यरत शिक्षक 1697 है **अथात शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात 1:45 है।** जिले में स्वीकृत कुल शिक्षकों के 2288 पदो मे से 1697 पद भरे हुए है एवं 591 पद रिक्त है **अर्थात 30 प्रतिशत पद वर्तमान में रिक्त है।** जहां तक शिक्षक विद्यार्थी अनुपात का प्रश्न है, जिले की स्थिति आदर्श कही जा सकती हैं लेकिन जब हम इसका विद्यालयवार व क्षैत्रवार विश्लेशण करते हैं, तो जिला मुख्यालय, तहसील मुख्यालय, जिले के बडे कस्बों एवं सड़क किनारे के विद्यालयों में यह अनुपात कम है, लेकिन जिले के दरस्थ क्षेत्र यथा कुशलगढ़, आनन्दुपरी एवं पंचायत समिति पीपलखूंट (जिला प्रतापगढ) . क्षैत्रो मे यह अनुपात अधिक हैं एवं विषयाध्यापकों की नितान्त कमी है।

बोर्ड परीक्षा परिणाम की स्थिति :–

पिछले पाच वर्ष का कक्षा 12 एवं कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम संकायवार निम्ननुसार रहा है :–

सत्र	कला वर्ग (प्रविष्ठ)	उर्तीण प्रतिशत	विज्ञान वर्ग (प्रविष्ठ)	उर्तीण प्रतिशत	कृषि वर्ग (प्रविष्ठ)	उर्तीण प्रतिशत	वाणिज्य वर्ग (प्रविष्ठ)	उर्तीण प्रतिशत	क्षा 10 (प्रविष्ठ)	उर्तीण प्रतिशत
2004–05	2858	71.97	474	71.51	201	62.15	118	86.47	6143	51.19
2005–06	2680	83.76	630	72.00	230	67.39	248	81.35	7104	41.68
2006–07	3604	66.70	693	54.40	205	63.41	225	68.88	11188	34.66
2007–08	3587	80.68	749	67.02	209	69.85	219	66.21	14517	37.65
2008–09	5153	91.17	616	82.95	273	96.70	349	91.97	15657	63.12

स्त्रोत :– जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक) बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

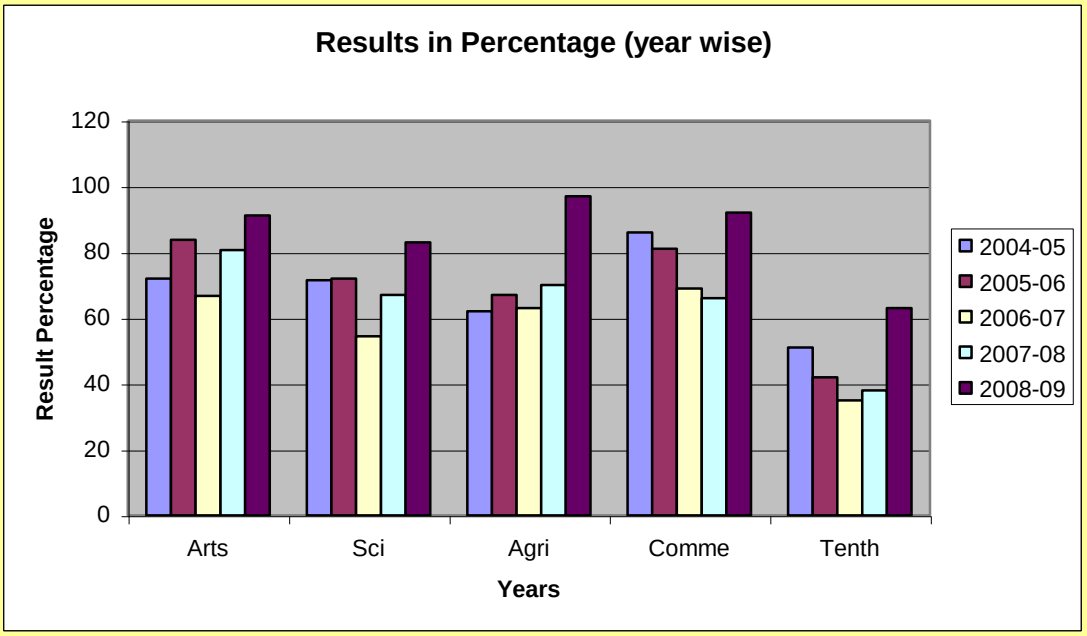

जब हम पिछले पांच वर्षो के उतीर्णता प्रतिशत का विश्लेक्षण करते हैं तो कला वर्ग में 20 प्रतिशत, विज्ञान वर्ग में 11 प्रतिशत, कृषि वग में 33 प्रतिशत, वाणिज्य वर्ग में 6 प्रतिशत एवं कक्षा 10 वीं मे 12 प्रतिश से अधिक की वृद्धि हुई है। इसके साथ परीक्षा प्रविष्ट विश्लेषण में हम पाते है कि कला वर्ग मे 2295 परीक्षार्थी, विज्ञान वर्ग में 142, कृषि वर्ग में 71, वाणिज्य वर्ग में 231 एवं कक्षा 10 में 16000 से अधिक परीक्षाथियों की बढोतरी हुई है, जब हम उतीर्ण प्रतिशतता को प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी मे विभाजित करते हैं तो 2004–05 की तुलना में कला वर्ग में (प्रथम श्रेणी – 470, द्वितीय श्रेणी – 1319, एवं तृतीय श्रेणी –268) 2008–09 में (प्रथम श्रेणी – 253, द्वितीय श्रेणी – 3053, एवं तृतीय श्रेणी –592,) है। इसी प्रकार विज्ञान वर्ग में (प्रथम श्रेणी – 153, द्वितीय श्रेणी –181, एवं तृतीय श्रेणी –05,) 2008–09 में (प्रथम श्रेणी – 190, द्वितीय श्रेणी – 309, एवं तृतीय श्रेणी –12,) है। इसी प्रकार कृषि वर्ग में 2004–05 मे (प्रथम श्रेणी – 60, द्वितीय श्रेणी – 65, एवं तृतीय श्रेणी –0,) 2008–09 में (प्रथम श्रेणी – 117, द्वितीय श्रेणी – 147, एवं तृतीय श्रेणी –12,) है। इसी प्रकार वाणिज्य वर्ग में 2004–05 मे (प्रथम श्रेणी – 18, द्वितीय श्रेणी – 66, एवं तृतीय श्रेणी –18,) 2008–09 में (प्रथम श्रेणी – 69, द्वितीय श्रेणी – 193, एवं तृतीय श्रेणी –59,) है। इसी प्रकार दसवी कक्षा में 2004–05 मे (प्रथम श्रेणी – 344, द्वितीय श्रेणी – 1135, एवं तृतीय श्रेणी –1666,) 2008–09 में (प्रथम श्रेणी – 801, द्वितीय श्रेणी – 5156, एवं तृतीय श्रेणी –3726,) है। इस प्रकार सत्र 2004–05 से सत्र 2008–09 मे तुलनात्मक दृष्टि से संख्यात्कम एवं गुणात्मक दोनो रूपो मे अभीवृद्धि हुई हैं।

कम्प्यूटर शिक्षा

हमे बदलती दुनिया के साथ–साथ चलते हुए प्राथमिक स्तर से ही पठन पाठन की प्रक्रिया को हाईटेक बनाना होगा। इससे शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हो सकेगा तथा विद्यार्थियो को अधिगम में भी आसानी रहेगी। जिले मे कुल 232 राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से मात्र 100 विद्यालयों में ही ई.सी.आई.एल. एवं कम्प्यूकोम आई.सी.टी. योजना के अन्तर्गत कम्प्यूटर लेब का निर्माण कराकर विद्यार्थियो को निः शुल्क कम्प्यूटर शिक्षा दी जा रही है। शेष विद्यालयो मे भी यह सुविधा शोघ्र उपलब्ध कराई जावेगी।

मिड–डे–मिल योजना

जिले की 191 विद्यालयों मे मध्यान्ह भोजन की योजना संचालित की जा रही है। किचन शेड का निर्माण 68 विद्यालयों में पूर्ण हो चुका है। इस योजना से औसतन 25614 छात्र–छात्राएं प्रतिदिन लाभान्वित हो रहे है। मिड डे मील कार्यक्रम से कक्षा 6 से 8 तक के छात्र–छात्राओ को सन्तुलित एवं पोष्टिक आहार प्रदान किया जाता है जिससे उनके नामांकन एवं ठहराव में वृद्धि हुई हैं।

ओपन स्कूल प्रणाली का प्रसार

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, राजस्थान सरकार द्वारा माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के सार्वजनीकरण को ध्यान मे रखकर विद्यालयी स्तर की औपचारिक शिक्षा से वंचित बालक – बालिकाओं, युवक – युवतियों को शिक्षा से वैकल्पिक रूप से जोड़ने के उद्देश्य से उन युवक – युवतियों को सम्मिलित किया जाना है, जिन्हें जीवन में औपचारिक शिक्षा उपलब्ध नहीं हो सकी है।

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल जयपुर की स्थापना राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2004 – 05 में की गयी है। यह एक पंजीकृत संस्था है जिसके संचालन हेतु नीतिगत निर्णय लेने के लिए गठित शाषी परिषद् के अध्यक्ष माननीय शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार तथा नीतिगत निर्णयों की क्रियान्विती के लिए गठित निष्पादन मण्डल के अध्यक्ष माननीय प्रमुख शासन सचिव स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान हैं। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल सोसायटी का विधिवत औपचारिक रूप में सोसायटी पंजीकरण एक्ट 1958 के द्वारा पंजीकरण क्रमाक 741/2004 – 05 दिनांक 21.03.05 को किया जा चुका है।

ओपन स्कूल परीक्षा में शामिल होने वाले वर्ग :–

1. गॉव एवं शहर के महिला एवं पुरूष
2. अनुसुचित जाति/जनजाति के पुरूष एवं महिला।
3. बेरोजगार एवं आंशिक रोजगार करने वाले महिला एवं पुरूष।
4. स्कूल छोड़ने वाले छात्र एवं छात्राएं।
5. विशेष आवश्यकता वाले शारीरिक एवं मानसिक विकंलाग पुरूष एवं महिलाएं।
6. कामकाजी महिला/पुरूष

पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल जयपुर द्वारा प्रारम्भ किये गये पाठ्यक्रम निम्नानुसार है :–

माध्यमिक :–

ग्रुप अ – हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, पंजाबी

ग्रुप ब – गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन, गृह विज्ञान, मनोविज्ञान एवं भारतीय संस्कृति तथा विरासत आदि कुल 13 विषय हैं।

विषयों का चयन :– माध्यमिक पाठ्यक्रम के कुल 13 विषयों में से कोई भी 5 विषय जिसमें से ग्रुप अ में से अधिकतम 2 विषय का चयन किया जा सकता है।

उच्च माध्यमिक :– यह पाठ्यक्रम 10वीं कक्षा उत्तीर्ण या उसके समकक्ष उत्तीर्ण कर चुके विद्यार्थियों के लिए है, जो आगे अध्ययन जारी रखना चाहते हैं। इसमें ग्रुप ए में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा ग्रुप बी में गणित, भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य , लेखा शास्त्र, गृह विज्ञान, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर, समाजशास्त्र तथा चित्रकला आदि कुल 18 विषय है।

प्रवेश प्रक्रिया :– राजस्थान स्टेट ओपन स्कुल द्वारा निर्धारित बांसवाड़ा जिले के 10 संदर्भ केन्द्रों मे से विद्यार्थी अपने निकटतम संदर्भ केन्द्र से विवरणिका मय आवेदन फार्म के माह जुलाई में अपना पंजीकरण करवा सकते हैं।

संदर्भ केन्द्र जिला मुख्यालय एवं पंचायत समिति मुख्यालय स्तर पर अवस्थित है :–

1. राउमावि नूतन बांसवाड़ा (जि.मु.)
2. राउमावि नगर बांसवाड़ा। (जि.मु.)
3. राबउमावि बांसवाड़ा । (जि.मु.)
4. राउमावि सज्जनगढ़ (पं.स.मु.)
5. राउमावि आनन्दपूरी (पं.स.मु.)
6. राउमावि बागीदौरा। (पं.स.मु.)
7. राउमावि कुशलगढ़ (पं.स.मु.)
8. राउमावि घाटोल। (पं.स.मु.)
9. राउमावि गढ़ी। (पं.स.मु.)
10. राउमावि पीपलखुंट (पं.स.मु.)

क्रेडिट अंक प्राप्त करने का लाभ :– राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल में पूर्व राजस्थान बोर्ड से प्राप्त प्राप्तांकों का किन्ही उत्तीर्ण हुए दो विषयों में क्रेडिट अंकों को यथावत स्टेट ओपन परीक्षा की अंकतालिका में जमाकर उस विषयों की परीक्षा नहीं देने का विशेष लाभ परीक्षार्थियों को प्राप्त है।

जब तक वह प्रमाण प्राप्त करने की योग्यता की शर्ते व 5 वर्ष अर्थात 9 सार्वजनिक परीक्षाओं की सीमा में रहता है। पॉच वर्षों के समय में इस तरह क्रेडिटों का जमा होना विद्यार्थी को शिक्षा की एक उन्मुक्त गति प्रदान करता है। अर्थात प्रत्येक अवसर में उत्तीर्ण विषय को अगली बार नहीं देना है। शेष अनुर्तीण विषय को उत्तीर्ण करने के लिए अधिकतम 9 अवसर या 5 वर्ष की अवधि प्रदान की जाती है।

प्रवेश प्रक्रिया :– राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल जयपुर द्वारा निर्धारित राज्य भर के 326 संदर्भ केन्द्रो जिसमें से बांसवाड़ा जिल के 10 संदर्भ केन्द्रों में विद्यार्थी अपने निकटतम् केन्द्र से विवरणिका आवेदन के साथ लेकर अपना पंजीयन करा सकते हैं।

पात्रता

माध्यमिक :–

न्यूनतम आयु :– इस पाठ्यक्रम हेतु न्यूनतम आयु 1 जुलाई तक 14 वर्ष पूर्ण होनी चाहिए।

न्यूनतम शैक्षिक योग्यता :– माध्यमिक स्तर तक कोई भी परीक्षा उत्तीर्ण/अनुतीर्ण का प्रमाणपत्र अथवा स्व अध्ययन प्रमाण पत्र ।

उच्च माध्यमिक

न्यूनतम आयु :– इस पाठ्यक्रम हेतु न्यूनतम आयु 1 जुलाई तक 15 वर्ष पूर्ण होनी चाहिए।

न्यूनतम शैक्षिक योग्यता :– माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक/ हाई स्कुल परीक्षा उत्तीर्ण का प्रमाण पत्र ।

जिले के सभी 10 संदर्भ केन्द्रों पर 2004 – 05 से अब तक कक्षा 10 एवं 12 के लिए पंजीकृत एवं उत्तीर्ण एवं आंशिक उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या नग्णय है। उत्तीर्ण विद्यार्थी वे कहलाते है जो प्रमाण पत्र प्राप्त कर चुके है। इनके अतिरिक्त अन्य सभो पंजीकृत छात्र आंशिक उत्तीर्ण हो चुके है। जो अनुतीर्ण विषयों के लिए अपने परीक्षा के अवसरो का लाभ

ले रहे है। अतः वास्तविक परीक्षा परिणाम लगभग 10 प्रतिशत से कम रहता है। इसका एक प्रमुख कारण सी.बी.एस.ई. कोर्स होना भी है।

इस योजना के अन्तर्गत व्यक्तिगत सम्पर्क शिविर सभी संदर्भ केन्द्रों पर आयोजित किये जाते हैं एंव निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें वितरित की जाती हैं।

परीक्षा आयोजन :– सार्वजनिक परीक्षाऐं वर्ष में 2 बार अप्रेल – मई एवं अक्टुबर में आयोजित की जाती है। बांसवाड़ा जिले में जिले भर के समस्त परीक्षार्थियों का एक ही परीक्षा केन्द्र राउमावि खान्दुकोलोनी बांसवाड़ा में है।

प्रचार–प्रसार :– प्रतिवर्ष इस परीक्षा में विद्यालय से वंचित, अल्प एवं पूर्णकालोन रोजगार में जुडे तथा वे अभ्यर्थी जो विद्यालय जाने की उम्र पार कर चुके है, इस उपरान्त भी पढ़ने के जिज्ञासु है, को स्वर्णीम अवसर के रूप में आम जनसाधारण को जानकारी हेतु राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल जयपुर द्वारा समाचार पत्रों में विज्ञप्तियां जारी की जाती हैं। जिला मुख्यालय के नोडल विद्यालय की ओर से समय – समय पर परीक्षा की तिथियों, व्यक्तिगत सम्पर्क, शिविर तथा आवेदन या पंजीकरण के सूचनाथ समाचार पत्रों में जानकारी दी जाती है।

उपलब्धि :– विगत 5 वर्षो में उन विद्यार्थियों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है जो विद्यालय सें वंचित है। अधिक उम्र को पार कर चुके है या फिर घरेल व्यवसाय में जुड गये है। परन्तु अध्ययन की तीव्र अपेक्षा एवं आकांक्षा है।

ग्रामीण क्षेत्रों के अभ्यर्थियों की संख्या कुल पंजीकरण का 70 प्रतिशत से अधिक है। शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार एवं स्टेट ओपन बोर्ड को प्रारम्भ करने के उद्देश्य को पूरा करता है।

घरेल एवं कामकाजी महिलाओं के लिए इसके द्वारा लाभ उठाया जा रहा है। विद्यार्थी द्वारा वे विषय जो विद्यालय में प्रायोगिक कक्षाओं की उपस्थिति के बिना या नियमित रहने पर ही उत्तीर्ण किये जा सकते है, वे सब विषय उत्तीर्ण करने के लिए स्टेट ओपन में विशेष लाभ उठा रहे हैं। जैसे गृहविज्ञान, चित्रकला इत्यादि।

राज्य सरकार ने इस बोर्ड के द्वारा शिक्षा के प्रचार पसार हेतु जो पावन अभियान प्रारम्भ किया है वह सार्थक सिद्ध हो रहा है।

SWOT ANALYSIS

स्ट्रेन्थ – क्षमतायें :–

- ❖ वर्तमान शैक्षणिक संरचना एवं आधारभूत संरचना की उपलब्धता।
- ❖ कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रति जागरूकता।
- ❖ शिक्षा के प्रति रूझान।
- ❖ जिले मे प्रशिक्षित शिक्षका की उपलब्धता।
- ❖ अधिकांश पंचायत स्तर पर माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय उपलब्ध।

कमजोरियां :–

- ❖ विद्यालयों मे आधारभूत भौतिक संरचना की कमी।
- ❖ स्वीकृत पद के विरूद्ध पर्याप्त मानव संसाधन उपलब्ध नहीं।
- ❖ शिक्षकों का क्षमता वर्धन/रिफ्रे"ार्स कोर्स की कमी।
- ❖ महिलाओं एवं बालिकाओं को शिक्षा केन्द्रो तक पहुँच में कठिनाई।
- ❖ रोजगार हेतु गुजरात एवं मध्यप्रदेश में अभिभावको का पलायन।
- ❖ जिले मे 31 माध्यमिक व 30 उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे कक्षा–कक्ष की कमी।
- ❖ बोर्ड परीक्षा केन्द्रो पर तत्काल 20''X24'' के कम से कम 4–4 कक्षा कक्ष मय बरामदा बनवाने की नितान्त आवश्यकता है
- ❖ जिले में 38 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे पृथक–पृथक शौचालयों का अभाव है।
- ❖ जिले में 14 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे पानी की टंकी का अभाव है।
- ❖ पुस्तकालय सभी विद्यालयों मे है। वाचनालयों के लिये अलग स्थान की आवश्यकता है।

- ❖ 167 विद्यालयों मे चार दीवारी की आवश्यकता है।
- ❖ 115 विद्यालयों मे तुरन्त मरम्मत की जरूरत है।
- ❖ बिजली सुविधा मात्र 105 विद्यालयों मे है।
- ❖ फनोचर सुविधा मात्र 30 प्रतिशत विद्यालयों मे है।

अवसर

- ❖ शिक्षा के महत्व को जनसाधारण द्वारा भी स्वीकार किया जाना।
- ❖ जिले मे शिक्षा के निजी करण एवं विभिन्न आजीविका के अवसरो मे शिक्षा की अहम भूमिका।
- ❖ विभिन्न शैक्षणिक आयाम।
- ❖ कम्प्यूटरीकरण।
- ❖ अंग्रेजी एवं कुशल वाकपटुता की महत्ता।

भय / डर

- ❖ शिक्षित बेरोजगारो की संख्या में वृद्धि।
- ❖ गैर कृषि रोजगार उपलब्धता हेतु दबाव।

स्थितिजन्य विश्लेषण

1. **वर्तमान स्थिति** :– राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। जिले मे 325 ग्राम पंचायतों में से 189 ग्राम पंचायत क्षेत्र में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जिले मे शिक्षण हेतु विभिन्न संवर्गो के कुल स्वीकृत 2288 पदों में से वर्तमान में 1697 पद भरे हुए हैं शेष 591 रिक्त हैं। जिले में विज्ञान एवं वाणिज्य विषय के संकाय के विद्यालयों की संख्या क्रमशः 8 एवं 5 विद्यालयों मे हैं, जो जिले के क्षेत्र को देखते हुए बहुत ही कम है।
2. विद्यालयों मे भौतिक सुविधाओं का विश्लेषण उपर किया जा चुका है। इनकी उपलब्धता की आवश्यकता हैं।
3. कम्प्यूटर शिक्षा 132 विद्यालयों मे नहीं है।

4. खेल मैदान एवं इनका समतलीकरण तथा चार दोवारी निर्माण का अधिकांश विद्यालयों में अभाव।

भविष्य रणनीति

1. शिक्षकों के रिक्त पदों को भरना। जिले में 325 ग्राम पंचायतों में से 189 ग्राम पंचायत क्षैत्र मे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जिले में शिक्षण हेतु विभिन्न सवर्गो के कुल स्वीकृत 2288 पदों मे से वर्तमान मे 1697 पद भरे हुए हैं, शेष 591 रिक्त हैं। इन्हें तुरन्त भरने के लिये राज्य सरकार सजग है।
2. जिले की शेष 136 ग्राम पंचायतों में माध्यमिक/उच्च माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराना। उच्च प्राथमिक विद्यालय क्रमोन्नत किये जा रहे है।
3. जिले की प्रत्येक पंचायत समिति मुख्यालय एवं अन्य दो कस्बों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान एवं वाणिज्य विषय के संकाय खोला जाना।
4. विद्यालयों मे आधारभूत भैतिक सुविधाओं की उपलब्धता।
5. कम्प्यूटर शिक्षा 132 विद्यालयों मे लाग करना ।
6. खेल मैदान एवं इनका समतलीकरण तथा चार दोवारी निर्माण का अधिकांश विद्यालयों मे निर्माण।
7. समस्त राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के परिसर के अन्दर ही एक संस्थाप्रधान एवं दो अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं हेतु आवास सुविधा उपलब्ध करवाई जावे, ताकि दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में भी पदस्थापन पर शिक्षक स्वतः ही कार्यभार ग्रहण कर लेगें एवं शिक्षकों का ठहराव भी सुनिश्चित हो सकेगा। विशेषकर महिला शिक्षिकाओं हेतु यह सुविधा सुरक्षा की भावना की दृष्टि से भी कारगर सिद्ध होगी।

रणनीति

1. जिले की वार्षिक एवं पंचवर्षीय योजनाओं में चरणबद्ध तरोके से भावी रणनीति में निर्धारित किये गये प्रस्तावों/लक्ष्यों को सम्मिलित कर उनका क्रियान्वयन करना।
2. समय–समय पर इनका रिव्यू करना एवं शेष लक्ष्यों को नये चरणबद्ध लक्ष्यों में जोड़ना।

उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा की दृष्टि से जिले में प्रथम महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1950 मे इन्टर कॉलेज के रूप मे हुई। सन् 1958 एवं 1977 मे यह क्रमशः स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर क्रमोन्नत हुआ। वर्तमान मे इसका नाम श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा है। यह नगर से तनिक दूर प्राकृतिक परिवेश मे विस्तृत क्रीडांगन के समीप अवस्थित है। शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त उपयुक्त वातावरण में निरन्तर विकास की ओर अग्रसर यह महाविद्यालय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य तीनो संकायो मे स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं से युक्त सह शैक्षणिक संस्था है। इस महाविद्यालय का मूल्याकंन यूजी.सी. की नैक टीम द्वारा किया गया है, जिसमे इसे बी प्लस का दर्जा प्राप्त हुआ है। यह महाविद्यालय जनजातीय क्षत्र का सबसे बड़ा राजकीय महाविद्यालय है, जहां वर्तमान में 4700 अध्ययनरत विद्यार्थियों म से 75 प्रतिशत जनजाति वर्ग के है। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के मॉडल कॉलेज के रूप में चयनित 10 महाविद्यालया म से यह महाविद्यालय भी एक है। जिले मे इस महाविद्यालय के अतिरिक्त दो अन्य राजकीय महाविद्यालय निम्न हैं :–

1. मामा बालेश्वर दयाल राजकीय महाविद्यालय, कुशलगढ़।
2. हरिदेव जोशी राजकीय कन्या महाविद्यालय, बांसवाड़ा।

जिले मे उच्च शिक्षा अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालयों मे नामांकन एवं परीक्षा परिणाम की स्थिति निम्नानुसार :–

कॉलेज का नाम	वर्ष	परीक्षा मे प्रविष्ठ			उर्तीण			प्रतिशत		
		छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा	2004–05	3196	696	3892	2551	515	3072	79.47	73.99	78.49
	2005–06	3293	693	3986	2486	518	3004	75.49	74.74	75.36
	2006–07	3336	698	4034	3635	575	4210	78.98	82.37	79.53
	2007–08	3198	763	3961	2378	578	2956	8044	75.75	74.62
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बांसवाड़ा	2004–05	0	889	889	0	739	739	0	83.00	83.00
	2005–06	0	863	863	0	724	724	0	83.89	83.89
	2006–07	0	914	914	0	747	747	0	81.72	81.72
	2007–08	0	1039	1039	0	986	986	0	94.90	94.90
राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़	2004–05	391	128	519	320	113	433	92.00	93.00	92.5
	2005–06	421	135	556	317	112	429	75.03	83.00	77.16
	2006–07	365	166	531	314	151	465	80.00	90.00	87.60
	2007–08	470	171	641	313	119	432	83.00	88.00	84.70

उपर्युक्त परीक्षा परिणाम की तालिका से स्पष्ट ह, जिले मे उच्च शिक्षा का परिणाम 75 प्रतिशत से 95 प्रतिशत के बीच रहा है, जो कि संतोषजनक है।

स्टॉफ की उपलब्धता

महाविद्यालय का नाम	पद	स्वीकृत पद	कार्यरत			रिक्त पद
			पुरूष	महिला	योग	
राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा	प्राचार्य	1	1	0	1	0
	उपाचार्य	2	1	0	1	1
	व्याख्याता	106	42	18	60	46
	शा.शि	1	1	0	1	0
	योग	110	45	18	63	47
राजकीय महाविद्यालय कन्या म. बांसवाड़ा	प्राचार्य	1	0	0	0	1
	उपाचार्य	1	0	0	0	1
	व्याख्याता	18	4	6	10	8
	शा.शि	1	0	0	0	1
	योग	21	4	6	10	11
राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़	प्राचार्य	1	1	0	1	0
	उपाचार्य	1	0	0	0	1
	व्याख्याता	12	8	0	8	4
	शा.शि	1	0	0	0	1
	योग	15	9	0	9	6

राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा में स्वीकृत प्राचार्य, उपाचार्य, व्याख्याता एवं शा.शि. के कुल स्वीकृत 110 पदों में से पुरूष 45 एवं महिला 18 पदों पर कार्यरत हैं, शेष 47 पद रिक्त हैं जिससे शिक्षण व्यवस्था पर विपरोत प्रभाव पड़ रहा है।

राजकीय कन्या महाविद्यालय बांसवाड़ा में स्वीकृत प्राचार्य, उपाचार्य, व्याख्याता एवं शा.शि. के कुल स्वीकृत 21 पदों में से पुरूष 4 एवं महिला 6 पदों पर कार्यरत हैं, शेष 11 पद रिक्त हैं, जिससे शिक्षण व्यवस्था पर विपरोत प्रभाव पड़ रहा है।

राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़ में स्वीकृत प्राचार्य, उपाचार्य, व्याख्याता एवं शा.शि. के कुल स्वीकृत 15 पदों में से पुरूष 9 एवं महिला 0 पदो पर कार्यरत हैं शेष 6 पद रिक्त ह जिससे शिक्षण व्यवस्था पर विपरोत प्रभाव पड़ रहा है।

श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय एवं हरिदेव जोशी कन्या महाविद्यालय बांसवाड़ा जिला मुख्यालय पर स्थित है जब कि मामा बालेश्वर दयाल राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़ उपखण्ड मुख्यालय पर स्थित है जो कि बांसवाडा से 70

किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। जिला मुख्यालय पर स्थित महाविद्यालयों मे विभिन्न संकायो मे शिक्षण सुविधा उपलब्ध है लेकिन राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़ में केवल कला संकाय में स्नातक स्तरीय शिक्षा प्रदान की जा रही है। इस महाविद्यालय की 50 किलोमीटर की दूरी में सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी महाविद्यालय नहीं होने के कारण निश्चय ही इस महाविद्यालय की उपादेयता निःसंदिग्ध अति महत्वपूर्ण है।

शैक्षिक दृष्टिकोण से राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़ में विषयाध्यपको के पद तो स्वीकृत है लेकिन 50 प्रतिशत पद वर्तमान मे रिक्त है। साथ ही पुस्तकालय मे पर्याप्त संसाधनो का अभाव है। भौतिक संसाधनो की दृष्टि से भी महाविद्यालय पिछड़ा हुआ है। साथ ही टेबल, कुर्सी, बोर्ड व बिजली की भी पूर्णतया माकूल व्यवस्था नहीं है। तकनोकि प्रसार प्रचार हेतु महाविद्यालय में कम्प्यूटर लेब व भौगोलिक लेब की व्यवस्था नही है।

भावी योजनाएं

राजकीय महाविद्यालय बांसवाड़ा में निम्नाकित सुविधाओ को उपलब्ध करवाया जाना अपेक्षित है।

- ❖ रिक्त पदा को भरना।
- ❖ एडमिनिस्ट्रेटीव ब्लॉक की पृथक से स्थापना।
- ❖ साईकिल स्टेण्ड का विस्तार।
- ❖ कम्प्यूटर लेब का विस्तार।
- ❖ खेल मैदान की बाउण्ड्री वाल पूर्ण करना।
- ❖ स्टॉफ क्वाटर्स निर्माण।
- ❖ बाटनीकल लेब एवं गार्डन निर्माण।
- ❖ फनोचर की आवश्यकता।
- ❖ ओडिटोरीयम निर्माण।

राजकीय कन्या महाविद्यालय बांसवाड़ा

- ❖ रिक्त पदो को भरना।
- ❖ छात्राओ हेतु खेल मैदान निर्माण।
- ❖ प्रशासनिक भवन निर्माण।
- ❖ गर्ल्स कोमन रूम निर्माण।

राजकीय महाविद्यालय कुशलगढ़

- ❖ रिक्त पदो को भरना।
- ❖ स्नातक स्तर से क्रमोन्नत कर स्नातकोत्तर स्तर तक।
- ❖ स्नातकोत्तर कक्षाओ हेतु इतिहास, हिन्दी, राजनीति विज्ञान तथा संस्कृत विषय खोलना।
- ❖ व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में बी.सी.ए., पीजीडी.सी.ए., पी.जी.डी.बी.एम., ओ लेवल, ए. लेवल व अन्य पाठ्यक्रमो को प्रारम्भ करना।
- ❖ इन्दिरा गांधो खुला विश्वविद्यालय के केन्द्र की स्थापना।
- ❖ खेल मैदान, कक्षा–कक्ष निर्माण एवं महाविद्यालय परिसर का समतलीकरण।

इस प्रकार जिले मे स्थित राजकीय महाविद्यालयों की आवश्यकताओ को ध्यान मे रख कर आगामी योजनाओ मे समावेश कर जनजाति बाहुल्य जिले के बालक/बालिकाओं को उच्च दर्ज की उच्च शिक्षा देकर उनका सर्वांगोण शैक्षिक विकास किया जा सकेगा क्योकि शिक्षा ही समस्त विकास की आधार शिला है।

जिले मे राजकीय महाविद्यालयों के अतिरिक्त निम्नांकित 10 निजी महाविद्यालय भी संचालित किये जा रहे है जिसकी सूचि निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	नाम महाविद्यालय
1.	श्री प्रभाशंकर पण्ड्या महाविद्यालय परतापुर (गढ़ी)
2.	श्रीमती तेजस्विनी कन्या महाविद्यालय परतापुर (गढ़ी)
3.	वागड़ महाविद्यालय कोटड़ा (गढ़ी)
4.	श्री विवेकानन्द महाविद्यालय आजना (गढ़ी)
5.	श्री विवेकानन्द महाविद्यालय घाटोल।
6.	महाराणा प्रताप महाविद्यालय पालोदा (गढ़ी)
7.	न्यूलुक गर्ल्स कॉलेज, लोधा, बांसवाड़ा।
8.	अरावली महाविद्यालय, बांसवाड़ा।
9.	वागड़ श्री महाविद्यालय चेतक काम्पलेक्स, बांसवाड़ा।
10.	डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन महाविद्यालय, बागीदौरा।

उपर्युक्त महाविद्यालय भी जिले के दूर–दराज क्षत्रा के विद्यार्थियो के लिये भी उच्च शिक्षा प्रदान कर अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के आकांक्षी छात्र छात्राओ को उनके गृह निवास के निकट ही यह सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

उपर्युक्त तीनो राजकीय महाविद्यालयों एवं 10 निजी महाविद्यालयों की स्थिति का अवलोकन करे तो पंचायत समिति आनन्दपुरी, सज्जनगढ़, छोटी सरवन एवं पंचायत समिति पीपलखूंट (जिला प्रतापगढ़) क्षैत्रो मे उच्च शिक्षा हेतु कोई सुविधा उपलब्ध नही है। उच्च शिक्षा विभाग एवं राज्य सरकार से आग्रह है कि उक्त पंचायत समिति क्षेत्रों मे निवासरत छात्र–छात्राओं हेतु भी उनके निवास के 15–20 किलोमीटर की परिधि में सरकारी एवं निजी क्षेत्र में महाविद्यालय तक की उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

व्यावसायिक एवं तकनोकि शिक्षा

'' शिक्षा विद्यार्थियों के लिये बेरोजगारी के विरूद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए ''

– महात्मा गाँधी

पृष्ठ भूमि

जिले में व्यावसायिक एवं तकनोकि शिक्षा दिये जाने हेतु पहली बार वर्ष 1976 म औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना जिला मुख्यालय पर की गई। वर्तमान मे आद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान शहर के नजदीक माहीडेम सड़क पर विस्तृत भू–भाग पर स्थित है। तत्पश्चात वर्ष 1989 मे पंचायत समिति मुख्यालय बागीदौरा मे आई.टी.आई. की स्थापना की गई। इस प्रकार जिले में वर्तमान मे दो औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान संचालित हैं।

उद्देश्य

राजस्थान सरकार के तकनोकि शिक्षा विभाग द्वारा उपरोक्त संस्थानो में विभिन्न व्यवसायो में शिल्पकार प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय व्यवसायिक प्रशिक्षण परिषद के निर्धारित पाठ्यक्रमो क अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है। इस योजना का उद्देश्य उद्योगो की आवश्यकता के अनुसार कुशल कामगार उपलब्ध कराना है। प्रशिक्षणार्थियों में तकनीकि और औद्योगिक अभिव्यक्ति उत्पन्न कर स्वरोजगार उन्हें सक्षम बनाने है। औद्यागिक उत्पाद की मात्रा व गुणवत्ता बढाने के लिये प्रशिक्षण देना तथा प्रशिक्षणार्थीयो को प्रशिक्षण के साथ–साथ उद्यमिता विकास करना है। यह प्रशिक्षण प्राप्त कर अभ्यर्थी रोजगार/ स्वरोजगार करने मे सक्षम हो जाता है।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा व बागीदौरा मे संचालित व्यवसायां का विवरण

क्र. स.	व्यवसाय का नाम	न्यूनतम प्रवेश योग्यता	प्रशिक्षण अविध	स्वीकृत स्थान औ. प्र. सं.		योग
				बांसवाड़ा	बागीदोरा	
1.	इलेक्ट्रीशियन	दसवीं	दो वर्ष	32	—	32
2.	फिटर	दसवीं	दो वर्ष	32	16	48
3.	इलेक्ट्रोनिक्स	दसवीं	दो वर्ष	32	—	32
4.	रेडियों टी.वी.	दसवीं	दो वर्ष	16	—	16
5.	ड्रा. मेन सिविल	दसवीं	दो वर्ष	16	—	16
6.	मेकेनीक मोटर	दसवीं	दो वर्ष	32	—	32
7.	वायरमैन	आठवीं	दो वर्ष	32	16	48
8.	मेकेनीक डिजल	दसवीं	एक वर्ष	16	16	32
9.	वैल्डर	आठवी	एक वर्ष	12	12	24
10.	ड्राईवर कम मेके.	दसवीं	6 माह	32	—	32
11.	को. पा.	बारहवीं	एक वर्ष	16	16	32
12.	कटिंग व सिलाई	आठवीं	एक वर्ष	16	—	16
			योग	**284**	**76**	**360**

उपर्युक्त व्यावसायों के अलावा संस्थान में निम्नानुसार योजनाऐं संचालित की जा रही हैं ।

1. निर्माण उद्याोग विकास संस्थान

इस योजना के अन्तर्गत माह जनवरी 2007 से अब तक 350 अभ्यार्थीयो को निर्माण उद्योग विकास संस्थान, नई दिल्ली द्वारा ऐस कुशल कारीगर जिनके पास कोई तकनोकि योग्यता का प्रमाण पत्र नहीं है उन्हें उनके प्रतिनिधि इन्जीनियर्स द्वारा संस्थान में उनका टेस्ट लेकर दक्षता का प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। जिसकी सहायता से वे देश तथा विदेशा में रोजगार पा सकते हैं।

2. आरमोल योजना

राजस्थान आजिविका मिशन के सौजन्य से लघु अवधि पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं जिसमें इलेक्ट्रिक, मोटर रिवाइन्ड़िग, हाउस होल्ड़ वायरिंग, मोटर ड्राईविंग, टक्टर मेकेनिक आदि व्यवसायां में 130 अभ्यथियों को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार करने योग्य बनाया गया हैं।

2.(अ) राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा में विगत पांच वर्षो क प्रवेश एवं उतीर्ण हुऐ प्रशिक्षणार्थियो का विवरण :–

क. सं.	सत्र	स्वीकृत स्थान	**Male Female Total**	प्रवेश	परीक्षा मे बैठे	उतीर्ण	प्रवेश		उतीर्ण		वि0 वि0
							S.T.	**S.C.**	**S.T.**	**S.C.**	
1	2004–2005		Male	205	140	65	76	27	39	04	
			Female	04	03	–	03	–	–	–	
			Total	209	143	65	79	27	39	04	
2	2005–2006		Male	254	172	116	168	22	48	12	
			Female	–	03	01	01	–	01	–	
			Total	254	175	117	169	22	49	12	
3	2006–2007		Male	197	164	109	80	22	71	07	
			Female	–	03	01	–	–	01	–	
			Total	197	167	110	80	22	72	07	
4	2007–2008		Male	170	149	86	126	12	21	06	
			Female	03	04	03	–	–	–	01	
			Total	173	153	89	126	12	21	07	
5	2008–2009		Male	184	164	परीक्षा परीणाम आना षेष	84	21	परीक्षा परीणाम आना शेष		
			Female	04	04		02	01			
			Total	188	168		86	22			
			Male	**1010**	**789**	**376**	**534**	**104**	**179**	**29**	
			Female	**11**	**17**	**05**	**06**	**01**	**02**	**01**	
			Total	**1021**	**806**	**381**	**540**	**105**	**181**	**30**	

2.(ब) राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बागीदौरा में विगत पांच वर्षो के प्रवेश एवं उतीर्ण हुऐ प्रशिक्षणार्थियों का विवरण

क. सं	सत्र	स्वीकृत स्थान	**Male Female Total**	प्रवेश	परीक्षा मे बैठे	उतीर्ण	प्रवेश		उतीर्ण		वि0 वि0
							S.T.	S.C.	S.T.	S.C.	
1	2004–2005		Male	19	–	04	10	–	01	–	
			Female	–	–	–	–	–	–	–	
			Total	19	–	04	10	–	01	–	
2	2005–2006		Male	57	–	31	30	03	12	03	
			Female	–	–	–	–	–	–	–	
			Total	57	–	31	30	03	12	03	
3	2006–2007		Male	19	–	07	10	01	02	01	
			Female	–	–	–	–	–	–	–	
			Total	19	–	07	10	01	02	01	
4	2007–2008		Male	57	–	52	30	01	26	02	
			Female	–	–	–	–	–	–	–	
			Total	57	–	52	30	01	26	02	
5	2008–2009		Male	19	–		15	01			
			Female	–	–		–	–			
			Total	19	–		15	01			
			Male	**171**	**–**	**94**	**95**	**07**	**41**	**06**	
			Female	–	–	–	–	–	–	–	
			Total	**171**	–	**94**	**95**	**07**	**41**	**06**	

3. संस्थान में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं का विश्लेषण :–

औधौगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा व बागीदौरा अपने स्वयं के भवन में संचालित हैं तथा उनमें आवश्यक भौतिक सुविधाऐं उपलब्ध है। किन्तु औधौगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाडा के मुख्य भवन व छात्रावास भवन 30 वर्ष पुराने हैं, जिसमें इन भवनों की छतें, शौचालय, दरवाजें, खिडकियाँ इत्यादि खराब हा चुके हैं, जिन्हें मरम्मत की आवश्यकता है। साथ ही संस्थान परिसर की अधिकांश चार दीवारी क्षतिग्रस्त हो गई है। संस्थान के वर्कशॉप की छत की चद्दरे खराब हो जाने से बरसात का पानी मशीनों पर पडता हैं, जिससे मशीनें खराब हो जाती हैं। इसी प्रकार मुख्य भवन की आर.सी.सी. छत भी इतनी खराब हो चुकी हैं, कि बरसात का पानी अन्दर गिरता है जिससे महगें यंत्र खराब हो जाते है।

4. स्वीकृत एवं कार्यरत पदों का विवरण :–

क्र. सं.	पद का नाम	औधौगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा				औधौगिक प्रशिक्षण संस्थान बागीदोरा			
		स्वीकृत	कार्यरत		रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत		रिक्त
			पुरुष	महिला			पुरुष	महिला	
01	प्राधानाचार्य	01	01	–	–	–	–	–	–
02	अधीक्षक	–	–	–	–	01	–	–	01
03	स0अनुदेशक	02	–	01	01	–	–	–	–
04	अनुदेषक	20	15	01	04	05	03		02
05	कार्य0सहायक	01	01	–	–	–	–	–	–
06	वरीष्ठ लिपिक	01	01	–	–	01	01	–	–
07	कनिष्ठ लिपिक	02	01	–	01	01	01	–	–
08	कार्य. परिचायक	09	09	–	–	–	–	–	–
09	च.श्रेणी कर्मचारी	08	05	03	–	03	03	–	–
योग		**44**	**33**	**05**	**06**	**11**	**08**	**–**	**03**

SWOT ANALYSIS
स्ट्रेन्थ – क्षमता

जिले में स्थित आधोगिक प्रशिक्षण संस्थाओ से तकनोकि प्रशिक्षण प्रदान कर बेरोजगारी की समस्या को समाप्त करने मे इस संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है। इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 360 व्यक्तिया को विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हे स्वरोजगारोन्मुखी बनाया जा रहा है।

कमजोरियां

जिले मे बडे उघोग धंधो एवं कल–कारखानों को कमी होने सें प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं को रोजगार प्राप्त करने हेतु औधौगिक नगरों की तरफ पलायन करना पड़ता है।

अवसर

आई. टी. आई. से प्रशिक्षण प्राप्त कर छात्र सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों में तथा उद्योगो मे नौकरी कर सकते है। तथा अपने स्वयम् का उद्योग लगाकर जीवन यापन/आजीविका प्राप्त कर सकतें हैं, साथ ही आगे अध्ययन हेतु ड़िप्लामा इजिनियरिंग कालेजों में प्रवेश ले सकतें है। जिले के पं.स. मुख्यालय गढ़ी, घाटोल, कुशलगढ़ एवं छोटी सरवन में नये आई.टी.आई. खोलने का प्रस्ताव है।

स्थितिजन्य विश्लेषण

(अ.) वर्तमान स्थिति :–

औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा में विभिन्न 13 व्यवसायों तथा बागीदौरा में 5 व्यवसायों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संस्थान में पिछले वषो मे उतीर्ण हुऐ अधिकांश प्रशिक्षणार्थी सरकारी व गैर सरकारी नौकरियों में लग चुके है अथवा स्वयं का रोजगार कर रहे है।

(ब.) दृष्टि कोण (Vision)

1. औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा में तीन नयें निम्नानुसार व्यवसाय प्रारम्भ किया जाना अपेक्षित है।
   1. एयरकन्ड़िशनर एवं रेफ्रिजरेटर मेकेनिक,
   2. इन्फोरमेशन टैकनोलोजी (I.T.)
   3. प्लम्बर

   उपर्युक्त प्रत्येक व्यवसाय में प्रवेश क्षमता 16–16 के अनुसार कुल 48 अभ्यर्थियों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर रोजगार से जुडने का अवसर प्राप्त होगा।
2. औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान बागीदौरा में दो नये निम्नानुसार व्यवसाय प्रारम्भ किया जाना अपेक्षित है ।
   1. इलैक्ट्रीशियन,
   2. कटिंग एवं सिलाई

उपर्युक्त प्रत्येक व्यवसाय में प्रवेश क्षमता 16–16 है। इस प्रकार 32 अभ्यर्थियों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर रोजगार से जुडने का अवसर प्राप्त होगा। तकनोकि प्रशिक्षण प्राप्त युवा जब अपना स्वयं का कोई उद्योग लगाता हैं तब उस कारखाने मे और लोगों को भी रोजगार प्रदान कर बेराजगारी को कम करने में अपना अमुल्य सहयोग देता है ।

3. जिले में पंचायत समिति मुख्यालय आनन्दपुरी, कुशलगढ़, सज्जनगढ़, गढ़ी, घाटोल, छोटी सरवन तथा पीपलखूंट (जिला प्रतापगढ़) पर आई.टी.आई. खोला जाना आवश्यक है।

(स.) कसे जायेगें (How to reach)

दोनों ही संस्थानो को राज्य सरकार द्वारा अपग्रेड़ेशन ऑफ इन्स्टीट्यूट योजना से जोड़ दिया गया है। जिससे भवन एवं साजो सामान की आपर्ति आसानी से की जा सकती है। अतः योजना के अनुसार नये प्रस्तावित व्यवसाया के भवन तथा साजो सामान की आपर्ति हो सकेगी। जिले मे औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानो मे वर्तमान में संचालित विभिन्न व्यवसाया तथा नवीन प्रस्वातिव व्यावसायो की सुविधा उपलब्ध होने पर जिले के बेराजगार युवको को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करने मे मदद मिल सकेगी तथा उन्हें आजीविका के साधन उपलब्ध हो सकेगें।

पोलिटेक्निक संस्थान

पृष्ठ भूमि :–

जिले में सर्वप्रथम राजकीय पोलिटेक्निक महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1992 में की गई। यह महाविद्यालय बॉसवाडा से चार किलोमीटर दूर डूँगरपूर रोड पर लोधा गॉव मे स्थित है । प्रारम्भ मे यह महाविद्यालय इजीनियंरिग की दो शाखाओ यान्त्रिकी एवं विद्युत में संचालित किया गया। वर्तमान मे इस संस्थान मे तीन शाखाएँ यान्त्रिकी, विधुत एव सिविल अभियान्त्रिकी (क्रमशः 40,40,60) संचालित है। सिविल शाखा वर्ष 2006–07 मे 40 विद्यार्थिया से शुरू की गई। जिसकी सीटे सत्र 2007–08 से बढाकर 60 को गई। संस्थान मे छात्रावास भवन, अधिकारी/कर्मचारियो के लिये भवन आदि की सुविधा उपलब्ध हैं।

1. संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियां का विवरण :–

जिले में पिछले पांच वर्षो के द्वौरान विभिन्न शाखाओ में प्रवेा"ात, ड्रोप आउट एवं उर्तीण हुए छात्रा का विवरण निम्नानुसार है।

प्रवेशित एवं उर्त्तीण का विवरण

क्र.सं.	व्यवसाय/ गतिविधि का नाम	स्वीकृत क्षमता	प्रवेश			ड्रॉप आउट	परीक्षा मे बैठे	उत्तीर्ण		
			पु0	म0	योग			पु0	म0	योग
2004–05										
1	प्रथम वर्ष यान्त्रिकी	40	40	–	40	2	38	29	–	29
2	प्रथम वर्ष विधुत	40	40	–	40	7	33	26	–	26
3	द्वितीय वर्ष यान्त्रिकी						26	18	–	18
4	द्वितीय वर्ष विधुत						26	22	–	22
5	तृतीय वर्ष यान्त्रिकी						24	9	–	9
6	तृतीय वर्ष विधुत						27	12	–	12
2005–06										
1	प्रथम वर्ष यान्त्रिकी	40	40	–	40		36	21	–	21
2	प्रथम वर्ष विधुत	40	40	–	40		26	14	–	14
3	द्वितीय वर्ष यान्त्रिकी						35	27	–	27
4	द्वितीय वर्ष विधुत						30	26	–	26
5	तृतीय वर्ष यान्त्रिकी						28	9	–	9
6	तृतीय वर्ष विधुत						26	11	–	11

2006–07										
1	प्रथम वर्ष यान्त्रिकी	40	40	–	40		41	39	–	39
2	प्रथम वर्ष विधुत	40	38	2	40		42	40	–	40
3	प्रथम वर्ष सिविल	40	39	1	40		36	33	–	33
4	द्वितीय वर्ष यान्त्रिकी						26	22	–	22
5	द्वितीय वर्ष विधुत						19	17	–	17
6	तृतीय वर्ष यान्त्रिकी						30	16	–	16
7	तृतीय वर्ष विधुत						27	17	–	17
2007–08										
1	प्रथम वर्ष यान्त्रिकी	40	40	–	40		37	35	–	35
2	प्रथम वर्ष विधुत	40	39	1	40		40	36	1	37
3	प्रथम वर्ष सिविल	60	60	–	60		55	48	–	48
4	द्वितीय वर्ष यान्त्रिकी						44	28	–	28
5	द्वितीय वर्ष विधुत						39	30	2	32
6	द्वितीय वर्ष सिविल						31	23	1	24
7	तृतीय वर्ष यान्त्रिकी						30	14	–	14
8	तृतीय वर्ष विधुत						21	14	–	14
2008–09										
1	प्रथम वर्ष यान्त्रिकी	40	42	2	44′		41	36	2	38
2	प्रथम वर्ष विधुत	40	41	3	44′		41	38	3	41
3	प्रथम वर्ष सिविल	60	62	4	66′		63	58	4	62
4	द्वितीय वर्ष यान्त्रिकी						36	32	–	32
5	द्वितीय वर्ष विधुत						34	31	1	32
6	द्वितीय वर्ष सिविल						39	34	–	34
7	तृतीय वर्ष यान्त्रिकी									
8	तृतीय वर्ष विधुत									
9	तृतीय वर्ष सिविल									

महाविधालय स्तर पर Placement किये गये विद्यार्थियों का विवरण

वर्ष	विधुत	यान्त्रिकी	सिविल
2004–05	04	04	–
2005–06	05	06	–
2006–07	07	09	–
2007–08	10	13	–
2008–09	01	02	03
योग	**27**	**34**	**03**
महायोग	**64**		

2. संस्थान मे स्टॉफ की उपलब्धता :–

संस्थान में कुल स्वीकृत 66 पदों के विरूद्ध 46 पद भरे हुए हैं एवं 20 पद रिक्त हैं जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

S.No.	Name of Sanction Post	Sanction Post			Working					Vacent		
		PLAN	NON	TOTAL	PLAN		NON		TOTAL	PLAN	NON	TOTAL
					M	F	M	F				
1	Principal	–	1	1	–	–	–	–	–	–	1	1
2	Head Of Dept.Mech	–	1	1	–	–	1	–	1	–	–	–
3	Head Of Dept.Elect.	–	1	1	–	–	1	–	1	–	–	–
4	Head Of Dept.Civil	1	–	1	–	–	–	–	–	1	–	1
5	Senior Lect.Mech	–	2	2	–	–	2	–	2	–	–	–
6	Senior Lect.Elect.	–	1	1	–	–	1	–	1	–	–	–
7	Senior Lect.Civil	1	–	1	1	–	–	–	1	–	–	–
8	Sr. Lect.Non-Tech.	–	1	1	–	–	1	–	1	–	–	–
9	Lect. Mech	–	7	7	–	–	2	–	2	–	5	5
10	Lect. Mech.(TR)	–	1	1	–	–	–	–	–	–	1	1
11	Lect. Elect.+ Adio	2	4	6	1	–	1	–	2	1	3	4
12	Lect. Civil	5	1	6	1	1	1	–	3	3	–	3
13	Lect. Computer	1	1	2	1	–	–	–	1	–	1	1
14	Lect. Non-Tech.	–	2	2	–	–	2	–	2	–	–	–
15	Technician	–	6	6	–	–	4	2	6	–	–	–
	TOTAL	**8**	**23**	**39**	**3**	**1**	**6**	**2**	**14**	**4**	**1**	**14**

स्वोट ऐनालिसीस :–
संस्थान मे उपलब्ध भौतिक सुविधाओ का विवरण

1. यान्त्रिकी विभाग

वातानुकूलन एवं प्र"ीतन प्रयोग"ाला : सभी प्रकार के आधुनिकतम उपकरण रेफ्रीजरशन,

एसी, आइसचिलर्स इत्यादि उपलब्ध हैं ।

हीटइजिंन : सभी प्रकार के इंजिन ,बोइलर इत्यादि के वर्किगं मॉडल उपलब्ध हैं।

हाइड्रॉलिक्स : बरनोली , ऑरिफआईस ,वेन्च्यूरी मीटर उपकरण इत्यादि उपलब्ध हैं ।

वर्क"ाॉप : फिटींग– पावर हेक्सा तथा अन्य आव"यक औजार उपलब्ध हैं ।

वेल्डिंग : गैस एव आर्क वेल्डिंग ,टिग ,मीग तथा स्पोट वेल्डिंग इत्यादि हैं।

कारपेन्ट्री : सभी प्रकार के आव"यक औजार हैं ।

म"ीन"ाप : सभी प्रकार के अत्याधुनिक म"ीन उपलब्ध हैं ।

2. **विधुत विभाग** : इलेक्ट्रानिक्स एवं इलेक्टीकल, लेब में आव"यक उपकरण एवं म"ाने उपलब्ध हैं ।

3. **सिविल विभाग** : स्ट्रैथ मटेरियल, एप्लाईड मेकेनिक्स, सव लेब, हाइड्रॉलिक्स आदि प्रयोग"ालाएँ कार्यरत है साथ ही भौतिक, रसायन एवं कम्प्यूटर लेब उपलब्ध हैं।

परिसम्पत्तियां

वर्तमान मे संस्थान के भवन की उपलब्धता के साथ–साथ छात्रों के लिये छात्रावास सुविधा, स्टॉफ क्वार्टर, खेल मैदान तथा बिजली की आव"यकता पूर्ति हेतु डीजी सेट भी उपलब्ध है। संस्थान में पुस्तकालय हेतु पर्याप्त भवन के साथ विभिन्न विषया के लिये पर्याप्त पुस्तके, संदर्भ पुस्तकें, मैगजीन्स, एवं न्यूजपेपर्स आदि पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध हैं।

संस्थान की कमियां/आव"यकताएँ

1. संस्थान मे छात्रावास भवन की अपर्याप्तता तथा कोमनरूम का अभाव एवं सड़क मरम्मत नही होने से आवागमन की दुविधा।
2. राज्य सरकार स्तर पर–नवनियुक्त ि"ाक्षकों द्वारा संस्था मे पद ग्रहण नही करना क्योंकि एआईसीटीई द्वारा दिसम्बर 96 एवं 99 मे घोषित केरियर एडवॉन्समेन्ट राज्य सरकार द्वारा अभी तक लागू नहीं करना, उच्च अध्ययन की अनुमति नही दिया जाना, क्यूआईपी स्कीम को राज्य सरकार द्वारा अभी तक लागू नही करना, पूर्व मे दिये जा रहे इनी"ियल एक्स्ट्रा दो वेतनवृद्वियों को राज्य सरकार द्वारा वापस लेना, न्यू लेक्चरर्स को राज्य सरकार द्वारा दो साल तक मूल वेतन(मात्र 7950/–)दिया जाना ।
3. कारपेन्टरी "ाॉप, प्र"ीतन एंव वातानुकूलन प्रयोग"ाला तथा म"ीन "ाॉप मे तकनी"ियन की आव"यकता हैं।
4. यान्त्रिकी ब्रॉन्च होते हूए भी म"ीनिस्ट की पोस्ट नही हैं ।
5. लाइब्रेरियन, प्रोगामर/कम्प्युटर ऑपरेटर, लेखाकार, स्टेनो तथा कार्यालय सहायक की आव"यकता है ।
6. यान्त्रिकी शाखा मे 08 प्रवक्ताओं की बजाय दो कार्यरत है ।

Opportunity – अवसर

पालिटेक्निक महाविद्यालय से डिप्लोमा करने के प"चात इंजिनियरिंग कॉलेजों में डिग्री मे प्रव"ा होने की सुविधा से विद्यार्थियों को उच्च अध्ययन हेतु अवसर को उपलब्धता रहती हैं। साथ ही डिप्लोमा होल्डर युवकों को सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं में रोजगार के साथ साथ स्वरोजगार के मार्ग भी प्र"ास्त हो रहे हैं।

सारांश

वर्तमान स्थिति :–

राजकीय पॉलिटेक्निक महाविधालय, बॉसवाडा मे तीन विभाग है, जिसके अन्तर्गत कुल 420 विधार्थियो को प्रशिक्षण दिया जाता है। गत वर्षो मे उत्तीर्ण हुए अधिकांश छात्र सरकारी एवं गैरसरकारी नौकरियों में कार्यरत है ।

आगामी दृष्टिकोण –

वर्तमान में संस्थान द्वारा विद्युत, यांत्रिकी एवं सिविल ब्रांच में डिप्लोमा कराया जा रहा है। सूचना एवं तकनोकि प्रसार होने से जिले में दो नई शाखाएं आई.टी. एवं कम्प्युटर साईन्स शुरू किया जाना आवश्यक है। जिले में एक अभियांत्रिकी महाविद्यालय की आवश्यकता है ताकि जनजाति के आशार्थी अपने गृह जिले में उच्च तकनीकि शिक्षा प्राप्त कर सकें। जिससे यह जिला भी अन्य विकसित जिलो की कतार में खडा हो सके।

कैसे जाये –

भारत एवं राज्य सरकार की वार्षिक योजनान्तर्गत नवीन विषयों के खोले जाने का प्रावधान कर उपर वर्णित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

जिला ि"ाक्षा एवं प्रि"ाक्षण संस्थान (DIET)

संस्थान गढ़ी से 2 किमी दूरी पर बांसवाड़ा–सागवाड़ा मुख्य मार्ग पर चौपासाग ग्राम पंचायत में अवस्थित है। यह लगभग 18 एकड़ के क्षेत्रफल में स्थापित है। इसमें अकादमिक विंग का कार्य पूर्ण हो चुका है व प्र"ाासनिक विंग का एक चरण पूर्ण हो गया है। जिला मुख्यालय बांसवाड़ा से इसकी दूरी 40 किमी है।

उद्दे"य

1. जिला स्तर पर ि"ाक्षकों के गुणात्मक उन्नयन हेतु सेवारत व सेवा पूर्व प्रि"ाक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
2. ि"ाक्षकों में अनुसंधान प्रवृति वि"ोषकर क्रियात्मक अनुसंधान प्रवृति को बढ़ावा देना।
3. जिला स्तर पर शैक्षिक व सह शैक्षिक प्रवृतियों के संबलन हेतु प्रका"ान व प्रसार कार्यक्रमा का आयोजन करना।
4. जिले में प्रारम्भिक ि"ाक्षा के विकास हेतु परिवीक्षण, मार्गद"ार्न, सहभागित्व व समन्वय स्थापित करना।

भौतिक सुविधाएं

संस्थान का अपना भवन, मनोविज्ञान लेब, ई.टी.लेब, कम्प्यूटर्स मय कम्प्यूटर कक्ष, नि:शक्त जन प्रि"ाक्षण कक्ष, रिसोर्स कक्ष, पुस्तकालय, कान्फ्रेन्स हॉल, प्रेयर एसेम्बली हॉल, फेक्स म"ाीन, फोटो कॉपीयर म"ाीन एवं विद्युत व पानी संबंधी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध है।

पिछले तीन वर्षो का B.S.T.C. का वर्षवार परीक्षा परिणाम (नियमित संवर्ग)

क्र.सं.	वर्ष	प्रथम वर्ष			द्वितीय वर्ष		
		प्रविष्ठ	उत्तीर्ण	प्रति"ात	प्रविष्ठ	उत्तीर्ण	प्रति"ात
1	2005	45	45	100%	46	46	100%
2	2007	49	49	100%	46	46	100%
3	2008	50	48	96%	46	45	98%

स्त्रोत :– जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) गढी

पिछले पाँच वर्षो का जिला स्तरीय आठवी बोर्ड का परीक्षा परिणाम

क्र. सं.	सत्र	परीक्षा में प्रविष्ठ परीक्षार्थी			श्रेणीवार परीक्षा परिणाम						परीक्षा परिणाम प्रतिषत
		नियमित	स्वयंपाठी	योग	I	II	III	पूरक घोषित	पूरक उत्तीर्ण	योग उत्तीर्ण	
1	2004.05	18551	224	18775	3577	6499	4739	1715	752	15567	82.91%
2	2005.06	19501	451	19952	6946	7295	231	2759	2052	16524	82.81%
3	2006.07	22987	401	23388	8065	8279	279	3930	2792	19415	83.01%
4	2007.08	24220	433	24653	7165	9656	340	3952	2063	19224	77.97%
5	2008.09	27528	422	27950	6831	11912	1138	5538	2584	22465	80.37%

स्त्रोत :– जिला ि"ाक्षा एवं प्रि"ाक्षण संस्थान (DIET) गढी

➢ स्टॉफ की स्थिति :–

स्वीकृत एवं कार्यरत पदों का विवरण

क्र.सं.	नाम पद	स्वीकृत पद	कार्यरत पद	रिक्त पद
1	प्रधानाचार्य	1	–	1
2	उप प्रधानाचार्य	1	1	–
3	वरिष्ठ व्याख्याता	4	4	–
4	व्याख्याता	11	3	8
	याग	**17**	**8**	**9**

स्वोट एनालिसिस

स्ट्रेन्थ – क्षमता

1. सेवापूर्व व सेवारत ि"ाक्षक प्रि"ाक्षणों के आयोजन कर ि"ाक्षकों के कौ"ाल में वृद्धि।
2. अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करके कौशल अभिवृद्धि की गई।
3. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग की वाक्पीठों में संस्था प्रधानों को शैक्षिक व प्रशासनिक संबलन प्रदान कर क्षमता वर्धन किया गया।
4. शैक्षिक नवाचारों की जानकारी उपलब्ध करवाई गई।
5. तत्स्थलीय विद्यालय परिवीक्षण एवं मार्गद"ान देकर दक्षता का विकास किया गया।
6. अकाद्मिक संबलन हेत संस्थान के विभिन्न प्रका"ानों को वाकपीठों व सेवारत ि"ाक्षको के प्रि"ाक्षण में संक्षिप्त व सारगर्भित जानकारी दी गई।
7. जिला स्तरीय आठवीं बोर्ड परीक्षा आयोजन के साथ साथ स्वयंपाठी छात्रो को भी जोडकर प्रारम्भिक ि"ाक्षा के सहभागित्व माध्यम से ि"ाक्षा के सार्वजनीकरण में सहयोग प्रदान किया गया।
8. डर्फ के माध्यम से जिला स्तरीय शोध व अन्य विद्यालयी समस्याओं पर आधारित क्रियात्मक अनुसंधानों हेतु ि"ाक्षको को प्रेरित कर व समाधान प्राप्त किया जाता है।
9. बेहतर एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धी ि"ाक्षार्थी (कक्षा 6 से 8) उपलब्ध कराने हेतु विद्यालय स लेकर जिला स्तर तक जीवन कौ"ाल विकास बाल मेले का आयोजन कराने में पूरा मार्गद"ान व सहभागित्व प्रदान किया जाता है।

कमियाँ

1. मानवीय संसाधन वि"ोषकर अकाद्मिक अधिकारियों की कमी।
2. ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति होने के कारण अनियमित व अघोषित विद्युत कटौती से एडू–सेट कम्प्यूटर कक्ष व ई.टी. के उपकरणों व दूर संचार साधनों का समुचित उपयोग नही हो पाना।
3. ि"ाक्षको के प्रि"ाक्षणों हेतु प्रतिनियुक्ति की समस्या व इस कारण से इनकी प्रि"ाक्षणों में अपर्याप्त उपस्थिति।
4. संस्थान के पास पर्याप्त भूमि होते हुए भी पहाड़ी जमीन होने के कारण खेल मैदान की अनुपलब्धता।

अवसर

जिला ि"ाक्षा एवं प्रि"ाक्षण संस्थान द्वारा जिले में नियुक्त ि"ाक्षकों को वर्ष के द्वौरान समय समय पर ि"ाक्षण कौ"ाल अभिवृद्धि, नवाचारों की जानकारी एव अध्यापन में उनका उपयोग तथा ि"ाक्षा को गुणात्मक दृष्टि से ि"ाक्षा मे वृद्धि हेतु विभिन्न प्रकार के प्रि"ाक्षण आयोजित कर ि"ाक्षकों की क्षमता निर्माण को नये आयाम दिये जा रहे हैं।

अध्याय – 4

स्वास्थ्य

सार संक्षेप :–

बांसवाड़ा में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के अन्तर्गत कुल 412 राजकीय रेफल संस्थान है। जिनमें 1 जिला चिकित्सालय, 13 सामुदायिक चिकित्सालय केन्द्र, 44 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 348 उप स्वास्थ्य केन्द्र, 1 मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य केन्द्र, 4 डिस्पेन्सरी एवं 1 क्षय निवारण केन्द्र है। जिले में 8 निजी नर्सिंग होम एवं 24 छोटे क्लीनिक भी है।

बांसवाड़ा जिले में विकास खण्ड़ की जनसंख्या के परिपेक्ष में कुल 8 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 42 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं 209 उप स्वास्थ्य कन्द्रों की अतिरिक्त आवश्यकता है।

मानव विकास सूंचकांक में जिले के स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचकों का विवरण निम्नानुसार है।

Name of the District	Human Development index (HDI)	Rank in Raj. HDI	IMR	Life Expectancy at Birth (years)	CBR	CPR	Population Served Per Medical Institution	Population Served Per Bed	Total fertility rate
Banswara	**0.425**	**31**	**28**	**11**	**7**	**18**	**26**	**20**	**3**

जिले में 123 आयुर्वेदिक चिकित्सालय है। मानकों के अनुसार जिले में 308 चिकित्सालयों की आवश्यकता है।

मातृ मृत्यु दर एव शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिये राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मीशन के अन्तर्गत संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित किया जाता है। वर्ष 2008–09 में जिले में 36362 संस्थागत प्रसव हुये। संस्थागत प्रसव प्रोत्साहित करने की जननी सुरक्षा योजनान्तर्गत चिकित्सा संस्थान में प्रसव कराने पर ग्रामीण महिला को 1400 रूपये एवं शहरी महिला को 300 रूपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। वर्ष 2008–09 में 30187 महिलायें लाभान्वित हुई थी।

वर्ष 2008–09 में नसबन्दी हेतु निर्धारित लक्ष्य 10801 के विरूद्ध उपलब्धि 8129 अर्थात 75.26 प्रतिशत रही। आई.यू.डी., ओरल पील्स एवं कण्डोम वितरण में उपलब्धियां लक्ष्य से अधिक रही है।

बालकों में रोग प्रतिरोधी क्षमता विकास के लिये शिशु एवं प्रजनन स्वास्थ्य कार्यक्रम अन्तर्गत वर्ष 2008–09 में 89.17 प्रतिशत कुल टीकाकरण हुआ।

जिले में वर्ष 2008–09 में 98 प्रतिशत महिलाओं को प्रसव पूर्व जॉच की सुविधा उपलब्ध हुई। टीटनेस टोक्साईड का टीका लगा गया है।

जिला बांसवाड़ा में शिशु मृत्युदर 53.43 है। जिसे कम करने के लिये प्रसव पूर्व जॉच, संस्थागत प्रसव उपरांत जॉच तथा कूपोषित बच्चों के लिये विशेष उपचाार एवं स्वास्थ्य शिविरों की नियमित व्यवस्था की जाती है।

ईलाज की व्यवस्था है। गत वर्षों में मलेरिया रोगियों की संख्या विविध प्रयासों के परिणाम स्वरूप कम होती जा रही है।

जिले में टी.बी. पर नियंत्रण के लिये जिला मुख्यालय स्तर पर क्षय निवारण केन्द्र, 5 टी.बी. यूनिट एवं 34 माईक्रोस्कोपीक सेन्ट है। रोगियों को स्वास्थ्य कर्मियों के माध्यम से डोट (डी.ओ.टी.) ईलाज दिया जाता है जो कि कारगर है। जिले में ईलाज से ठीक हुये [redacted]03 है।

वर्ष 2007–08 में 8051 नैत्र रोगियों के नैत्र ऑपरेशन किये गये थे।

जिले में 1792 आंगनवाडी केन्द्रों के माध्यम से पूरक पोषाहार, टीकाकरण, स्वास्थ्य जॉच शिशु शिक्षा एवं संदर्भ सेवायें दी जा रही है। कुपोषित बच्चों एवं एनेमिक महिलाओं के लिये विशेष पोषाहार एवं आयरत टेबलेटस् की व्यवस्था की जाती है। प्रत्येक आंगनवाडी

केन्द्र पर हर माह स्वास्थ्य एवं पोषाहार दिवस मनाया जाता है। किशोर बालिकाओं हेतु विशेष पोषाहार कार्यक्रम तथा बच्चों के लिये विटामीन ए की खुराक देने का कार्यक्रम संचालित किये जाते है।

जिल बांसवाड़ा में तोन शहरी क्षेत्र बांसवाड़ा, कुशलगढ़ एवं परतापर में पेयजल योजनाओं सुचारू रूप से चल रही है, इन शहरों के क्रमशः 160 कि.मी., 32 कि.मी. एवं 14 कि.मी. पाईप लाईन बिछी हुई है।

बांसवाड़ा शहर में सिवरेज ट्रिटमेन्ट प्लान्ट का निर्माण किया गया है एवं 13795 मीटर, सीवर लाईन नगरपालिका को हस्तान्तरित की गई है।

बांसवाड़ा जिले के 20 ग्रामों में पाईप लाईन योजना एवं 1358 गॉवों में हेण्ड पम्प जोडा गया है। विभिन्न विकास खण्ड़ों में 18279 हेण्डपम्प स्थापित है।

वर्ष 2008–09 तक कुल 30097 पारिवारिक शौचालय बनाये गये जिनम 19480 ए.पी.एल. एवं 10917 बी.पी.एल. परिवारों के है। मार्च, 09 तक 2277 विद्यालयों में शौचालयों का निर्माण करवाया गया एवं 888 आंगनवाडी केन्द्रों में भी शौचालय निर्माण कराया गया है।

स्वास्थ्य

प्रत्येक मनुष्य स्वस्थ्य एवं दीर्घ जीवन की आकांक्षा रखता है। हर व्यक्ति की जीवन क्षमता (लाईफ एक्सपेक्टेंसी) अलग–अलग होती है और यह अनेक कारकों कारणों पर निर्भर करती है जैसे :– जनसंख्या का सामान्य स्वास्थ्य स्तर, चिकित्सा सुविधाएं एवं गुणवत्ता, क्षैत्र मे रूग्णता (MORBIDITY) एवं बीमारियां तथा मौसमी बीमारियां। जिला बांसवाड़ा में वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति जानने से पूर्व जिले में उपलब्ध चिकित्सा संस्थान, प्रबन्धन एवं चिकित्सा सुविधाओं के बारें में जानना उपयुक्त होगा।

जिले में उपलब्ध सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का संस्थागत ढांचा

नाम ब्लॉक	सामान्य चिकित्सालय	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	उपकेन्द्र	मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र	डिस्पेन्सरी	टी.बी. क्लिनिक	योग
तलवाड़ा/बांसवाड़ा	1	1	7	54	1	4	1	**69**
गढी/परतापुर		3	11	74				**88**
घाटोल		2	6	52				**60**
छोटी सरवन		1	2	18				**21**
पीपलखूँट			3	18				**21**
कुशलगढ़		1	4	30				**35**
सज्जनगढ़/छोटा डूंगरा		2	2	33				**37**
बागीदौरा		2	6	37				**45**
आनंदपुरी		1	3	32				**36**
योग	**1**	**13**	**44**	**348**	**1**	**4**	**1**	**412**

Source :- CM&HO Office 2008-09

बांसवाडा में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली कें अन्तर्गत कुल 412 राजकीय रेफरल संस्थान हैं। जिनमें जिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उपस्वास्थ्य केन्द्र, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेन्सरी व टी.बी. क्लिनिक है। इनकें अतिरिक्त सम्पूर्ण जिले में 8 निजी नर्सिंग होम व 24 छोटे क्लिनिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान

कर रहें हैं। राजकीय चिकित्सालयों में रेफरल श्रृंखला इस प्रकार है कि उप स्वास्थ्य केन्द्र के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, रेफरल इकाई है तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा अंततः जिला चिकित्सालय (जहां पर अंतरंग एवं बाह्य समस्त प्रकार की सेवाए प्रदान की जाती है) रेफरल इकाई है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के संस्थागत ढांचे मे भारतीय स्वास्थ्य मानकों के अनुसार ''जनजातिय क्षैत्र में ग्रामीण स्वास्थ्य हेतु 3000 की आबादी पर उप स्वास्थ्य केन्द्र, 20000 की आबादी पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा 80000 आबादी पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र होना चाहिए।

त्वरित जनसंख्या विकास एवं जनांकिकीय दबाव के कारण बांसवाडा जिलें में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली तंत्र पर अत्यधिक भार है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के संस्थागत ढाचे में कमी

ब्लॉकवार जनसंख्या का विवरण एवं उपलब्ध/आवश्यक चिकित्सा संस्थान का विवरण

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता एवं आश्यकता

ब्लॉक का नाम	तलवाड़ा /बांसवाड़ा	परतापुर/गढी	घाटोल	छोटी सरवन	कुशलगढ़	छोटा डुगरा/ सज्जनगढ़	बागीदौरा	आनंदपुरी
जनसंख्या	252700	287870	277244	174151	180964	157668	211238	130604

चिकित्सा सुविधा	तलवाड़ा /बांसवाड़ा	परतापुर/गढी	घाटोल	छोटी सरवन	कुशलगढ़	छोटा डुगरा/ सज्जनगढ़	बागीदौरा	आनंदपुरी
वर्तमान सा.स्वा. केन्द्र	1	3	2	1	1	2	2	1
आवश्यक सा.स्वा. केन्द्र	3	4	3	2	2	2	3	2

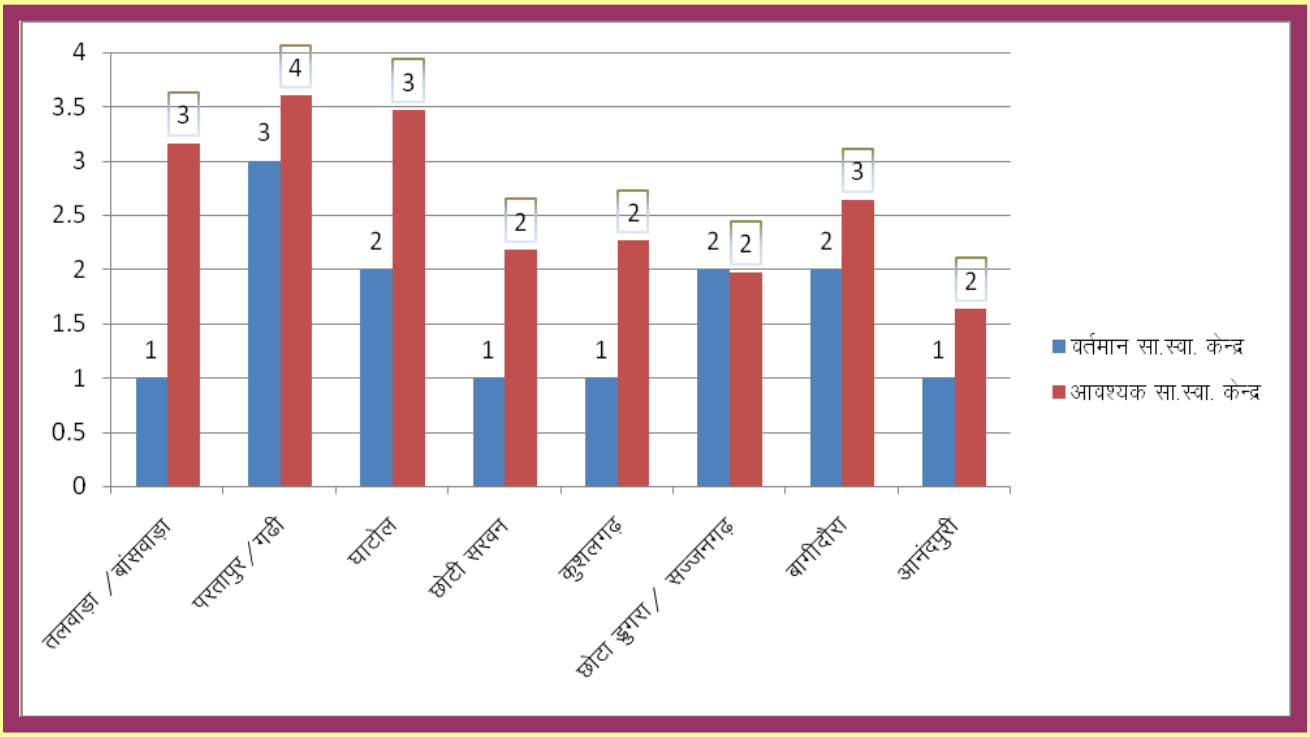

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता एवं आश्यकता

चिकित्सा सुविधा / पंचायत समिति	तलवाड़ा / बांसवाड़ा	परतापुर / गढी	घाटोल	छोटी सरवन	कुशलगढ़	छोटा डुगरा / सज्जनगढ़	बागीदौरा	आनंदपुरी
वर्तमान प्रा स्वा. केन्द्र	7	11	6	4	4	2	6	3
आवश्यक प्रा स्वा. केन्द्र	13	14	14	9	9	8	11	7

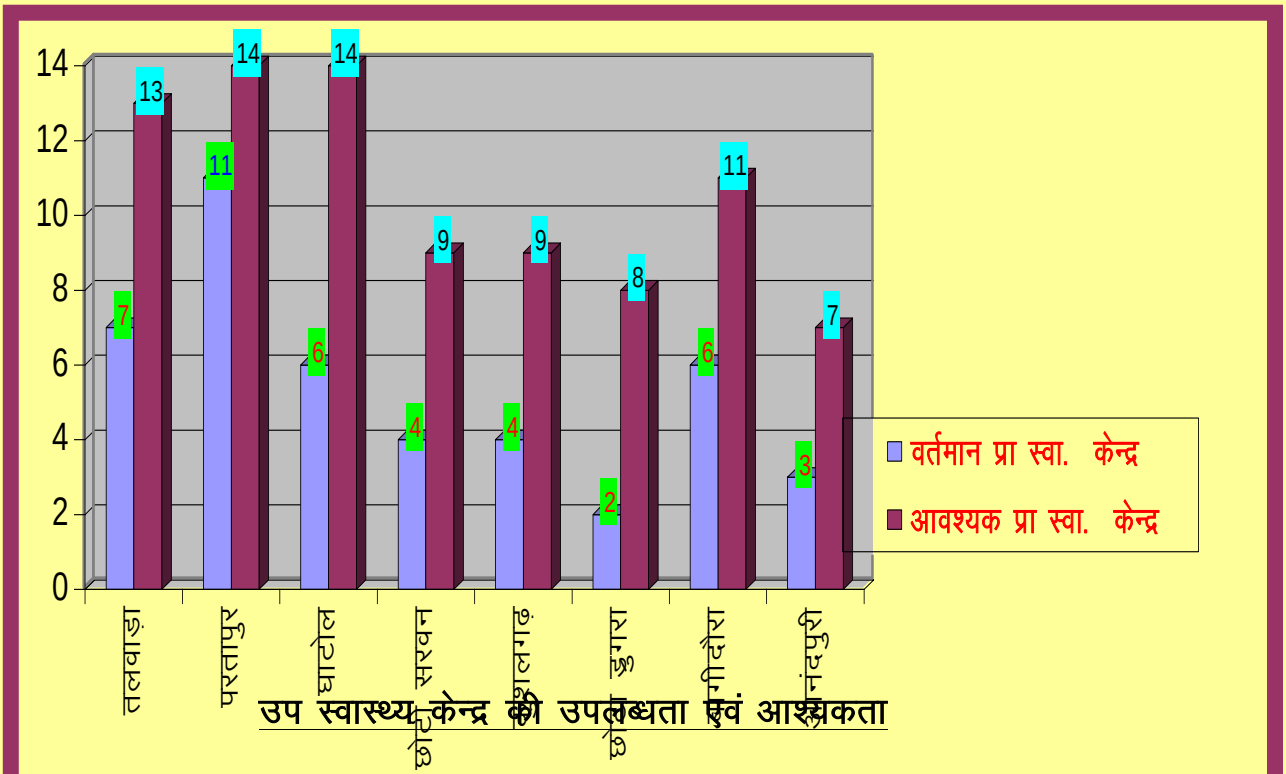

उप स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता एवं आश्यकता

चिकित्सा सुविधा	तलवाड़ा /बांसवाड़ा	परतापुर / गढी	घाटोल	छोटी सरवन	कुशलगढ़	छोटा डुगरा / सज्जनगढ़	बागीदौरा	आनंदपुरी
वर्तमान उप स्वा. केन्द्र	54	74	52	36	30	33	37	32
आवश्यक उप स्वा. केन्द्र	84	96	92	58	60	53	70	44

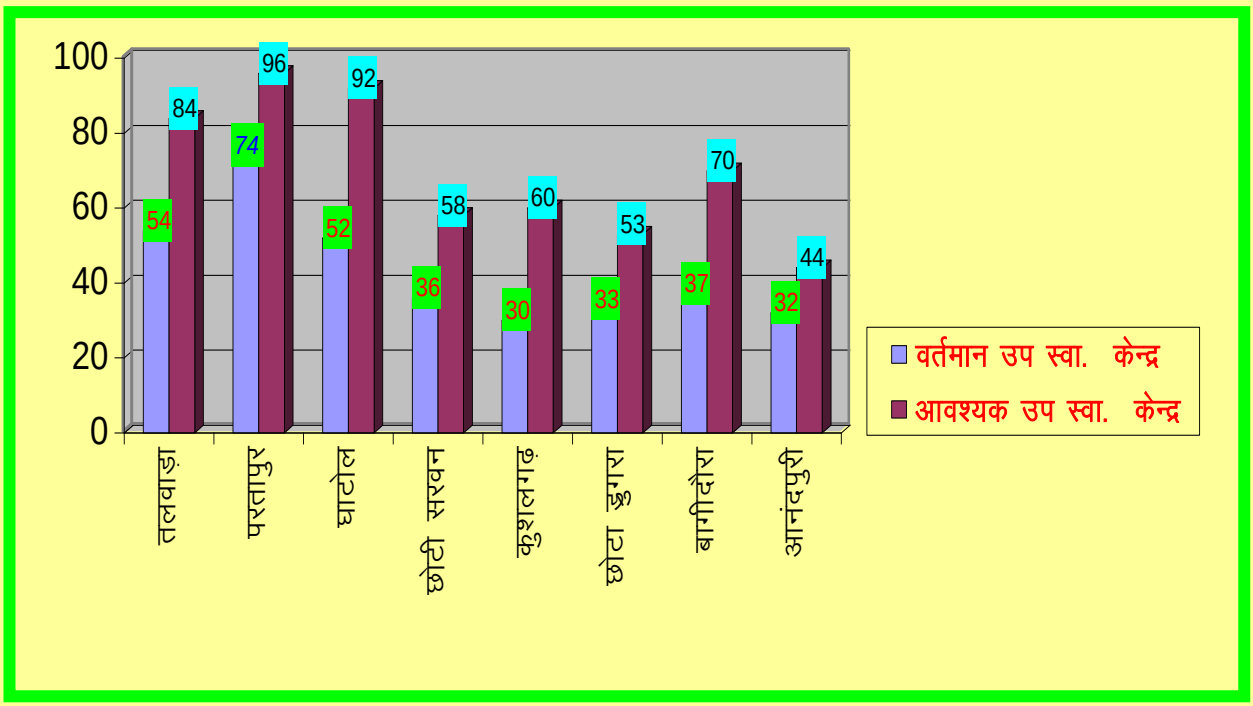

बांसवाड़ा में भारतीय जन स्वास्थ्य मानकों को आधार मान कर अध्ययन करें, तो ज्ञात होता हैं कि संस्थानों का वितरण असमान एवं असंतुलित है। **ब्लॉक तलवाड़ा की जनसंख्या 252700 है यहां 1 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 7 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व 54 उप स्वास्थ्य केन्द्र कार्यरत है, वहीं घाटोल की जनसंख्या 277244 है और यहां 2 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 6 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व 52 उप स्वास्थ्य केन्द्र है, इसी प्रकार आनन्दपुरी ब्लॉक की जनसंख्या 130604 है और 1 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 3 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और 32 उप स्वास्थ्य केन्द्र जबकी कुशलगढ़ मे जनसंख्या इससे कहीं अधिक 180964 है और 1 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 4 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व 30 उप स्वास्थ्य केन्द्र है।**

उपर्युक्त तालिकाओं तथा रेखाचित्रों से हमे ज्ञात होता है कि बांसवाड़ा में कुल 08 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 42 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व 209 उप स्वास्थ्य केन्द्र की अतिरिक्त आवश्यकता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में कार्मिक/स्टॉफ की व्यवस्था

बांसवाडा में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली तंत्र में कर्मचारियों की उपलब्धता अल्प है तथा उपलब्ध कर्मचारियों का पदस्थापन भी असंतुलित एवं अव्यावहारिक है।

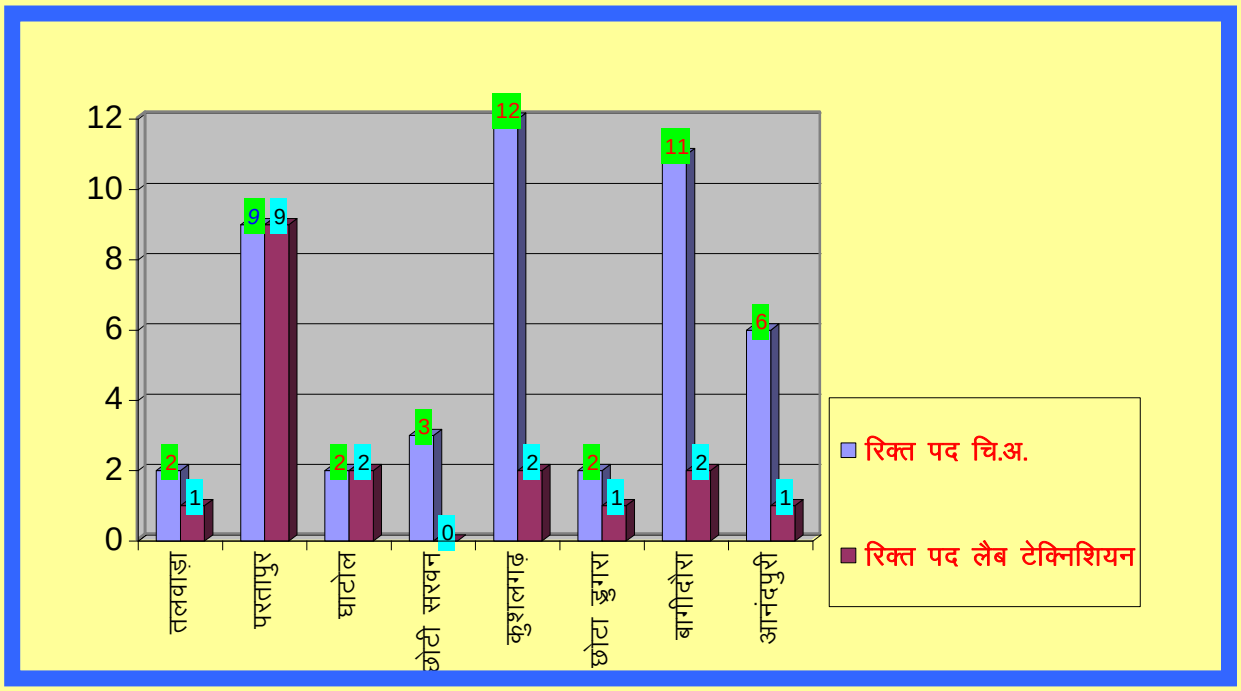

ब्लॉक परतापुर, कुशलगढ़ व बागीदौरा जनसंख्या की दृष्टि से बडे होतें हुए एंव चिकित्सा संस्थानो की संख्या भी अधिक होते हुए भी चिकित्सा अधिकारियों एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मचारियों के पद सर्वाधिक रिक्त है। जिससे गुणात्मक सेवाऐं भी प्राप्त नहीं हो पाती है। इस क्षेत्र में निजी चिकित्सा संस्थान/नर्सिंग होम भी नहीं होने की वजह से समस्त भार राजकीय चिकित्सालयों पर पड़ रहा है और दूसरी तरफ रिक्त पद वाले स्थानों के क्षेत्र के लोगों को मानदण्डों के अनुसार उपचार नहीं मिल पा रहा है।

बांसवाड़ा में कमजोर स्वास्थ्य सेवाऐं मिलने का एक मुख्य कारण चिकित्सकों के पद रिक्त होना है। कुल स्वीकृत 115 चिकित्सा अधिकारियों के पदों में से 47 पद रिक्त है। **परतापुर ब्लॉक में कुल पलंगों की संख्या 174 एवं डॉक्टरों संख्या 24 है वहीं ब्लॉक बागीदौरा में कुल 104 पलंग है और डॉक्टरों की संख्या 6 है।**

जिलों के स्वास्थ्य सूचकों का तुलनात्मक विवरण

Name of the District	Human Development index (HDI)	Rank in Raj. HDI	IMR	Life Expectancy at Birth (years)	CBR	CPR	Population Served Per Medical Institution	Population Served Per Bed	Total fertility rate
AJMER	0.677	10	75.66	59.17	23.54	48.6	5818	1001	3.11
ALWAR	0.744	6	45.51	49.96	19.75	41.1	5013	1786	2.65
BANSWARA	**0.425**	**31**	**53.43**	**63.25**	**25.54**	**48.2**	**3610**	**1442**	**3.22**
BARAN	0.653	12	62.16	62.57	24.12	54.3	4038	1419	3.15
BARMER	0.578	21	62.16	69.34	24.12	39	3515	1751	3.15
BHARATPUR	0.604	19	64.57	53.23	28.27	34.1	4414	1653	3.87
BHILWARA	0.633	15	65.35	55.76	22.08	49.1	3972	1467	2.97
BIKANER	0.779	3	55.06	75.39	29.89	50	4349	726	3.52
BUNDI	0.649	13	70.55	58.67	25.42	58.1	4396	1668	3.2
CHITTORGARH	0.558	27	84.76	56.88	23.48	55.5	3696	1486	2.7
CHURU	0.606	18	70.2	70.56	26.33	45.6	4314	1676	3.55
DAUSA	0.576	23	53.7	62.22	19.25	51	4738	2533	2.69
DHOLPUR	0.497	30	67.58	53.23	26.53	39.6	4892	1807	3.96
DUNGARPUR	0.409	32	49.91	62.57	23.53	49.8	3085	1415	2.83
GANGANAGAR	**0.809**	**1**	**42.79**	**69.79**	**21.06**	**52.5**	**4364**	**1864**	**2.1**
HANUMANGARH	0.761	5	63.9	62.79	18.92	71	4545	2091	2.2
JAIPUR	0.778	4	63.19	62.22	18.35	35.6	7427	905	2.17
JAISHALMER	0.673	11	71.55	69.78	32.07	48.2	3099	1193	-
JALOR	0.527	29	58.48	63.42	24.01	54.6	3354	1860	3
JHALAWAR	0.614	16	55.15	59.51	21.6	57.5	4127	1004	2.64
JHUNJHUNU	0.711	7	41.73	68.05	22.3	48.3	3597	1671	2.48
JODHPUR	0.686	9	74.54	68.84	24.74	36	4618	883	3.25
KARAULI	0.566	25	55.55	54.81	22.7	53.3	4599	2349	3.3
KOTA	**0.787**	**2**	**74.94**	**62.57**	**21.48**	**47.1**	**7262**	**1285**	**2.49**
NAGAUR	0.61	17	63	69.06	24.2	39.1	3796	1796	3.22
PALI	0.547	28	72.21	58.19	20.73	46.6	3461	1285	2.74
RAJSAMAND	0.578	22	96.1	60.18	23.27	44.7	3725	1314	2.92
SAWAI MADHOPUR	0.561	26	77.98	54.81	23.21	52.3	4733	1868	3.08
SIKAR	0.698	8	59.27	68.88	23.68	41.5	3845	1736	2.69
SIROHI	0.645	14	79.49	60.01	27.16	63.2	3851	1672	3.37
TONK	0.531	24	87.37	52.62	21.47	56	3871	1662	2.78
UDAIPUR	**0.595**	**20**	**87.64**	**60.18**	**24.03**	**34.6**	**3907**	**921**	**2.78**

जिले के समस्त आंकडों का दिए गए मानकों की दृष्टि से राज्य में तुलनात्मक दृष्टि से विश्लेषण कर **जिले का 31 वां** स्थान है।

मानव विकास सूचकांक में जिले के स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचकों का विवरण

Name of the District	Human Development index (HDI)	Rank in Raj. HDI	IMR	Life Expectancy at Birth (years)	CBR	CPR	Population Served Per Medical Institution	Population Served Per Bed	Total fertility rate
Banswara	**0.425**	**31**	**28**	**11**	**7**	**18**	**26**	**20**	**3**

आयुर्वेद

यह चिकित्सा विज्ञान की सर्वाधिक प्राचीन पद्धत्ति है। इसमें प्राकतिक जडी बूटियों व भस्म का प्रयोग किया जाता है जिससे रासायनिक कुप्रभाव की संभावना नहीं है।

संस्थागत ढ़ांचा

ब्लाक का नाम	मानक अनुसार डिस्पेन्सरी आवश्यकता	डिस्पेन्सरी की संख्या
आनन्दपुरी	26	8
बागीदौरा	42	13
छोटा डूंगरा / सज्जनगढ	32	6
छोटी सरवन	35	3
घाटोल	55	25
कुशलगढ	36	10
परतापुर / गढी	58	34
तलवाडा / बांसवाडा	51	24
कुल	**308**	**123**

बांसवाडा जिले में आयुर्वेदिक विभाग का काफी बडा तंत्र है। यहां जिला स्तर पर एक अ श्रेणी अस्पताल है वहीं आठो ब्लॉकों (आनन्दपुरी में 8, बागीदौरा में 13, छोटा डूंगरा मे 6, छोटी सरवन मे 3, घाटोल में 25, कुशलगढ मे 10, परतापुर में 34 व तलवाडा में 24) डिस्पेन्सरियों समेत 124 आयुर्वेदिक चिकित्सा संस्थान है। किन्तु वर्तमान में यदि मानको के अनुसार देखा जावे तो प्रति 5000 की जनसंख्या पर 1 डिस्पेन्सरी का प्रावधान है। जिसके अनुसार (आनन्दपुरी में 26, बागीदौरा में 42, छोटा डूंगरा मे 32, छोटी सरवन मे 35, घाटोल में 55, कुशलगढ मे 36, परतापुर में 58 व तलवाडा में 51) कुल 308 डिस्पेन्सरियां होनी चाहिए।

आयुर्वेद अन्तर्गत डिस्पेन्सरी की उपलब्धता एवं आवश्यकता

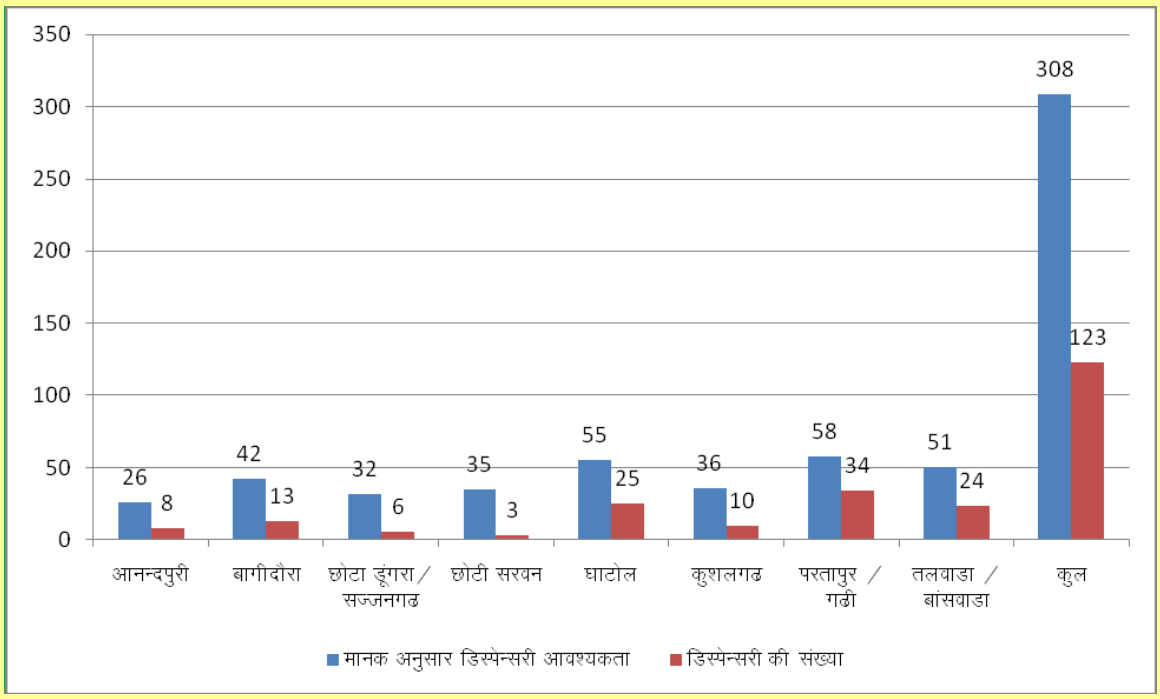

कार्मिक व्यवस्था

संस्थानों में कार्यरत चिकित्सा कर्मचारियों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि सस्थानों में कुल 92 चिकित्सक कार्यरत है वहीं चिकित्सकों के कुल 31 पद रिक्त हैं जिसमें (आनन्दपुरी मे 3, बागीदौरा में 5, छोटा डूंगरा मे 4, छोटी सरवन मे 1, घाटोल में 6, कुशलगढ मे 2, परतापुर में 8 व तलवाडा में 2) चिकित्सकों के पद रिक्त हैं

ब्लॉकवार रोगियों का तुलनात्मक विवरण

ब्लाक का नाम	2006–07 रोगी संख्या	2007–08 रोगी संख्या
आनन्दपुरी	92240	112352
बागीदौरा	120310	181380
छोटा डूंगरा / सज्जनगढ	53180	96440
छोटी सरवन	141050	124315
घाटोल	230650	270840
कुशलगढ	95025	114940
परतापुर / गढी	390430	480520
तलवाडा / बांसवाडा	506062	472307
कुल	**1628947**	**1853094**

Source :- Distt Ayurved Office

आयुर्वेद विभाग में रोगियों की संख्या को देखने पर पता चलता है कि तलवाडा, परतापुर व घाटोल में रोगियों की संख्या ज्यादा हैं वही छोटी सरवन, बागीदौरा, आनन्दपुरी, छोटा डुंगरा व कुशलगढ में रोगियों की संख्या कम है। विश्लेषण पर पता चलता है कि तलवाडा, परतापुर, घाटोल में शिक्षा का स्तर व आम जन–जीवन का रहन सहन अपेक्षाकृत उच्चस्तरीय है। इस प्रकार की जीवनशैली के कारण ही लोग आयुर्वेदिक चिकित्सालय जाते हैं।

आंकडों में यदि हम दोनों वर्षो के रोगियों की संख्या का आकलन करें तो पातें है कि आनन्दपुरी, छोटा डुंगरा, बागीदौरा, घाटोल, कुशलगढ, व परतापुर में 2006–07 की तुलना में 2007–08 में रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई है वही तलवाडा व छोटी सरवन मे रोगियों की संख्या में कमी आई है।

पंचकर्म (एक पहल)

जिला मुख्यालय पर पंचकर्म के अन्तर्गत विभिन्न शिविर आयोजित कर अनेक प्रकार के रोगों का ईलाज किया गया। इसके अन्तर्गत **वात रोग** (जोडों का दर्द, अर्थराईटीस, पीठ दर्द, साईटीका, स्पोन्डीलाईटीस) सम्बन्धित 5 शिविर लगाकर 10000 लाभार्थियों को, **बालों की समस्या** के समाधान हेतु 1500 रोगियों को, **त्वचा के** 745 रोगियों की समस्याओं का समाधान किया गया, **हार्ट पेशेन्ट के रिवर्स ट्रीटमेंट के लिए 0 आईल पर भोजन बनाने का प्रशिक्षण** 16 महिलाओ को प्रदान कर लाभान्वित किया गया। मोटापे की समस्या से छुटकारा पाने के लिए शोधन विधि द्वारा लगाये गये शिविर में 35 रोगियों को लाभान्वित किया गया। **मेडीटेशन** द्वारा पोजिटिव लाइफ हेतु शिविर का आयोजन कर 21 लाभार्थियों को हाईपर ऐक्टिविटी कम करने तथा कन्सन्ट्रेशन बढ़ाने व **एक्जाम फोबिया से छुटकारा पाने हेतु स्कूल में शिरोधारा** शिविर का आयोजन किया गया।

उक्त कार्यक्रम को व्यवस्थित एवं रणनीतिपूर्वक संचालित कर आमजन को लाभान्वित किया जा सकता है। इस हेतु विभाग को स्वास्थ प्रदाता संस्थानों व कार्मिकों से सामंजस्य बिठाकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

ग्रामीण गरीब जनता विशेषकर महिला एवं बच्चों को उच्च स्तरीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं पहुंच सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से **''राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन''** की स्थापना वर्ष 2005 में की गई। जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं योजनाओं का विवरण निम्नानुसार है।

संस्थागत प्रसव

मातृ मुत्यु का सीधा संबंध प्रसव से है। संस्थागत प्रसव गर्भवती महिला एवं शिशु के स्वस्थ्य जीवन जीने की संभावना को बढ़ाता है।

चूकि संस्थागत प्रसव कुशल प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मी द्वारा किया जाता है, जिससे प्रसव के समय होने वाली जटिलताओं एवं खतरों को कम किया जा सकता है एवं निदान किया जाता है। संस्थागत प्रसव जिस संस्था पर होता है वहां सभी आवश्यक उपकरण औजार एवं जीवन रक्षक औषधियों के साथ–साथ संक्रमण रोधी प्रबन्ध भी होते है। इसके उपरान्त भी प्रसव के दौरान या प्रसव के पश्चात् जटिलता या खतरा उत्पन्न होने पर उसका तुरन्त आकलन सन्दर्भित उच्च स्तरीय चिकित्सा संस्था में अग्रेषित किया जाता है। अग्रेषित किये जाने से लेकर उच्च स्तरीय चिकित्सा संस्था में प्रवेश तक प्रसूता को चिकित्सकीय देखभाल जारी रखी जाती है जिससे किसी भी आपात स्थिति से निपटने के प्रयास जारी रखे जा सकते है।

मातृ मृत्यु एवं शिशु मृत्यु की सभांवनाओं को और कम करने के हेतु प्रसूता को संस्थान में कम से कम 24 घण्टे रखा जाता है, अनेक अध्ययन एव शोधों से ज्ञात होता है कि मातृ मृत्यु अधिकतर प्रसव के 24 घण्टे की अवधि में होती है। प्रसूता का संस्थान में 24 घण्टे ठहराव इस संभावनाओं को न्यून करता है।

संस्थागत प्रसव से शिशु मृत्यु को भी नियंत्रित किया जाता है। संस्थागत प्रसव होने से बच्चों को संक्रमण की संभावनाऐं न्यून होती है, प्रतिरक्षण प्रारम्भ किया जाता है एवं प्रसव के 1 घण्टे के अन्दर स्तनपान की संभावनाऐं उच्च होती है।

बांसवाड़ा जिला जनजातीय एवं पिछड़ा होने की वजह से महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति सजगता कम होने के कारण उनके बच्चे कम वजन वाले होते है, जिन्हें अधिक देखभाल एवं चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता होती है।

संस्थागत प्रसव से कम वजन वाले बच्चों की तुरन्त देखभाल, परामर्श चिकित्सा अथवा सन्दर्भ अग्रेषण प्राप्त होता है जिससे शिशु मृत्यु को काफी कम किया जा सकता है।

जिले में संस्थागत प्रसव का ब्लॉकवार विवरण

नाम	Estimated Delivery	Achievement	%
तलवाडा/बांसवाडा	7328	3434	46.86
परतापुर/गढी	8348	5373	64.36
घाटोल	8040	5891	73.27
छोटी सरवन	2520	2127	84.40
पीपलखूँट	2530	1903	75.22
कुशलगढ़	5248	5089	96.97
छोटा डूंगरा / सज्जनगढ	4572	4503	98.48
बागीदौरा	6126	5135	83.82
आनंदपुरी	3788	2907	76.75
कुल	**48500**	**36362**	**74.97**

Source :- CM&HO Office 2008-09

जननी सुरक्षा योजना

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत ''जननी सुरक्षा योजना'' महिलाओं को सरकारी चिकित्सा संस्थान में प्रसव कराने पर (चैक में माध्यम से 1400 रूपयें ग्रामीण व 1000 रू शहरी महिला को) आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करनें वाले परिवारों की महिलाओं को प्रसव से 6–8 सप्ताह पूर्व 500 रू. पोषण हेतु अग्रिम भुगतान किया जाता है, साथ ही गरीबी रेखा से नीचे की महिला को घर पर प्रसव हो जाने की अवस्था में भी 500 रू. की सहायता राशि दो प्रसव तक प्रदान की जाती है।

इस योजना से लाभ केवल प्रसूता या उसके परिवार वालों को नहीं होता वरन् स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग करने वाली आशा सहयोगिनी को भी दिया जाता है। इस योजना में महिला को घर से आने व जाने हेतु भी 300 रू. की सहायता परिवहन व्यय की प्रति पूर्ति रूप में प्रदान की जाती है।

बांसवाड़ा जनजाति क्षैत्र एवं गरीब जिला होने के कारण यह योजना यहां काफी लोकप्रिय है। योजना लागू होने के पश्चात् घरेलू प्रसव की संख्या में अत्यन्त कमी आयी है।

वर्ष 2008–2009 में जिलें में 30187 महिलाओं को जननी सुरक्षा योजना के अन्तर्गत लाभान्वित किया गया जिसका ब्लॉकवार विवरण निम्नानुसार है।

ग्रामीण अस्पताल	लाभान्वित जननी सुरक्षा योजना 2008–09
तलवाडा/बांसवाडा	2803
परतापुर/गढी	4017
घाटोल	4124
छोटी सरवन	3859
पीपलखूँट	536
बागीदौरा	3731
आनंदपुरी	2235
छोटा डूंगरा/सज्जनगढ	4163
कुशलगढ़	4719
कुल	**30187**

Source: - CM&HO Office 2008-09

संस्थागत प्रसव एवं जननी सुरक्षा योजना की उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2008–09 में कुल संस्थागत प्रसव 36362 हुए, जिसमें से 30187 जननी सुरक्षा योजना में लाभान्वित हुई जो कुल संस्थागत प्रसव का 83.01 प्रतिशत था।

प्रशिक्षित दाई भी मातृ मृत्यु को रोकने में सहायक है बांसवाड़ा में कुल 962 प्रशिक्षित दाई है। ज्यादातर दाईयां प्रसव का कार्य नहीं कराती है। वह सामान्यतः प्रसव के पश्चात् देखभाल करती है, दाई प्रशिक्षित होने के पश्चात् सरकार से प्रेरक राशि की मंशा रखती है व इस तरह की कोई नीति नहीं होने के कारण दाईयां कारगर नहीं है।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रम के मुख्य लक्ष्य **"मातृ मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाना"** हासिल करने के लिए संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है।

परिवार कल्याण

जिले में अधिकतर दम्पत्ति परिवार कल्याण के साधनों के बारे में तब तक नहीं सोंचते जब तक उनके परिवार के आकार उनकी इच्छानुरूप नहीं हो जाता। गत वर्षो से महिलाऐं आईयूडी के प्रति रूचि दिखा रही है एवं यह सुविधा राजकीय चिकित्सा संस्थान पर उपलब्ध होने के कारण सर्व सुलभ है। महिलाऐं ओरल पिल्स भी काफी इस्तेमाल करने लगी है लेकिन गरीब क्षेत्र होने के कारण महिलाऐं मजदूरी पर निकल जाती है, जिससे समय पर गोली लेना भूल जाती है।

पुरूषों के लिए सर्व सुलभ साधन है कण्डोम, यह अभी भी शहरी क्षैत्र में अधिकतर कारगर है। नसबन्दी भी महिलाओं की ही अधिक की जाती है। पुरूष नसबन्दी का प्रतिशत 1–2 तक होता है। नसबन्दी कराने का निर्णय हर पुरूष महिला की स्वेच्छा पर निर्भर करता है लेकिन योग्य दम्पत्ति में से किसी एक को विशेषकर पुरूष को प्रेरित करने का कार्य किया जाना आवश्यक होता है।

परिवार कल्याण के साधनों का उपयोग विवरण

क्रम सं	ब्लाक का नाम	नसबंदी			*आई.यू.डी.*			ओरल पिल्स			सी.सी.		
		लक्ष्य	प्राप्ति	%	लक्ष्य	प्राप्ति	%	लक्ष्य	प्राप्ति	%	लक्ष्य	प्राप्ति	%
1	आनन्दपुरी	**890**	**375**	**42**	***677***	***885***	***131***	**1020**	**1625**	**159**	**1113**	**1816**	**163**
2	बागीदौरा	**1439**	**1040**	**72**	**1093**	**1298**	***119***	**1649**	**2434**	**148**	**1799**	**2728**	**152**
3	छोटाडूंगरा /सज्जनगढ	**1074**	**845**	**79**	***816***	***848***	***104***	**1231**	**1661**	**135**	**1343**	**1735**	**129**
4	छोटी सरवन	**355**	**281**	**79**	***258***	***307***	***119***	**397**	**516**	**122**	**440**	**519**	**118**
5	पीपलखूँट	**325**	**256**	**79**	***253***	***299***	***119***	**380**	**429**	**113**	**394**	**453**	**115**
6	घाटोल	**1888**	**1044**	**55**	***1436***	***1669***	***116***	**2165**	**3055**	**141**	**2362**	**3161**	**134**
7	कुशलगढ	**1150**	**1041**	**91**	***874***	***1440***	***165***	**1319**	**3130**	**237**	**1439**	**3192**	**222**
8	परतापुर /गढी	**1960**	**1512**	**77**	***1491***	***1708***	***115***	**2248**	**2920**	**130**	**2452**	**3055**	**125**
9	तलवाडा / बांसवाडा	**1720**	**1735**	**101**	***1309***	***1519***	***116***	**1974**	**2435**	**123**	**2153**	**2588**	**120**
	कुल	**10801**	**8129**	**75.26**	**8207**	**9973**	**121.52**	**12383**	**18205**		**13495**	**19260**	**142.72**

Source :- Add CM&HO Office 2008-09

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आनन्दपुरी एवं घाटोल में नसबन्दी हेतु योग्य दम्पत्तियों को प्रेरित करने का कार्य गम्भीरता पूर्वक नहीं किया गया है जिससे इन दोनो ब्लॉकों की उपलब्धि सबसे कम रही है। वहीं ब्लॉक तलवाड़ा लक्ष्य से अधिक उपलब्धि अर्जित कर शीर्ष पर स्थित है।

विवाह की औसत आयु

जिलें में बाल विवाह एक प्रचलित सामाजिक समस्या है जों अन्ततः जन्म के समय कम वजन वाले बच्चे, शिशु मृत्यु दर व मातृ मृत्यु दर को बढावा देती है। डी0एल0एच0एस0–3 के अनुसार जिलें में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व विवाह करने वाली लड़कियों का कुल प्रतिशत 36.3 है जो कि डी0एल0एच0एस0–2 की तुलना में बढ़ा है। 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व विवाह करने वाली लडकियों का अधिक प्रतिशत होने के बावजूद 15 से 19 वर्ष की आयु में जन्म देने वाली महिलाओं के बच्चों का प्रतिशत डी0एल0एच0एस0–3 के अनुसार कुल जन्म का 15.3 है।

टीकाकरण

बालकों में रोग प्रतिरोधी क्षमता विकास के लिये शिशु एवं प्रजनन स्वास्थ कार्यक्रम के अन्तर्गत टीकाकरण का कार्य किया जाता है। वर्ष 2007–08 एवं 2008–09 की सूचना नीचे तालिका में प्रस्तुत है।

क्रम सं	ब्लाक का नाम	*बी.सी.जी.*		डी.पी.टी.		पोलियों		मिजल्स	
		2007–08	2008–09	2007–08	2008–09	2007–08	2008–09	2007–08	2008–09
1	आनन्दपुरी	*88.23%*	*92.96%*	87.90%	99.92%	64.25%	99.13%	92.11%	84.25%
2	बागीदौरा	89.90%	*100.14%*	85.38%	102.52%	80.57%	101.71%	80.59%	94.84%
3	छोटाडूंगरा /सज्जनगढ	*97.96%*	*98.22%*	81.52%	103.28%	87.21%	102.94%	87.55%	96.46%
4	छोटी सरवन	*97.05%*	*100%*	97.20%	94.52%	94.82%	95.66%	90.31%	94.90%
5	पीपलखूँट	*95.32%*	*98.87%*	95.83%	92.13%	93.98%	94.13%	88.59%	92.38%
6	घाटोल	*92.68%*	*108.82%*	88.19%	109.07%	83.84%	101.53%	89.34%	106.01%
7	कुशलगढ	*87.79%*	*103.32%*	86.87%	99.21%	86.87%	93.35%	83.32%	93.25%
8	परतापुर/गढी	*81.16%*	*91.95%*	82.49%	101.25%	77.74%	99.23%	77.10%	92.41%
9	तलवाडा/ बांसवाडा	*81.39%*	*61.04%*	92.11%	98.89%	86.84%	99.24%	88.80%	98.25%

Source :- RCHO Office

समान्यतः बी.सी.जी. टीकाकरण का प्रतिशत अन्य से अधिक ही होता है। वर्ष 2007–2008 में बी.सी.जी. टीकाकरण 81 प्रतिशत से 98 प्रतिशत तक रहा है। वहीं वर्ष 2008–2009 में यह तलवाड़ा ब्लॉक 61 प्रतिशत को छोड़कर 92 प्रतिशत से 109 प्रतिशत तक रहा है। बी.सी.जी. का टीका बच्चें के जन्म के पश्चात् तुरन्त बाद लगता है एवं मीजल्स जन्म के 10 से 12 महिने के अन्दर लगता है। इसलिए मीजल्स टीकाकरण अन्य से कम होता है। बांसवाड़ा में भी तलवाड़ा ब्लॉक को छोड़कर अन्य सभी ब्लॉकों में मीजल्स

टीकाकरण, बी.सी.जी. टीकाकरण से कम रहा है। **ब्लॉक तलवाडा में बी.सी.जी. का टीकाकरण कम होने का कारण जिला मुख्यालय पर होने वाले प्रसव है जहां जन्म के समय बी.सी.जी. का टीका लगता है अतः तलवाडा ब्लॉक में उक्त टीकाकरण कम होता है।**

टीका	रिपोर्ट 2008–2009	डी.एल.एच.एस.–3 के अनुसार
BCG	96	96
OPV	99	95.4
DPT	100	95.4
MEASELS	95	91
पूर्ण टीकाकरण (बी.सी.जी., डीपीटी, पोलियों, मीजल्स)	89.17	84.7

Source :- RCHO Office

बाल रोगों का उपचार

हमारे देश में डायरिया को शिशु मृत्यु दर के सर्वाधिक कारकों में से एक माना जाता है। डायरिया की स्थिति में ओ0आर0एस0 का घोल देना शिशु मृत्यु दर कम करने की एक महत्वपूर्ण रणनीति है। डीएलएचएस–3 के सर्वेक्षण के समय अंतिम 2 सप्ताह में डायरिया से ग्रसित बच्चों का कुल प्रतिशत जिन्हें ओ0आर0एस0 का घोल प्राप्त हुआ 18.5 है जबकि डीएलएचएस–2 में यह प्रतिशत 20.8 था। अधिकाशं स्थितियों में डायरिया से ग्रसित बच्चों को ओ0आर0एस0 की त्वरित उपलब्धता नही है। इन्ही डायरिया ग्रसित बच्चों का कुल प्रतिशत, जिन्हे उपचार दिया गया 74 है। सर्वेक्षण के समय अंतिम 2 सप्ताह में एक्यूट रेस्पीरेटरी इन्फेक्शन/फीवर (तीव्र श्वसन रोग/बुखार) से पीड़ित 78.3 प्रतिशत बच्चों को ईलाज दिया गया, जों कि संतोषजनक है।

मातृ मृत्यु

मातृ मृत्यु एवं रूग्णता मानव विकास में बाधा उत्पन्न करती है। मुख्यतः मातृ मृत्यु संक्रमण, रक्त स्त्राव, एक्लेम्पिसिया, जटिल प्रसव, गर्भ समापन व रक्त की कमी के कारण होती है। दो बच्चों में कम अन्तर भी मातृ मृत्य को बढ़ावा देता है। प्रसव के दौरान समुचित देखभाल में कमी मातृ मृत्यु के लिए उत्तरदायी है। उचित समय पर एवं उचित संस्था पर ''रैफरल'' इस प्रकार की होने वाली मृत्यु को काफी हद तक कम कर सकता है। मातृ देखभाल के विभिन्न घटकों का सुप्रबन्धन मातृ मृत्यु को कम करने में सहायक होता है।

- जल्दी प्रसव पूर्व पंजीकरण
- स्वास्थ्य कर्मी द्वारा प्रसव पूर्व जांच
- टी.टी. टीकाकरण
- आयरन गोलि वितरण
- प्रसव पश्चात् जांच

वर्ष 2008–09 में महिलाओं के टी.टी. एवं प्रसव पूर्व सेवाओं का विवरण

नाम ब्लॉक	T.T Woman			Referral (Del.)	ANC		ANC Before 12 week
	Target	Achiev.	Percentage		Achieved	Percentage	
तलवाडा/बांसवाड़ा	7715	7475	96.89	1088	7257	94.06	4354
परतापुर/गढी	9044	7349	81.26	1145	7863	86.94	5707
घाटोल	8484	7924	93.40	1220	8136	95.90	4881
छोटी सरवन	2732	2903	106.26	206	2711	99.23	1019
पीपलखूँट	2695	2861	106.16	172	2697	100.07	995
कुशलगढ़	5553	5338	96.13	865	5124	92.27	3847
छोटा डूंगरा/ सज्जनगढ	4940	4930	99.80	937	6245	126.42	3748
बागीदौरा	6476	6402	98.86	918	6592	101.79	3960
आनंदपुरी	3992	3403	85.25	551	4105	102.83	2470
योग	**51631**	**48585**	94.10	**7102**	**50730**	98.25	**30981**

Source: - RCHO Office 2008-09

जिला प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी के अनुसार 94.10 प्रतिशत बांसवाड़ा में टीटनेस टोक्साईड टीका महिलाओं को दिया जा रहा है। प्रसव पूर्व जांच 98.25 प्रतिशत का किया जा रहा है एवं 60 प्रतिशत महिलाओं की जाचं 12 सप्ताह से पूर्व की जा रही है। प्रसव पूर्व परिणामों के अनुसार या प्रसव के दौरान आने वाली जटिलताओं का आंकलन करते हुए उच्च चिकित्सा संस्थाओं पर 13.75 प्रतिशत महिलाओं को रैफर किया गया।

डी.एल.एच.– 3 (जिला स्तरीय घरेलू सर्वेक्षण–3) के परिणामों में और कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से प्राप्त परिणामों में काफी भिन्नता है। डी.एल.एच. एस.–3 के अनुसार बांसवाड़ा में गर्भावस्था के प्रथम 3 माह में पंजीकरण केवल 20 प्रतिशत महिलाओं का ही पाया गया, केवल 18.3 प्रतिशत महिलाओं ने ही सभी प्रसव पूर्व जांच

करवाई, 52.8 प्रतिशत महिलाओं ने ही गर्भावस्था के दौरान टी.टी. इन्जेक्शन लगवाये, केवल 42.60 प्रतिशत महिलाओं की ही प्रसव के 48 घण्टे के अन्दर ही जांच हुई है।

प्रसव के दौरान देखभाल मुख्यतः निर्भर करती है। प्रसव होने वाले स्थान पर, प्रसव हेतु दक्ष कार्मिक पर जब एक महिला प्रशिक्षित कार्मिक डॉक्टर, नर्स, प्रसाविका द्वारा प्रसव करवाती है तो उसके एवं बच्चें को उत्पन्न होने वाली जटिलतओं को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

शिशु मृत्यु दर

मातृ, शिशु एवं शिशु रूग्णता के सामाजिक, आर्थिक परिणाम महत्वपूर्ण है। कठिन या बाधा युक्त प्रसव एवं अपरिपक्व जन्म से जीवन में बाधा या विकलांगता पैदा कर सकता है। वर्तमान में जीवन तनाव भी इसमें मुख्य घटक के रूप में होता है। एक माँ की बीमारी मृत्यु पूरे परिवार की खुशियों को प्रभावित करती है। असक्षम एवं रूग्ण शिशु परिवार पर अतिरिक्त भार डालता है और वर्तमान एवं सम्पूर्ण जीवन के लिए कमजोर स्वास्थ्य वहन करता है।

नाम ब्लॉक	IMR (शिशु मृत्यु दर)
तलवाडा/बांसवाडा	51.84
परतापुर/गढी	37.61
घाटोल	41.3
छोटी सरवन	36.5
पीपलखूँट	36.5
कुशलगढ़	37.4
छोटा डूंगरा/सज्जनगढ	59
बागीदौरा	46
आनंदपुरी	60
जिला बांसवाड़ा	53.43

Source :- Add CM&HO Office 2008-09

बांसवाड़ा के सभी ब्लॉकों में मृत्यु दर मे बहुत भिन्नता है। ब्लॉक आनन्दपुरी, छोटा डूंगरा व तलवाड़ा वह ब्लॉक है जो जिले की औसत शिशु मृत्यु दर से काफी अधिक शिशु मुत्यु दर दर्शाते है। इन सभी ब्लॉकों कों विशेष रणनीति के तहत कार्यक्रम प्रबन्ध की आवश्यकता है। आनन्दपुरी एंव छोटा डूंगरा शिशृ मृत्यु दर 60 व 69 की दर के साथ बहुत खराब ब्लॉक है। कुशलगढ़, छोटी सरवन व परतापुर शिशु मृत्यु दर की दृष्टि से सर्व श्रेष्ठ ब्लॉक है।

जिला स्तरीय घरेलू सर्वेक्षण–3 के अनुसार बांसवाड़ा में शिशु मृत्यु दर अधिक होने के कुछ कारण निम्न है :–

1. शिशु जन्म के 24 घण्टे के अन्दर स्वास्थ्य जांच केवल 46.7% बच्चों की होती है।
2. शिशु जन्म के 10 दिनों के अन्दर स्वास्थ्य जांच केवल 44.9% बच्चों की होती है।
3. शिशु जन्म के 1 घण्टे के अन्दर माँ का दूध केवल 41.0%बच्चों को पिलाया जाता है।
4. शिशु जन्म के 6 माह तक माँ का दूध केवल 24.7%बच्चों को पिलाया जाता है।

बालिका सम्बल योजना

यह योजना बालिका को बढावा देने हेतु रखी गयी हैं । इस योजना के तहत ऐसे दम्पत्ति जो एक बालिका या दो बालिकाओं पर नसबन्दी करा लेते हैं, तो उन बालिका/बालिकाओं के नाम 10000 रू का यू.टी.आई. बाण्ड़ दिया जाता हैं। जो बालिका की उम्र 18 वर्ष होने पर लगभग 80000 रू हो जाता हैं ।

इस योजना से स्त्री/पुरूष अनुपात को बनाये रखने में सहायता मिलती हैं। बॉसवाड़ा जनजातीय जिला होते हुऐ भी राज्य में दूसरे स्थान पर है। यहॉ कुल 66 दम्पत्तियों ने एक या दो बालिकाओं पर अपनी नसबन्दी कराई हैं ।

रेफरल स्वास्थ्य देखभाल कार्य पद्धति

Discription	Anandpuri	Talwara / Banswara	Ghatol	C.Sarvan	C.Dungara/ Sajjangarh	Partapur/ Garhi	Bagidora	Kushalgarh	MG
No. of cases referred to higher institutions	56	41	68	67	107	76	29	84	278
Bed Occupancy Rate	19.78	9.89	12.67	3.44	29.13	49.70	59.53	50.45	81.16
Bed Turnover Interval	5.26	11.32	12.49	17.57	2.28	2.09	2.62	0.95	1.00

Source :- RHSDP Report (2008-09)

उपर्युक्त तथ्यों के अनुरूप पलंग भराव दर (बेड ओक्यूपेंसी रेट) एवं पलंग परिवर्तन अन्तराल (बेड टर्नऑवर इन्टरवेल) को देखने मात्र से पता चलता है कि **जिला अस्पताल पर भारी दबाव है।** रैफरल सिस्टम स्वास्थ्य प्रबन्धन को मजबूत करने के लिए किया जाता है। ताकि असाधारण अवस्थाओं के समय सुविधाओं का आवश्यक उपयोग किया जा सकें।

अत्यधिक बेड ओक्यूपेंसी एवं न्यूनतम बेड टर्नऑवर इन्टरवेल अस्पताल के मानकों से अधिक कार्य को दर्शाता है। साथ ही दर्शाता है कि जिला का रैफरल तन्त्र ढीला है इसका एक मुख्य कारण ग्रामीण स्वस्थ्य सेवाओं का कुप्रबन्धन है। उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि मात्र कुशलगढ़, बागीदौरा व परतापुर ब्लॉक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कुछ प्रदर्शन कर रहे है।

सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सम्पूर्ण उपकरण युक्त अच्छे संस्थागत ढांचे वाले एवं पर्याप्त नर्सिंग व सहायक कर्मचारी युक्त है एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व उप स्वास्थ्य केन्द्र के रैफरल भार को वहन कर सके, लेकिन इन सबके उपरान्त भी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का ठीक प्रदर्शन नहीं करने का मुख्य कारण है कि सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर चिकित्सा अधिकारी एवं विशेषज्ञों के पद रिक्त होना है। तलवाड़ा ब्लॉक जिला मुख्यालय के निकट है एवं छोटी सरवन, घाटोल एवं आनन्दपुरी ब्लॉक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर रहे है।

ऐम्बुलेन्स सेवाऐं

ब्लॉक का नाम	ऐम्बुलेन्स की संख्या
तलवाडा/बांसवाडा	1
परतापुर/गढी	2
घाटोल	1
छोटी सरवन	1
छोटा डूंगरा/सज्जनगढ	0
कुशलगढ	2
बागीदौरा	1
आनन्दपुरी	0
कुल	**8**

जिले में रेफरल प्रणाली की स्थिति को देखा जावें तो सम्पूर्ण जिले में कुल 8 ऐम्बुलेन्स कार्यरत है किन्तु पाया गया की इनका उपयोग उचित प्रकार से नहीं हो रहा है। ऐम्बुलेन्स के द्वारा रोगियों को पर्याप्त मात्रा में रेफरल सुविधा प्राप्त नहीं हो रही हैं, साथ ही ऐम्बुलेन्स का व्यवस्थापन भी उचित प्रकार नहीं किया जा रहा हैं। आवश्यकता हैं, कि योजनाबद्व तरीके से ऐम्बुलेन्स का व्यवस्थापन कर उसका उचित उपयोग किया जाऐ। जिला मुख्यालय पर महात्मा गांधी चिकित्सालय में स्वयं सेवी संस्था द्वारा प्रदान की गई एक ऐम्बुलेन्स है।

मलेरिया

राजस्थान में मलेरिया एक जनस्वास्थ्य समस्या है। बांसवाडा जिले की भौगोलिक परिस्थितियों, पहाडी क्षेत्र, गढ्ढें व जंगल होने की वजह से यहां मच्छर अधिक संख्या में पनपते है।

मलेरिया रोगियों का विवरण

Year	jan	feb	mar	apr	may	jun	Jul	aug	sep	Oct	nov	dec
2007	6	14	20	24	59	59	118	328	468	357	90	64
2008	7	10	34	48	47	33	130	125	428	252	70	51

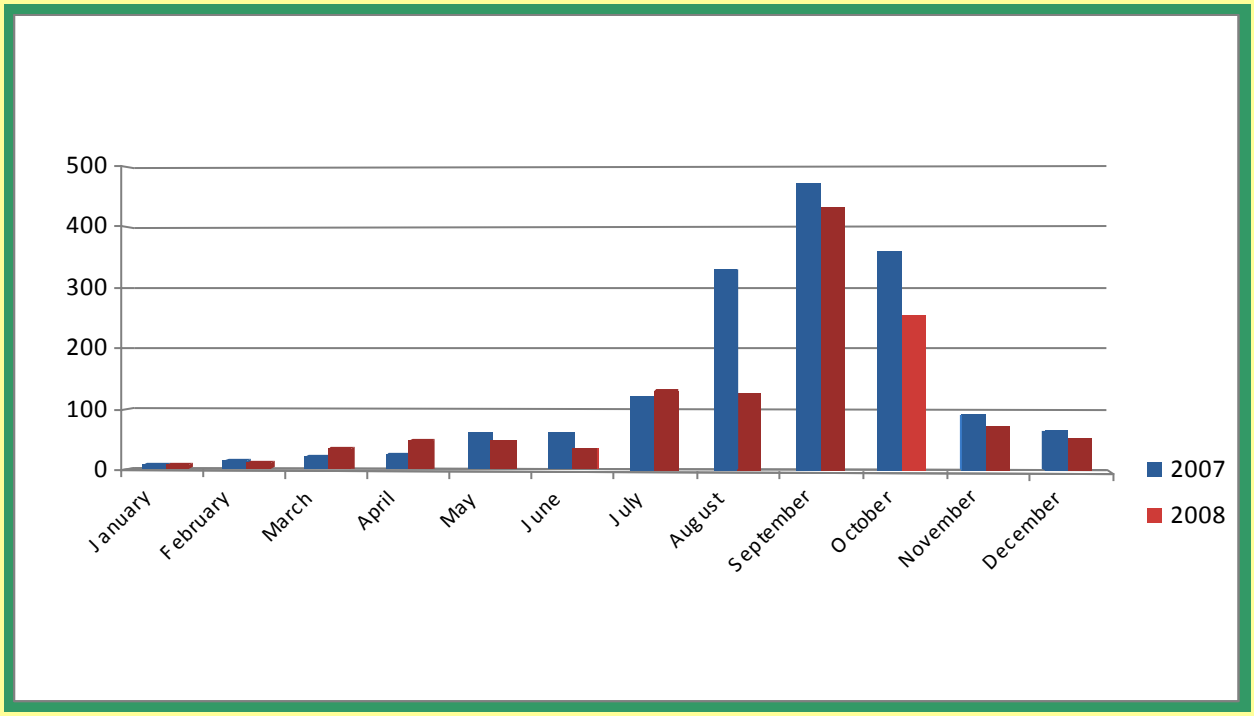

Source :- Dy. CM&HO Office

उपर्युक्त रेखाचित्र स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वर्ष 2008 में मलेरिया के रोगियों की संख्या में वर्ष 2007 की तुलना में उत्तरोत्तर कमी हुई है। यह सफलता निम्न गतिविधियों का परिणाम है।

1. योजनाबद्ध गहन सर्वेक्षण कर 11050 फीवर रेडिकल टीटमेन्ट (FRT) दिया गया। मलेरीया क्लिनिक की संख्या में 36 से बढोतरी कर 39 किया गया। क्लोरोक्विन का वितरण गत वर्ष 54000 से बढाकर 825500 किया गया।

2. दवाई वितरण केन्द्रों की संख्या में गत वर्ष की तुलना में 215 की वद्धि की गयी एवं सभी (1665) केन्द्रों पर मलेरिया निरोधक दवाईया उपलब्ध कराई गयी। साथ ही सभी केन्द्रों पर सूचना शिक्षा व संचार हेतु बोर्ड लगाया गया जिससे लागों को जानकारी उपलब्ध रहती है कि यहां बुखार की गोलिया निःशुल्क उपलब्ध होती है।

3. रक्त पट्टिकाओं का संग्रहण 9321 से बढकर 33855 हुआ एवं 39 केन्द्रों पर उपलब्ध प्रशिक्षित लेब टेक्निशियन द्वारा 24 घण्टे के अन्दर जॉच कर पॉजिटीव आने पर तुरन्त आरटी की सुरक्षा सुनिश्चित की गयी।

4. सभी ब्लॉकों में गांवों के समीप/आवासीय स्थलों के समीप अनुपयोगी पानी के गढ्ढों को चिन्हित कर उनमें जला हुआ तेल डाला गया। ताकि मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों को पनपने से रोका जा सकें।

5. 26 स्थानों पर हेचरियों का संधारण कर गंबूशिया मछली डाली गयी। इन सभी हेचरियों को डिपो की तरह काम में लिया जाता है एवं आवश्यकता पडनें पर यहां से गबुशिया मछलियां निकाल कर अन्य स्थानों पर वितरण किया गया।

6. स्वास्थ्य शिक्षा व ग्राम बैठकों के माध्यम से सूखा दिवस की जानकारी का प्रचार–प्रसार।

समस्त गतिविधियों के संचालन फलस्वरूप प्राप्त परिणामों का ब्लॉकवार विस्तृत अध्ययन ।

ब्लाक का नाम	ग्रामों की संख्या	संरक्षित जनसंख्या	DDT (Kg.)	ग्रामों की संख्या	संरक्षित जनसंख्या	ASM	कुल जनसंख्या	रोगी 2007	रोगी 2008
आनन्दपुरी	13	8970	1346	2	409	144	9379	160	84
बागीदौरा	0	0	0	0	0	0	0	67	32
छोटा डूंगरा /सज्जनगढ	26	22977	3447	12	13676	4787	36653	181	204
छोटी सरवन	24	22177	3327	0	0	0	22177	90	69
घाटोल	20	20936	3141	0	0	0	20936	167	91
कुशलगढ	55	47118	7068	7	6799	2380	53917	247	243
परतापुर / गढी	8	25654	3848	0	0	0	25654	172	161
तलवाडा / बांसवाडा	3	13560	2034	1	345	120	13905	238	90
कुल	**149**	**161392**	**24211**	**22**	**21229**	**7431**	**182621**	**1322**	**974**

Source :- Dy. CM&HO Office

जिले में हाई रिस्क क्षेत्र में पिछले तीन वर्ष कें आंकडों के तुलनात्मक अध्ययन कर एन.एम.ई.पी. (नेशनल मलेरिया इरेडिक्शन प्रोग्राम.)के मापदण्डो के अनुरूप 2 से 5 ए.पी.आई

वाले 149 गांवों में डी.डी.टी. 50 प्रतिशत का छिडकाव किया गया तथा 5 से अधिक ए.पी. आई वाले एवं ब्लॉक छोटा डूंगरा व कुशलगढ के वे क्षेत्र जहां डी.डी.टी. का प्रतिरोध है उन 22 गांवों में अल्फासाइफरमेथ्रीन 5 प्रतिशत का स्प्रे किया गया। **तुलनात्मक अध्ययन करने पर पता चलता है कि मलेरिया के फैलाव पर ब्लॉक तलवाडा बागीदौरा व आनन्दपुरी में वर्ष 2008 में प्रभावी नियंत्रण हुआ लेकिन ब्लॉक छोटा डूंगरा व कुशलगढ में मलेरिया नियंत्रण के सभी प्रयास विफल रहें एवं स्थिति पूर्ववत ही है।**

अपेक्षित परिणाम न आने के कारण

1 कुशलगढ व छोटा डूंगरा के कई क्षेत्रो में डी.डी.टी. एवं क्लारोक्विन का प्रतिरोध।

2 स्वास्थ कार्यकर्ता की नियमित पहुॅच नहीं।

3 व्यक्तिगत सावधानी व सुरक्षा के प्रति चेतना का अभाव।

4 आंगनवाडी कार्यकर्ता व आशा सहयोगीनी द्वारा अपेक्षित सहयोग का अभाव।

5 चिकित्सा अधिकारी एवं लेब टेक्निशीयन के रिक्त पद।

कुष्ठ रोग

राष्ट्रीय कुष्ठ निवारण कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2006–2007, 2007–2008, 2008–2009 में क्रमशः 41, 34, एवं 41 व्यक्तियों को एम.डी.टी. (मल्ट्री ड्रग थैरेपी) द्वारा उपचार दिया गया। इनमें से क्रमशः 25, 16, 20 को उपचार के बाद रोग मुक्त किया गया। जिले के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर एम.डी.टी. उपचार सुविधा उपलब्ध है।

वर्ष	रोगी संख्या	रोग मुक्त
2006–2007	41	25
2007–2008	34	16
2008–2009	41	20

Source :- Dy. CM&HO Office

टी.बी.

भारत में टी.बी. एक मुख्य स्वास्थ्य समस्या है एवं सबसे अधिक मौतें इसी बीमारी से होती है। बांसवाड़ा जिले में इस बीमारी पर नियन्त्रण रखने के लिए 5 टी.बी. युनिट एवं 34 माइक्रोस्कोपिक सेंटर है जिनमें से 29 माईक्रोस्कोपीक सेन्टर राष्ट्रीय टी.बी. नियन्त्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यरत है। डॉट (डायरेक्ट ऑबजर्व ट्रीटमेंट) प्रणाली टी.बी. को समुदाय में फैलने से रोकने के लिए एक कारगर रणनीति है।

आयु वर्गानुसार एवं ब्लॉक अनुसार रोगियों का विवरण

Age	0-9		10 – 18		19-25		26-35		36-45		>45		Total		Grand Total
Sex	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female	Male	Female	
Talwara / Banswara	26	21	41	30	99	57	175	74	99	27	82	15	**522**	**224**	**746**
Sarvan	4	11	17	15	31	9	53	23	53	15	45	18	**203**	**91**	**294**
Ghatol	16	11	29	15	103	30	137	56	91	38	82	20	**458**	**170**	**628**
Pipal khoont	6	2	6	8	19	6	44	7	25	4	14	4	**114**	**31**	**145**
Kushalgarh	0	0	23	28	17	10	49	51	57	31	84	29	**230**	**149**	**379**
Sajjangarh / Choota Dungara	0	0	3	2	6	14	24	33	44	20	60	31	**137**	**100**	**237**
Anandpuri	1	0	3	5	26	13	37	15	26	10	30	7	**123**	**50**	**173**
Bagidora	3	5	13	16	39	19	81	45	74	17	76	21	**286**	**123**	**409**
Partapur / Garhi	5	3	23	20	57	41	124	53	67	15	82	19	**358**	**151**	**509**

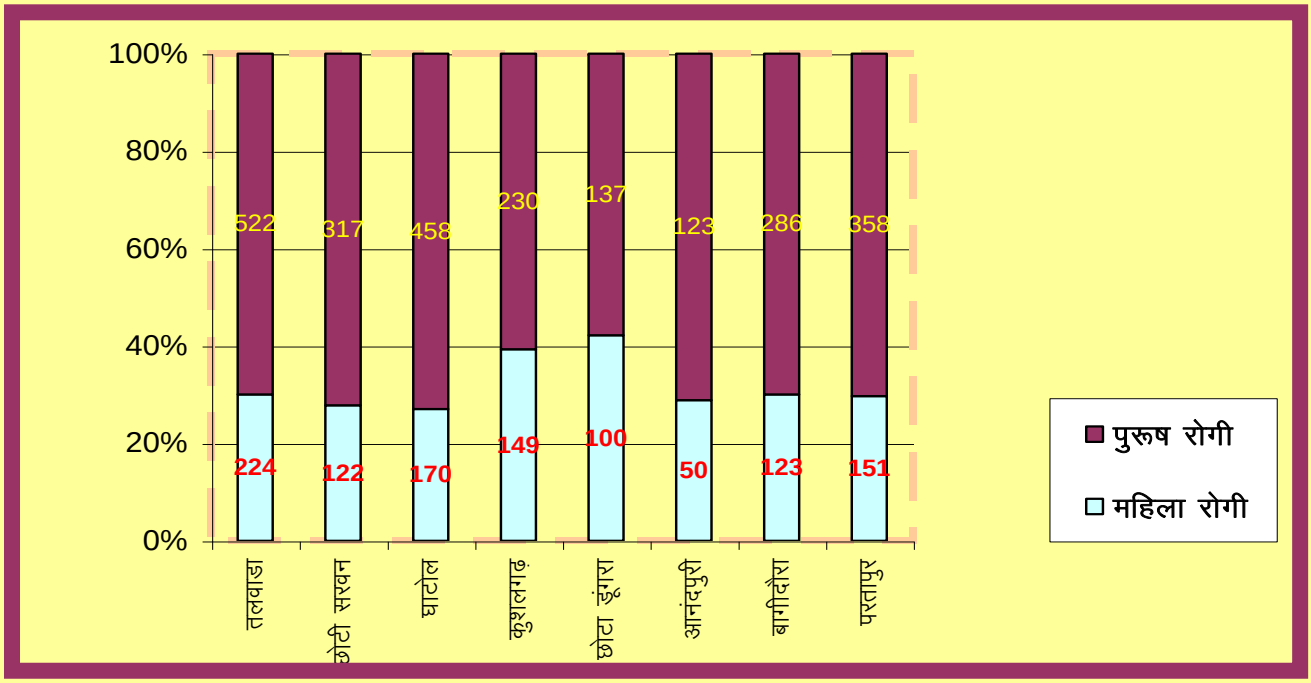

स्पष्ट है कि महिला रोगियों की संख्या बढ़ती आय के साथ बढ़ी है। इसका मुख्य कारण है महिलाओं द्वारा स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देना एवं शादी के पश्चात ससुराल पक्ष द्वारा महिला के स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षित व्यवहार ।

ब्लॉक अनुसार रोगियों का विवरण

जिले में ब्लॉक वार तथ्यों की विवेचना से पता चलता है कि ब्लॉक छोटा डूंगरा व कुशलगढ़ में महिलाओं द्वारा किया गया जांच का प्रतिशत अन्य सभी ब्लॉक की तुलना में अधिक है। अतः स्पष्ट है कि अन्य ब्लॉकों में महिलाओं द्वारा जांच कम कराई जा रही है जो टी.बी. की रोकथाम मे बाधा उत्पन्न कर सकती है एवं जिन महिलाओं द्वारा जॉच नहीं करायी जा रही है उन महिलाओं के परिवार मे अन्य सदस्यों को टी.बी. होने की संभावना अन्य परिवारो की तुलना में अधिक होती है।

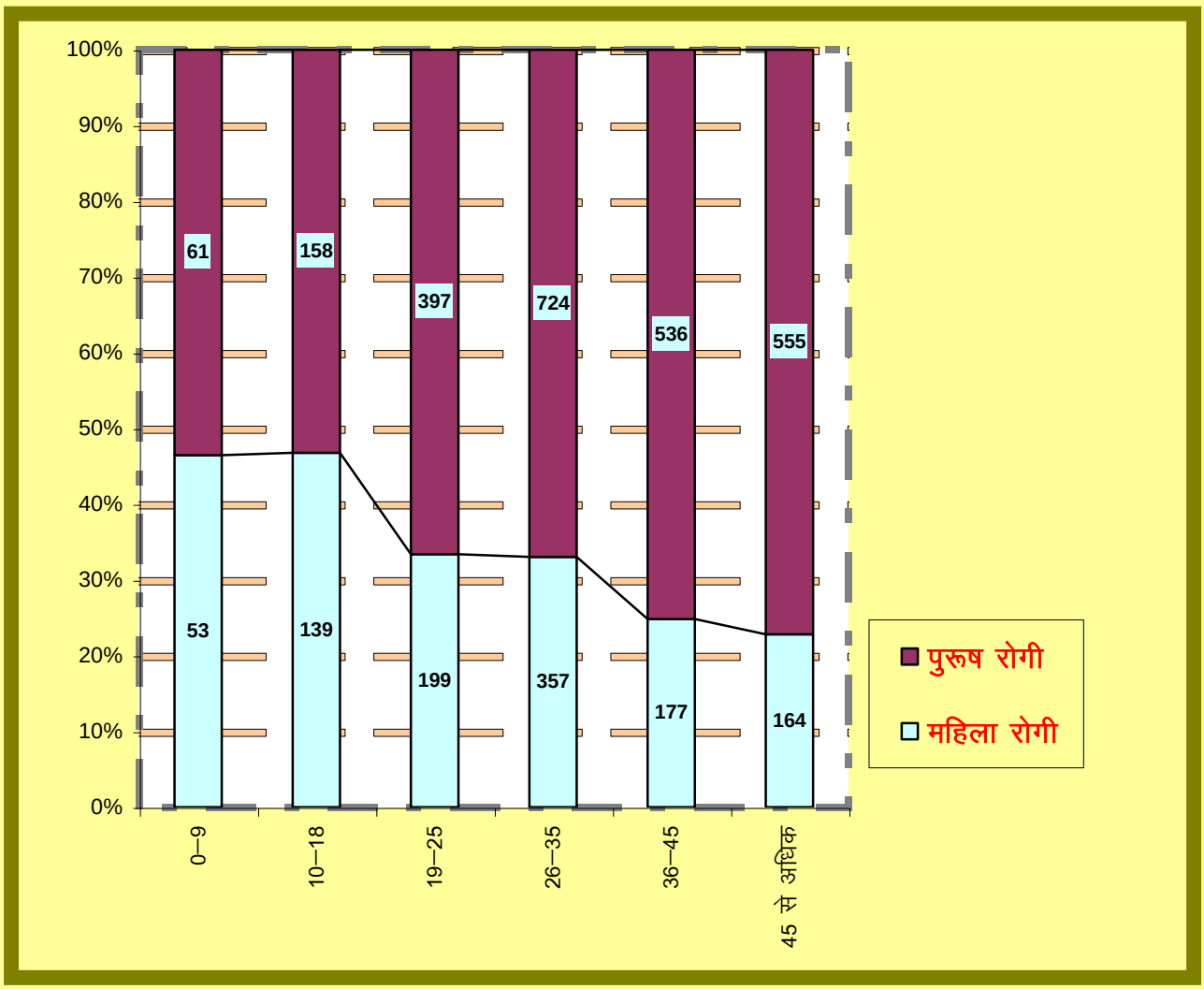

टी.बी.युनिट द्वारा संपादित कार्य

ब्लॉक का नाम	कुल टीबी रोगियो का इलाज किया	उपचार दर	मृत्यु दर	असफलता दर	उपचार छोड़ देने वाले रोगियों की दर
तलवाडा / बासंवाडा	746	84.7	3.22	1.21	4.08
छोटी सरवन	439	84.8	2.73	1.91	4.63
घाटोल	628	85.06	0.96	1.11	3.94
कुशलगढ़	379	85.05	3.43	5.86	2.13
छोटा डूंगरा / सज्जनगढ	237	91.02	2.11	2.11	1.98
आनंदपुरी	173	78.97	2.89	1.16	5.14
बागीदौरा	407	83.87	2.95	1.23	6.34
परतापुर/ गढी	509	86.8	2.95	0.79	5.39
कुल	**3518**	**85.03**	**2.62**	**1.76**	**5.34**

Source :- DTO Office

जिले में ईलाज से ठीक हुए मरीजों की दर 85.03% है। छोटा डूंगरा, परतापुर, कुशलगढ़, घाटोल जिले के प्रतिशत से अधिक है वहीं बागीदौरा एवं आनन्दपुरी ब्लॉक सबसे पिछड़ा है। ब्लॉक छोटी सरवन व तलवाड़ा की दर लगभग समान है। **टी.बी. का ईलाज अधूरा छोड़ कर गये रोगियों की दर परतापुर, बागीदौरा एवं आनन्दपुरी में सबसे अधिक है** एवं आदर्श दर से भी अधिक है। **वहीं ब्लॉक छोटा डूंगरा व कुशलगढ़ की दर सबसे न्यून है।** जिले में ईलाज अधूरा छोड देने का कारण यह है कि यहां के लोग मजदूरी के लिए पडौसी राज्य गुजरात व महाराष्ट्र में जाते है।

टी.बी. से हुई मौतो की दर कुशलगढ़ एवं तलवाड़ा में सर्वाधिक है। टी.बी. के कारण हुई मौतों की दर अधिक होने से स्पष्ट होता है कि इन ब्लॉकों में टी.बी. का ईलाज लेने वाले रोगीयों का अनुसरण (Follow-up) डॉट उपचार देने वाले कार्मिक द्वारा भली प्रकार से नहीं किया जा रहा है। जबकि घाटोल एवं छोटा डूंगरा के आंकड़ों को देखकर पता लगता है कि इन ब्लॉकों में टी.बी. का ईलाज लेने वाले रोगियों का अनुसरण (Follow-up) डॉट उपचार देने वाले कार्मिक द्वारा भली प्रकार से किया जा रहा है।

कुशलगढ़ एक मात्र ऐसा ब्लॉक है जिसमें ईलाज करने के उपरान्त भी रोगी ठीक नहीं होने का अनुपात सर्वाधिक है यह अन्तर अन्य सभी ब्लॉकों से कई गुना अधिक होने के कारण कुशलगढ़ ब्लॉक के टी.बी. युनिट की ईलाज गुणवत्ता को संदेह के घेरे में डालता है। यहां अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

अपेक्षित परिणाम न आने के कारण

1. एस.टी.एस (सीनियर ट्रीटमेन्ट सुपरवाइजर)के पद रिक्त है।
2. टी.बी. यूनिट के चिकित्सा अधिकारी व संस्थान प्रभारीयों द्वारा सुपरविजन नही किया जा रहा है।

नेत्र चिकित्सा

जिला अंधता नियंत्रण समिति :– जिला अंधता निवारण समिति द्वारा जिलें में नेत्र रोगियों के उपचार हेतु कैम्प लगाकर ऑपरेशन किए गए। वर्ष 2008–09 में सरकार द्वारा कैम्पों पर रोक लगा दी गई जिससे लक्ष्य कम प्राप्त हो सका।

वर्ष	लक्ष्य	उपलब्धि
2007–08	10600	8051
2008–09	10600	4767

समेकित बाल विकास कार्यक्रम

कुपोषण

बांसवाड़ा जिले मे कुपोषण की समस्या बहुआयामी है। अतः इस समस्या को मूल से हल करने के लिए एक समेकित रणनीति की आवश्यकता है। जिसके तहत बाल–विकास विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग एवं पंचायती राज संस्थाओं को प्रत्येक स्तर पर संगठित एवं मजबूत करने की आवश्यकता है।

बच्चों का **''कम वजन का होना''** जिले के लिए एक विचारणीय मुद्दा है। जबकि विगत वर्षो में इस पर बहुआयामी कार्य किया गया है। जिसके परिणाम भी काफी हद तक सुखद प्राप्त हुए है।

यहाँ ''कम बजन का होना'' को इस तरह से आकलित किया गया है कि एक निश्चित आयु वर्ग के बच्चों की कुल संख्या जिनका वजन लिया गया है उस नियत आयु वर्ग के कुल बच्चो की संख्या X100

	0 to 3		0 TO 6		3 TO 6	
Nor.	BOY	21427	BOY	36683	BOY	15256
	Girl	20761	Girl	34934	Girl	14173
Gr.I	BOY	22906	BOY	38321	BOY	15415
	Girl	22725	Girl	37936	Girl	15211
Gr.II	BOY	19928	BOY	31866	BOY	11938
	Girl	19594	Girl	31520	Girl	11926
Gr.III &IV	BOY	397	BOY	442	BOY	45
	Girl	507	Girl	570	Girl	63
Total BOY		**64658**	**BOY**	**107312**	**BOY**	**42654**
Total Girl		**63587**	**Girl**	**104960**	**Girl**	**41373**
Total		128245		212272		84027

Source :- DDICDS Office 2008-09

बांसवाड़ा जिले के संबंध में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण करने पर निम्न तथ्य उजागर होते है :–

कुल परिक्षण किये गये 0 से 3 वर्ष तक के बच्चों में से 32.89 प्रतिशत बच्चें सामान्य श्रेणी के अर्न्तगत पाये गये जबकि 35.58 प्रतिशत ग्रेड़। व 30.81 प्रतिशत ग्रेड़।। कुपोषित पाये गये। अत्यन्त गंभीर कुपोषित बच्चों का प्रतिशत 0.70 प्रतिशत पाया गया।

इसी प्रकार 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों का आंकलन किया गया जिसके परिणाम निम्नानुसार हैः–

1. कुल परीक्षण किये गये बच्चों में से 35.02 प्रतिशत बच्चें सामान्य पाये गये जबकि 36.44 प्रतिशत ग्रेड़। व 28.40 प्रतिशत ग्रेड़।। कुपोषित पाये गये।
2. 3 वर्ष से 6 वर्ष के बच्चों मं अत्यन्त गम्भीर कुपोषित बच्चों की संख्या का प्रतिशत 0.12 प्रतिशत पाया गया।

इन तथ्यों का विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि बांसवाड़ा जिले में पंजीकृत किये गये बच्चों में से हर तीसरा बच्चा कुपोषित है। यहाँ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि अत्यन्त गम्भीर कुपोषित बच्चों को चिकित्सकिय परामर्श एवं देखभाल की आवश्यकता होती है। इन्हें समुदाय व घरेलू स्तर पर उपचारित नहीं किया जा सकता है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जो इस क्षेत्र में अल्प कार्य कर रही है उसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने एवं इस प्रकार कुपोषित बच्चों की **''समुचित स्तर''** (जिले के MTC) पर समय–समय पर अग्रेषित (Refer) करने की आवश्यकता है अर्थात् कुपोषण प्रबंधन हेतु बालविकास विभाग में पर्यवेक्षण एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की कार्य प्रणाली में सुधारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है। मुख्यतः इन बच्चों पर ध्यान देना आवश्यक है जो जन्म के समय सामान्य वजन वाले बच्चे होते है और वो बच्चें जो कुपोषण की अवस्था। व II (WHO मानकों द्वारा निर्धारित) के अन्तर्गत होते है।

सामान्य बच्चों पर 17 महिने तक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। ग्रेड़ I व II के बच्चें की भी देखभाल समुदाय स्तर पर की जा सकती है अर्थात् बाल विकास विभाग के संसाधन एवं रणनीति इन बच्चों पर ही केन्द्रित होनी चाहिये न कि ग्रेड़ III व ग्रेड़ IV पर।

व्यवहार संबन्धी स्तर

वर्तमान में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वार भेजी जाने वाली मासिक प्रगति रिपोर्ट में कोई भी व्यवहार संबन्धी तथ्य नहीं लिखा जाता है। बाल विकास विभाग द्वारा एक समेकित सूचना प्रपत्र विकसित करना चाहिए जिसमें कि व्यवहार संबन्धी पक्ष का भी संकलन हो जिन्हें मासिक रूप से अवलोकित कर प्रगति का आंकलन व आगामी नीति निर्धारण किया जा सके।

उदाहरण के तौर पर स्तन पान कराये जाने को लेकर राष्ट्र, राज्य एवं जिला स्तर से सघन सूचना शिक्षा एवं संप्रेषण कार्य, गोष्ठी, पत्र, पत्रिका वितरण, स्तन पान सप्ताह क्रियान्वयन किये जाने के पश्चात् भी कोई उतसाहजनक परिणाम प्राप्त नहीं हुए है।

जिला स्तरीय घरेलू सर्वेक्षण (DLHS-3) के अनुसार जिले में वर्तमान में भी बच्चें के जन्म के **1 घण्टे के अन्दर केवल 41% महिलाएं ही स्तन पान कराती है। 24.7 प्रतिशत महिलाएं ही बच्चें को 6 माह या अधिक समय तक केवल स्तन पान कराती है।**

जबकि 6 माह से 24 माह तक के बच्चों को 93.6% महिलाऐं स्तन पान के साथ तरल या ठोस पदार्थ भोजन के रूप में देती है।

इन सभी तथ्यों से ज्ञात होता है कि उक्त व्यवहार/आचरण को परिवर्तन किये जाने की आवश्यकता एवं इस कार्य को समुदाय स्तर पर किया जाकर व्यवहार परिवर्तन किया जाना संभव है न कि जिला एवं राज्य स्तर पर। इस क्षैत्र में विभाग के लिए कार्य करने की असीम संभावनाऐं विद्यमान है, क्योंकि समुदाय स्तर पर विभाग का लक्षित समूह गर्भवती महिलाऐं व घात्री महिलाऐं है।

स्वास्थ्य एवं पोषाहार दिवस

हर सप्ताह किसी एक दिवस पर आंगनवाडी केन्द्रों पर स्वास्थय एवं पोषाहार दिवस मनाया जाता है। इसमें ''टेक होम राशन'' का वितरण आगामी छः दिनों के लिए आंगनवाड़ी केन्द्रों द्वारा किया जाता है। विगत कुछ वर्षो में आंगनवाड़ी केन्द्रों पर लक्षित समूह के भ्रमण में उत्तरोत्तर वृद्वि हुई है।

उक्त दिवसों के अवलोकन पर यह तथ्य प्रकट होता है कि लाभार्थियों की संख्या लक्षित संख्या से अपेक्षाकृत कम ही रहती है इसका मुख्य कारण है कि :–

- छितरे हुऐ एवं दूरी पर घरों की बसावट जो आंगनवाड़ी केन्द्रों से काफी दूर होते है।
- जनजातीय क्षैत्र में व्यवसाय प्रकृति, (मजदूरी) एवं घरेलू प्राथमिकताऐं

राज्य सरकार सैद्धान्तिक रूप से वैकल्पिक पोषाहार के रूप में ''टेक होम राशन'' विशेष कर 3 साल के बच्चें, गर्भवती एवं धात्री महिलाऐं व 3 साल से 6 वर्ष तक के स्तनपान कराये जाने वाले बच्चों को उपलब्ध कराये जाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इसके साथ–साथ ही चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्ताओं के द्वारा आंगनवाड़ी केन्द्रों पर ही स्वास्थ्य सुधार सेवाऐं प्रदान की जाती हैं। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की कार्यकर्ता को आंगनवाडी केन्द्रों पर विभाग की सेवाऐं (टीकारण, सलाह एवं परामर्श, दवा वितरण, प्रसव पूर्व एवं प्रसव पश्चात् सेवाऐं) प्रदान करने का एक अच्छा अवसर होता है।

आंगनवाड़ी केन्द्रों के आंकड़े यह दर्शातें है कि :–

- तीन वर्ष से कम आयु के बच्चें की माँ द्वारा ''विजिट'' में वृद्धि हुई है।
- आंगवाड़ी केन्द्र पर तीन कि.मी. दायरे तक लोगों की राशन लेने की संख्या में वृद्वि हुई है।
- उक्त दिवस से विशेष कर टीकारण, प्रसव पूर्व एवं पश्चात् जांच में वृद्वि हुई है।
- टेक होम राशन वितरण की वजह से प्रसाविका एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के मध्य एक सुसंचार विकसित हुआ है।

इन सभी क्रिया कलापों से समुदाय स्तर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता का सामाजिक स्तर एवं प्रतिष्ठा में वृद्वि हुई है तथा अब वह जन–मानस के सामने स्वास्थ्य सेवाऐं भी प्रदान करने वाली ''कड़ी'' के रूप में उभर के सामने आ रही है।

किशोरी बालिकाओं हेतु पोषाहार कार्यक्रम

इस योजना के अन्तगर्त 11–19 आयु वर्ग की किशोरी बालिकाओं के वजन के आधार पर चयन किया जाता है। 15 वर्ष से कम आयु वर्ग की किशोरी बालिकाओं हेतु वजन की निर्धारित सीमा 30 कि.ग्रा. तथा 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की किशोरी बालिकाओं हेतु वजन की सीमा 35 कि.ग्रा. हैं ।

इस योजना अन्तगर्त चयनित एवं पंजीकृत लाभान्वितों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से उचित मूल्यों की दुकानों पर प्रतिमाह 6 किलों गेहूँ निःशुल्क दिया जाता हैं। यह खाघान्न लाभार्थी को तीन माह तक दिया जाता है। तीन माह पश्चात् बालिका का पुनः वजन किया जाता है। यदि बालिका का वजन निर्धारित सीमा से अधिक होता हैं, तो उसे खाघान्न देना बन्द कर दिया जाता है, एवं यदि वजन में बढ़ोतरी नहीं होती हैं, तो उस बालिका को सन्र्दभित चिकित्सा संस्थान भेजकर चिकित्सा अधिकारी से परामर्श लिया जाता है, और अगले तीन माह तक उसे खाघान्न जारी रखा जाता है ।

परियोजना का नाम	वर्ष 2007–08		वर्ष 2008–09	
	लाभार्थी	गेंहू वितरण कि. ग्र	लाभार्थी	गेंहू वितरण कि.ग्र
गढ़ी / परतापुर	13916	834.96	13916	598632
घाटोल	14226	853.56	14226	426780
तलवाड़ा / बांसवाडा	12520	751.20	12520	225360
बागीदौरा	9741	584.46	9741	292228
सज्जनगढ़ / छोट डूंगरा	10344	620.64	10344	310315
कुशलगढ	7379	442.73	7785	233550
आनन्दपुरी	–	–	4122	125533
छोटी सरवन	8106	486.36	–	–
बॉसवाड़ा शहर	–	–	1516	44010

Source :- DDICDS Office

विवरण	वर्ष 2007–08	वर्ष 2008–09
कुल गेहू प्राप्त किया	437.39 M.T.	2256.408 M.T.
कुल किशोरी बालिकाओं की संख्यॉ	76232	74170
आवश्यक गेहूँ त्रैमासिक	1372.176 M.T.	1335.060 M.T.

Source :- DDICDS Office

चूँकि बॉसवाड़ा में इस परियोजना को सुचारू रूप से चलाने के लिये समय पर आवश्यक खाघान्न एवं आवश्यकतानुसार आपूर्ति नहीं होने के कराण परियोजना की सफलता का आकंलन किया जाना संभव नहीं हैं ।

विटामिन "ए" खुराक कार्यक्रम

		VITAMIN A Doses		
		Boy	Girl	Total
Round 1	Registered	109642	113082	222724
	Benificiries	107137	105348	212485
Round 2	Registered	111675	109565	221240
	Benificiries	107292	98322	205614
Total	Registered	221317	222647	443964
	Benificiries	214429	203670	418099

Source :- DDICDS Office

समेकित बाल विकास सेवाऐं विभाग द्वारा विटामिन ''ए'' की खुराक 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को पिलाई जाती है। वर्ष 2008–2009 में उक्त कार्य हेतु IDSP एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से दो सघन अभियान चलाकर सम्पूर्ण जिले में विटामिन ए की दवा लक्षित समूह को पिलाई गई।

प्रथम चरण माह अप्रेल–मई में चलाया गया, जिसमें कुल लक्षित समूह 222724 पंजीकृत हुए, जिनमें से 212485 बच्चों को दवा पिलाई गई, जो कि कुल पंजिकरण का 95.40 प्रतिशत रहा। प्रथम चरण का लिंगानुसार विश्लेषण में निम्न तथ्य पाये गये :–

- कुल पंजीकरण 222724 में से 109642 (49.11%) लड़के एवं 105348 (50.77%) लड़कियां पंजीकृत की गई।
- कुल लाभार्थियों की संख्या 212485 में से 107137 (50.42%) लड़के व 105348 (49.57%) लड़कियों को खुराक पिलाई गई।

इसी प्रकार द्वितीय चरण माह अक्टूबर–नवम्बर में चलाया गया जिसमें कुल पंजीकरण 221240 हुआ, इसमें से 205614 बच्चो को दवा पिलाई गई। उक्त चरण का विश्लेषण निम्नानुसार है :–

कुल पंजीकरण 221240 में से 111675 (50.47%) लड़के एवं 109565 (49.52%) लड़कियां पंजीकृत हुए।

कुल लाभार्थियों 205614 में से 107281 (52.18%) लड़के एवं 98322 (47.81%) लड़कियां को खुराक पिलाई।

शिशु एवं महिलाओं में ऐनिमिया

ऐनिमिया वह अवस्था है जब खून में हिमोग्लोबीन की मात्रा आदर्श स्थिति से कम हो जाती है। हिमोग्लोबीन ऑक्सिजन को लाल रक्त कोशिकाओं में पहुंचाता है। फेफड़ो के माध्यम से यह उत्तकों व शरीर के अन्य भागों में भेजा जाता है। ताकि सभी उत्तक व अंग भली भांति कार्य कर सके। हिमोग्लोबीन की कमी यानी उत्तकों एवं अंगो की कार्यक्षमता में कमी होना। ऐनिमिया अधिकतर आयरन एवं विटामिन 12 की कमी से होता है।

ऐनिमिया से माँ एवं बच्चें के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है एवं मातृ मृत्यु, जन्म पूर्व एवं पश्चात् शिशु मृत्यु का कारण होता है। बच्चों के सम्पूर्ण विकास में यह बाधा उत्पन्न करता है और शिशु रूग्णता में संक्रमित बीमारियों को बढ़ाता है।

ऐनिमिया का जल्द ही पता लगने पर प्रसव पूर्व, प्रसव के दौरान व प्रसव पश्चात् की कठिनाईयों को काफी कम किया जा सकता है। बांसवाड़ा में शिशु एवं महिलाओं में ऐनिमिया काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है।

बांसवाड़ा जिले में पेयजल व्यवस्था :–

शहरी क्षैत्र

बांसवाड़ा जिले में कुल 3 शहर बांसवाड़ा, कुशलगढ़ व परतापुर में पेयजल व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। जिले में पेयजल व्यवस्था निम्नानुसार है।

क्र.सं.	योजना	ग्रामीण	शहरी
1	एम.एन.पी.+ए.आर.पी.	1471	परतापुर+कुशलगढ़
2	एम.एन.पी.		बांसवाड़ा

Source :- PHED Office (2008-09)

1. शहरी जल प्रदाय योजना बांसवाड़ा

बांसवाड़ा की पुनर्गठित योजना लागत 1113.83 लाख स्वीकृत हुई थी। योजना पर 17.5 कि.मी. राईजिंग पाईप लाईन, इन्टेक वेल, 50.00 कि.मी. वितरण पाईप लाईन, 5 उच्च जलाशय, 2 स्वच्छ जलाशय, 10 एम.एल.डी. का रेपिड ग्रेविटी फिल्टर प्लान्ट, पम्पसेट आपूर्ति व स्थापना का कार्य पूर्ण कर दिये गये है। योजना के समस्त कार्य माह दिसम्बर 2009 तक पूर्ण कराया जाना प्रस्तावित है। योजना का वर्तमान में सेवा स्तर 100 एल.पी. सी.डी. है तथा पेयजल वितरण सुचारू रूप से किया जा रहा है। शहर में 160 कि.मी. पाईप लाईन बिछी हुई है।

2. शहरी जल प्रदाय योजना कुशलगढ़

शहर कुशलगढ़ में वर्तमान में पेयजल व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। शहर कुशलगढ़ के लिये स्वीकृत पुनर्गठित शहरी जल प्रदाय योजना का कार्य पुरा हो चुका है व इस हेतु योजना को चालू कर दिया गया है। योजना की स्वीकृत लागत 121.17 लाख रू. है। योजना पर 118.46 लाख रू. की राशि व्यय की गई है। योजना का वर्तमान में सेवा स्तर 70 एल.पी.सी..डी. है तथा पेयजल वितरण सुचारू रूप से किया जा रहा है। शहर में कुल 32 कि.मी. पाईप लाईन बिछी हुई है।

3. शहरी जल प्रदाय योजना परतापुर

शहर परतापुर में वर्तमान में पेयजल व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। योजना का वर्तमान में सेवा स्तर 70 एल.पी.सी..डी. है। शहर में कुल 14 कि.मी. पाईप लाईन बिछी हुई है।

4. सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट

बांसवाड़ा शहर की सीवरेज योजना के सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट निर्माण हेतु राशि रू. 136.60 लाख की स्वीकृति प्राप्त हुई थी जिसके तहत ट्रीटमेन्ट प्लान्ट निर्माण का कार्य प्रगति पर है जो दिसम्बर 2009 तक पूरा किया जाना प्रस्तावित है। संशोधित योजना के अनुमानित लागत रू. 285.18 लाख की संशोधित प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति हेतु भिजवाई गई है। बांसवाड़ा सीवरेज योजना के अन्तर्गत बिछाई गई 13795 मीटर सीवर लाईन नगर पालिका बांसवाड़ा को हस्तान्तरित की गई है।

ग्रामीण क्षैत्र

बांसवाड़ा जिले के कुल 1495 ग्राम है जिनमें से 24 ग्राम गैर आबाद है तथा 1471 ग्राम आबाद है। इन 1471 आबाद ग्रमों में चल रही पेयजल व्यवस्था का विवरण निम्नानुसार है।

.सं.	पंचायत का नाम	आबाद गांवों की संख्या	पेयजल योजनाओं से लाभान्वित गांवों की संख्या						पंचायत समिति में स्थापित हैण्ड पम्प
			पाइप्ड जल योजना	क्षैत्रीय जल योजना	पम्प एवं टेंक योजना		टी. एस. एस.	हैण्ड पम्प योजना	
					विभाग द्वारा संधारित	पंचायत द्वारा संधारित			
1	घाटोल	233	4	1 (3ग्राम)	0	6	1	219	3265
2	बांसवाड़ा / तलवाडा	241	1	0	0	6	9	225	2489
3	छोटी सरवन	99	2	0	0	0	0	97	1249
4	गढ़ी / परतापुर	192	6	7 (21ग्राम)	0	3	16	146	3237
5	बागीदौरा	172	6	1 (2ग्राम)	0	7	2	155	2492
6	आनन्दपुरी	136	1	0	0	5	0	130	1957
7	कुशलगढ़	213	0	0	0	1	4	208	1547
8	सज्जनगढ /छोटा डूगरा	185	0	2 (6ग्राम)	0	1	0	178	2043
	योग	**1471**	**20**	**11 (32ग्राम)**	**0**	**29**	**32**	**1358**	**18279**

Source :- PHED Office (2008-09)

जिले में प्रतिवर्ष सामान्यतयाः पेयजल से समस्याग्रस्त लगभग 5 से 10 ग्रामों में ग्रीष्म ऋतु में टैंकरों के माध्यम से पेयजल उपलब्ध कराया जाता है। वर्ष 08–09 में वर्षा कम होने की वजह से कुल 38 ग्रामों में पेयजल हेतु टैंकरों की व्यवस्था की गई।

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान सन् 2001 में प्रारम्भ किया गया था । इसका मुख्य उदेश्य स्वच्छता के सम्बन्ध में लोगों को जानकारी देना तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छता का विस्तार करना था। कार्यक्रम के रूप में सम्पूर्ण स्वच्छता को अभियान के रूप में लिया गया है तथा इसकी प्रेरणा साक्षरता एवं पल्स पोलियों जैसे राष्ट्रीय अभियानों से ली गई है ।

जिले में स्वच्छता कार्यक्रम को निम्न घटकों के निर्माण कराकर चलाया जा रहा है ।

01. ए.पी.एल. एवं बी.पी.एल. परिवारों के लिए पारिवारिक शौचालयों का निर्माण ।
02. विद्यालय शौचालय का निर्माण कार्य ।
03. आगनवाड़ी शौचालयों का निर्माण कार्य
04. स्वच्छता परिसर का निर्माण कार्य।

पारिवारिक शौचालय निर्माण

जिले में ए.पी.एल. एवं बी.पी.एल. परिवारेां के लिए शौचालय निर्माण का कार्य वर्ष 2006–07 में प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व वर्ष 2004–05 से लगाकर 2005–06 तक प्रारम्भिक गतिविधियाँ यथा प्रचार प्रसार कारीगर प्रशिक्षण आदि पर ही व्यय किया गया। पारिवारिक शौचालय निर्माण का ब्यौरा निम्न तालिका में दिया जा रहा है ।

कार्य विवरण	ए.पी.एल. परिवारिक शौचालय	बी.पी.एल. पारिवारिक शौचालय	कुल
कुल परिवारों की संख्या	90321	168499	258820
शौचालय वाले परिवारों की संख्या (सम्पूर्ण स्वच्छता प्रारमभ होने से पूर्व)	10892	0	10892
सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत लक्ष्य	79429	168499	247928
निर्मित शौचालय की संख्या वर्ष 2006–07 वर्ष 2007–08 वर्ष 2008–09	 25 25 19430	 17 842 10038	 42 867 29468
कुल निर्मित शौचालयों की संख्या	19480	10917	30097

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पारिवारिक शौचालय निर्माण में वर्ष 2008–09 में ही संतोषजनक प्रगति हुई है ।

विद्यालय शौचालय निर्माण कार्य

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत मार्च 2009 तक 2277 विद्यालयों में शौचालय निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। पंचायत समितिवार विद्यालयों में शौचालयों की निर्माण स्थिति निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	पंचायत समिति	मार्च 2009 तक प्राप्ति
1	घाटोल	436
2	छोटी सरवन	347
3	गढ़ी / परतापुर	379
4	तलवाड़ा / बांसवाडा	273
5	आनन्दपुरी	184
6	बागीदौरा	315
7	सज्जनगढ / छोटा डूंगरा	173
8	कुशलगढ	170
	योग	2277

आंगनवाडी केन्द्र पर शौचालय सुविधा

जिले में कुल 1183 आंगनवाडी केन्द्रों में शौचालय निर्माण कराया जाना लक्षित था। मार्च 2009 तक 888 आंगनवाडी केन्द्रों में शौचालय निर्माण का कार्य पूर्ण कर लिया गया है ।

क्र.सं.	पंचायत समिति	अनुमोदित	वर्ष 2007–08 तक पूर्ण	वर्ष 2008–09 मार्च तक प्राप्ति
1	आनन्दपुरी	111	35	40
2	छोटी सरवन	157	56	96
3	सज्जनगढ / छोटा डूंगरा	131	131	131
4	कुशलगढ	121	64	85
5	तलवाड़ा / बांसवाडा	114	46	62
6	गढ़ी / परतापुर	237	235	235
7	बागीदौरा	180	72	135
8	घाटोल	132	57	104
	कुल	**1183**	**696**	**888**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ब्लॉक सज्जनगढ़ में कार्य पूर्ण किया जा चूका है वहीं गढी में कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। **ब्लॉक घाटोल, बागीदौरा व कुशलगढ में कार्य संतोषजनक है किन्तु ब्लॉक तलवाड़ा व छोटी सरवन का कार्य संतोषजनक नहीं है वहीं ब्लॉक आनन्दपूरी सभी ब्लॉकों से पिछडा हुआ है।**

स्वच्छता परिसर

जिले में आठ पंचायत समितियों में प्रत्येक पंचायत समिति में पांच स्वच्छता परिसर के निर्माण लक्ष्य के अनुसार कुल 40 स्वच्छता परिसर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस घटक की अब तक जिले की प्रगति शून्य है।

उपरोक्त समस्त आंकडे सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान की संख्या को दर्शातें हैं लेकिन इन सभी शौचालयों के उपयोग में लिए जानें का कोई भी आंकडा उपलब्ध नहीं है। व्यावहारिक दृष्टि से बांसवाडा जिले में इन शौचालयों का उपयोग संतोषजनक प्रतीत नहीं होता है।

अध्याय – 5

आजीविका

सार संक्षेप :–

सकल जिला उत्पाद में कृषि, पशुधन एवं वानिकी का संयुक्त योगदान 40.84 प्रतिशत है। उद्योगों का योगदान 10.41 प्रतिशत है।

जिले की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2004–05 में 11825 रूपये थी जबकि राज्य की प्रति व्यक्ति आय 16800/– है।

जिले की कुल भोगोलिक क्षेत्रफल 506279 हैक्टर में 46.47 प्रतिशत खेती के अन्तर्गत है।

जिले में 1 हेक्टर से कम भूमि वाले सीमान्त कृषक सर्वाधिक है। जिले में 25000 भूमिहीन कृषक भी है जो आजीविका के लिये अन्य के खेता अथवा मजदूरी पर निर्भर है।

जिले में मक्का एवं दालें अन्य फसलों की तुलना में अधिकत्तम क्षेत्र में बाई जाती है।

माही बजाज सागर परियोजना निर्मित होने से जिले में सिंचित क्षेत्र में वृद्धि हुई है एवं वर्तमान समय में गेहूँ, चना, सोयाबीन, मक्का, कपास, धान, उडद व अरहर की उन्नत किस्म के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

जिले की औसत वाषिक वर्ष 900 मी.मी. है। जिले में कुल 107350 हेक्टर क्षेत्र में सुविधा उपलब्ध है।

उद्यानिकी फसलों में आम, अमरूद, नींबू, आंवला, पपीता आदि फसलों की उन्नत किस्मों के साथ–साथ टामाटर ,प्याज, फूल गोबी आदि सब्जियों की खेती की जाने लगी है।

वर्ष 2007–08 में कृषि उत्पादों से सकल आय 23094 लाख रूपये हुई है।

जिले में अधिकांश पशुपालकों द्वारा स्थानीय नस्ल के पशु पाले जा रहे है। गाय, भैस एवं बकरी तुलनात्मक रूप से अधिक संख्या में पाली जा रहो है। गाय का औसत दुग्ध उत्पादन 1.2 से 1.5 किलोग्राम तथा भैस का 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति पशु है। जिले में नस्ल सुधार कार्यक्रम के प्रति कृषकों की रूचि बढ़ रही है।

जिले में माही एवं कडाना (बेकवाटर) जैसे बड़े जलाशयों के अतिरिक्त लगभग 540 छोटे–बड़े तालाब है। जिनका अनुमानित जल क्षेत्र 20000 हैक्टर के लगभग है। वर्ष 1997 से आदिवासी मछुआरों की समिति के माध्यम से मत्स्य पालन एवं आखेट का कार्य जिले में हो रहा है। जिसमें राजस संघ का प्रमुख योगदान है। पंचायतों के अधीन मत्स्य गतिविधियों का संचालन जिला परिषद के माध्यम से किया जा रहा है।

बांसवाड़ा जिले में जलग्रहण विकास का कार्य जिले की आठों ही पंचायत समितियों में सम्पादित किया जा रहा है। जिले में 125 मेक्रो एवं 838 माईक्रों वाटरशेड़ में कार्य प्रगति पर है।

वर्ष 2001 में जहॉ अन्य उपयोग हेतु 8533 हेक्टर क्षेत्रफल था। वर्ष 2008–09 में यह क्षेत्र 11092 हैक्टर हो गया है। इस भूमि का आबादी, उद्योग, धन्धों तथा ढांचागत विकास तथा वाणिज्यक उपयोग हुआ है।

जिले की कुल जनसंख्या में 47.24 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील है। विगत दशक में कामगारों की संख्या में 2 प्रतिशत की वृद्धि हुइ है।

जिले के कुल 332543 परिवारों में से 121179 परिवार अर्थात 36.44 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे है। (बी.पी.एल.) कुल बी.पी.एल. परिवारों में से 70 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के है।

बांसवाडा जिले में 5.27 परिवारों के पास घर नहीं है एवं 82.31 प्रतिशत परिवार कच्चे घरों में रह रहे है।

मौसमी एवं अन्य कारणों से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग जीविकोपार्जन हेतु पडोसी जिलो तथा गुजरात एवं महाराष्ट्र शहरों में पलायन कर जाते है।

जिले में सहकारी बैंक की 7 शाखाये तथा वाणिज्यक बैंक की 92 शाखायें है।

जिले में 7 वृहत उद्योग है एवं 2618 लघु उद्योग एवं आर्टीजन ईकाईयां है।

प्रधानमंत्री रोजगार योजनान्तर्गत वर्ष 2004–05 से 2007–08 के 4 वर्षों में 1116 लोगों को स्वरोजगार हेतु ऋण एवं अनुदान उपलब्ध कराया गया।

खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा वर्ष 2004–05 से 2008–09 के 5 वर्षों के 143 व्यक्तियों को स्वरोजगार के साधन उपलब्ध कराये गये। जिले में 4412 स्वयं सहयता समूह गठित है। यह समूह आर्थिक गतिविधियां संचालित करते है जिससे सदस्य लाभान्वित होते है।

जिले में राष्ट्रीय गारण्टी रोजगार कार्यक्रम फरवरी, 2006 में प्रारम्भ हुआ जिले में 306924 जॉब कार्ड जारी किये जा चुके है। वर्ष 2005–06 में 7.89 लाख, वर्ष 216.55 लाख, वर्ष 2007–08 में 218.03 लाख एवं वर्ष 2008–09 में 246.99 लाख मानव दिवस रोजगार सृजित हुआ। इस कार्यक्रम मे रोजगान पाने के लिये महिलाओं की भागीदारी 65. 70 प्रतिशत रही है।

शहरी क्षेत्र में स्वर्ण जयन्ति शहरी रोजगार के माध्यम से बी.पी.एल. परिवारों को आर्थिक गतिविधियों हेतु ऋण एवं अनुदान की सुविधा दी जा रही है। शहरी क्षेत्र में शहरी मजदूरी रोजगार कार्यक्रम सार्वजनिक लाभ में परिसम्पत्तियों का निर्माण कर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है।

जिले में अनुसूचित जाति विकास निगम द्वारा आजीविका प्राप्ति हेतु अनुसूचित जाति, जनजाति, विकलांग, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक एवं स्वच्छकार श्रेणी के व्यक्तियों को ऋण एवं अनुदान उपलब्ध कराया जाता है।

कृषि उत्पादन के विपणन के लिये जिला स्तर पर कृषि उपज मण्डी समिति तक क्रियाशील नहीं है।

आजीविका

जिले को आर्थिक स्थिति – आजीविका (लाइवली हुड) का पैटर्न

जिले को अर्थव्यवस्था

बांसवाडा मलतः अनुसूचित जनजाति बाहल्य जिला है। जनगणना 2001 के अनुसार जिले की लगभग 72 प्रतिशत जनसख्या अनुसूचित जनजाति की है। जिले की ग्रामीण जनसंख्या का परम्परागत रूप से आजीविका का संसाधन–कृषि, वन उत्पाद, प"ाुपालन, एवं कृषि आधारित अन्य गतिविधियां है।

बासवाडा जिला पहाडी क्षैत्र इलाका है तथा गहरी भूमि तथा पहाडियां नमी की कमो मे पाई जाने वाली विभीन्न प्रकार की झाडिया से घिरा हुआ है। जिले का अधिकाश भू भाग पहाडी एव पथरीली सतह वाली घाटिया से भरा होने से काफी क्षेत्र कृषि के लिये उपयुक्त नही है। जहां कुछ भूमि कृषि के लिए उपलब्ध है वहा अधिकाश भागा म सामान्य कृषि की जाती है तथा कुशलगढ, पीपलखूंट, सज्जनगढ आदि पंचायत समितियों में पहाडी क्षेत्र में लहरदार ढालो म फसलो की बुवाई की जाती हैं। एसे क्षेत्रो में तुलनात्मक कम उत्पादन होता है।

जिले का आर्थिक भूगोल एव आर्थिक इतिहास

2001 की जनगणनानुसार जिले की कुल जनसंख्या 1420601 है जिसमें 719581 पुरूष एवं 701020 स्त्रियां है। जिला जनजाति बाहुल्य है जिसमें मुख्यतः भील, डामोर, मीणा, गरासिया जनजाति के लोग निवास करते है। कुल जनसंख्या में 1013959 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति एवं 61733 व्यक्ति अनुसूचित जाति के है जो कि कुल जनसंख्या का क्रमशः 71.37 प्रतिशत् एवं 4.34 प्रतिशत् है। जनगणनानुसार जनसंख्या का घनत्व प्रतिवर्ग किमी 298 व्यक्ति है यद्यपि जिले की जनसंख्या पिछले दशको में तीव्र गति से बढ़ी है जिले की जनसंख्या वृद्धि दर 1991–2001 में 29.94 प्रतिशत् रही है।

बासवाडा जिले की अधिकाश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र मे निवास करती है। तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग से है इस लिये अधिकांश क्षेत्र मे आय का प्रमुख स्त्रोत कृषि एवं संलग्न गतिविधियों से है। नब्बे के दशक में जिले की आय मे कृषि क्षेत्र के योगदान में कमी देखी गई है। 1999–2000 की अवधि मे जिल की आय मे कृषि का योगदान 19.18

प्रतिशत था, जा वर्ष 2004–05 मे घटकर 14.04 प्रति"ात रह गया है जबकि इस अवधि के दौरान पशु पालन, वानिकी, निर्माण एवं परिवहन तथा श्रमिक क्षेत्रों का योगदान बढ़ा है।

सकल जिला उत्पाद का विवरण ,बासवाडा 1999–2005 (क्षेत्रवार आय प्रतिशत)

क्षैत्र	1999–2000	2000–01	2001–02	2002–03	2003–04	2004–05
कृषि	19.18	11.25	13.68	10.82	18.32	14.04
प"ाुधन	10.48	11.48	12.59	15.23	12.59	13.4
वानीकिय	3.56	4.26	4.08	4.53	4.02	13.4
मतस्य	0.3	0.31	0.33	0.26	0.24	0.24
खनिज	1.55	1.93	1.57	1.32	1.64	1.27
पंजीकृत एव अपंजीकृत विनिमार्ण	10.53	10.74	10.28	9.95	8.73	10.41
निमार्ण	6.1	6.78	6.31	6.75	6.85	7.49
बिजली ,गैस,एवं जल आपुर्ती	1.57	1.53	1.37	1.08	1.27	1.06
रेलवे	0.37	0.43	0.47	0.52	0.45	0.47
अन्य परिवहन	2.37	2.67	2.52	2.64	3.68	4.09
भंडारण	0.02	0.02	0.01	0.01	0.01	0.01
दुरसंचार	0.65	0.82	0.92	0.91	0.91	1
होटल एवं रेस्त्रा	15.94	15.96	16.15	16.06	15.35	15.87
बैंकिग एवं बीमा	2	2.33	2.42	2.84	2.53	2.49
आवास का स्वामित्व	8.09	9.51	9.16	9.45	8.04	7.95
लोक प्र"ाासन	5.92	6.72	6.11	5.99	5.12	5.24
अन्य	11.39	12.93	12.04	11.64	10.25	10.79
योग	100	100	100	100	100	100

स्त्रोत :– निदेशक, निदेशालय आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर (राज.)

जिला प्रति व्यक्ति आय (वर्तमान आय), 1999–2005

जिला	1999–2000	2000–01	2001–02	2002–03	2003–04	2004–05
बासवाडा	9495	8654	9681	9826	11801	11825
चित्तोडगढ	13866	11515	13911	13042	15852	16861
डुंगरपुर	9989	9551	10143	9975	12139	12474
डदयपुर	13809	14043	15336	14592	16892	17925
राजस्थान	13477	12897	13126	13126	16704	16800

स्त्रोत :– निदेशक, निदेशालय आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपर (राज.)

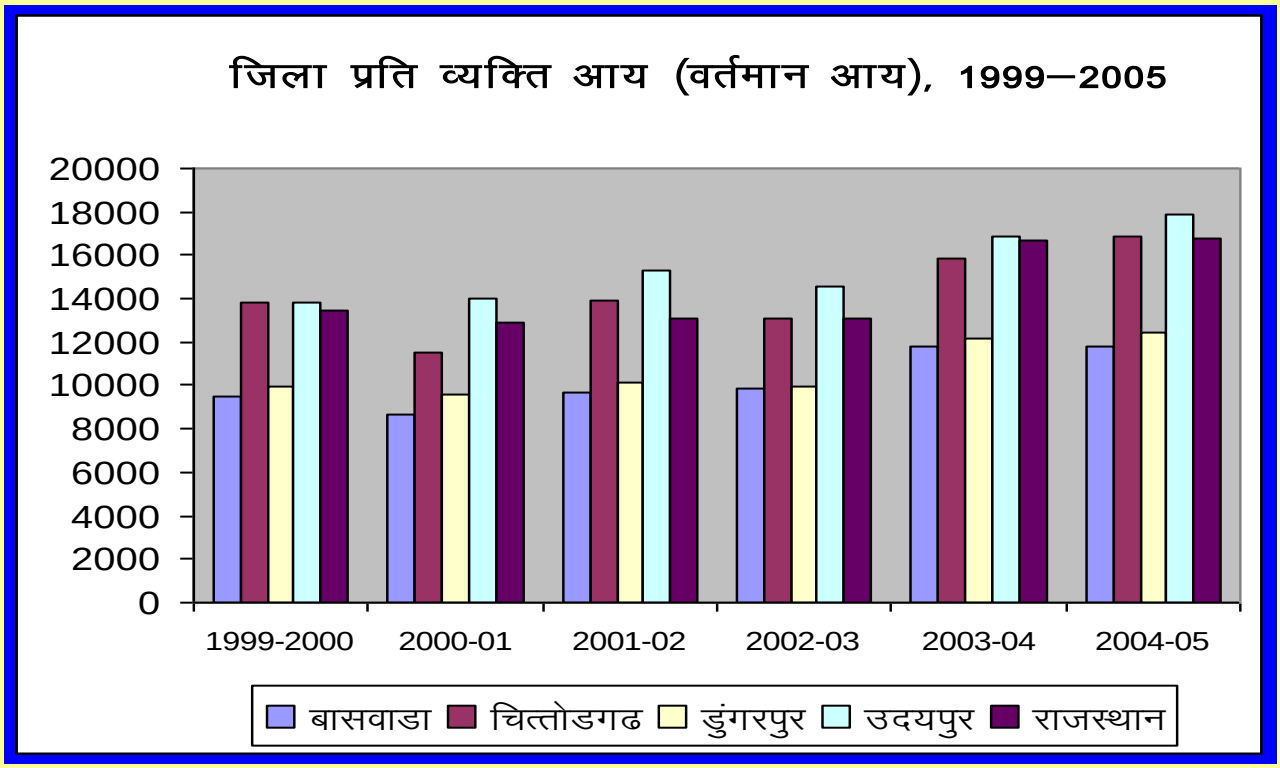

बांसवाड़ा जिले की प्रतिव्यक्ति आय 11825 रूपयें है जबकि राज्य की प्रतिव्यक्ति आय 16800 रूपयें है जो कि राज्य की तुलाना में लगभग 30 प्रतिशत कम है। हालाकि 1999–2000 में प्रतिव्यक्ति आय अनुमानित 9495 रूपयें थी, जिसमें 99 से 2005 तक लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित रोजगारोन्मुखी परियोजनाओं के संचालन से हुई है।

जिले मे भूमि उपयोग एवं कृषि की स्थिति

जिले की 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, जिनका प्राथमिक व्यवसाय कृषि है। जिल की कृषि परिस्थितियाँ जिले के विभिन्न भागो में पृथक–पृथक है। जिले की विभिन्न पंचायत समितियों में भू–उपयोग का तरीका पृथक–पृथक है।

जिले के कूल भोगोलिक क्षेत्रफल 506279 हक्टेयर मे से लगभग 46.47% खेती के अन्तगत, 22.31% वन, 15.06% कृषि अयोग्य, 16.16% खेती योग्य अनउपजाऊ भूमि हे।

जिले में भूमि उपयोग का पैटन

तहसील	भोगोलिक क्षेत्रफल	वन श्रेत्र	अकृषि भूमि	खेती योग्य	चारागाह	अन्य पेड व फसले	चालू पडत	अन्य पडत	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	सकल फसली श्रेत्र
बासवाडा	114908	2960	2497	2977	646	27	1325	22970	48399	51356
गढी	76642	1547	1773	10286	511	30	1134	11413	32274	43694
घाटोल	**130233**	**4457**	**3809**	**14384**	**1241**	**44**	**2165**	**9164**	**48910**	**65449**
बागीदौरा	85843	881	1248	5889	3083	47	981	8302	50344	57214
कूशलगढ	**104623**	**2567**	**1765**	**8706**	**7328**	**19**	**1776**	**8802**	**50798**	**61280**
योग	**506279**	**12414**	**11092**	**42242**	**12809**	**167**	**7381**	**61281**	**230725**	**279023**

स्त्रोत :– कलक्टर, भू–अभिलेख, बांसवाड़ा।

जिले का भूमि उपयोग पटर्न का विश्लेशण करने पर पाया गया है कि बांसवाड़ा तहसील क्षेत्र सर्वाधिक भौगालिक क्षेत्रफल वाला क्षेत्र है जबकि घाटोल तहसील सर्वाधिक फसली क्षेत्र वाला क्षेत्र है। गढ़ी तहसील क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले की सबसे छोटी तहसील है परन्तु सिंचित क्षेत्रफल मे गढ़ी घाटोल के बाद दूसरे नम्बर पर हैं। सिंचित क्षेत्रफल मे घाटोल 26673 है0 क्षेत्र के साथ प्रथम स्थान पर है। माही परियोजना द्वारा लगभग 65000 है0 क्षेत्र मे सिंचिई सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।

बांसवाड़ा जिले मे अधिकांश भूमि मध्यम जोत के कृषका की है। भू–अभिलेख से प्राप्त आंकडों के अनुसार 56531 हेक्टेयर भूमि में से सीमान्त कृषक, 36705 हेक्टेयर भूमि लघू कृषक, 51375 हैक्टेयर मध्यम कृषको के पास तथा 5098 हैक्टेयर भूमि बडे कृषको के सामित्व में है। तहसीलवार विवरण निम्नानुसार है :–

तहसील	सीमान्त स.	कृषक क्षेत्र	लघू स.	कृषक क्षेत्र	मध्यम. सं.	कृषक क्षेत्र	वृहत्त स.	कृषक क्षेत्र	भूमीहीन कृषक
बासवाडा	18860	10600	7461	12450	12305	14500	242	825	5575
गढी	7772	5032	8956	12540	10508	16500	565	3065	3845
घाटोल	10261	7500	6580	9870	9160	9750	55	470	320
बागीदौरा	23355	7550	2789	5350	4350	8900	42	342	6170
कुशलगढ	18209	6023	7235	11165	3097	7331	96	396	6210
योग	78457	36705	33021	51375	39420	56531	1089	5098	25000

स्त्रोत :– सीडेप बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

तहसीलवार कृषक श्रेणी की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक सिमान्त कृषक बागीदौरा तहसील क्षेत्र में है जबकि सबसे कम सिमान्त कृषक गढ़ी तहसील मे है। मध्यम श्रेणी के कृषक जिनके पास 1 है0 से 3 है0 तक भूमि है उनकी संख्या बांसवाड़ा तहसील क्षेत्र में सर्वाधिक है जबकि 3 है0 से अधिक भूमि के स्वामी कृषक गढ़ी तहसील क्षेत्र में है। जिले में लगभग 25 हजार भूमिहीन व्यक्ति है जिनके पास कोई कृषि भूमि नही है तथा व अपनी आजीविका के लिये अन्य के खेतो पर तथा श्रमिक रोजगार पर निर्भर है। जिले में वर्तमान मे विभिन्न फसलो की उन्नत किस्मों को उगाया जा रहा है खरीफ में सर्वाधिक क्षेत्रफल मक्का के अन्तर्गत है जिसमें जी–2, माही धवल, माही कन्चन, जी–11, डी–103, पीईएचएम–1एण्ड2 के अलावा विभिन्न कम्पनियों की अनगितन उन्नत किस्मों का उत्पादन लगभग 134000 हे0 क्षेत्रफल में किया जाता है। सोयाबिन इस क्षेत्र मे विगत कुछ ही वर्षो से उगाई जाने लगी है लेकिन इससे प्राप्त होने वाली आय के कारण किसानो का इसके प्रति रूझान बढ़ा है एवं कुछ ही वर्षो में लगभग 14 हजार है0 क्षेत्र मे इसकी जेएस–335, एनआरसी–7 जैसी उन्नत किस्मो को उगाया जाने लगाया है। जिले में कपास एवं अरहर की उन्नत किस्मों को भी उगाया जाने लगा है। बांसवाड़ा जिला राजस्थान का वह जिला है जिसके अन्तर्गत रबी में भी मक्का का उत्पादन किया जाता है क्योंकि यहां

पर कम सर्दी एवं पाला रहीत वातावरण है। जिले म सिंचाई सुविधाओं के निरन्तर बढने से रबी में गेंहु तथा चने का उत्पादन वृहद स्तर पर होने लगा है। गेंहु के उन्नत किस्मों मे लोक 1, राज 3077, राज 3765, जी. डब्लयू 173, डब्लयू एच 147 तथा चने में दाहोद यलो, आई.सी.सी.वी. 10 तथा राज 44 किस्मों का प्रचलन है। सिंचाई की पर्याप्त सूविधा वाले क्षेत्र में जायद में मूंग की खेती भी होने लगी है। जिले मे लगभग 12 हजार हे0 क्षेत्रफल में मूंग की खेती की जाने लगी है। जिले मे विभिन्न फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल एवं उत्पादकता का विवरण निम्नानुसार है :–

मूख्य फसलो का क्षेत्रफल उत्पादकता एवं बीज प्रति स्थापन दर 08–09

क.सं.	फसल	क्षेत्र हेक्टयर	उत्पादकता किग्रा प्रति हे.	बीज प्रतिस्थापन दर प्रति"ात
01	मक्का	134500	1821	33.50
02	गेहू	71500	2007	15.00
03	सोयाबीन	25500	1071	30.00
04	धान	30000	1091	2.02
05	चना	16500	1090	5.00
06	खरीफ दालो	141500	551	3.00
07	कपास	11250	416	70.00
08	अरहर	8000	804	9.86
09	जयद मूग	13000	462	35.00

कृषि का वर्तमान स्वरूप एवं हाल मे हूए फसल बदलाव की स्थिति

जिले मे वर्ष 1986 से पूर्व कृषि पूर्ण रूप से वर्षा पर निर्भर थी। माही बजाज सागर सिंचाई परियोजना के निर्मित होने से 1986 के बाद में सिंचित क्षेत्र में वृद्धि, कृषि विस्तार सेवाओं, विशविद्यालय के अनुसंधानों तथा राज्य एवं केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत निर्मित सिंचाई तालाब, ऐनीकट, चैकडेम, सिंचाई कुंए तथा शिक्षा के विकास के फल स्वरूप जिले की कृषि परिस्थितियों में आमुलचूक परिवर्तन हुआ है। 1986 से पूर्व जहां सिर्फ गेंहु, मक्का, कांगणी, कुरी, अरहर, कपास धान आदि फसलो की देशी किस्म का उत्पादन बहुत कम क्षेत्रफल मे होता था, वहा वर्तमान समय मे गेंहु, चना, सायाबिन, मक्का, कपास, धान, उड़द, मूंग व अरहर की उन्नत किस्मों के उपयोग से उत्पादकता में वृद्धि होकर वृहद स्तर पर उत्पादन होने लगा है।

सिचाई एवं सतही जल उपलब्धता

वर्षा की स्थिति

राजस्थान की दक्षिणी सीमा पर स्थित इस जिले की जलवायु उत्तर व पश्चिम के रेगिस्तानी प्रदेशो की जलवायु की अपेक्षा बहुत कुछ नरम है। जिले में औसत अधिकतम् तापमान 45.00 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम् 10.0 डिग्री सेल्सियस और औसत तापमान 26.00 डिग्री सेल्सियस रहता है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 930 मिलीमीटर है। वर्ष 2008 में वास्तविक वर्षा 561.85 मिलीमीटर हुई है। जिला राज्य के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रो में होने के कारण इसे राजस्थान का चैरापुंजी कहा जाता है विगत वर्षो की वास्तविक वर्षा का विवरण निम्नानुसार है :

क्र.स.	वर्ष	वर्षा मी.मी.
1	1990	1181
2	1991	818
3	1992	706
4	1993	836
5	1994	1477
6	1995	738
7	1996	1174
8	1997	968
9	1998	549
10	1999	661
11	2000	649
12	2001	491
13	2002	644
14	2003	857
15	2004	802
16	2005	807.10
17	2006	1805.00
18	2007	1278.00

19	2008	561.85

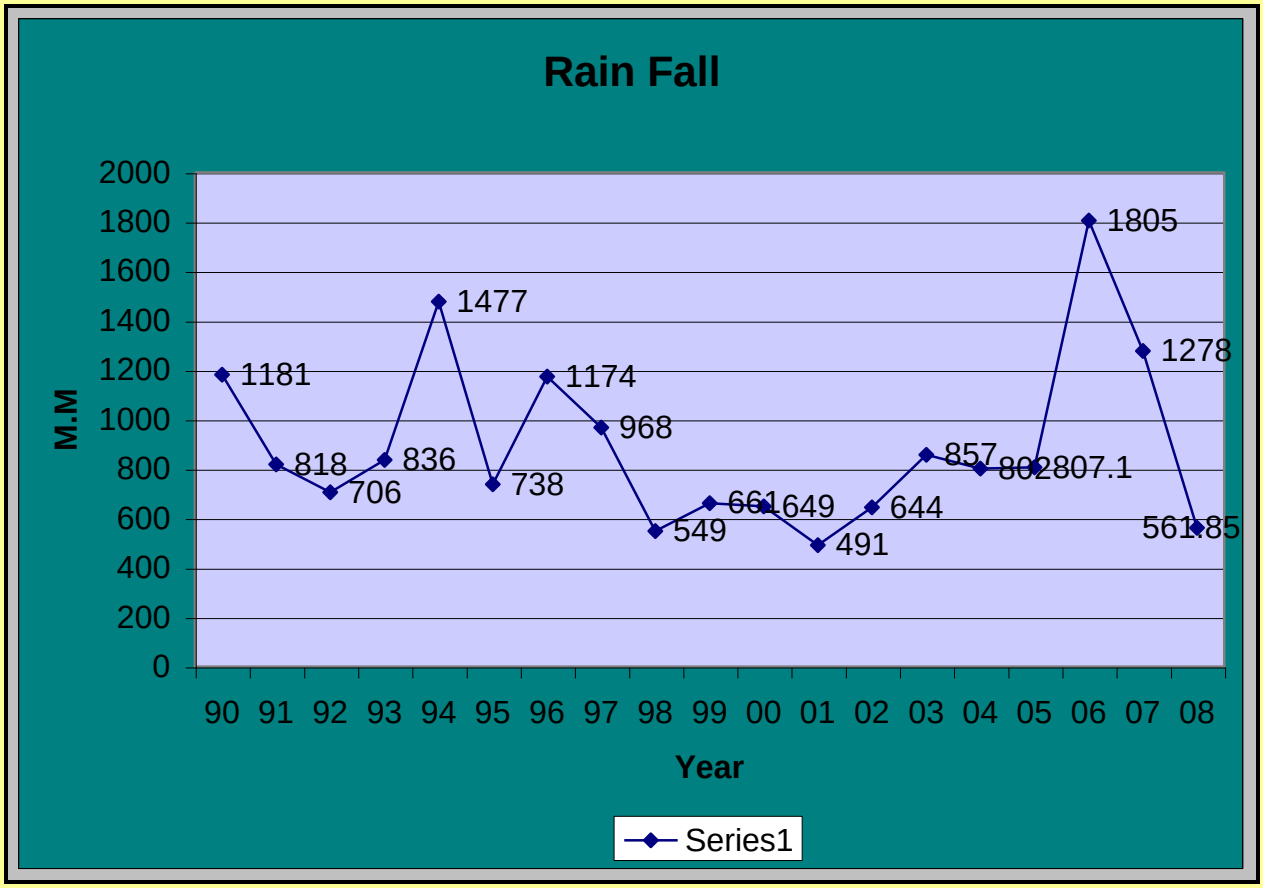

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिले में औसत वार्षिक वर्षा 900 मि.मि. है लेकिन वर्ष 1990, 1994, 1996, 1997, 2006 एवं 2007 को छोड़कर शेष वर्षों में औसत वर्षा काफी कम रही है।

बांसवाड़ा जिला सिचाई की दृष्टी कोण से पूरे राज्य मे अच्छा ही माना जाता है माही नदी यहा की मूख्य नदी है अन्य छोटी नदीयो मे अनास कागदी चाप है जिले का क्षेत्र नदीयो, नालो , झरनो, आदि के बहाव से विभाजित होता है जिनका बहाव सतही जल को बनाये रखने मे सहयोग करती ह जिले मे कूल 107350 हेक्टेयर क्षेत्र मे सिचाई सुविघा उपलब्ध है।

स्त्रोत वार सिंचित क्षैत्रफल

(क्षेत्रफल हैक्टेयर में)

तहसील	नहर	तलाब	खूले कुंए	ट्यूब वेल	अन्य	योग
बासवाडा	14380	1136	3876	16066	2232	23290
गढी	12866	947	5021	254	6396	25684
घाटोल	17155	1133	3985	366	4034	26673
बागीदौरा	15272	364	3868	25	1954	21483
कुशलगढ		3166	2427	79	4548	10220
योग	69673	6746	19177	2390	19364	107350

स्त्रोः– सीडेप बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

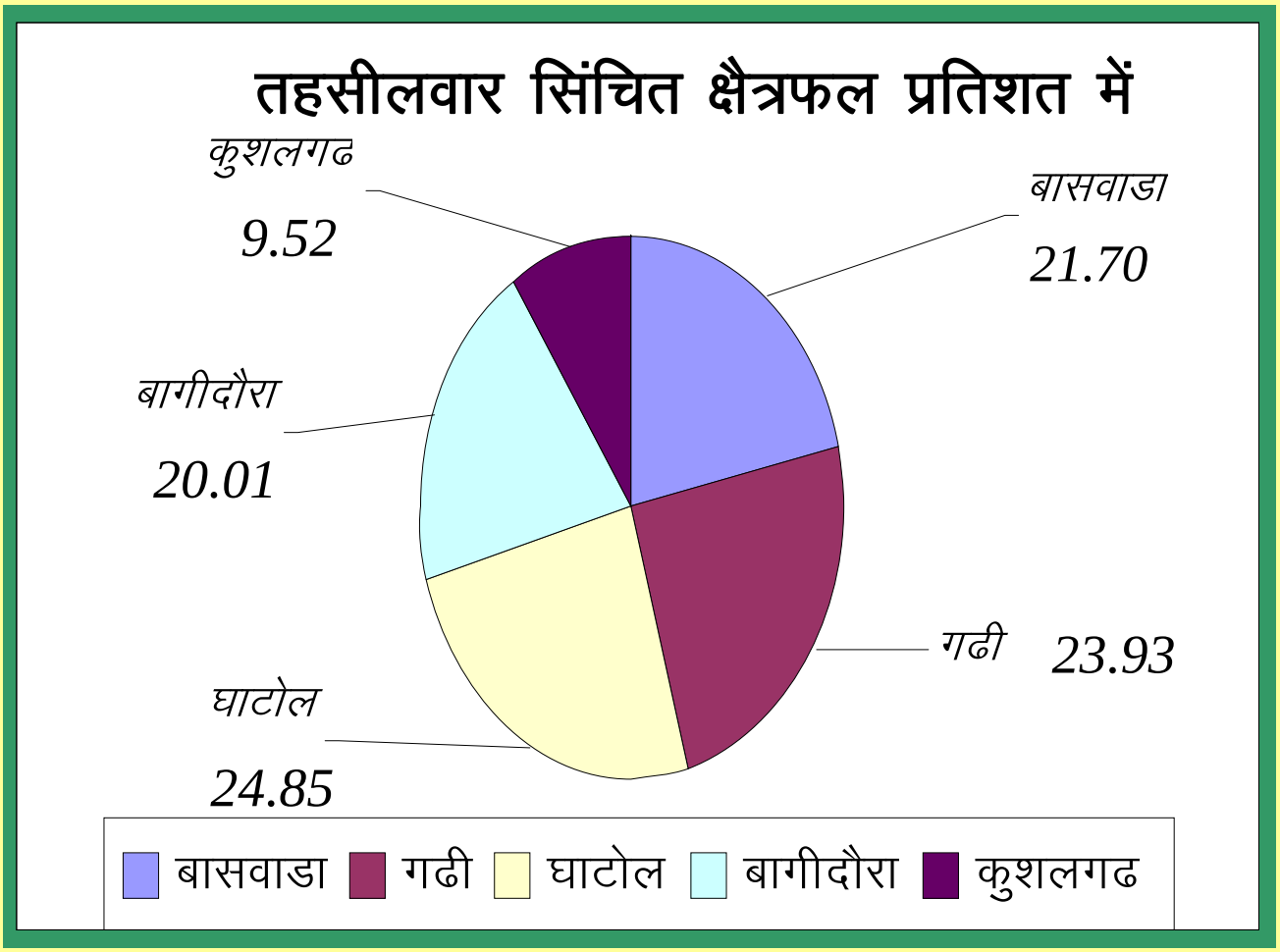

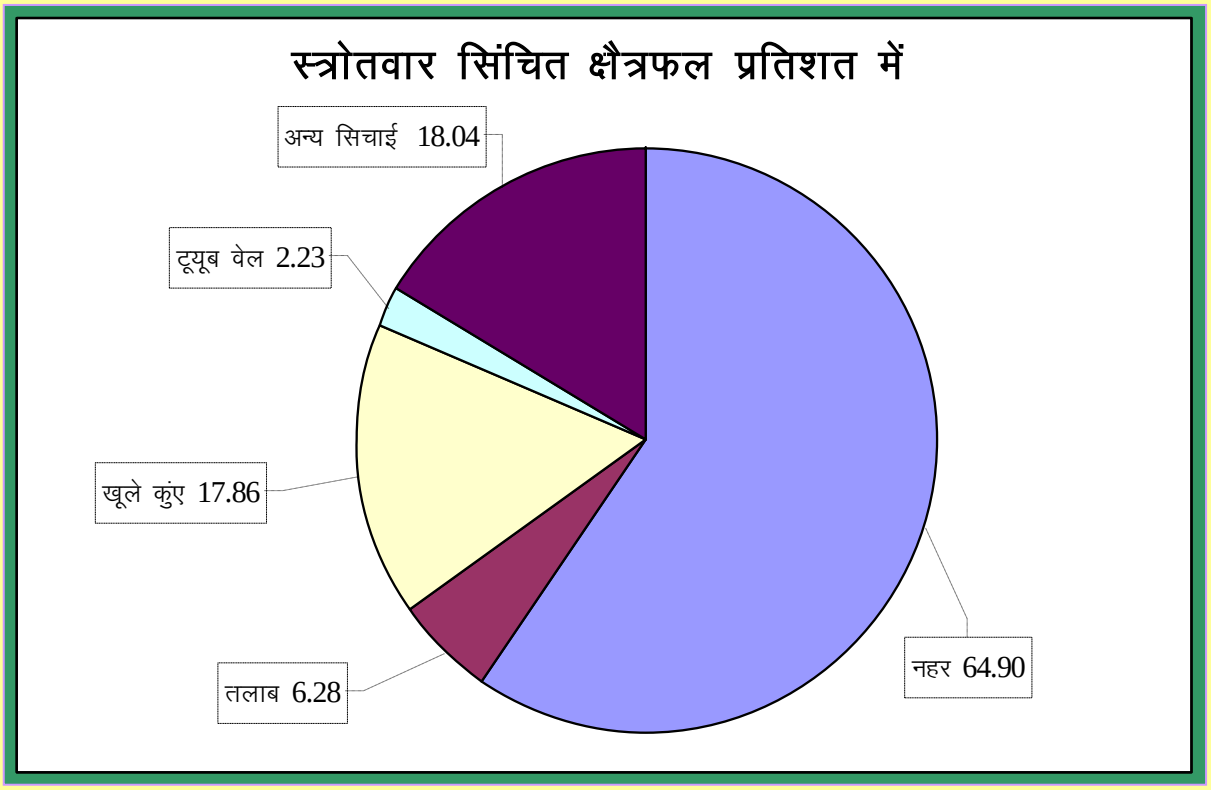

जिले में उद्यानिकी फसलों का उत्पादन

जिले मे अच्छी मिट्टो, पानी एवं जलवायु को वजह से उद्यानिको फसलो की प्रबल संभावनाए है। सपूण जिले मे आम की फसल बहुत अच्छी होती हे जिसके लिये जिले मे सरकारी एवं निजी क्षेत्र मे कई नर्सरीया स्थापित है, जिससे किसानो को उन्नत किस्म के अच्छे पोधे प्राप्त होते है। कृषि अनुसंधान केन्द्र व कषि विज्ञान केन्द्र के फार्म तथा उद्यान विभाग द्वारा गढ़ी में स्थापित राजकीय नर्सरिया है, जिससे लाखो पोधे प्राप्त होते हे जिले मे जब से उद्यान विभाग की अलग से स्थापना हुयी इसके बाद से उघानिकी फसलो का विस्तार हुआ है तथा जिले मे विगत वर्षो से संचालित राष्ट्रीय बागवानी मिशन द्वारा अनुदान का लाभ उठाकर नवीन बगीचों की स्थापना हुई है। लगभग 10 वर्षो पूर्व उद्यानिकी फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल बहुत कम था, देशी आम, आवला आदि फलों का उत्पादन वन क्षेत्रफलों से होता था परन्तु विगत वर्षो में कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा सुक्ष्म सिंचाई पद्धतियों पर देय अनुदान का लाभ उठाकर काफी संख्या में कृषको ने उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में रूची ली है। जिले में आम, अमरूद, नीबूं, आवला, पपीता आदि फलों के उन्नत किस्मों के साथ साथ टमाटर,प्याज, फुलगोबी, आदि सब्जियों की खेती भी की जाने लगी है। फल एवं सब्जि उत्पादन के साथ साथ मसाला उत्पादन में भी प्रगति हुई है। जिले कि उद्यानिकी फसलों का क्षेत्र एवं उत्पादन निम्नानुसार है :–

उघानिकी की मुख्य फसलों का क्षेत्र एवं उत्पादन

क्र. स.	फल / सब्जी / मसाला	क्षेत्रफल हे.	उत्पादन क्वि.	उत्पादन क्वि. प्रति. हे.
01	आम	676	4187	6.25
02	अमरूद	18	126	7.00
03	नीबु	24	156	6.50
04	आवला	53	3.93	7.50
05	पपीता	8	2.0	25.00
06	टमाटर	120	18000	150
07	प्याज	230	23000	100
08	फुलगोभी	80	12800	160
09	मटर	30	390	130
10	धनिया	115	920	8
11	सौफ	30	225	7.5
12	लहसुन	110	3300	30
13	मिर्च	400	6600	16.5

स्त्रोत :– सीडेप बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

जिले में कृषि एवं उद्यानिकी फसलों की उत्पादकता का तुलनात्मक विवरण निम्नानुसार है

फसलो के नाम	औसत उत्पादकता			उत्पादकता अन्तर प्रतिशत में
	जिला	राज्य	प्रदर्शन	
मक्का	18.28	12.54	30	39
सोयाबीन	10.70	11.58	15	29
धान	6.56	14.10	20	67
कपास	245	286	400	39
गेहूं	26	28.36	10	35
चना	10	7.76	15	33
रबी मक्का	30	30	40	25
आम	1.25	6.00	10	37
आंवला	7.5	6.5	140	25
टमाटर	150	135	200	25
प्याज	100	90	150	35
धनिया	8	6.5	10	20
मिर्च	16.5	15	20	18

जिले की कुल कृषि आय 07–08

क. स.	आय का स्त्रोत	उत्पादन टनो मे	विकय रू. प्रति क्वि./प्रति नंग	सकल आय लाख रू.मे
01	मक्का	244952	6000	14697
02	धान	6464	10000	646
03	उडद	5600	25000	4100
04	सोयाबीन	38920	12000	4670
05	अरहर	6860	25000	1715
06	गेह	119000	7000	13650
07	चना	15000	2500	3750
08	रबी मक्का	15000	6000	900
09	जौ	2000	7000	140
10	फल आम आवला नीबू पपीता	1200	2000	24
11	सब्जीया	1000	1000	10
12	फसाले	6000	50.000	30
			अन्य एलाइड क्षेंत्र	
01	मछली	1180	40000	472
02	अण्डे	311 लाख	2	622
03	दूग्ध	146000	15000	21900
04	मांस	200	100000	200
योग				23094

(C. DAP BANSWARA-2009)

विस्तार सेवाएं

बांसवाड़ा जिले में नवीनतम कृषि तकनिकी के प्रचार–प्रसार एवं विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु विस्तार सेवाएं कृषि विभाग राजस्थान द्वारा संचालित की जा रही है। इसके अन्तर्गत जिला स्तर पर उपनिदेशक कार्यालय, दो सहायक निदेशक सहायक कार्यालय, एक मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला राजस्थान राज्य बीज निगम तथा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि उद्यान केंन्द्र एवं कृषि विज्ञान केंन्द्र उपलब्ध है। इस संस्थानों द्वारा नवीनतम कृषि तकनीकि की शौध, परीक्षण, प्रचार–प्रसार एवं विभागीय योजनाओं का क्रियान्वयन समपन्न किया जाता है। पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत क्षेत्रो

में प्रसार–प्रसार एवं योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु सहायक कृषि अधिकारी एवं किसान सेवा केन्द (कृषि पर्यवेक्षक) स्थापित है। जिनकी स्टॉफ पोजीशन निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	पद नाम	रिक्त पद	पंचायत समिति							
			बांसवाड़ा	गढ़ी	घाटोल	पीपलखूंट	बागीदौरा	सज्जनगढ़	कुशलगढ़	आनन्दपुरी
1	उपनिदेशक	0	2	0	0	0	0	0	0	0
2	सहायक निदेशक	2	2	0	0	0	0	0	0	0
3	कृषि अधिकारी	5	2	0	0	0	2	0	0	0
4	कृषि अनुसंधान अधिकारी	2	0	0	0	0	0	0	0	0
5	सहायक कृषि अधिकारी	7	5	4	4	1	1	0	1	1
6	कृषि पर्यवेक्षक	19	26	28	25	8	21	12	12	9

जिले में उपलब्ध कृषि विस्तार/तकनीकि अधिकारियों की उपलब्धता का विश्लेषण करने पर पता चलता है, कि जिले में कृषि अधिकारियों एवं सहायक कृषि अधिकारियों के 12 पद रिक्त है, तथा कृषि पर्यवेक्षकों के 19 पद रिक्त है साथ ही सज्जनगढ़ पंचायत समिति में कृषि विभाग का एक भी तकनीकि अधिकारी उपलब्ध नही है।

स्वोट एनालिसिस

मजबुती

1. क्षेत्र में पर्याप्त वर्षा।
2. हल्की सर्दी व पाला रहित मौसम।
3. भूमि का कृषि एवं बागवानी के लिये उपयुक्त होना।
4. जैविक उत्पादन की प्रबल संभावनाऐं।
5. कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा अनुसंधान एवं तकनीकि सहयोग।
6. सिंचाई सुविधायें।
7. नर्सरियों की उपलब्धता।
8. मानव श्रम की उपलब्धता तथा कृषि भूमि में कृषि कार्य के अन्तर्गत महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी।

9. ऋण सुविधाओं की उपलब्धता।

10. कृषि कार्य हेतु पर्याप्त पशुधन।

11. विस्तार सेवाएं।

कमजोरी

1. असमान एवं असामान्य वर्षा होना।

2. अधिक वर्षा एवं भूमि उंची नीची होने से ऊपजाउ मिट्टी का बहाव।

3. कम पढे लिखे होने के कारण अनुसरण की कमी।

4. कृषि उत्पाद की प्रसंस्करण इकाईयों का न होना।

5. कृषि जोत के आकार का छोटा एवं बिखरा (अनाथिक जोत) हुआ होना।

6. अशिक्षा, गरीबी तथा शारीरिक रूप से कमजोरी।

7. मौसमी पलायन।

8. कृषि उत्पाद के विपणन के लिये समुचित सुविधा का न होना।

9. पशुओं के गोबर को जलाकर उर्जा प्राप्त करना।

10. प्रत्येक ग्राम पंचायत पर कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के पद की अनुपलब्धता।

अवसर

1. फल, सब्जी और मसाले की खेती की प्रबल सम्भावना।

2. उद्यानिकी फसलों के उत्पाद के निर्यात के अवसर।

3. सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने से फसल परिर्वतन एवं फसल सघनता के अवसर।

4. सामुहिक एवं सहकारी खेती की संभावना।

5. छोटे स्तर पर वर्षा जल के संग्रहण की संभावनाऐं।

6. सिंचाई के अन्तर्गत अधिक क्षेत्र लाने की संभावनाऐं।

7. जिले में जैविक खेती की संभावनाऐं।

भय

1. भूमि के जल स्तर का गिरना।

2. वन एवं खेती योग्य भूमि का लगातार कम होना।

3. समुचित सिंचाई प्रबन्धन के अभाव में भूमि के अकृषि योग्य होने की सम्भावना।

4. भूमि कटाव के कारण पोषक तत्वों का हास होना।

5. असामान्य वर्षा के कारण सुखा पड़ना।

भावी रणनीति

कृषि उद्यानिकी एवं संलग्न क्षेत्र

1. कृषि व उद्यानिकी फसलों के कम उत्पादकता को मध्यनजर रखते हुए उत्पादन बढाने हेतु प्रभावशाली कदमों को उठाया जाना।
2. नहरों से होने वाले सीपेज के द्वारा पानी के अपव्यय एवं भूमि उवरता में होने वाली कमी को गम्भीरता से लिये जाने की आवश्यकता।
3. दूरस्थ क्षेत्रा में समयपर उन्नत बीज, उर्वरको एवं अन्य कृषि आदाना की उपलब्धता सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता।
4. बीज प्रतिस्थापन दर बढाने एवं संतुलित उर्वरको के प्रयोग के लिये प्रभावशाली कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता।
5. खाद्य प्रंसकरण इकाईयों की स्थापना किये जाने की आवश्यकता।
6. कृषि उपज मण्डी एवं संगठित बाजार व्यवस्था को मजबुत करने की आवश्यकता।
7. उत्पादन के बिक्री हेतु समुचित व्यवस्था किये जाने की आवश्यकता।
8. भण्डारण एवं प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना किये जाने की आवश्यकता।
9. जिले में फल, सब्जी, मसाले एवं औषधीय पादपा के उत्पादन की प्रबल सम्भावनाऐं होने से इनकी उत्पादकता बढाने हेतु प्रभावशाली योजनाओं का क्रियान्वयन किये जाने की आवश्यकता।
10. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार एवं वाराबन्दी सिंचाई अपनाये जाने की आवश्यकता।
11. मक्का, उत्पादन की प्रबल सम्भावनाओं को देखते हुए मक्का की प्रस्करण इकाई स्थापना करने की आवश्यकता।
12. कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र की सेवाओं को ओर अधिक लाभप्रद बनाने हेत इनका सुदृढोकरण किये जाने की आवश्यकता।
13. ग्रामीण क्षेत्रो में कृषि विस्तार सेवाओं को प्रभावशाली बनाने के लिये प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं की उपलब्धता सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता।

14. अच्छी वर्षा के कारण जल संरक्षण एवं भूमि संरक्षण के कार्यो के असवर उपलब्ध होने से इस हेतु प्रभावशाली कदम उठाये जाने की आवश्यकता।

15. जिले में सिंचित सिंचाई की सुविधाओं के होने से सब्जी उत्पादन की प्रबल सम्भावनाऐं है। इस हेतु कृषको को प्रेरित करने के उद्वेश्य से प्रभावशाली कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।

16. जिले में प्रत्येक ग्राम पंचायत में किसान सेवा केंन्द्रो की स्थापना किये जाने की आवश्यकता।

जिले में प"ाुपालन की स्थिति

बांसवाड़ा जिले में प"ाुपालन स्थिति अच्छी नही है। यहां देशी गाय का औसत दुध उत्पादन आधा किलो से 2 किलोग्राम तक है। बहुत कम पशुपालकों द्वारा अच्छी नस्ल की गाये पाली जा रही है। अच्छी नस्ल के प"ाु ज्यादातर सिंचित क्षेत्र मे पाले जा रहे है। असिंचित क्षैत्र के पशुपालकों द्वारा स्थानीय नस्ल के प"ाु पाले जा रहे है जो कि शारीरिक स्प से पूर्णतया कमजोर हैं।

जिले मे दुग्ध उत्पादन प"ाुआ की संख्या के मुकाबले बहुत कम होता है जिसमे ओसत दुग्ध उत्पादन गाय का 1.2 से 1.5 कि.ग्रा. तथा भस का 2.5 से 3 कि.ग्रा. प्रति प"ाु प्रतिदिन होता है। अच्छी नस्ल के पशु रखने पर तथा उनके रखरखाव चारा, दाना एवं पानी की अच्छी व्यवस्था करने पर भेस का दुग्ध उत्पादन 2.5 से 2.75 कि. ग्रा. प्रति प"ाु तक बढाया जा सकता है।

जिले में प"ाुधन की स्थिति

क्रं स.	तहसील	गाय	भेंस	प"ाु भारवाही जानवर	भेड	बकरी	मुर्गा मुर्गी	सूअर	ऊट
01	बासवाडा	111714	44519	54687	2830	6000	85115	506	617
02	गढी	155335	55449	77190	6704	89324	82595	24	493
03	घाटोल	83768	57303	43893	11404	45793	37124	28	312
04	बगीदोरा	115773	43129	68231	3045	81464	97809	50	395
05	कु"ालगढ	112827	23661	63142	1410	57253	124387	488	335
	योग	579417	244061	307143	25393	339834	427030	1036	1552

स्त्रोत :– पशु जनगणना 2007

जिले में पशुपालको के लिये तकनीकि एवं स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु पशुपालन विभाग कार्यरत है। जिले में विभिन्न ब्लॉको मे कार्यरत पशु चिकित्साधिकारी एवं पशुधन सहायकों की संख्या का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	पद नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत पद	रिक्त पद
1	उपनिदेशक	1	1	0
2	सहायक निदेशक	2	1	1
3	वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी	7	3	4
4	पशु चिकित्सा अधिकारी	61	27	34
5	पशुधन चिकित्सा सहायक	43	37	6
6	पशुधन सहायक	127	121	6

रिक्त पदों का ब्लॉकवार विश्लेशण करन पर पाया गया कि वर्तमान में जिले के समस्त ब्लॉक में 50 प्रति"ात पदों पर चिकित्सा अधिकारी कार्यरत है। प"ा चिकित्सा अअधिकारियों के स्वीकृत 61 पदों में से मात्र 27 पद भरे हुए है अर्थात 34 पद रिक्त है। विगत वर्षो में विभाग के माध्यम से नस्ल सुधार कार्यक्रम, पशु स्वास्थ्य समवर्धन (टिकाकरण एवं उपचार) भेंड विकास कार्यक्रम तथा विस्तार कार्यक्रमों में प्रशिक्षण, गोष्ठी एवं चारा तथा कुकुट प्रदर्शन आयोजन के कार्यक्रम संचालित किये गये है। इन कार्यक्रमों से पशुपालको का रूझान नवीनतम पशुपालन की तकनीक की तरफ बढ़ा है।

जिले में उपलब्ध पशुओं की संख्या का विश्लेषण करने से पता चलता है कि जिले मे सर्वाधिक भैसों की संख्या गढ़ी पंचायत समिति में है जबकि सबसे न्यूनतम संख्या कुशलगढ़ पंचायत समिति में है। उपलब्ध गायों की संख्या मे भी गढ़ी तहसील प्रथम स्थान पर है जबकि न्यूनतम गायों की संख्या घाटोल पंचायत समिति अन्तर्गत है। जिले में बकरी पालन व्यवसाय बांसवाड़ा तहसील को छोड कर शेष समस्त तहसीलों में लगभग सम स्तर पर है। जिले मे पशुपालन उत्पादों मे विगत वर्षो में अच्छी प्रगति हुई है तथा इस क्षेत्र का जिले की कुल आय में योगदान बढ़ा है तथा भविष्य मे विकास की विपुल संभावना है।

पशुओं की संख्या का विस्तृत विवेचन करने पर पता चलता है कि जिले मे नस्ल सुधार कार्यक्रम के प्रति कृषको की रूची बढी है तथा गाय एवं भैस के अच्छी नस्ल के हीमकृत वीर्य से कृत्रित गर्भाधान करवाकर नस्ल सुधार को अपनाया है। बकरियों मे नस्ल

सुधार हेतु देवगढ सीरोही नस्ल के बकरें प्रजनन हेतु विगत वर्षो में पशुपालको को 50 प्रतिशत अनुदान पर वितरीत किये गये है जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हो रहे है। जिले में सर्वेक्षण के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि इन बकरो से प्राप्त सःतती मे नर पशुओं का शारीरिक भार तेजी से बढ़ा है जिससे मांस उत्पादन में वृद्धि हुई है तथा मादा पशुओं में भी दुग्ध उत्पादन का स्तर सुधरा है। पशुओं का नस्लवार विवरण एवं विगत पांच वर्षो मे पशु के मुख्य उत्पाद मांस, अण्डा व दुध में ओसत प्रगति निम्नानुसार है :–

जिले की पशु जनगणना 2007

नाम	किस्म पशु	संख्या		योग
		नर	मादा	
गाय	विदेशी जर्सी	21	85	106
	हालेस्टींन फेजीयन	9	52	61
	अन्य	30	12	42
	संकर जर्सी	520	2195	2715
	संकर एच.एफ.	95	460	555
	अन्य संकर	1063	1576	2639
	देशी गीर	25934	17180	43114
	काकरेज	7733	4782	12515
	मालवी	9288	6052	15340
	अवर्गीकृत	344252	225523	569775
भैस	मुर्रा	3821	27517	31338
	सुरती	2769	17430	20199
	अन्य	701	4413	5119
	अवर्गीकृत	23245	196498	219743
भेंड	विदेशी	2	3	5
	सोनाडी	269	813	1082
	अन्य	2201	10094	12294
बकरी		81485	379151	460636
घोडा		106	33	139
गधा		1443	801	2244
ऊंट		618	588	1206
सुंअर		189	128	317
स्वान		26381	18284	39665
खरगोश		726	3	729

स्त्रोत :– पशुगणना 2007

पशुओं का औसत उत्पादन

क्र. सं.	उत्पाद	वर्ष				
		2004–05	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09
1.	मांस	10485 कि.ग्रा.	10865 कि.ग्रा.	117404 कि.ग्रा.	115788 कि.ग्रा.	180245 कि.ग्रा.
	अण्डा (प्रति मुर्गी)	60.80	60.80	60.80	60.80	60.80
	दुध गाय	2.20 कि.ग्रा.	2.25 कि.ग्रा.	2.30 कि.ग्रा.	2.50 कि.ग्रा.	2.75 कि.ग्रा.
	भैस	3.25 कि.ग्रा.	3.35 कि.ग्रा.	3.40 कि.ग्रा.	3.50 कि.ग्रा.	3.75 कि.ग्रा.

स्त्रोत :– उपनिदेशक पशुपालन।

पशुपालन व्यवसाय में महिला कृषकों की सक्रिय भागीदारी है तथा महिलाओं मे रोजगार की वृद्धि के लिये इस क्षेत्र मे विपुल संभावनाएं है।

स्वोट एनालिसिस

मतबूती

1. पशुओं हेतु परे वर्ष हरे एवं सूखे चारे की उपलब्धता।
2. मछली उत्पादन के पर्याप्त जलाशयों का होना।
3. दूध उत्पादन समितियों का होना तथा दुग्ध संग्रह केन्द्रों की उपलब्धता।
4. महिलाओं की दुग्ध उत्पादन एवं पशु पालन में सक्रिय भागीदारी।
5. कृषि अनुसंधान केन्द्र व कृषि विज्ञान केन्द्र का समस्या के समाधान के लिय तत्परता।
6. विस्तार सेवायें।

कमजोरी

1. कोल्ड स्टोरेज की अनुपलब्धता।
2. प्रसंस्करण इकाईयों का न होना।
3. अशिक्षा के कारण लोगो में जागरूकता की कमी।
4. भूमि एवं जानवरों के अनुपात में कमी आना।

5. जिले के कुछ क्षेत्रो में हरे चारे के उचित प्रबंधन का अभाव।

6. अण्डे, मांस एवं दुग्ध के लिये संगठित बाजार का न होना।

7. अवर्गीकृत नस्ल के पशुओं के प्राकृतिक गर्भाधान हेतु छोटी नस्ल के सांडो का अभाव।

8. प्रजनन हेतु रखे जाने वाले नर पशुओं का उचित प्रबन्धन एवं प्रजनन हेतु उचित उपयोग।

अवसर एवं संभावानाऐं

1. हरे चारे की खेती करके दुधारू पशुओं को पालकर दुग्ध उत्पादन के प्रबल अवसर।
2. भेड़, बकरी, मुर्गे, मुर्गी पालन करने के अवसर।
3. जिले में पानी के छोटे–छोटे तालाबों के होने से मछली पालन के अवसर।
4. शीत भण्डारण की सुविधा उपलब्ध कराने के अवसर।
5. सजावटी मछली पालन एवं बिक्री के अवसर।
6. छोटे–छोटे बाजारों में बिक्री लिये सामान उपलब्ध कराने के अवसर।
7. प्रशिक्षणों द्वारा पशुपालको व मछली पालको में जागरूकता उत्त्पन्न कर उक्त गतिविधियों को व्यावसायिक रूप प्रदान करना।

भय

1. दुधारू जानवरों से कम दुग्ध उत्पादन।
2. मौसमी रोजगार के लिये पलायन।
3. प्राकृतिक गर्भधारण के लिये अनेक नस्ल के साण्डो का न होना।
4. बीमारियों का संक्रमण।
5. चारागाह की भूमियों में लगातार कमी होना एवं वनीय भूमि में जानवरो का खुला छोडने से प्राकृतिक चारा बीजो का नष्ट हो जाना।

स्थितिजन्य विश्लेशण

जिले में पशुपालन क्षेत्र की स्थिति का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि जिला पशुओं की उपलब्धता के संबंध में अच्छी स्थिति में है, लेकिन उत्पादकता के संबंध मे काफी कमजोर है। यह स्थिति कृषकों मे जागरूकता की कमी, अशिक्षा तथा पशु स्वास्थ्य प्रबंधन के प्रति लापरवाही के कारण है। विभाग की विस्तार सेवाओं के अन्तर्गत भी स्वोकृत पदों का रिक्त होना भी एक महत्वपूर्ण कारण है, जबकि जिले की कुल आय में पशु पालन

से अर्जित आय विगत वर्षों में बढी है तथा इस क्षेत्र में पर्याप्त पशुधन की उपलब्धता के कारण विपुल संभावनाएं है। कृषि में विविधिकरण में पशु पालन की महत्वपूर्ण उपयोगीता को अब जिले का जनजाति कृषक महत्व देने लगा है। इस हेतु विस्तार सेवाओं का प्रभावशाली क्रियान्वयन तथा नवीन योजनाओं द्वारा पशुओं की औसत उत्पादकता में वृद्धि होने की पूरी संभावना है।

पशु पालन के क्षेत्र में विस्तार कार्यक्रमों में पशु पालक की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी सुनिश्चित कराकर उसमें पशुपालन के प्रति रूचि जाग्रत कराकर उसे पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया जाना, जिससे की पशु पालक नस्ल सुधार, पशु संवर्धन एवं पशु स्वास्थ्य के बारे में जाग्रत होकर विभागीय सुविधाओं का पूर्ण उपयोग कर सके तथा पशु उत्पादन में वृद्धि कर सकें।

जिले में मछली पालन की स्थिति :–

❖ **मत्स्य :–**

जिले में माही एवं कडाना (बेक वाटर) जैसे बड़े जलाशयों के अतिरिक्त लगभग 540 से अधिक छोटे बड़े तालाब है, जिनका अनुमानित जल क्षैत्र 20000 हेक्टयर के लगभग ह। तालाबों में वर्ष के अधिकांश महिनों मे पानी भरा रहता है। जिले में प्रचुर मात्रा में जल राशि उपलब्ध होने से मत्स्य पालन की प्रचुर संभावना है। मत्स्य पालन व्यवसाय आदिवासिया का पारम्परिक व्यवसाय भी है लेकिन इसमें पुरानी पद्धति अपनाई जा रही है। इसको व्यावसायिक रूप देने हेतु निम्न सुविधायें प्रदान की जा रही है।

(1) आदिवासी मछुआरों को मत्स्य आखेट का वैज्ञानिक प्रशिक्षण।
(2) सभी जलाशयों में मत्स्य बीज समय पर डालना।
(3) नई नावे व जाल उपलब्ध कराना
(4) मछली विपणन की समुचित व्यवस्था करना

पांचवी पंच वर्षीय योजना से जिले में मत्स्य पालन को बढ़ाने लिए विभिन्न कार्यक्रम चालू किये गये। आदिवासियों को ठेकेदारों के शोषण से मुक्त कराने, समुचित रोजगार उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने 1997 में निजी ठेकेदारी प्रथा समाप्त कर उसके स्थान पर आदिवासी मछुआरों की समितियां गठित करने तथा तालाब आंवटित करने का निर्णय लिया गया।

1981 में उपयोजना क्षेत्र में अ एवं ब श्रेणी के तालाबों का आंवटन राजस संघ को दिये जाने का निर्णय लिया गया। तदानुसार आंवटन कडाना व माही बांध में आदिवासी मछुआरो की सहकारी समिति के माध्यम से मत्स्याखेट जारी रखा गया।

वर्तमान में जिले के दो बड़े जलाशय माही बजाज सागर एवं कडाना बेक वाटर के आस–पास बसे हुए आदिवासी परिवारों को रोजगार प्रदान करने की दृष्टि से राजस संघ उदयपुर को टोकन मनी पर दीर्घ अवधि पर आवंटित है। राजस संघ मत्स्य विभाग के सहयोग से जिले के आदिवासी परिवारों को मत्स्य पालन एवं आखेट का समुचित प्रशिक्षण देकर रोजगार उपलब्ध करा रहा है। जिले के जलाशयों में मत्स्य बीज आपूर्ति हेतु दो मत्स्य बीच उत्पादन फार्म भीमपुर एवं सागडौद में स्थित है। जिले की पचायतों के अधीन जलाशयों मे मत्स्य गतिविधियों के सफल संचालन हेतु मत्स्य प्रशिक्षण, जलाशय आंवटन, मत्स्य ठेके, अभिकरण की योजनानुरूप वित्तीय सहायता आदि के लिए कार्यालय को जिला परिषद में स्थानान्तरित किया गया है।

जिले में लघु सिंचाई अन्तर्गत निर्मित तालाब/बांध 300 हैक्टयर सी.सी.ए. तक क्षमता के कुल 141 तालाबों को पंचायती राज संस्थाओं को हस्तान्तरित किया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है।

पंचायती राज संस्थाओं के अधिन तालाबो/बांधो का विवरण

क्र. सं.	तालाब/ बांध का नाम	तालाब का CCA (हेक्टर में)	ग्राम	ग्राम पंचायत	पंचायत समिति
1	2	3	4	5	6
Annexure-1 Tanks upto 80 Hact.					
1	Sundrav	34.00	Sundrav	Sundrav	Anandpuri
2	Bhanwariya	28.00	Bhanwariya	Madkola Mogji	Anandpuri
3	Bhupanpura	36.00	Bhupanpura	Ratanpura	Anandpuri
4	Udaipura bada	32.00	Udaipura bada	Udaipura bada	Anandpuri
5	Amba	26.00	Amba	Mundri	Anandpuri
6	Badiyala	65.00	Bagidora	Naharpura	Anandpuri
6		**221.00**			
1	Budwa	72.00	Budwa	Budwa	Bagidora
2	Chirola	54.50	Chirola	Chokhla	Bagidora
3	Gangartalai	51.60	Gangartalai	Gangartalai	Bagidora
4	Karji	56.00	Karji	Karji	Bagidora
5	Khoralim	27.60	Khoralim	Khoralim	Bagidora
6	Shergarh Khunta	54.60	Shergarh	Shergarh	Bagidora
7	Saliya	34.80	Saliya	Saliya	Bagidora
8	Vanela	48.00	Vanela	Bagidora	Bagidora
9	Rakho	142.00	Rakho	Rakho	Bagidora
10	Khonkhrva	33.20	Khonkhrva	Pindarma	Bagidora

11	Bansla	68.80	Bansla	Bansla	Bagidora
11		**643.10**			
1	Barwala Machhar	37.20	Barwala Machhar	Bor Khabar	Banswara
2	Dabri Mal	77.60	Dabri Mal	Barwala Rajiya	Banswara
3	Devgarh	50.20	Devgarh	Devgarh	Banswara
4	Maheshpura	73.60	Maheshpura	Maheshpura	Banswara
5	Nawatapra	28.20	Nawatapra	Choti Badrel	Banswara
6	Nathpura Kharwali	25.00	Nathu Kharwali	Kesarpura	Banswara
7	Gordi	78.60	Gordi	Devliya	Banswara
8	Kupra	64.80	Kupra	Kupra	Banswara
9	Lodha	70.40	Lodha	Lodha	Banswara
10	Kushalpura	40.00	Kushalpura	Kushalpura	Banswara
11	Bari Danpur	54.00	Bari Danpur	Danpur	Banswara
11		**599.60**			
1	Basrela	22.80	Kesarpura	Kesarpura	Garhi
2	Gamela Arthuna	64.00	Arthuna	Arthuna	Garhi
3	Kareta	39.60	Arthuna	Arthuna	Garhi
4	Lohariya	40.80	Lohariya	Lohariya	Garhi
5	Torna	41.60	Torna	Aasan	Garhi
6	Rathdiya	16.80	Rathdiya Para	Rathdiya Para	Garhi
7	Aasoda	40.80	Aasoda	Aasoda	Garhi
8	Bai Ka Garha	32.00	Bai Ka Garha	Bai Ka Garha	Garhi
9	Jhuna Talab	30.00	Jhuna	Jhuna	Garhi
10	Naya Talab	16.40	Pichoda	Pichoda	Garhi
11	Bakawara	13.60	Bakawara	Bakawara	Garhi
12	Parwali	60.00	Parwali	Parwali	Garhi
13	Gamla Bori	64.00	Bori	Bori	Garhi
14	Bhandar	44.00	Garhi	Garhi	Garhi
15	Madlada	68.00	Madlada	Madlada	Garhi
16	Nalapara	48.40	Odwara	Odwara	Garhi
17	Khemor Jolana	72.00	Jolana	Jolana	Garhi
18	Sukhi Saliya	38.40	Saliya	Bhimsor	Garhi
19	Sundani	50.80	Sundani	Sundani	Garhi
20	Aasan	45.00	Aasan	Aasan	Garhi
21	Bhimpur	63.00	Bhimpur	Bhimpur	Garhi
21		**912.00**			
1	Chhapra Ka Naka	32.80	Chhapra Ka Naka	Mandela	Ghatol
2	Kundla	80.00	Kundla	Kundla	Ghatol
3	Mahuwal Delwara	40.60	Delwara	Delwara	Ghatol
4	Naya Talab Bhungra	40.00	Bhungra	Vadgun	Ghatol
5	Padla	47.60	Padla	Mudasel	Ghatol
6	Phata	67.00	Phata	Bhoyar	Ghatol
7	Sompur	45.60	Sompur	Sompur	Ghatol
8	Senawasa	160.00	Senawasa	Senawasa	Ghatol
9	Sarola	96.00	Sarola	Sarola	Ghatol
10	Bamanpara	74.80	Bamanpara	Bamanpara	Ghatol
11	Mahuripara	51.60	Mahuripara	Mahuripara	Ghatol
12	Bhuwasa	54.40	Bhuwasa	Bhuwasa	Ghatol
13	Aaryapara	92.00	Aasyapara	Gorcha	Ghatol
14	Chanduji Ka Garha	96.00	Chanduji Ka Garha	Chanduji Ka Garha	Ghatol
15	Dudka-II	60.00	Dudka	Dudka	Ghatol
16	Karana	41.60	karana	Karana	
16		**1080.00**			

1	Akhepura	71.60	Akhepura	Kushalapara	Kushalgarh
2	Bari Sarwa	41.60	Bari Sarwa	Bari Sarwa	Kushalgarh
3	Bijori	64.80	Bijori Bari	Bijori Bari	Kushalgarh
4	Jhakriya	54.00	Jhakriya	Vasuni	Kushalgarh
5	Kheriyapara	77.20	Kheriyapara	Chhoti Sarwa	Kushalgarh
6	Ramgarh	41.60	Ramgarh	Ramgarh	Kushalgarh
7	Rasodi	34.00	Rasodi	Vasuni	Kushalgarh
8	Badvas	51.00	Badvas choti	Badvas choti	Kushalgarh
8		**435.80**			
1	Bari Danpur	45.20	Bari	Danpur	Peepalkhunt
1		**45.20**			
1	Chanawala	37.00	Chanawala	Bhildi	Sajjangarh
2	Magarda	72.00	Magarda	Magarda	Sajjangarh
3	Sajjangarh	40.60	Sajjangarh	Sajjangarh	Sajjangarh
4	Timba Mahuri	70.40	Timba Mahuri	Timba Mahuri	Sajjangarh
5	Bhurakua	80.00	Bhurakua	Bhurakua	Sajjangarh
6	Andeshvar	26.00	Andeshvar	Andeshvar	Sajjangarh
6	**Total**	**326.00**			
80	**Grand total**	**4262.70**			

Annexure-II Tanks upto 80-300 Hact.

1	Bareth	92.00	Bareth	Bareth	Anandpuri
2	Kajaliya	89.00	Kajaliya	Kajaliya	Anandpuri
3	Jher	166.00	Jher	Barliya	Anandpuri
3		**347.00**			
1	Ram Ka Munna	87.00	Ram Ka Munna	Ram Ka Munna	Bagidora
2	Barigama	172.00	Barigama	Barigama	Bagidora
2	Pindarma	272.00	Pindarma	Pindarma	Bagidora
3	Nogama	90.00	Nogama	Nogama	Bagidora
4		**621.00**			
1	Bhutpara	194.00	Bhutpara	Bhutpara	Banswara
2	Borkhabar	192.00	Khera Barli	Khera Barli	Banswara
3	Chhapriya	136.00	Chhapriya	Chhapriya	Banswara
4	Jharniya	101.00	Jharniya	Jharniya	Banswara
5	Lalahera	85.00	Lalahera	Lalahera	Banswara
6	Nalda	101.00	Nalda	Nalda	Banswara
7	Samriya	140.00	Samriya	Samriya	Banswara
7		**949.00**			
1	Malwasa	144.00	Malwasa	Malwasa	Garhi
2	Wajwana	94.00	Wajwana	Wajwana	Garhi
3	Kohala	108.00	Kohala	Kohala	Garhi
4	Masotiya Bandh	124.00	Masotiya Bandh	Masotiya Bandh	Garhi
5	Palwariya Bandh	162.00	Palwariya Bandh	Palwariya Bandh	Garhi
6	Bhimsor	82.00	Bhimsor	Bhimsor	Garhi
7	Patela (Jolana)	111.00	Jolana	Jolana	Garhi
8	Ramor Bassi	185.00	Ramor Bassi	Moti bassi	Garhi
9	Lasada	130.00	Lasada	Lasada	Garhi
10	Metwala	83.00	Metwala	Metwala	Garhi
11	Ramtalab	100.00	Khodan	Khodan	Garhi
12	Bari Saredi	95.00	Bari Saredi	Bari Saredi	Garhi
12		**1418.00**			
1	Bhatiya	195.00	Bhatiya	Bhogoro ka khera	Ghatol
2	Borda	214.00	Borda	Borda	Ghatol

3	Borpi Kareng	119.00	Borpi Kareng	Khanta	Ghatol
4	Chundai	83.00	Chundai	Dungar	Ghatol
5	Dudka-II	268.00	Dudka	Dudka	Ghatol
6	Gorchha	187.00	Gorchha	Gorchha	Ghatol
7	Jagpura	266.00	Jagpura	Jagpura	Ghatol
8	Kundla	121.00	Kundla	Dudka	Ghatol
9	Mahuwal (Bhungra)	96.00	Mahuwal (Bhungra)	Vadgun	Ghatol
10	Shyampura	117.00	Shyampura	Sarodiya	Ghatol
11	Khatia	266.00	Khatia	Kanji ka gara	Ghatol
12	Padoli Gordhan	93.00	Padoli Gordhan	Padoli Gordhan	Ghatol
13	Runjiya	99.00	Runjiya	Runjiya	Ghatol
14	Nichali Mordi	117.00	Nichali Mordi	Nichali Mordi	Ghatol
15	Ganora	111.00	Ganora	Ganora	Ghatol
16	Dagiya	121.00	Dagiya	Dagiya	Ghatol
16		**2473.00**			
1	Jheekli	155.00	Jheekli	Jheekli	Kushalgarh
2	Karamdiya	91.00	Karamdiya	Mahuri	Kushalgarh
3	Khhanapara	129.00	Khhanapara	Mohakampura	Kushalgarh
4	Nagda	276.00	Nagda	Kushalapara	Kushalgarh
5	Saran Patel Ka Naka	128.00	Saran Patel Ka Naka	Saran Patel Ka Naka	Kushalgarh
6	Surwan	102.00	Surwan	Mohakampura	Kushalgarh
7	Charakhni	198.00	Charakhni	Charakhni	Kushalgarh
8	Ghoradara	181.00	Ghoradara	Bakhatpura	Kushalgarh
8		**1260.00**			
1	Ghori Tejpur	110.00	Ghori Tejpur	Ghori Tejpur	Peepalkhunt
2	Runjiya Danpur	103.00	Runjiya	Harnathpura	Peepalkhunt
3	Aamli Khera	290.00	Aamli Khera	Dhechala	Peepalkhunt
4	Dunglawani	229.00	Dunglawani	Dunglawani	Peepalkhunt
5	Lamba Dabra	234.00	Lamba Dabra	Chari	Peepalkhunt
6	Morwaniya	203.00	Morwaniya	Peepalkhunt	Peepalkhunt
7	Sagbari	90.00	Sagbari	Kupda	Peepalkhunt
8	Sodalpur	113.00	Sodalpur	Sodalpur	Peepalkhunt
8		**1372.00**			
1	Chatara Khunta	192.00	Chatara Khunta	Khundani	Sajjangarh
2	Maska	110.00	Maska	Maska Bada	Sajjangarh
3	Nawagao	234.00	Nawagao	Pali Bari	Sajjangarh
3		**536.00**			
61	**Total**	**8976.00**			

जिले मे छोटे छोटे तालाबो की संख्या अधिक होने एवं जिले मे अच्छी वषा होने से मछली पालन कृषको की आजीविका का अच्छा साधन हो सकता है। जिले मे 540 छोटे बडे तालाबा की सख्या है जिसमे संभाग के बहुत बडे माही बजाज सागर के बाध मे लगभग 1000 हे. क्षेत्र हे, जिसमे अच्छी किस्म की मीठे पानी की मछलियो का उत्पादन किया जाता हे।

जल ग्रहण क्षेत्र का विकास

जिले में अच्छी वर्षा होने तथा भूमि का ऊची नीची होने से भमि एवं जल सरक्षण के कार्यो की महत्ता बहुत अधिक बढ जाती ह। इससे जिले की भूमि में जल अवशोषण की क्षमता वृद्धि के साथ–साथ भूमि के कटाव को रोकने मे मदद मिलती हैं। विगत वर्षो में बांसवाड़ा जिले में जल ग्रहण विकास का कार्य जिले की आठों पंचायत समितियों मे संचालित किया जा रहा है। सर्वाधिक जल गहण क्षेत्र पीपलखूंट पंचायत समिति (86002 है0) है, जबकि गढ़ी पंचायत समिति (2110है0) सबसे कम क्षेत्र है। जिले में 125 मेक्रो एवं 838 माईक्रो वाटर शेड मे कार्य प्रगति पर है। भू–संरक्षण विभाग के अनुसार जल ग्रहण विकास की सर्वाधिक संभावनाएं पंचायत समिति पीपलखूंट, कुशलगढ़ में है, जबकि सज्जनगढ़, बागीदौरा एवं आनन्दपुरी पंचायत समितियों मे भी अच्छी संभावनाएं है। विगत वर्षो में संचालित किये जा रहे जल ग्रहण विकास कार्यक्रमों के तहत चराहागाह भूमि एवं वन क्षेत्र में अच्छी प्रगति रही है।

अन्य उपयोगो के लिये भूमि के हस्तान्तरण का प्रभाव

जिले मे विगत वर्षो में कृषि के अतिरिक्त उपयोग मे ली जाने वाली भूमि के क्षेत्रफल में निरन्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में जहां अन्य उपयोग हेतु क्षेत्रफल 8533 है0 में था, जो 2008–09 में 11092 है0 हो चुका है, ऐसा भूमि क अन्य उपयोगो हेतु हस्तान्तरण से हुआ है। यह भूमि आबादी, उद्योग धंधे, ढाचागत विकास तथा वाणिज्यिक प्रयोगों हेतु हुआ है। इस हस्तान्तरण का बांसवाड़ा के जन जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उद्योग धंधे स्थापित होने से श्रमिकों के रोजगार बढ़ा है तथा भू–धारकों द्वारा इस भूमि के विक्रय से अर्जित आय का उपयोग नवीन धंधे व्यापार ईकाइयों की स्थापना तथा शिक्षा के लिये उपयोग किया है तथा आबादी क्षेत्र के नजदोकी वाले भू–धारको के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

जिले में कार्य की भागीदारी
मुख्य एवं सीमान्त कार्य बल का वितरण

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार बांसवाड़ा जिले की कुल जनसंख्या 1501589 में से कुल कार्यशील जनसंख्या 709412 है। इस प्रकार जिले की 47.24 प्रतिशत कार्यशील

जनसंख्या है। कुल कार्यशील जनसंख्या में से 74.62 प्रतिशत जनसंख्या मुख्य कार्यशील तथा शेष 25.38 प्रतिशत सोमान्त कामगार है।

जिले में 533499 व्यक्ति कृषक है, 73187 खेतीहर श्रमिक, 14785 पारीवारिक उद्योग तथा 87941 व्यक्ति अन्य कार्यों में कमागार है।

जिले में गत दशक में कुल (मुख्य) कामगारो की संख्या में 2 प्रतिशत की वृद्वि हुई है, जबकि जिले की जनसंख्या में तुलनात्मक अधिक वृद्धि हुई है, यह तथ्य दर्शाता है कि :–

- जिले में सीमान्त कामगारों में वृद्वि हुई है।
- जिले से श्रमिक बाहर पलायन कर रहे हे।
- वस्तुतः उक्त दोनो परिस्थितियों की ही सम्भावनाएं अधिक है।
- जिले की आय में जिन क्षैत्रों के योगदान से वृद्वि हुई है उनमें खनन (लाईम स्टोन एवं अन्य प्रकार का पत्थर)
- खाद्य प्रसंस्करण
- निर्माण एवं सड़को पर सार्वजनिक विनियोजन आदि प्रमुख है।

कम काम भागीदारी वाले क्षेत्रों की विशेष समस्याऐं
गरीबी, बेरोजगारी एवं पयालन

जनजाति समुदाय की जीविका परम्परागत रूप से कृषि, पशपालन एव वानिकी क्षैत्र पर निर्भर रही हैं। कृषि भूमि से प्राप्त उत्पादन से ग्रामीणा की आसतन 3 माह से अधिक की खाद्य आपूर्ति नही होती है। जिले में श्रमिकों का मजदरी हेतु पलायन करना पडता है। अकाल एवं सखे के समय पलायन की स्थिति और भी विकट हो जाती है।

बी.पी.एल. सर्वेक्षण 2002 के अनुसार बांसवाड़ा जिले में कुल 332543 परिवार सर्वेक्षण में थें, इनमें से 121179 परिवार गरीबी रेखा से नोचे जीवन यापन करने वाले की श्रेणी में है, जो कि 36.44 प्रतिशत है। जिले में कुल बी.पी.एल. परिवारों में से 6.60 प्रतिशत एस.सी., 80.70 प्रतिशत एस.टी एवं शेष 12.70 प्रतिशत अन्य वर्ग के है। जिले मे बी.पी.एल. परिवारों का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.सं	नाम पंचायत समिति /नगरपालिका	कुल परिवा	बी.पी.एल. परिवार	प्रतिशत
1	पं.स. बांसवाड़ा	45468	12584	27.67
2	पं.स. गढ़ी	55632	14340	25.77
3	पं.स. घाटोल	51685	21714	42.01
4	पं.स. पीपलखूंट	35587	22357	62.92
5	पं.स. कुशलगढ़	29015	10646	36.69
6	पं.स. सज्जनगढ़	28853	7815	27.01
7	पं.स. बागीदौरा	40415	12638	31.27
8	पं.स. आनन्दपुरी	25180	16414	65.18
	योग	311775	118508	38.00
9	न.पा. बांसवाड़ा	18814	1953	10.38
10	न.पा. कुशलगढ़	1954	708	36.23
	योग	**20768**	**2661**	**12.81**
	महायोग	**332543**	**121179**	**36.44**

स्त्रोत :— बी.पी.एल. सेन्सस 2002

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जिले के ग्रामीण क्षेत्र मे गरोबी का प्रतिशत 38.00 है। पंचायत समितिवार विश्लेषण करने **पर पंचायत समिति घाटोल, पीपलखूंट, आनन्दपुरी में बी.पी.एल. परिवारों का जिले के कुल प्रतिशत से काफी अधिक है अर्थात गरीब जनसंख्या का निवास इन पंचायत समितियों में अधिक है।**

Poverty Analysis

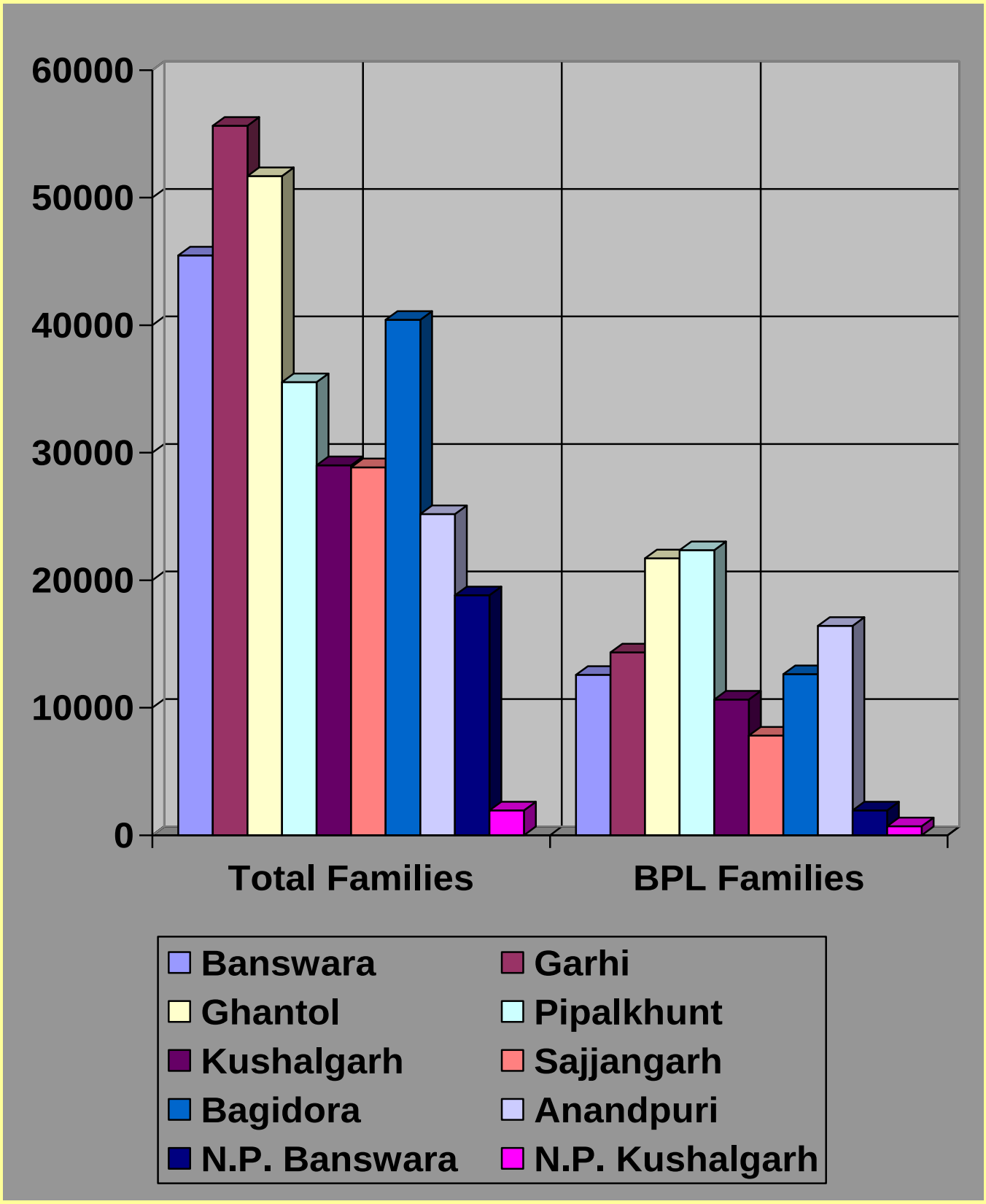

जिले में आवास सुविधा की स्थिति

बांसवाडा जिले में 5.27 प्रतिशत परिवारों के पास घर नहीं है। 82.31 प्रतिशत परिवार कच्चे घरो में रहते है। लेकिन ऐसे परिवारो के पास इंदिरा आवास योजना के लिए भूमि उपलब्ध है। गढी में 67.65 प्रतिशत परिवारों के पास कच्चा घर ह, पीपलखूंट में 92.6 प्रतिशत परिवारो के पास कच्चा घर है एवं इंदिरा आवास योजना के लिये भूमि है। पक्के घरो में गढी 13.42 प्रतिशत के साथ शीर्ष पर जबकि पीपलखूंट 1.8 प्रतिशत के साथ सबसे नीचे है।

ब्लॉक	आवासहीन	कच्चा मकान	आधा पक्का मकान	पक्का मकान	शहरी आवास
घाटोल	6.93	83.03	4.3	5.07	0.67
पीपलखूंट	2.55	92.6	2.9	1.8	0.15
गढी	7.54	67.65	9.29	13.42	2.1
बांसवाडा	5.38	78.1	9.05	7.07	0.4
आनन्दपुरी	6.25	84.05	6.1	3.31	0.29
बागीदौरा	5.42	79.66	7.81	6.64	0.47
सज्जनगढ	4.29	86.01	4.61	4.68	0.41
कुशलगढ	3.82	87.37	6.33	2.35	0.13
योग	**5.27**	**82.31**	**6.30**	**5.54**	**0.58**

(बी.पी.एल. सेन्सस 2002)

House Facility Status

S. No.	Name of PS & NP	Total Families	House less Families	Kacche House Families	Percentage of Kacche House Families
1	Banswara	45468	1367	35509	78.10
2	Garhi	55632	2405	37631	67.64
3	Ghantol	51685	2420	42912	83.03
4	Pipalkhunt	35527	790	32897	92.60
5	Kushalgarh	29015	713	25352	87.38
6	Sajjangarh	28853	588	24817	86.01
7	Bagidora	40415	1301	32197	79.67
8	Anandpuri	25180	1324	21165	84.05
9	N.P. Banswara	18814	0	3716	19.75
10	N.P. Kushalgarh	1954	25	240	12.28
	Total	**332543**	**10933**	**256436**	**77.11**

(बी.पी.एल. सेन्सस 2002)

पलायन

क्षेत्र सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार मौसमी या अन्य कारणों सें जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा जीविकोपार्जन हेत पड़ोसी जिलो एवं गुजरात में पलायन कर जाता है। पुरूष कामगार अधिक समय के लियें पलायन करते है वही महिलाए एवं बच्चे भी अल्पावधि पलायन कर रहे है ।

मजदरी प्राप्त करने वाले आकस्मिक श्रमिका में बहुत से श्रमिक पलायन के दोरान विभिन्न गतिविधियो से संम्बन्धित कार्य यथा बढ़ईगीरी, प्लास्टर, कारीगरी रंगाई–पुताई, रेस्टोरेन्ट एवं खाना पकाना आदि सीख रहे है। वर्ष 2005 के सर्वे अनुमानो के अनुसार बांसवाड़ा जिले के ग्रामीण क्षैत्रो से सर्वाधिक 56 प्रतिशत मौसमी पलायन रहा है। नीचे दर्शाई गई तालिका जिले के विभिन्न खण्ड़ो से होने वाले पलायन को दर्शाती है :–

बांसवाड़ा में मौसमी पलायन

(एक या अधिक सदस्यों सहित मौसमी पलायन करने वाले परिवारो का प्रतिशत)

पंचातय समिति	प्रतिशत
तलवाड़ा	8.86
गढ़ी	9.83
घाटोल	20.63
पीपलखूंट	33.08
संज्जनगड़	64.23
कुशलगढ़	40.03
आनदपुरी	30.24
बागीदौरा	30.62
जिला बांसवाड़ा	29.72

स्त्रोत :– जी.ओ.आर–2005

जिले की अधिकांश कार्यशील जनसंख्या कृषि क्षत्र में कार्यरत है तथा व्यवसाय हेत विविधतापर्ण बाजार भी उपलब्ध नही है, इस कारण नीति निर्धारण द्वारा विविधतापूर्ण बाजार प्रोत्साहन हेतु प्रशिक्षण, साख, विकास केन्द्रो का निर्माण और अन्य स्त्रोत उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। हाल हो में आजीविका मिशन के द्वारा लोगा के जीवन स्तर को सुधारने हेतु प्रारंम्भ किये गये उपायो सहित व्यावसायिक विविधता लायी जाये, ताकि लोगो के जीवन स्तर में सधार हो सके।

जिले में बैंकिंग और ग्रामीण ऋण सुविधायें

जिले का अग्रणी बैंक राजस्थान बडौदा ग्रामीण बैंक है। लीड बैंक के नेतृत्व में कृषि एवं गैर कृषि गतिविधियों के संचालन हेतु ऋण सुविधाएं उपलब्ध कराये जाने हेतु जिले मे वाणिज्यिक बैंक, सहकारी बैंक एवं लेम्पस् कार्यरत है। जिले में वर्तमान में उपलब्ध साख संस्थाओं का विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	पंचायत समिति का नाम	साख संस्थाओं की संख्या				
		वाणिज्यिक बैंक	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	सहकारी बैंक	लेम्पस्	अन्य
1	बांसवाड़ा	26	3	3	15	1
2	गढ़ी	13	5	1	14	0
3	घाटोल	10	2	1	13	0
4	पीपलखूंट	9	3	0	12	0
5	कुशलगढ़	4	2	1	12	0
6	सज्जनगढ़	2	2	0	6	0
7	बागीदौरा	3	2	0	7	1
8	आनन्दपुरी	6	0	1	9	0
	योग	73	19	7	88	2

स्त्रोत :– एल.डी.एम. बी.ओ.बी., बांसवाड़ा वर्ष 2008–09

जिले मे सहकारी बैंक की 7 शाखायें है तथा वाणिज्यक बैक की 92 शाखाआ द्वारा ऋण सूविधा उपलब्ध करायी जा रही है, साथ ही जिले में 88 लम्पस् के माध्यम से भी ऋण सुविधा प्रदान की जा रही है। **जिले मे बांसवाड़ा पंचायत समिति में सर्वाधिक साख संस्थाये उपलब्ध है जबकि कुशलगढ़, सज्जनगढ़, आनन्दपुरी तथा पीपलखूंट पंचायत समितियों मे साख संस्थाओं की संख्याओं की उपलब्धता तुलनात्मक दृष्टि से बहुत कम है।** जिले में साख सुविधा उपलब्धता होने के बाद भी जिले के कई परिवार अनौपचारिक रूप से महाजनों/साहुकारों/धनी व्यक्तियों से ऋण प्राप्त करते है।

जिले का औद्योगिक परिदृश्य

बांसवाड़ा जिला औद्योगिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ है। जिले का कृषि क्षैत्र काफी सीमित है, तथा गैर कृषि क्षेत्र ज्यादा विकसित नहीं हो पाया है जिससे औद्योगिक क्षेत्र मे राजगार के अवसर सीमित है।

वृहद उघोग

इस जिले में वर्तमान में सात वृहद उद्योग स्थित है, जिनमे रूपये 50186. 39 लाख का विनियोजन है और लगभग 6824 स्थानीय व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर रहे है ।

लघु व कुटीर उद्योग

वर्तमान में सचालित 2618 लघु उद्योग/आर्टीजन इकाईयो में कुल रूपये 3930 लाख के विनियोजन के साथ 8440 लोग इन इकाईयो के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर रहें हैं। इन इकाईयों में मुख्य रूप से आटा चक्की ,खाद्य तैयारी ,मार्बल कटिग एवं पॉलिशिंग, स्टोन, कृषि उपकरण, रेडीमेड़ वस्त्र एवं पालिस्टक का उत्पादन होता है। जिले में स्वरोजगार हेतु प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अन्तर्गत विगत वर्षो में विभिन्न व्यवसायों में ऋण एवं अनुदान उपलब्ध कराकर लाभान्वित किया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	व्यावसाय का नाम	2004–05	2005–06	2006–07	2007–08
1	सीट कवर निर्माण	**1**	**0**	**2**	**3**
2	कम्प्यूटर कार्य	**2**	**2**	**5**	**6**
3	ऑटो रिक्शा	**2**	**3**	**7**	**5**
4	विडियो ग्राफी	**1**	**1**	**4**	**2**
5	इलेक्ट्रिक हार्ड वेयर	**1**	**0**	**2**	**2**
6	किराणा जनरल स्टोर	**152**	**176**	**159**	**143**
7	ज्वैलरी	**2**	**1**	**3**	**5**
8	कपडे की दूकान	**2**	**4**	**2**	**4**
9	इलेक्ट्रिक सर्विस	**1**	**2**	**3**	**4**
10	पशु आहार व्यापार	**1**	**0**	**2**	**1**

11	रेडिमेट व्यापार	**5**	**4**	**15**	**10**
12	कंगन/कासमेटिक स्टोर	**5**	**9**	**14**	**10**
13	सिलाई कार्य	**2**	**4**	**10**	**3**
14	पापड उद्योग	**7**	**5**	**5**	**10**
15	शटरिंग कार्य	**1**	**2**	**2**	**5**
16	जुता चप्पल व्यापार	**1**	**3**	**5**	**2**
17	मुर्तिकला उद्योग	**1**	**2**	**3**	**3**
18	फोटोस्टेट/फेक्स मशीन	**2**	**1**	**2**	**4**
19	पत्तल दोना व्यापार	**0**	**1**	**2**	**2**
20	साडी मेचींग सेन्टर	**1**	**0**	**3**	**1**
21	मिट्टी के बर्तन व्यापार	**0**	**1**	**2**	**1**
22	मोबाईल सेल्स एण्ड सर्विस	**8**	**5**	**7**	**10**
23	साईकल मरम्मत	**3**	**1**	**1**	**5**
24	फर्निचर उद्योग	**1**	**2**	**1**	**2**
25	ब्यूटी पार्लर	**2**	**0**	**2**	**5**
26	लोहे की अलमारी एवं अन्य फर्निचर	**1**	**2**	**1**	**2**
27	बुक स्टाल/स्टेशनरी	**2**	**1**	**1**	**3**
28	लकडी का व्यापार	**1**	**2**	**1**	**2**
29	वेलडिंग कार्य	**1**	**1**	**1**	**2**
30	इलोक्ट्रोनिक म्यूजिक सेन्टर	**1**	**2**	**2**	**2**
31	स्पेयर पाट्र्स टू व्हीलर	**2**	**0**	**1**	**3**
32	बर्तन व्यापार	**1**	**1**	**2**	**2**
33	टेलरिंग मटेरियल	**1**	**0**	**0**	**1**
34	टेन्ट हाउस	**1**	**2**	**2**	**2**
35	रेफरीजरेटर एवं एयर कन्डिशन	**0**	**0**	**0**	**1**
36	सेनेटरी फीटर	**0**	**0**	**1**	**1**
37	साडी फाल एवं पेटीकोट व्यापार	**1**	**1**	**1**	**1**

38	टायर री ट्रेडींग	**2**	**1**	**0**	**1**
39	फोटो फ्रेम कार्य	**1**	**0**	**2**	**1**
40	हेल्थ क्लब	**0**	**0**	**0**	**1**
41	अगरबत्ती व्यवसाय	**0**	**0**	**0**	**1**
42	नाई की दूकान	**2**	**1**	**2**	**1**
43	आटा चक्की	**3**	**5**	**5**	**2**
44	चमड़ा व्यापार	**0**	**0**	**03**	
45	मेडिकल स्टोर	**1**	**1**	**1**	**1**
46	बिजली फिटिंग सामान	**1**	**0**	**2**	**2**
47	ईट उद्योग	**1**	**0**	**2**	**3**
48	लोहारी कार्य	**0**	**1**	**1**	**1**
49	डेरी उद्योग	**1**	**2**	**2**	**2**
50	फोटो ग्राफी फोटो फ्रेम	**1**	**1**	**1**	**2**
51	इलेक्ट्रिक कार्य	**1**	**2**	**1**	**2**
52	आयरन फेब्रिकेशन	**1**	**3**	**1**	**2**
53	जुता चप्पल कटलरी	**1**	**1**	**2**	**2**
54	बिलडींग मटेरीयल	**1**	**2**	**1**	**2**
55	नमकीन व्यापार	**2**	**1**	**1**	**3**
56	फ्रुट एण्ड ज्यूस	**1**	**1**	**1**	**0**
57	डेरी	**0**	**2**	**2**	**1**
58	रूई पीजाई	**0**	**0**	**0**	**2**
59	पान म्यूजीक सेन्टर	**2**	**1**	**1**	**1**
	योग	**241**	**266**	**303**	**306**

वर्ष 2008–09 में केन्द्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार योजना बन्द कर नवीन योजना प्रधानमंत्री रोजगार गारण्टी कार्यक्रम (पीएमईजीपी) प्रारम्भ किया गया, जिसके तहत जिले में पत्तलदोना 1, सिलाई 1, चांदी के आभ्षण 2, चर्म जूता 1, मोबाईल

रिपेरिंग 1, ब्यूटी पार्लर 1 एवं अन्य व्यावसाय 1 इस प्रकार वर्ष के दौरान 8 व्यक्तियों को आजीविका के साधन उपलब्ध करवाये गये।

खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा मार्जिन मनी योजना के तहत वर्ष 2004–05 से 2008–09 के दौरान कुल 143 व्यक्तियों को 1.24 करोड रूपयें मार्जिन मनी उपलब्ध कराकर विभिन्न व्यवसाय प्रारम्भ कर आजीविका के साधन उपलब्ध करावायें गये है।

क्र. सं.	व्यवसाय का नाम	2004–05	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09
1	लोहारी कार्य	1	0	3	3	0
2	सुधारी कार्य	2	1	4	1	1
3	स्टोन कटिंग	1	1	0	0	0
4	बेकरी	1	0	0	0	0
5	रेडीमेड गारमेन्टस	0	6	4	2	2
6	ढाबा	0	2	0	0	1
7	राजगीर	0	4	10	3	0
8	बांस बैत	0	1	1	1	0
9	आटा चक्की	0	2	8	4	2
10	मसाला	0	3	2	1	1
11	ऑटो सर्विस	0	1	0	0	0
12	कशीदाकारी	0	1	0	0	0
13	दाल प्रशो	0	2	0	1	0
14	जुट बेग	0	1	0	0	0
15	वर्मी कम्पोस्ट	0	5	1	0	0
16	ज्वैलरी	0	1	0	0	1
17	कृषियंत्र किराये पर देना	0	1	0	0	0
18	छाता निर्माण	0	1	0	0	0
19	इलेक्ट्रिक रिपेरींग	0	1	0	1	0
20	साईकल रिपेरिंग	0	1	2	2	0
21	सिलाई कार्य	0	0	4	2	0
22	चाय की दुकान	0	0	1	1	0
23	ब्यूटी पार्लर	0	0	1	0	0
24	चूडी निर्माण	0	0	1	0	0
25	दुग्ध उत्पादन	0	0	1	0	0
26	मोटर साईकल रिपेरिंग	0	0	1	0	0
27	पेंट वार्निश	0	0	1	0	0
28	टेन्ट हाउस	0	0	1	0	1
29	ईट फट्टा	0	0	1	0	1
30	फोटे स्टेट कापी	0	0	1	0	1

31	मर्ति निर्माण	**0**	**0**	**2**	**0**	**0**
32	स्टोन केशर	**0**	**0**	**2**	**1**	**1**
33	डोलोमाईट एवं केलेसाईट पाउडर निर्माण	**0**	**0**	**1**	**0**	**0**
34	सिमेन्ट पाईप निर्माण	**0**	**0**	**0**	**3**	**0**
35	सिलवर रिफाईनरी	**0**	**0**	**0**	**1**	**0**
36	मोटर बोडी निर्माण	**0**	**0**	**0**	**1**	**0**
37	पापड़	**0**	**0**	**0**	**1**	**0**
38	सर्विस सेन्टर	**0**	**0**	**0**	**1**	**0**
39	कुम्हारी उद्योग	**0**	**0**	**0**	**2**	**0**
40	वेलडिंग	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
41	पत्थर घीसाई	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
42	नाई सेलून	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
43	छपाई कार्य	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
44	जेम एण्ड जेली	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
45	मोबाईल रिपेरिंग	**0**	**0**	**0**	**0**	**1**
	योग	**5**	**35**	**53**	**32**	**18**

ग्रामीण एवं शहरी क्षैत्रो में गरीबी उन्मुलन हेतु स्वरोजगार योजनाएं

स्वर्ण जयन्ति ग्राम स्वरोजगार योजना

केन्द्र प्रवर्तित स्वर्ण जयन्ति ग्राम स्वरोजगार योजना गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों को स्वरोजगार एवं आजीविका के साधन मुहैया कराने की महत्वकांशी योजना पूरे देश में संचालित की जा रही है। योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों को गरीबी रेखा के मापदण्ड़ों से उपर उठाना तथा उनके जीवन स्तर में सुधार करना ह। योजनान्तर्गत व्यक्तिगत एवं स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक गतिविधियां उपलब्ध कराना है। जिले में इस योजनान्तर्गत

पिछले पांच वर्षो के दौरान कृषि, लघु सिचाई एवं अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत बडे पैमाने पर गरीब परिवारों को लाभान्वित किया गया है।

जिला	वर्ष	गठित स्वयं सहायता समूहों की संख्या	महिला स्वयं सहायता समूहों की संख्या	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें रिवोलविंग फण्ड दिया गया	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें आर्थिक गतिविधियों से जोडा गया	व्यक्तिगत स्वरोजगारियों की संख्या जिन्हें आर्थिक गतिविधि उपलब्ध करायी गई			
						कुल	अ. जाति	अ.ज. जा.	महिला
बांसवाड़ा	2003–04	719	570	86	1	960	63	742	106
	2004–05	415	0	596	19	994	47	814	201
	2005–06	915	761	1103	25	5	0	5	0
	2006–07	700	683	772	184	121	1	117	0
	2007–08	359	295		82	1158	5	1086	236
	2008–09	15538	147		147	431	13	352	414
					438	3669	129	3116	957

स्वयं सहायता समूह

स्वंय सहायता समह ऐसे गरीब व्यक्तियों का समह होता है, जो अपनी सहायता स्वंय करना चाहते है। ये व्यक्ति अपनी कमाई में से कुछ राशि बचत के रूप में जमा करते है, इस इकट्ठी हुई राशि से वे एक दुसरे को उधार (लोन) दे सकते है। इस प्रकार समूह अपने सदस्यों के लिए एक छोटे बैंक के रूप में काम करता है। शुरू के छः महीने तक समह इसी तरह अपना कार्य करता रहेगा, उसके बाद सफलता पूवक कार्य करने वाले समह को रिवोल्विग फंण्ड दिया जाता है। इस राशि से समह अपने कार्य का विस्तार कर सकता है। रिवोल्विग फण्ड मिलने के बाद द्वितीय ग्रेडींग उर्तीण होने पर आर्थिक गतिविधियों के संचालन हेतु बैंक द्वारा ऋण उपलब्ध कराया जाता है। इस प्रकार स्वयं सहायता समूह अपना स्वयं का व्यवसाय करना प्रारम्भ कर देते है। वर्तमान में जिले मे यह कार्य ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, नाबार्ड

तथा स्वयं सेवी संगठनों एवं व्यक्तिगत संसाधक द्वारा किया जा रहा है। जिले में वर्तमान में 4412 स्वयं सहायता समूह गठित है, जिसमें से 3839 स्वयं सहायता समूह को प्रथम ग्रेड तथा 466 स्वयं सहायता समूह को द्वितीय ग्रेडिंग कर आर्थिक गतिविधियों से जोडा गया है इसके साथ ही आत्मा परियोजना अन्तर्गत कृषक रूचि समूहों का गठन भी किया जा रहा है तथा बी.पी.एल. मे चयनित परिवारों के स्वयं सहायता समूह गठन का कार्यक्रम का कार्य भी प्रगति पर है।

रोजगार–राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम

ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी कार्यक्रम फरवरी 2006 में बांसवाड़ा जिले में प्रारम्भ हुआ। इसके अन्तर्गत मार्च 2006 तक कुल 272795 परिवारों को पंजोकृत कर 79436 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया, जिससे 7.89 लाख मानव दिवस रोजगार सृजित हुआ। इसमें से 4.52 लाख मानव दिवस में महिला श्रमिको की भागीदारी रही जो कि कुल सृजित मानव दिवस का 59.86 प्रतिशत था। वर्ष 2006–07 के अन्तर्गत इस अधिनियम के तहत जॉब कार्ड जारी किया गये जिसमें अनुसूचित जनजाती के व्यक्तियों के 267286 जोब कार्ड, अनुसूचित जाति के 11094 जोब कार्ड तथा अन्य वर्ग के 22232 जोब बार्ड जारी किये गये। अब तक जिले में इस कानून के तहत 306924 जोब कार्ड जारी किये जा चुके है तथा निम्नानुसार रोजगार सृजित किया गया है :–

क्र.सं.	वर्ष	व्यक्तियों की संख्या	सृजित मानव दिवस (लाखों में)				महिलाओं की भागीदारी प्रतिशत
			एस.सी.	एस.टी.	अन्य	कुल	
1.	2005–06	79436	0.026	7.55	0.08	7.89	59.86
2.	2006–07	256826	10.01	198.55	7.98	216.55	68.00
3.	2007–08	241430	9.53	165.65	12.84	188.03	65.78
4.	2008–09	256167	16.57	212.63	17.78	246.99	67.80

स्त्रोत :– जिला परिषद् (ग्रा.वि.प्र.) बांसवाड़ा।

जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी एक्ट के तहत रोजगार का सृजन हुआ है तथा कार्य करने से परिवारों की आय में वृद्धि हुई है। इस एक्ट के तहत विगत वर्षो मे रोजगार पाने मे महिलाओं की भागीदारी 65–70 प्रतिशत रही है। मोटे

अनुमान के अनुसार इस आय का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य आवश्यकताओं पर किया जा रहा है।

शहरी क्षैत्र में रोजगार

स्वर्ण जयंन्ती शहरी रोजगार योजना (SJSRY)

शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले बी.पी.एल. चयनित परिवारों को स्व रोजगार उपलब्ध कराने के उदेश्य से स्वर्ण जयन्ति शहरी रोजगार योजना का आरम्भ वर्ष 1997 से नगरपालिकाओं के माध्यम से किया गया है। इसके अन्तर्गत शहरी क्षेत्र मे बी.पी.एल. चयनित परिवारों के भिन्न भिन्न रूचि विषयों पर स्वयं सहायता समूह गठीत कर आर्थिक गतिविधियों हेतु ऋण के साथ व्यक्तिगत स्वरोजगारियों को स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ करने हेतु ऋण एवं अनुदान सुविधा दी जा रही है।

शहरी मजदूरी रोजगार कार्यक्रम

शहरी क्षेत्रों मे गरीब परिवार के व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध करायें जाने के लिये इस योजना का क्रियान्वयन नगरपालिका के माध्यम से किया जा रहा है इसके अन्तर्गत शहरी क्षेत्र मे सार्वजनिक लाभ की परिसम्पत्तियों का निर्माण कर राजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है।

क्षमता अभिवृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम

शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले गरीब परिवारों के व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों में दक्षता विकास हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन सरकारी/स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से किया जाकर स्व–रोजगार की गतिविधियों के संचालन हेतु प्रेरित किया जा रहा है।

अनुसूचित जाति विकास निगम

अनुसूचित जाति विकास निगम द्वारा विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत स्व रोजगार एवं आजीविका प्राप्ति हेतु अनुसूचित जाति, जनजाति, विकलांग, अन्य विछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक, स्वच्छकार आदि व्यक्तियों को जिले मे विगत वर्षों में लाभान्वित किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	योजना का नाम	2004–05	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09	वि.वि.
1.	एनएसटीएफडीसो	65	26	22	43	53	अनुसूचित जन जाति के व्यक्ति लाभान्वित
2.	एनएसएफडीसी	3	26	3	3	8	अनुसूचित जाति के व्यक्ति लाभान्वित
3.	एनएचएफडीसी	5	21	3	0	0	विकलांग व्यक्ति लाभान्वित
4.	एनबीसीएफडीसी	10	36	14	35	67	अन्य पिछडा वर्ग के व्यक्ति लाभान्वित
5.	एनएसकेएफडीसी	6	24	8	3	3	स्वच्छकार वर्ग के व्यक्ति लाभान्वित
6.	एनएमएफडीसी	9	0	10	36	30	अल्प संख्यक वर्ग के व्यक्ति लाभान्वित
	योग	**98**	**133**	**60**	**120**	**161**	

अनुसूचित जाति विकास निगम की बैंकिग एवं गैर बैंकिग योजनाओं के माध्यम से जिले के अनुसूचित जाति वर्ग के पुरूष एवं महिलाओं को स्वरोजगार एवं आजीविका हेतु विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत गत पॉच वर्षो के दोरान लाभान्वित किया गया जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

क्र. सं.	योजना का नाम	2004–05	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09	योग
1.	शहरी पोप बैंकिंग योजना	60	104	95	65	61	385
2.	ग्रामीण पोप बैकिंग योजना	105	130	98	77	217	627
3.	उन्नत नस्ल गाय एवं भैस बैंकिग योजना	14	25	17	30	50	136
4.	व्यक्तिगत पम्प सेट बैंकिग याजना	7	4	0	0	0	11
5.	कप ब्लास्टींग गैर बैंकिग योजना	41	0	0	0	0	41
6.	कार्यशाला निर्माण	128	52	40	50	108	378
7.	कृषि यंत्र	0	0	0	0	76	76
8.	स्वालम्बन	0	0	0	0	2	2
	योग	355	315	250	222	514	1656

बाजार व्यवस्था

जिले मे संगठित बाजार व्यवस्था का अभाव है। कृषि उत्पादों के विपणन व्यवस्था के लिये कृषि उपज मण्डी जिला स्तर पर मौजद है लेकिन मण्डी अभी तक क्रियाशील नही है तथा किसी भी वस्तु का विपणन मण्डी के माध्यम से नही होता है। मण्डी के क्रियाशील नही होने से कृषको को अपने उपज का मूल्य नही मिल पाता है तथा उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा समीपवर्ती राज्य गुजरात एव मध्य प्रदेश मे विक्रय हेतु जाता हैं। बासवाड़ा जिले में व्यापार का केन्द्र स्थानीय बाजार एवं दूरदराज क्षेत्र मे आयोजित होने वाले हाट बाजार ही है।

अकृषि क्षेत्र में लाइवलिहुड हेतु भावी रणनीति :–

1. बांसवाड़ा जिले में जनजाति बाहुल्य क्षेत्र होने से श्रमिक वर्ग की पर्याप्त उपलब्धता है। श्रमिक वर्ग को कुशल बनाने के लिये तकनीकी प्रशिक्षणो का आयोजन कर प्रशिक्षित श्रमिक तैयार किये जाने की आवश्यकता है।
2. शिक्षा के क्षेत्र में नामाकन मे वृद्वि कर जागरूकता लाने हेतु प्रभावशाली कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।
3. बांसवाडा जिले में रेलवे लाईन का अभाव होने से अन्य प्रगतिशील जिलो से सम्पर्क कम हो पाता है। अतः जिले में रेलवे लाईन स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।
4. जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगो के स्थापना की प्रबल सम्भावना है। अतः इस दिशा में प्रभावशाली योजना बनाकर क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है।
5. जिले में प्रस्करण इकाईयों की स्थापना वृहद स्तर पर किये जाने की आवश्यकता है, जिससे श्रमिको के रोजगार में वृद्वि हो सके।
6. जिले में मौसमी श्रमिक पलायन की स्थिति मौज़द है जिसे रोकने के लिये जिले में ही पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जाने के लिये तकनीकि प्रशिक्षणो एवं ऋण सुविधाओं को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।
7. जिले में बैंकिंग एवं ऋण वितरण प्रक्रिया को मजबूत करने के लिये ऋण मेला का आयोजन किये जाने की आवश्यकता है।
8. जिले में ढांचागत विकास हेतु कारीगरा को तकनोकि प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है।
9. जिले का स्वास्थ्य सूचकांक निम्न स्तर पर है, अतः स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने हेतु प्रभावशाली योजनाओं का क्रियान्वयन किये जाने की आवश्यकता है।
10. जिले में आवास सुविधाओं की स्थिति संतोषप्रद नहीं है, इस हेतु प्रभावशाली योजनाओं के क्रियान्वयन की आवश्यकता है।
11. जिले में महिलाओं की स्थिति संतोषप्रद नहीं है, अतः महिला सशक्तिकरण हेतु प्रभावशाली कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।
12. जिले के मानव विकास में सूचना प्रसारण तकनोकि का महत्वपूर्ण योगदान है। सूचना प्रसारण को प्रबल बनाने हेतु सामुदायिक आकाशवाणी केन्द्र के माध्यम से तथा अन्य प्रसारण तंत्र को मजबूत किये जाने की आवश्यकता है।

स्त्रोत/ संदर्भ सूची

⇒ जनगणना 1991 एवं 2001

⇒ बांसवाड़ा जिला एक दृष्टि में – जिला सांख्यिकी कार्यालय, बांसवाड़ा।

⇒ कलक्टर भू–अभिलेख शाखा, बांसवाड़ा।

⇒ पशु गणना, 2007

⇒ उपनिदेशक, पशुपालन, बांसवाड़ा ।

⇒ मण्डल वन अधिकारी, बांसवाड़ा।

⇒ जिला परिषद, बांसवाड़ा।

⇒ साक्षरता एवं सत्त शिक्षा अधिकारी, बांसवाड़ा।

⇒ जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक, बांसवाड़ा।

⇒ डाईस डाटा – जिला परियोजना समन्वयक, सर्व शिक्षा अभियान, बांसवाड़ा।

⇒ जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक, बांसवाड़ा।

⇒ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, (डाईट) गढी।

⇒ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बांसवाड़ा।

⇒ पोलोटेक्नीक कॉलेज, बांसवाडा।

⇒ राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा।

⇒ राजकीय कन्या महाविद्यालय, बांसवाड़ा।

⇒ राजकीय महाविद्यालय, कुशलगढ़।

⇒ सहायक निदशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, बांसवाड़ा।

⇒ परियोजना अधिकारी, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, बांसवाड़ा।

⇒ मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, बांसवाड़ा।

⇒ डी.पी.एम. एन.आर.एच.एम., बांसवाड़ा।

⇒ उपनिदेशक, आईसीडीएस, बांसवाड़ा।

⇒ जिला आयुर्वेद अधिकारी, बांसवाड़ा।

⇒ आर.एच.डी. रिपोर्ट 2008–09

⇒ अधिशासी अभियंता, पी.एच.ई.डी., बांसवाड़ा।

⇒ जिला समन्वयक, सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान, बांसवाड़ा।

⇒ सी.डेप – उप निदेशक, कृषि विस्तार, बांसवाड़ा।

⇒ निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर।

⇒ सहायक निदेशक, उद्यान, बांसवाडा।

⇒ उपनिदेशक, पशुपालन, बांसवाड़ा।

⇒ सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, बांसवाड़ा।

⇒ अधिशासी अभियंता, जलसंसाधन, बांसवाडा।

⇒ परियोजना अधिकारी, भू–संसाधन, बांसवाड़ा।

⇒ बी.पी.एल. सेन्सस, 2002 – जिला परिषद, बांसवाड़ा।

⇒ लीड बैंक मैनेजर, बी.ओ.बी., बांसवाड़ा।

⇒ महाप्रबन्धक, उद्योग, बांसवाड़ा।

⇒ सहायक निदेशक, खादी एवं ग्रामोद्योग, बांसवाड़ा।

⇒ परियोजना प्रबन्धक, अनुसूचित जाति निगम, बांसवाडा।